श्री परमधाम की बड़ी वृत्त

परमहंस श्री जवाहर दास जी महाराज कृत

संयोजक

एवं

सम्पादक :

विन्ध्याचल दास शास्त्री

(अध्यक्ष)

श्री प्राणनाथ सेवाआश्रम, गोरखपुर (उ०प्र०)

(रजि० नं० २२६१)

ग्रन्थ प्राप्ति स्थान :

विन्ध्याचल दास शास्त्री

मोहरीपुर बाजार, गोरखपुर (उ०प्र०)

दूरभाष : ३३०७६६

श्री खेमराज जी शर्मा

श्री ५ पद्मावतीपुरी धाम पन्ना

(गेट नं० ३ के सामने) (म०प्र०)

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक :-

विन्ध्याचल दास शास्त्री (अध्यक्ष)

श्री प्राणनाथ सेवा आश्रम

गोरखपुर (रजि० नं० : २२६१)

दूरभाष : ३३०७६६

१००० प्रतियां

प्रथम संस्करण १९९४

बुद्ध जी का शाका ३१६

न्यौछावर : १००/-

मुख्य वितरक :

विन्ध्याचल दास शास्त्री

मोहरीपुर बाजार, गोरखपुर (उ०प्र०)

श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरूप
महामति श्री प्राणनाथ जी द्वारा अवतरित
श्री कुलजम स्वरूप साहेब के त्रिशताब्दी
महोत्सव पर सादर समर्पित

मुद्रक : दी इउरेका प्रिन्टिंग वर्क्स प्रा० लि० गीता प्रेस रोड, गोरखपुर ।



परमहंस श्री जवाहर दास जी महाराज

"श्री राजश्यामाजी कृपानिधान"

शुभकामना

परमधामवासी महंत श्री जवाहर दास जी महराज करनाल वाणी एवम् चर्चनी के अपने समय के बहुत दक्ष पुरुष थे। आप द्वारा लिखित परमधाम का सम्पूर्ण वर्णन अपने आप में एक अद्वितीय वृति है। इतनी सरल, सुबोध एवम् वौद्यगम्य भाषा में सम्पूर्ण परमधाम का वर्णन अन्यत्र कहीं भी दिखाई नहीं देता है। आपने चर्चनी सम्राट परमहंस श्री लाल दास जी महराज एवं महराज श्री जुगल दास जी द्वारा रचित बड़ी वृत का मूलत: सहारा लिया है। महंत श्री जवाहर दास जी ने अपने जीवन के तीन चौथाई वर्ष श्री 108 पद्मावती पुरी धाम में स्थित क्षेत्र (नईशाला) में वाणी के अध्यन में परमहंस महराज श्री मेहर दास जी के श्री चरणों में बैठकर शिक्षा ली। यही कारण है कि आप की वृत्त श्री परमधाम वर्णन इतनी सरल व सुबोध बन गई है।

श्री विन्ध्याचल दास जी भी वाणी व चर्चनी का अध्यन श्री पद्मावती पुरी धाम में ही बैठकर किया है। आप द्वारा श्री जवाहर दास जी महराज की वृति प्रकाशित की जा रही है तदर्थ मैं उन्हें भी बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। आशा है कि समस्त प्रणामी जगत इस वृति से पूर्णरुपेण लाभान्वित होगा।

प्रणाम

आनन्द दास शर्मा
उपाध्यक्ष
श्री 108 श्री प्राणनाथ जी ट्रस्ट बोर्ड
श्री पद्मावती धाम, पन्ना (म० प्र०)

प्राक्कथन

गंगा पापं शशि तापं दैन्य कल्पतरूस्तथा ।
पापं तापं व दैन्यं च घ्नन्ति सन्तो महात्मनः॥

भागीरथी गंगा के अन्दर पापों को नष्ट करने की शक्ति है । चन्द्रमा में तापों को और कल्पतरू में दैन्यता को निवारण करने की क्षमता रहती है । किसी एक में तीनों को नष्ट करने की क्षमता नहीं है । यदि है तो वह संत महापुरूषों के सिवाय दूसरे में नही है । पाप, ताप और दैन्यता को संत ही समूल से नष्ट कर सकते हैं ।

महामति श्री प्राणनाथ जी फरमाते हैं कि :-

जेंणे दरसने नेत्र ठरे, अने बचन कहे ठरे अंग ।
अनेक विघन जो उपजे, पण मूकिए नहीं साथ संग ॥

जिनके दर्शनों से नयन शीतल हो और वचनों को श्रवण कर मन और काया के पाप मिट जाए । ऐसे साधु पुरूष मिल जाएं तो करोड़ों विध्न पड़ने पर भी उनकी संगत का लाभ नहीं छोड़ना चाहिए ।

ऐसे संत महापुरूष धरिणी पर यदा कदा ही जन्म लेते हैं । जिनमे उपर्युक्त गुण विद्यमान हो । संत शिरोमणि श्री जवाहर दास जी महाराज ऐसे ही महापुरूष हुए हैं । आप ने अनन्त विभूषित श्री विजयाभिनन्द बुद्धनिष्कलकं महामति श्री प्राणनाथ जी (१६१८-१६९४) प्रणीत श्रीमत्तारतम सागर (श्री मुखवाणी) का गहन अध्ययन किया और आपकी आत्म-दृष्टि खुल गई । आप ने श्री प्राणनाथ जी के श्री मुखारविन्द से वर्णित श्री परमधाम की अलौकिक लीलाओं और पच्चीस पक्ष की चितवनी की । जीवन पर्यन्त आप ने अक्षरातीत पूर्णब्रह्म श्री कृष्ण जी के दर्शनार्थ घोर तपस्या की और श्रीराजजी की असीम कृपा प्राप्त की । आप श्री मुखवाणी विशारद और चर्चनी सम्राट हुए । आप ने ब्रह्ममुनि परमहंस श्री १०८ बाबा दया राम साहब धाम-करनाल में प्राचीन पावन गादी का संरक्षण दायित्व सम्भाला । आप ने चितवनी करके अपनी आत्म दृष्टि से श्री परमधाम के पच्चीस पक्षों का सूक्ष्म दिग्दर्शन तैयार किया है । आप ने ही श्री परमधाम की वृत्त रचना कर विश्व को अमूल्य निधि प्रदान की है जो अविस्मरणीय है । इतने महान कार्य को लिपिबद्ध करना अति कठिन ही नहीं अपितु असम्भव भी है । आप ने सागर को

गागर में भरने का सराहनीय प्रयास किया है ।

संक्षिप्त जीवनीः महाराज श्री जवाहर दास जी का जन्म बहावल पुर पाकिस्तान के गांव कासिम में प्रतिष्ठित कायस्त चिलाना परिवार में हुआ था । आपके पिताश्री मोती लाल जी और माता श्री जमुनाबाई थी । विप्रो ने श्री मोती लाल जमुनाबाई के नवजात शिशु में ब्रह्मात्मा के लक्षण देखकर आपका नाम जवाहर दास निश्चित् किया । यथागुण तथानाम । मोती से जवाहर का उत्पन्न होना अतिशयोक्ति नहीं है । श्री मोती लाल जमुनाबाई का परिवार धार्मिक था । बालक जवाहर दास धार्मिक संस्कारों से ओत-प्रोत थे । बाल्यकाल से ही आपकी प्रवृत्ति धार्मिक एवं सामाजिक थी । व्यक्तित्व प्रतिभाशाली था । आपका मन सांसारिक वस्तुओं की ओर से विरक्त था । आप का स्वभाव सरल था । आप मृदुभाषी महापुरूष थे । आपमें प्रभु प्राप्ति की लगन अत्यधिक थी । आत्म जागरण के लिए आप नगर-नगर, डगर-डगर पैदल यात्रा करते हुए जिला मिन्टगुमरी के गांव मल्काहांस पहुंचे । वहां आपने ब्रह्ममुनि श्री गोबिन्द दास जी महाराज की शरण में रहकर महामंत्र श्री तारतम प्राप्त किया । इस बीज मंत्र से आपकी आत्म दृष्टि खुल गई और आपके हृदय में प्रकाश की किरणें विकीर्ण हुई ।

आप में पूर्ण ब्रह्म अक्षरातीत श्री कृष्ण के दर्शन की अभिलाषा और तीव्र हो उठी और आप अपने श्री गुरु की आज्ञा से मुक्ति पीठ श्री ५ पद्मावती पुरी धाम की ओर अग्रसर हुए । वहां आप ने ४० वर्षों तक घोर तपस्या की । आप ने वहां रहकर परमहंस श्री मेहर दास जी महाराज की निष्काम सेवा की । महामति प्राणनाथ जी प्रणीत श्री मुखणाणी का गहन अध्ययन किया । फलस्वरूप आपको श्री परमधाम के पच्चीस पक्ष दिखाई देने लगे ।

परमहंस श्री मेहरदास जी महाराज की कृपा प्रसाद पाकर आप धर्म प्रचार और महामति प्राणनाथ जी के दिव्य संदेश ''सुख शीतल करू संसार'' को जन-जन तक पहुंचाने के लिए अभियान पर निकल पड़े । देश विभाजन के पश्चात आप जागनी संदेश देते हुए करनाल पधारें । उस समय पंजाब-मल्काहांस धाम स्वरूप करनाल में धार्मिक स्थान स्थापित हो चुका था । श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर का निर्माण प्रारम्भ हो चुका था । आप उस समय के गादीपति महाराज श्री मुरली दास जी के सानिध्य में आए और निष्ठावद्ध सेवा में लीन हो गए । कालान्तर आप महाराज श्री मुरलीदास जी के उत्तराधिकारी बनाए गए । आप श्री मुखवाणी वाचन और

अध्ययन में पूर्णतः सराबोर हो गये । आप श्री परमधाम के पच्चीस पक्ष और वहां की उस नूरी भूमि के कण-कण का वर्णन करने लगे । श्री परमधाम की महिमा शब्दातीत है । उसे लिपिवद्ध करना असम्भव है । लेकिन पूर्णब्रह्म श्री कृष्ण जी की अपार कृपा ने आपको श्री परमधाम की महिमा वर्णन करने की क्षमता प्रदान की । आपने एक वृत्त तैयार की । ३ फरवरी, १९६७ के दिन महाराज श्री मुरली दास जी अपनी नश्वर देह त्याग कर ब्रह्मलीन हुए । इस करनाल धाम का सारा दायित्व आप को सौंपा गया । सन् १९६७ मे वार्षिक महोत्सव में आपको इस स्थान का गादीपति संरक्षक अभिषिक्त किया गया । सन् १९६८ में करनाल का वर्तमान श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर बनकर तैयार हुआ । आप के संरक्षण में दिनांक २३ मार्च, १९६८ के दिन हर्षोल्लास और बड़ी धूम-धाम के साथ श्री प्राणनाथ जी के जयघोष के साथ-साथ श्रीराजजी की सेवा पधराई गई ।

आपने अपने संरक्षण काल मे सर्वप्रथम इस धाम में श्री सुन्दरसाथ के आवास हेतु सुविधाएं जुटाने का संकल्प लिया । आपने साक्षरता की ओर ध्यान दिया और विशेष प्रयत्न कर इस धाम के परिसर में एक विद्यालय आरम्भ किया जो अब श्री कृष्ण प्रणामी पब्लिक स्कूल के नाम प्रसिद्ध है । आप ने जीवन पर्यन्त जनजागरण किया । आप ने नगर-नगर, गांव-गांव और घर-घर जाकर श्री सुन्दरसाथ को श्री मुखवाणी का दिव्य संदेश पहुँचाया । हजारों भूली-भटकी आत्माओं को श्री तारतम मंत्र देकर जागृत किया ।

भारत के सुप्रसिद्ध श्री मुखवाणी एवं चर्चनी विशारद माननीय श्री विन्ध्याचल दास शास्त्री जी ने चर्चनी सम्राट ब्रह्ममुनि परम हंस श्री जवाहर दास जी की इस कृति को आगे पूर्ण कर प्रकाशित करवाने में सार्थक और प्रशंसनीय भूमिका निभाई है । मुझे हर्ष है कि मेरे पूर्व गादीपति महन्त श्री जवाहर दास जी द्वारा लिखित श्री वृत्त के प्रकाशन से उनका स्वपन साकार होगा और पाठक वृंद को लाभ होगा । मै ब्रह्मलीन श्रदेय महाराज श्री जवाहर दास जी को शत-शत प्रणाम करता हूँ । संत श्री विन्ध्याचल दास शास्त्री जी का आभार मानते हुए उनके उज्जवल भविष्य हेतु मंगल कामना करता हूँ ।

हंसराज चिलाना

मुक्तसर (पंजाब)

सम्पादकीय

परम आदरणीय आत्म सम्बन्धी श्री सुन्दरसाथजी हम सभी के जीवन का एक ही लक्ष्य है। श्री राज श्यामा जी व परमधाम को इसी क्षण भगुंर संसार में बैठकर व इसी नश्वर शरीर के द्वारा प्राप्त कर लेवें। यह तभी सम्भव है। जब हम परमधाम के पच्चीस पक्षों का साक्षात्कार किये हुय महापुरूषों की रहनी को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करें। साधना मार्ग पर निरन्तर रूप से चलते रहने से असम्भव कार्य भी सम्भव हो जाते हैं। परमधाम का साक्षात्कार धनी श्री देवचन्द्र जी ने इसी संसार में किया और चर्चा के माध्यम से सुन्दरसाथ को साक्षात्कार करवाते थे। जैसे कि

चौ० अब कहू रे भवन को सुख, जो श्री धनी जी कहे आप मुख ॥

हम समझते हैं कि आज के वैज्ञानिक युग में ये समझना कोई मुश्किल नहीं है। जैसे हम अपने-२ घरों में बैठकर दूरदर्शन (टी.वी.) के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व का कार्य-कलाप देखते हैं। ठीक इसी तरह महापुरूषों ने अपनी आत्मा को जागृत करके इसी संसार में बैठकर तारतम ज्ञान के द्वारा आत्म दृष्टि से परमधाम का साक्षात्कार किया है। हम भी उन महान आत्माओं के चरण चिन्हों पर चलकर यहीं बैठकर आसानी से सूरता के माध्यम से परमधाम के एक-एक दृश्य का नजारा ले सकते हैं। धाम धनी स्वामी श्री प्राणनाथ जी ने श्री मुख वाणी में बहुत विस्तार पूर्वक श्री परिक्रमा ग्रंथ में साकारवत २५ पक्षों का वर्णन किया है। मानों कि गागर में सागर भर दिया है। जिसे पढ़ने व चिन्तन करने से

चौ० इतही बैठे घर जागे धाम, पूर्ण मनोरथ हुए सब काम।

परमहंस महाराज श्री जवाहर दास जी का जीवन बड़ा अनुपम था इन्होंने बड़े कठोर त्याग व सेवा-अध्ययन के उपरान्त अपनी आत्म दृष्टि से श्री परमधाम के २५ पक्षों के गली-गली कूचे-कूचे का वर्णन बड़े विस्तार पूर्वक सरल व सुन्दर ठंग से किया है। इनकी वृत्ति को एक बार समझने से परमधाम के एक-एक दृश्य को आत्म दृष्टि से देखा जा सकता है। जिस संसार को छोड़ना आज हमारे लिये कितना कठिन दिखाई दे रहा है। इसमें रहकर हम कितने दुखी हैं। दुख का कारण यह है कि यहां के ऐश्वर्य भोग-विलास-वैभव व भवनों को देखकर हम अपनी अज्ञानता के कारण इसी को अपना सब कुछ मान बैठे है। और परमधाम के जो हमारे वास्तविक सुख हैं। उन्हें हम भूल बैठे हैं। जब तक हम परमधाम के २५ पक्षों के वास्तविक सुखों नूरमयी इमारतों, बाग-बगीचों, मोहलातों का चिन्तन नहीं करेंगे तब तक हम झूठे सुखों को नहीं छोड़ सकेंगे जब तक असल की पहचान नही होगी तब तक नकल ही असल दिखाई देता है।

चौ० लागोगे जो तुम दुःख को, तो दुःख तुमको लागसी ।
याद करोगे निज सुख को, तो दुःख पाछा भागसी ॥

ज्यों-ज्यों होवे अरस नजीक, खेल त्यों-त्यों हुये दूर ।
यों करते छूटया खेल नजरों, तो रूहें कदम तले हजूर ॥ सिन. २४/१३

नजर खेल से उतरती देखिए, त्यों अरस नजीक नजर ।
यों करते लैल मिटी रूहों, दिन हुआ अर्स फजर ॥ सि. २४/१४

ए खेल झुठा तो छोड़या जाए, जो सत सुख अंग में भराए ।
जब सत सुख देखो केलि, तब झूठा दुःख देओगे ठेलि ॥

सत साईं सो करो विलास, तब टूट जाए झूठी आस ।
ज्यों-ज्यों लेओगे सत सुख, त्यों-त्यों छूटे असत दुख ॥

ज्यों-ज्यों उठे सत सुख के तरंग, त्यों-त्यों उड़े सुपन को संग ।
जब याद आवे सुख अपनो, तब छूटेगो झूठो सुपनो ॥ कि. ७६/१३,१४,१५

इसलिए तो स्वामी श्री प्राणनाथ जी ने श्री ५ पद्मावती पुरी धाम में श्री बंगला जी के अन्दर बैठकर ११ साल तक निरन्तर दिन-रात अपने सुन्दर साथ को२५ पक्षों का चिन्तन करवाया तभी तो सब सुन्दरसाथ संसार छोड़कर स्वामी जी के साथ चल पड़े । एक क्षण की भी देरी नहीं की । इसी तरह हम भी आठ पहर की सेवा के माध्यम से २५ पक्ष व श्री युगल स्वरूप जी का चिन्तन करते रहेंगे तो संसार को छोड़ने में देरी नहीं लगेगी । कुछ सुन्दर साथ का कहना है कि हमें परमधाम को समझने की क्या आवश्यकता है । लेकिन स्वामी जी अपनी वाणी में फुरमातें हैं ।

चौ. निस दिन रंग मोहलन में, साथ श्यामाजी श्याम ।
याद करो सुख सवों अंगों, जो करते आठों जाम ॥

चौकस कर चित दिजिए, आतम को एह धन ।
निमख एक ना छोड़िए, कर मन वाचा करमन ॥

एही अपनी जागनी, जो याद आवे निज सुख ।
इस्क याही सों आवहीं, याही सो होइए सनमुख ॥ परि. ४/५,६,७

श्री राजजी महाराज ने अपने घर की व अपने सुखों की लज्जत देने के लिये ही हमें इस दुःख के खेल में भेजा है । जो परमधाम की आत्मा होगी वो तो इसी नश्वर ब्रह्मांड के अन्दर बैठकर परमधाम की गली-गली कूचा-कूचा में भ्रमण करेगी उनसे परमधाम का कुछ

नही छिपा रहेगा/एक समय की बात है कि श्री बंगला जी में बैठकर स्वामी जी ने श्री लालदास जी से अचानक एक सवाल किया कि हौज कोसर की पाल ठोस है या पोली ? तो वहीं बैठकर उसी समय अपनी सुरता द्वारा फौरन बता दिया कि यह पाल पोली है ।

चौ० अर्श आगे आई कितनी, जाये कर कहा मिली । खु. ५/३२
जोए अर्श के किस तरफ है, किस तरफ हौज अर्श के ॥

जाये पूछो मोमन को, जरे जरे बका की बात ।
देखो अर्श अरवाहों में, महम्मद की सिफात ॥ खु. ५/३४

जोए निकसी किन ठौर से, क्यों कर आगे चली ।
नूर अर्श की गलियां, अर्श अरवा जाने ए ॥ खु. ५/४०

बारीक गलियां अर्श की, मोमन भूलें ना इत ।
अरवा अर्श की रात दिन, याही में खेलत ॥ खु. ५/४१

श्री कुलजम स्वरूप साहेब तो हम सभी सुन्दरसाथ के लिए दर्पण के समान हैं । वास्तव में अपना जीवन क्या है यह उपरोक्त चौपाईयों से स्पष्ट पता चलता है । हम सब सुन्दर साथ को परमधाम पहुंचने के लिए श्री राजश्यामा जी का इश्क ही एक मात्र साधन है । इश्क के बल पर ही हम श्री राजश्यामाजी व परमधाम को पा सकते हैं । एक अंगना को अपने पति के सम्पूर्ण सुख प्राप्त करने लिए पति के इश्क के सिवाए दूसरा कोई साधन नही होता है वह इश्क परमधाम के पच्ची पक्षों तथा श्री राजश्यामा जी का स्वरूप, सिनगार तथा अष्ट प्रहर की लीला चिन्तन करने से ही प्राप्त होता है । संसार का चिन्तन करना ही बन्धन व दुःख का कारण है । इससे छुटकारा पाने के लिए एक ही रास्ता है कि हम अपने घर श्री परमधाम के सुखों को याद करें । जिस प्रकार से अदृश्य वस्तु पर बाण अनुसंधान करने के लिए शब्द भेदी ज्ञान के द्वारा ही कार्य किया जाता है । जैसे पृथ्वी राज चौहान तथा अर्जुन ने किया था उसी प्रकार से परमधाम व श्री राजश्यामाजी के सरूप का वर्णन करके स्वामी जी ने हम सब को शब्द भेदी ज्ञान दिया है परमधाम व श्री राज जी महाराज रूपी लक्ष्य का चिन्तन करते हुए धनी की व सुन्दर साथ सेवा रूपी रहनी से परमधाम पहुंचा जा सकता है । परमधाम का वर्णन तो शब्दातीत है किन्तु सुन्दरसाथ के आत्म जागृति के लिए स्वामी जी ने शब्द में वर्णन किया है -

चौ० अरस मता अपार है, दिल में न आवे बिना सुमार ।
ताथे ल्याऊं बीच हिसाब के, ज्यों रूहें करे विचार ।।

अरस नही सुमार में, सो हक ल्याए मांहे दिल मोमिन ।
बेसुमार ल्याय सुमार में, माहें आवने दिल रूहन ।।

इस ग्रंथ के माध्यम से अपनी सुरता को श्री परमधाम में चिन्तन के द्वारा एकाग्र किया जाता है इसलिए इसका नाम वृत्त रखा गया है । इस वृत्त की सुन्दरसाथ के प्रबल इच्छा को देखकर प्रकाशन किया गया है । महाराज श्री जवाहर दास जी की अप्रकाशित हस्त लिखित मूल वृत जो आप सभी सुन्दरसाथ का अमूल्य धरोहर खजाना छिपा हुआ था उसे जैसे के तैसे ही संपादन करके आपके सेवा में प्रस्तुत कर दिये हैं । इस वृत का संसोधन कार्य महाराज श्री के वृत के मर्मज्ञ सुन्दरसाथ के बिच में किया गया है । यह कार्य बहुत कठिन था किन्तु श्री राजजी व महाराज श्री के कृपा फलस्वरूप आपके समक्ष प्रस्तुत कर सके हैं । नश्वर शरीर रूपी साधन से गल्तियां होना स्वभाविक है अतः किसी प्रकार त्रुटि रह गयी हो तो उसे सुधार कर बांचने की कृपा करेंगे । हम आशा करते हैं कि आप इस महान ग्रंथ के द्वारा आत्म सुख का मार्ग दर्शन अवश्य प्राप्त करेंगे ।

इस ग्रथ के संसोधन व प्रकाशन कार्य में जिन-जिन सुन्दरसाथ ने अमूल्य सेवा का योगदान दिया है उनका हम आभार प्रकट करते हुए कोटान-कोट सप्रेम प्रणाम करतें हैं ।

संयोजक
सम्पादक

सुन्दर साथ की चरणरज
विन्ध्याचल दास शास्त्री
अध्यक्ष
श्री प्राणनाथ सेवा आश्रम गोरखपुर, (उ० प्र०)
(रजि० नं० २२९१) दूरभाष : ३३०७६६

विषय सूची

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
१.	रंगभवन	१
२.	दो सौ एक हांस	१
३.	सिढ़ियां और चाँदे	२
४.	परकोटे व कांगरी	२
५.	बाहरी मन्दिरों की हार	३
६.	परमधाम के हर वस्तु के गुण	३
७.	एक मन्दिर का ब्यान	३
८.	एक मन्दिर की चौड़ाई	४
९.	मध्य की मेहराबे	४
१०.	भीतर के सब दरवाजें	५
११.	चित्रकारी की जोगबाई	५
१२.	बाहरी हार के सब दरवाजे	६
१३.	पूर्व तरफ का झरोखा	६
१४.	बनों ने मिलान किया	७
१५.	झरोखों की सीढ़ियां	७
१६.	झरोखों की गिनती	८
१७.	पूर्व तरफ का गुर्ज	८
१८.	गुर्जों की पश्चिमी दीवार	९
१९.	गुर्जो के दरवाजे	१०
२०.	पूर्व तरफ का छज्जा	१०
२१.	दस मन्दिर हांस के सामने	१०
२२.	चबूतरे के पूर्व तरफ	११
२३.	चबूतरे के दक्षिण की तरफ	११
२४.	चबूतरे के उत्तर तरफ	१२
२५.	चबूतरे के पश्चिम तरफ	१२
२६.	मध्य के दो मन्दिर लम्बे -चौड़े चौक का ब्यान	१३

२७.	मुख्य दरवाजा	१४
२८.	दरवाजे के ऊपर की मेहराब	१५
२९.	चौक के पश्चिम तरफ दीवार का बड़ा झरोखा	१५
३०.	बड़े मन्दिर के भीतर	१६
३१.	दो हार थम्भों की	१६
३२.	दूसरी हार मन्दिरों की	१७
३३.	मेहरावों की गिनती	१७
३४.	दूसरी दो हार थम्भों की	१७
३५.	एक थम्भ का बयान	१८
३६.	हवेलियो के हाँस	१८
३७.	२८ थम्भ का चौक	१९
३८.	पहली रसोई की चौरस हवेली	२०
३९.	पूर्व तरफ की देहलान	२०
४०.	दक्षिण तरफ की देहलान	२०
४१.	उत्तर तरफ की देहलान	२१
४२.	पश्चिम तरफ के मन्दिर	२१
४३.	मन्दिरों व देहलानों की गिनती	२१
४४.	मन्दिर-मन्दिर के चबूतरे	२२
४५.	सीढ़ियों वाला मन्दिर	२३
४६	हवेली के भीतरी थम्भ की हार	२३
४७.	चौरस चबूतरा बीच का	२३
४८.	चौरस हवेली	२४
४९.	चारों चबूतरों पर चौबीस मेहराबें	२५
५०.	चार हवेलियों के कोना पर एक चबूतरा	२५
५१.	चबूतरा पर चौबीस मेहराबे	२६
५२.	गोल हवेली मूल मिलावा	२६
५३.	बाहरी थम्भ	२६

५४.	मन्दिरों की हार	२६
५५.	दो दोरी और कांगरी	२७
५६.	एक मन्दिर के भीतर	२७
५७.	चार चबूतरों पर चौबीस मेहरावे	२८
५८.	भीतर थम्भों की हार	२८
५९.	मन्दिर मेहरावें दो-दो रंग के	२८
६०.	चबूतरा पर थम्भों की हार	२९
६१.	चारों दरवाजों में १६ थम्भ (चबूतरों के)	२९
६२.	एक खाँचा में १२ थम्भ	२९
६३.	थम्भ तथा दरवाजे	३०
६४.	गोल चबूतरा पर गिलम	३०
६५.	सिंघासन मूलमिलावा	३०
६६.	श्री राज श्यामा जी की बैठक	३१
६७.	सखियों की बैठक	३२
६८.	एक खाँचे में	३२
६९.	तीन स्वभाव कैसे पड़े	३३
७०.	नव फिरावा ३६ हारें	३३
७१.	साढ़े छः मन्दिर का हिसाब	३३
७२.	गोल तथा चौरस हवेलियों के आठ फिरावे	३३
७३.	मध्य में नौ चौक	३६
७४.	नव चौक आपस में कैसे मिले	३६
७५.	४ स्तून	३६
७६.	सब जगह रंगभवन में पानी जाता है ।	३६
७७.	डेढ़ चौक	३७
७८.	सिनगार व शयन के मन्दिर	३७
७९.	सबकी एक छात	३८
८०.	सब भोम का एक ही बनक	३८

८१.	दूसरी भोम का ब्यान	३८
८२.	चार मन्दिर के झरोखा पर गुर्ज की बनावट	३९
८३.	भूलवनी मन्दिर	४०
८४.	नव मन्दिर कैसे बढ़े	४१
८५.	३६ मन्दिर की रौंस	४१
८६.	चौसठ मन्दिर का चबूतरा	४१
८७.	एक मन्दिर का ब्यान	४१
८८.	दरवाजों का हिसाब	४२
८९.	खड़ोकली का ब्यान	४२
९०.	खड़ोकली का चबूतरा	४२
९१.	पश्चिम तरफ की रौंस और मन्दिर	४३
९२.	उत्तर तरफ रौंस और मन्दिर	४३
९३.	पूर्व तरफ रौंस और मन्दिर	४४
९४.	दक्षिण तरफ दीवार	४४
९५.	खड़ोकली के मन्दिर	४४
९६.	एक मंदिर का ब्यान	४४
९७.	सब झरोखे	४५
९८.	दरवाजों की गिनती	४५
९९.	खड़ोकली के गुर्ज	४५
१००.	रौंस के उपर पुल	४६
१०१.	खड़ोकली का चेहबच्चा	४६
१०२.	चेहबच्चा की चारों तरफ की रौंस	४६
१०३.	रौंस का बाहरी कठेड़ा	४७
१०४.	भुलवनी की रामत	४७
१०५.	जलचबूतरा तथा चांदे	४७
१०६.	खड़ोकली में झीलना	४८
१०७.	मध्य के चबूतरा पर सिनगार	४८
१०८.	तीसरी भोम	४८

१०९.	चार मंदिर का चबूतरा	४८
११०.	दस मंदिर की देहलान	४९
१११.	दस मंदिर का लम्बा छज्जा	५०
११२.	देहलान और मंदिर कैसे	५१
११३.	चौथी भोम के पूर्व तरफ का छज्जा	५२
११४.	निरत की हवेली	५३
११५.	निरत की हवेली का ब्यान	५४
११६.	मध्य का चबूतरा	५५
११७.	निरत का होना	५५
११८.	पांचवी भोम का ब्यान	५७
११९.	बाहरी दिवार के दरवाजे	४८
१२०.	मध्य का चौक	५८
१२१.	४९ चौकों का ब्यान	५९
१२२.	किनार के २८ चौक	५९
१२३.	चार कोना के चार दोपुड़ा	५९
१२४.	हवेलियों का ब्यान	५९
१२५.	जुड़ाफों का ब्यान	६०
१२६.	एक जुड़ाफे का ब्यान	६१
१२७.	सब मन्दिरों की गिनती	६१
१२८.	(दुसरी विधि) सब मन्दिरों की गिनती	६२
१२९.	सब थम्भों की गिनती	६२
१३०.	बड़े दरवाजों की गिनती	६२
१३१.	गुर्ज और दरवाजे	६३
१३२.	गलियों की गिनती	६३
१३३.	दरवाजों की गिनती	६३
१३४.	दूसरी विधि	६३
१३५.	मेहराबों की गिनती	६३

१३६.	रंग परवाली मन्दिर	६४
१३७.	सैन करने के वास्ते रंगपरवाली में आना	६५
१३८.	छट्ठी भोम की बनक	६७
१३९.	सुखपाल की बनक	६७
१४०.	तखतरवा	६८
१४१.	तखतरवा की बनक	६८
१४२.	सातमी भोम का ब्यान	६९
१४३.	हिंडोलों की बनक	७०
१४४.	आठवीं भोम का ब्यान	७०
१४५.	नवमी भोम का ब्यान	७०
१४६.	चांदों का ब्यान	७१
१४७.	छज्जा चारों तरफ का	७२
१४८.	छज्जा के ऊपर	७२
१४९.	दसमी चांदनी	७२
१५०.	चारों चेहबच्चे	७३
१५१.	आड़े-खड़े चबूतरे	७३
१५२.	एक चबूतरे का ब्यान	७५
१५३.	बगीचों की गिनती	७५
१५४.	एक बगीचे का बयान	७५
१५५.	बड़ी एक नहर के फुहारें	७६
१५६.	सम्पूर्ण फुलवाड़ी	७६
१५७.	सम्पूर्ण नहरें	७७
१५८.	सम्पूर्ण पूलों का ब्यान	७७
१५९.	सम्पूर्ण चेहबच्चे	७७
१६०.	सम्पूर्ण छोटे बगीचे	७७
१६१.	बगीचों की लम्बाई-चौड़ाई	७७
१६२.	सिढ़ियों के उपर मन्दिर	७८
१६३.	बाहरी किनार का चबूतरा	७८

१६४.	२०१ चांदों का ब्यान	७८
१६५.	एक मन्दिर की चौड़ी रौंस	७९
१६६.	मन्दिरों की हार	७९
१६७.	एक मन्दिर का छज्जा	७९
१६८.	एक मन्दिर का ब्यान	७९
१६९.	एक मन्दिर के दरवाजे	८०
१७०.	एक मन्दिर के आठ थम्भ	८०
१७१.	एक मन्दिर में अक्शी मेहराबे	८०
१७२.	दरवाजों की गिनती	८०
१७३.	अक्शी थम्भों की गिनती	८०
१७४.	अक्शी मेहराबों की गिनती	८१
१७५.	पूर्व तरफ दस मन्दिर की देहलान	८१
१७६.	एक मन्दिर की चांदनी	८२
१७७.	देहलान की चांदनी	८२
१७८.	२० गुमटियों के पूर्व तरफ	८३
१७९.	२० गुमटियों के पश्चिम तरफ	८३
१८०.	गुमटियों की गिनती	८३
१८१.	सम्पूर्ण कंगूरों का ब्यान	८४
१८२.	२०१ गुर्जो का ब्यान	८४
१८३.	पूर्णमासी के दिन	८४
१८४.	रंग भवन के पूर्व तरफ ६ बगीचों का ब्यान	८५
१८५.	बगीचों के पश्चिम तरफ रौंस	८६
१८६.	जांम्बू वन का एक बगीचा	८६
१८७.	एक बगीचा के लम्बे दो चबूतरे	८७
१८८.	एक बगीच में आड़े-खड़े पांच चबूतरे	८७
१८९.	एक बगीचा के वृक्ष	८८
१९०.	एक बगीचा के चौक	८८

१९१.	एक बगीचा की नहरें पुल आदि	८९
१९२.	वृक्षों की ऊँचाई	८९
१९३.	पांचों बगीचों की चांदनी	९०
१९४.	नारंगी बगीचा के पश्चिम तरफ	९१
१९५.	लिबोई बगीचा के पश्चिम तरफ	९१
१९६.	केल के पश्चिम तरफ	९२
१९७.	अमृत वन में चांदनी चौक	९२
१९८	चंदनी चौक में दो चबूतरे	९३
१९९.	चांदनी चौक में रेती	९३
२००.	चांदनी चौक के दो चबूतरे	९४
२०१.	चांदनी चौक के दक्षिण तरफ वृक्ष	९४
२०२.	चांदनी चौक के तीन तरफ रौंस	९५
२०३.	चांदनी चौक के पश्चिम दस मन्दिर का चबूतरा	९६
२०४.	चांदनी चौक में मेहराबें	९६
२०५.	चांदनी चौक के पश्चिम तरफ मन्दिर	९७
२१६.	दसमी छात पर मन्दिर गुमटियां	९७
२०७.	चांदनी चौक में गुर्ज और कंगूरे	९७
२०८.	चांदनी चौक मन्दिरों के दरवाजे	९८
२०९.	चांदनी चौक में वृक्ष कमती	९८
२१०.	अमृत वन के दो बगीचे	९८
२११.	बगीचा के चारों तरफ रौंस	९८
२१२.	अमृत वन के चारों तरफ चबूतरा	९९
२१३.	अमृत वन के आड़े पांच चबूतरे	९९
२१४.	अमृत वन के एक बगीचा के वृक्ष	१००
२१५.	अमृत वन के उत्तर तरफ का बगीचा	१००
२१६.	चारों चेहबच्चा रंग भवन की जगह में	१०१

२१७.	रंग भवन की हर दिशा मे १५०० मन्दिर	१०१
२१८.	१२० मन्दिर की जगह चारों चेहबच्चों पर आयी है	१०१
२१९.	अग्नि कोना के चेहबच्चे का ब्यान	१०२
२२०.	अग्नि कोना के चेहबच्चे का पानी	१०२
२२१.	चेहबच्चे के भीतर तरफ के चांदे	१०२
२२२.	चेहबच्चा के बाहरी तरफ के चांदे	१०३
२२३.	रौंस के बाहरी तरफ कठेड़ा	१०४
२२४.	चांदे के चौकों का अन्तर	१०४
२२५.	चबूतरा के पिठोर में जाम्बू के वृक्ष	१०४
२२६.	जांबू और नारंगी की रौंस	१०५
२२७.	चबूतरा के पिठोर में नांरगी के वृक्ष	१०५
२२८.	एक वृक्ष चौकी का चेहबचा पर	१०६
२२९.	चेहबच्चे पर जांम्बू नारंगी का छत्री मण्डल	१०६
२३०.	बटपीपल की चौकी	१०७
२३१.	चांदों का ब्यान	१०७
२३२.	अग्नि तथा नैरित्य कोने से सीढ़ी उतरी	१०८
२३३.	चौक की लम्बाई चौड़ाई	१०८
२३४.	चौकी के आड़े लम्बे चबूतरे	१०८
२३५.	चौकी के खड़े चबूतरे	१०९
२३६.	चबूतरों का ब्यान	१०९
२३७.	चौक का ब्यान	१०९
२३८.	चौक के चारों तरफ	११०
२३९.	चौकी के चेहबच्चे	११०
२४०.	७५ चौंकों में ७५ चबूतरे	११०
२४१.	चौकी के कुल वृक्ष	१११
२४२.	चौकी की वृक्षों की चौकों का ब्यान	११२

२४३.	चौकी की नहरें और पुल	११३
२४४.	चौकों के चेहबच्चे	११३
२४५.	रौसों तथा नहरों का ब्यान	११४
२४६.	हिंडोलों का ब्यान	११४
२४७.	चौकी के चारों तरफों का ब्यान	११४
२४८.	उत्तर के १५ वृक्षों का रंग भवन से मिलान	११५
२४९.	चौकी की पांचवी चंदनी	११६
२५०.	चांदनी के पूर्व तरफ	११६
२५१.	चांदनी के दक्षिण तरफ	११६
२५२.	चांदनी के पश्चिम तरफ	११६
२५३.	चांदनी के उत्तर तरफ	११७
२५४.	नैरित्य कोना का चेहबच्चा	११७
२५५.	एक बट वृक्ष चेहबच्चा पर	११७
२५६.	बड़ोवन के तीन वृक्ष चेहबच्चा पर	११८
२५७.	नैरित्य कोने के चेहबच्चा के साथ नूरबाग	११८
२५८.	नैरित कोने के चेहबच्चा पर फूलबाग के वृक्ष	११९
२५९.	चेहबच्चा पर छत्री मण्डल	११९
२६०.	फूलबाग की लम्बाई-चौड़ाई	१२०
२६१.	फूलबाग के आड़े ११ चबूतरे	१२०
२६२.	फूलबाग की ११ खड़े चबूतरे	१२१
२६३.	फूलबाग के एक चबूतरे का ब्यान	१२१
२६४.	फूलबाग का मन्दिर भर का चौड़ा छज्जा	१२२
२६५.	एक चौक के चारों तरफ का ब्यान	१२२
२६६.	चौक के चारों कोना पर चार चेहबच्चे	१२३
२६७.	एक बगीचा का ब्यान	१२३
२६८.	चौक के आड़े चबूतरे	१२३

२६९.	चौक में खड़े चबूतरे	१२४
२७०.	चौक के चबूतरों का ब्यान	१२४
२७१.	एक बगीचा में नव चेहबच्चे	१२४
२७२.	एक चौक में १६ चौक	१२५
२७३.	एक छोटे चौक का बयान	१२५
२७४.	एक बगीचे की सीढ़ियां	१२६
२७५.	एक बगीचे की रौंसे	१२६
२७६.	फूलबाग के वृक्षों की गिनती	१२७
२७७.	वृक्षों की उंचाई	१२७
२७८.	धाम रौंस के साथ आड़ा चबूतरा	१२८
२७८.	नहरों का ब्यान	१२९
२८०.	पुलों का ब्यान	१३०
१८१.	चेहबच्चों का ब्यान	१३०
२८२.	रौंसों का ब्यान	१३०
२८३.	फुलवाड़ियां	१३१
२८४.	सीढ़ियों का ब्यान	१३२
२८५.	फूलबाग के चारों कोना पर चार चेहबच्चा	१३२
२८६.	फूलबाग के नैरित्य कोना का चेहबच्चा	१३३
२८७.	चेहबच्चा पर बड़ोवन के वृक्ष	१३४
२८८.	बड़ोवन के वृक्ष फूलबाग के तीन तरफ	१३४
२८९.	फूलबाग की तीसरी चांदनी	१३५
२९०.	चांदनी के उत्तर-पश्चिम तथा दक्षिण तरफ	१३५
२९१.	चांदनी के पूर्व तरफ	१३५
२९२.	श्री रंग भवन के वायव्य कोना पर चेहबच्चा	१३६
२९३.	चेहबच्चा के साथ नूरबाग	१३६
२९४.	चेहबच्चा पर फूलबाग के वृक्ष	१३६

२९५.	चेहबच्चा पर बड़ोवन के वृक्ष	१३७
२९६.	वायब्य कोना के उत्तर के चांदा से ईशान कोना तक	१३७
२९७.	चेहबच्चा पर वृक्षों की छत्री मण्डल	१३८
२९८.	नूरबाग	१३८
२९९.	११ खड़े चबूतरे	१३९
३००.	चबूतरों का ब्यान	१३९
३०१.	नूरबाग का. समूह ब्यान	१३९
३०२.	नहरें	१३९
३०३.	पुल	१३९
३०४.	चेहबच्चा	१४०
३०५.	रौंस	१४०
३०६.	फुलवाड़ी	१४०
३०७.	सिढ़ी	१४०
३०८.	फीलपाए	१४१
३०९.	दस खिड़कियां	१४१
३१०.	नूरबाग के चारों तरफ	१४३
३११.	नूरबाग और फूलबाग मे अन्तर	१४३
३१२.	नूरबाग के पश्चिम अन्नवन	१४४
३१३.	लम्बाई	१४४
३१४.	१०० देहुरी	१४४
३१५.	१६०० चौक	१४५
३१६.	नहरें, पुल, चेहबच्चे	१४५
३१७.	रौसें	१४५
३१८.	फुलवाड़ी	१४६
३१९.	सीढ़ियां	१४६
३२०.	अन्नवन के चारों तरफ	१४६

३२१.	अन्नवन और नूरबाग मे अन्तर	१४६
३२२.	दूब - दुलिचा	१४६
३२३.	दूव-दुलीचा का समूह ब्यान	१४७
३२४.	चारों तरफ	१४७
३२५.	पश्चिम की चौगान	१४८
३२६.	चौगान के चारों तरफ़	१४८
३२७.	पांच सौ बगीचे	१४९
३२८.	लाल चबूतरा	१४९
३२९.	लाल चबूतरा की गिलम	१५०
३३०.	सिंघासन व कुर्सियां	१५०
३३१.	उत्तर तरफ के चांदे	१५०
३३२.	पूर्व तरफ का चांदा	१५०
३३३.	लाल चबूतरा के चारों तरफ	१५१
३३४.	बड़ोवन के वृक्षों का ब्यान	१५१
३३५.	वृक्षों के छज्जों का ब्यान	१५२
३३६.	१६०० अखाड़े	१५२
३३७.	हिंडोले	१५३
३३८.	हिडोलों की गिनती	१५३
३३९.	बड़ेवन के चारों तरफ	१५३
३४०.	लाल चबूतरा के उत्तर तरफ बड़ोवन की चादनी	१५४
३४१.	चांदनी पर चार चेहबच्चे	१५४
३४२.	एक चेहबच्चा	१५४
३४३.	चांदनी में नीचे को सीढ़ियां	१५५
३४४.	चांदनी के पश्चिम तरफ	१५५
३४५.	चांदनी के दक्षिण तरफ	१५५
३४६.	चांदनी के पूर्व तरफ	१५६

३४७.	चांदनी के उत्तर तरफ	१५६
३४८.	एक लाख कोस की ऊंचाई	१५६
३४९.	२५० भोम के ऊंचे बड़ोवन के चारों तरफ	१५६
३५०.	२५० भोम बड़ोवन की चांदनी	१५७
३५१.	ताड़वन	१५७
३५२.	खड़े रस्ते	१५७
३५३.	आड़े रस्ते	१५७
३५४.	बगीचा	१५७
३५५.	ईशान कोण का चेहबच्चा	१५९
३५६.	केलवन	१६०
३५७.	मधुवन की हद	१६१
३५८.	मधुवन	१६२
३५९.	महावन	१६३
३६०.	पुखराज के दक्षिण की नहर	१६४
३६१.	केलवन का मूल	१६५
३६२.	मधुवन के पांच बृक्ष	१६६
३६३.	पुखराज	१६६
३६४.	पुखराज की तरहटी	१६७
३६५.	मोहलात और फीलपाए घटे	१६८
३६६.	पांचपेड़	१६९
३६७.	तरहटी की ऊंचाई	१६९
३६८.	पश्चिम तरफ घाटी की तरहटी	१६९
३६९.	गोल चबूतरा	१७०
३७०.	चौरस चबूतरा	१७०
३७१.	चौदह मेहरावें	१७०
३७२.	हजार हांस की मोहलात	१७२

३७३.	एक हवेली	१७४
३७४.	चारों दिशा में	१७४
३७५.	चारों दरवाजों की चाँदनी	१७५
३७६.	चारहार हवेली की चांदनी	१७५
३७७.	आकाशी मोहल	१७५
३७८.	लम्बाई-चौड़ाई का हिसाब	१७६
३७९.	एक हवेली	१७६
३८०.	एक मोहल	१७७
३८१.	आकाशी मोहल की चांदनी	१७८
३८२.	पश्चिम की घाटी	१७९
३८३.	सिढ़ियों का ब्यान	१८०
३८४.	गुम्मट कैसे आए हैं	१८१
३८५.	बंगला की तरहटी	१८२
३८६.	बंगलों का चबूतरा	१८३
३८७.	बंगला की जमीन	१८३
३८८.	एक नहर	१८४
३८९.	एक चेहबच्चा	१८४
३९०.	एक बंगला	१८५
३९१.	एक बंगला की चांदनी	१८६
३९२.	एक बंगला के बगीचे	१८६
३९३.	सब बंगलों की गिनती	१८६
३९४.	बड़ी देहलान	१८७
३९५.	कुण्ड का ब्यान	१८७
३९६.	पुखराजी ताल	१८९
३९७.	पश्चिम तरफ देहलान	१८९
३९८.	पूर्व. की देहलान	१९०

३९९.	चांदनी	१९२
४००.	अधबीच कुण्ड की तरहटी	१९२
४०१.	कुण्ड का चबूतरा	१९३
४०२.	पाँच भोम ऊपर	१९५
४०३.	खास मोहोल	१९६
४०४.	ढपो चबूतरा की तरहटी	१९७
४०५.	मूल कुण्ड़ की तरहटी	१९८
४०६.	मूल कुण्ड से मरोर तक	२००
४०७.	आधी ढपी	२०१
४०८.	मोहोल और चबूतरे	२०१
४०९.	केल का पूल	२०२
४१०.	बड़ोवन के वृक्ष	२०४
४११.	घाटों की देहुरियाँ	२०४
४१२.	देहुरी का बयान	२०५
४१३.	पाट घाट	२०५
४१४.	अक्षर धाम	२०६
४१५.	वन रौंस	२०७
४१६.	केल का बन व घाट	२०७
४१७.	बट का घाट	२०८
४१८.	बट का पुल	२०९
४१९.	पाँच मोहोल चार चबूतरे	२०९
४२०.	९० देहुरियां	२०९
४२१.	श्री यमुना जी की लम्बाई का पूर्व हिसाब	२१०
४२२.	परमधाम की लम्बाई-चौड़ाई का पूर्ण हिसाब	२११
४२३.	कुंञ्ज-निकुंञ्ज	२१२
४२४.	कुंञ्ज मोहल	२१३

४२५.	निकुंज्ज मोहल	२१४
४२६.	हौजकोसर' तालाब	२१४
४२७.	४४ थम्भ जल में	२१५
४२८.	पाल की मोहलात	२१७
४२९.	भीतरी तरफ का बयान	२१८
४३०.	वन रौंस	२१८
४३१.	ढलकती पाल	२१९
४३२.	१६ देहुरी का घाट	२२०
४३३.	सर्व हांस	२२१
४३४.	१२८ देहुरी का बयान	२२२
४३५.	९ देहुरी का घाट	२२३
४३६.	झुण्ड का घाट	२२४
४३७.	१३ देहुरी का घाट	२२५
४३८.	पाल पर वृक्ष	२२६
४३९.	ताल की रौंस	२२६
४४०.	ताल	२२७
४४१.	टापू मोहोल	२२७
४४२.	एक मन्दिर की ब्यान	२२८
४४३.	टापू मोहोल की चाँदनी	२३०
४४४.	रंगों का ब्यान	२३२
४४५.	चौबीस हांस का मोहोल	२३३
४४६.	बड़ा दरवाजा	२३३
४४७.	छट्ठी चांदनी	२३४
४४८.	तालों का ब्यान	२३५
४४९.	जवेरों की नहरें	२३६
४५०.	एक हवेली का बयान	२३७

४५१.	एक मोहोल	२३७
४५२.	बगीचे का ब्यान	२३९
४५३.	आठ पहल की हवेली	२४१
४५४.	१६ पहल की हवेली	२४१
४५५.	३२ पहल की हवेली	२४१
४५६.	६४ पहल की हवेली	२४२
४५७.	मानिक पहाड़	२४२
४५८.	बड़े दरवाजे का ब्यान	२४३
४५९.	एक हवेली	२४५
४६०.	एक मोहोल का ब्यान	२४६
४६१.	एक मन्दिर का ब्यान	२४७
४६२.	एक कोठरी	२४८
४६३.	एक हवेली के चबूतरे	२४८
४६४.	मानिक पहाड़ की एक हवेली	२४९
४६५.	मानिक मोहल	२५०
४६६.	टापू मोहल	२५२
४६७.	मानिक पहाड़ की चाँदनी	२५३
४६८.	तालाब	२५५
४६९.	महानद का बयान	२५८
४७०.	ताल के ऊपर	२५९
४७१.	महाबिलन्द हिंड़ोले	२६२
४७२.	बड़ोवन, मधुवन, महावन	२६३
४७३.	वन की मोहोलात	२६४.
४७४.	छोटी रांग (चार हार हवेली)	२६६
४७५.	एक हवेली का बयान	२६७

४७६.	सब हवेलियों की गिनती	२६८
४७७.	चांदनी चौक की गिनती	२६९
४७८.	एक हवेली के वृक्ष	२७०
४७९.	बड़ी रांग	२७१
४८०.	एक हवेली	२७२
४८१.	समुद्र के चारों तरफ	२७५
४८२.	एक समुद्र के टापू	२७७
४८३.	टापू की चाँदनी	२७९
४८४.	एक जमीन का ब्यान	२८०
४८५.	जिमी बन मोहोल की चाँदनी	२८१
४८६.	सागर के चारों तरफ	२८३
४८७.	आठों सागरों की परिक्रमा	२८४
४८८.	नूर सागर	२८४
४८९.	नीर सागर	२८४
४९०.	क्षीर सागर	२८५
४९१.	दधिसागर	२८५
४९२.	घृत सागर	२८६
४९३.	मधुसागर	२८६
४९४.	रस सागर	२८६
४९५.	सर्वरस सागर	२८७
४९६.	रंगो का बदलना	२८८
४९७.	आठों सागरों की उत्पत्ति	२९२
४९८.	दूसरी विधि	२९३
४९९.	अष्ट सागर अर्स दिल भीतर	२९३

श्री राजश्यामा जी सहाय :
श्री परमधाम की बड़ी वृत्त

भूमिका : हे श्री पूर्ण ब्रंह्म अषंण्ड अक्षरातीत अविनासी सर्व शक्तिमान श्री परमधाम वासी मैं आप के श्री परमधाम के पच्चीस पक्षों का ब्यान करना चाहती हूँ परन्तु इस श्री परमधाम का ब्यान संसारी बुद्धि से होगा नही इस वास्ते इस अंगना जवाहर वाई पर दया करके अपना जोशबल, बुद्धी तारतम, हुकम देकर अपने श्री परमधाम का ब्यान आप ही कराइए । तबही ए ब्यान रूपी अनमोल मोती इस कागज रूपी कोठी में बंद हो सकेगें । सो हे सुन्दरसाथ जी इस श्री परमधाम का ब्यान श्री राज जी महाराज तथा श्री श्यामा जी महारानी जी की अपार दया से तथा महा प्रभु श्री देवचन्द्र तथा महाप्रभु श्री प्राणनाथजी की अपार दया से तथा श्री मलकाहांस महाराज श्री गोविंद दास जी की चरन दया से तथा श्री परमहंस महाराज श्रीमेहरदास जी की चरण दया से इस श्री परमधाम का सूक्ष्म ब्यान लिखा जाता है । सो हे श्री सुन्दरसाथ इस ब्यान को आत्म धन जानकर आतम के श्रवन द्वारा से सुनियों तथा अपनी आत्मा को इस लीलाओं से अलग ना करयो ऐसी जवाहर बाई की बार-बार हाथ जोड़कर विनती है सो प्रीत की रीत सेा झाझा सनेह से अविधारजो जी ।

अद्वैत भूमिका का जो परमधाम है । उसको जानने के वास्ते संसार के बड़े-बड़े साधु, महात्मा रिषी, मुनि, देवता, सुकदेव, सनकादिक, ब्रह्मा, विष्णु, महेष, नारायण, सुर, नर तथा वेदों ने कई प्रकार से कई काल तक खोज की परन्तु कोई परमधाम को पा न सका ।

चौपाई

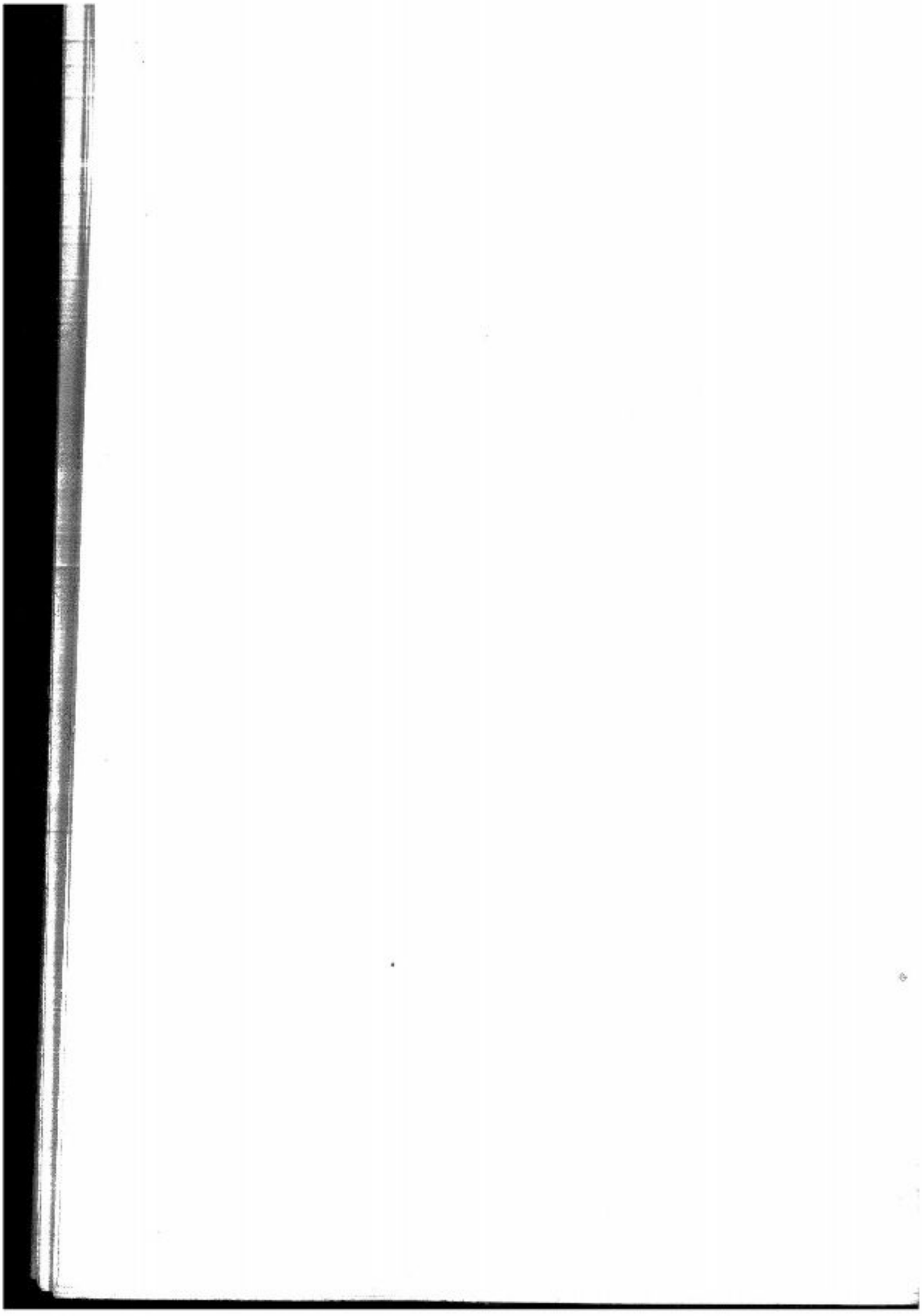
मोहादिक के आदि लों, जेति उपजी सृष्ट ।
तिन सारों ने यों कहा, जो किनहू न देखया दृष्ट ॥

उस परमधाम को धाम धनी श्री प्राणनाथ जी ने अपने जागृतज्ञान (तारतम्य) के द्वारा श्री मुखवाणी में बड़े विस्तार पूर्वक वर्णन किआ है । इस ब्रंह्माण्ड में चौदह लोक है जिसमें से सात लोक नीचे हैं । १-अतल, २-वितल ३-सुतल ४-तलातल ५-महातल ६-रसातल ७-पाताल । जहांपर हम निवास करते हैं । इसको मृत्युलोक कहते हैं । यहां पर सात समुद्र हैं । १-लवण (खारा) समुद्र २-इक्षु समुद्र ३-सुरा समुद्र ४-घृत समुद्र ५-दधि समुद्र, ६-क्षीर समुद्र, ७-मीठा जल का समुद्र है । और सात ही द्वीप १-जम्बू द्विप , २-प्लक्षद्विप ३-शालमलि द्विप ४-कुशद्विप ५-क्रोंचद्विप ६, साकद्विप ७, पुष्कर द्विप है । जो मध्य भाग में जम्बू द्विप है जिसके नव खण्ड हैं । जहां पर हम निवास करते हैं । यह नवां खण्ड है इसको भरत खण्ड कहते हैं । इसके उपर छः लोक हैं । १-भूलोक २-स्वर्ग लोक ३-महरलोक ४-जनलोक ५-तपलोक ६-वैकुण्ठ (सतलोक) इस सतलोक में तीन पुरी हैं १-वैकुण्ठ पुरी २-कैलाश पुरी ३-ब्रंह्मपुरी, इसके ऊपर आठ आवरण हैं । १ पृथ्वी तत्व २-जलतत्व, ३ अग्नि तत्व ४-वायुतत्व ५- आकाश तत्व ६-मन, ७-बुद्धि ८-अंहकार, इसके ऊपर ज्योतिष स्वरूप और ज्ञान शक्ति गायत्री हैं, ऊपर मोहतत्व ऊपर सातशून्य इच्छा शक्ति इसके ऊपर आदि नारायण का महाकारण शरीर है जिसमें तीन लीला होती है १-आदि नारायण की लीला २- वृज लीला ३-रास लीला, इसके ऊपर महाशून्य निराकार है । इस ब्रह्माण्ड में चार द्विप हैं । एक-एक द्विप मैं एक-एक अरव सखियां रहती हैं । मध्य के पुष्कर द्विप में आदि नारायण सखियों सहित निवास करते हैं । यहां तक हद भूमिका मिट जाने वाली है ।

बेहद भूमिका : इस आदि नारायण ब्रह्माण्ड के ऊपर प्रणव ब्रंह्म, रोधिनी शक्ति अनेकों शक्तियों द्वारा बेहद के पहले द्वार पर पहरा देती है । इसके ऊपर कालनिरंजन शक्ति बहत्तर हजार शक्तियों द्वारा वेहद के द्वार पर पहरा देती हैं । इसके उपर महद ब्रह्म है इसके ऊपर अव्याकृत का महाकारण शरीर हैं जिसमें तीन प्रकार की लीला होती है । अव्याकृत की अखण्ड गोलोकीय प्रतिबिंव और अखण्ड रास के प्रतिविम्ब की लिला सदा सर्वदा होती रहती है । इसके ऊपर चिदानंद लहरी है इसके ऊपर नित्य गोलोक है जिसको अखण्ड बृज भी कहा है इसके ऊपर अखण्ड वृन्दावन इसके ऊपर चेतन ब्रंह्म है जहां पर वसरी स्वरूप रहते हैं इसके ऊपर सवलिक बह्म हैं, इसके ऊपर केवल ब्रंह्म है इसके ऊपर नित्य बैकुण्ठ है जिसमें सतस्वरूप लक्ष्मी जी व सखियों सहित निवास करते हैं इस बेहद भूमिका में धाम धनी श्री प्राणनाथ जी ने जीवों को आठ प्रकार के मुक्ति स्थान दिए हैं इस नित्य-वैकुण्ठ के आगे श्री परमधाम का अखंड अविनाशी ब्रह्माण्ड आया है । इस परमधाम के ब्रह्माण्ड में श्री राज जी के सतअंग अक्षर ब्रंह्म तथा लक्ष्मी जी अपनी चौबीस हजार सखियों सहित अक्षर धाम में निवास करते हैं । और निजधाम के पच्चीस पक्षों का व्यान धामधनी श्रीप्राणनाथ जी ने बड़ी युक्ती के साथ अपनी श्री मुख वाणी में वर्णन किए हैं ।

चौपाई- धाम तालाब कुंज्जवन सोहे, माणिक नेहरे बन की जोए ।
पश्चिम चौगान बड़ोवन कहिए, पुखराज सात घाट यमुना जी लहिए ॥

आठ सागर आठ जिमी के, ए पच्चीस पक्ष धाम धनी के ।
वर्णन करना अर्स का, सो सब हिसाब अर्स के ।
गिनती सो भी अर्स की, ए बातें मोमिन समझेंगे ॥
इस परमधाम के वर्णन में किसी प्रकार की शंका नही करना चाहिए नही तो ए अखण्ड धन हाथ से निकल जाएगा ।



श्री राजश्यामा जी प्रणाम

रंगभवन : अखण्ड श्री परमधाम की भूमिका का तो पारावार ही नही है । परन्तु उसमें से केवल २५ पक्षों का सूक्ष्म ब्यान किया गया है । सर्वरस सागर से दधिसागर तक और नीरसागर से मधु सागर तक इसकी लम्बाई-चौड़ाई ५० करोड़ योजन की है और डेढ़ अरब योजन की गृद आई है । इसी भूमि के मध्य भाग से भोम भर का ऊंचा चबूतरा जिसमें २०१ हांस आये हैं और छः हजार मन्दिर की गृर्द और दो हजार मन्दिर की लम्बाई-चौड़ाई आयी है । इसकी किनार पर चारों तरफ कठेड़ा शोभा ले रहा है । कठेड़ा के भीतरी तरफ एक मन्दिर की चौड़ी रौंस आयी है । रौंस की जगह छोड़कर छः हजार मन्दिरों की एक हार घूमी है । इन मन्दिरों के २०१ हांस आये हैं । एक हांस ३० मन्दिर का आया है । दो हांसों के कोने पर ६६ हाथ का लम्बा-चौड़ा गुर्ज आया है । चांदनी चौक में खड़े होकर देखिये तो निजधाम की ऊंचाई जमीन से ११ भोम दिखाई देती है ।

दो सौ एक हांस : रंगभवन के चारों कोनों पर रौंस के साथ लगकर बगीचों की जमीन पर चार-चेहबच्चे सोलह-सोलह हांस के आये हैं । अग्नि कोने, नैरित्य कोने के बीच में दक्षिण तरफ ५० हांस आये हैं । ईशान कोना और अग्नि कोना के बीच पूर्व तरफ ५१ हांस आये हैं और नैरित्य कोना और वायव्य कोना के बीच पश्चिम तरफ ५० हांस आये हैं । पूर्व तरफ जो ५१ हांस आये हैं जिसमें से २४ हांस दक्षिण तरफ और २४ हांस उत्तर तरफ रहे, और मध्य भाग में जो दो हांस आये हैं उन दो हांसों के तीन हांस बने हैं । इन दो हांसों के ६० मन्दिर हुये । मध्य भाग में १० मन्दिर का हांस दरवाजे के वास्ते बनाया गया है और दाएं-बाएं के हांस २५-२५ मन्दिर के आये हैं । बाकी चारों तरफ के हांस ३०-३० मन्दिर के हैं । हर एक मन्दिर १०० हाथ का लम्बा-चौड़ा आया है । इस प्रकार से २०० हांसों की जगहों में २०१ हांस आये हैं और २०१ ही गुर्ज भी आये हैं ।

सीढ़ियां और चांदे : रंग भवन की पूर्व की ओर तीन घाट आये हैं। वे घाट उत्तर से दक्षिण तरफ ५०० मन्दिर के चौड़े, पूर्व से पश्चिम दो हजार दो मन्दिर के लम्बे हैं। मध्य में अमृत बन आया है। उत्तर तरफ अनार का घाट और दक्षिण तरफ जाम्बू बन आया है। अमृत वन के तीसरे हिस्से में रंगभवन के साथ लगकर १६६ मन्दिर का लम्बा-चौड़ा चांदनी चौक आया है। चांदनी चौक के मध्य भाग में पश्चिम तरफ भोम भर की सीढ़ी चबूतरे पर गई है। सीढ़ियों का उतार-चढ़ाव दो मन्दिर का आया है। शुरू में सीढ़ी चालू होती है। एक-एक सीढ़ी एक-एक हाथ की चौड़ी तथा एक हाथ की ऊंची और दो-दो मन्दिर की लम्बी आई है। इस प्रकार पांच सीढ़ियां आई हैं। इस पांचवी सीढ़ी के पश्चिम तरफ साथ लगकर पांच हाथ का चौड़ा और दो मन्दिर का लम्बा चांदा आया है। पांचवी सीढ़ी और चांदे की जमीन बराबर आई है। लेकिन इनकी बनावट अलग-अलग आई है। इसलिए इनको अलग-अलग ब्यान किया है। इस चांदे के पश्चिम तरफ एक हाथ की ऊंचाई में छठी सीढ़ी आई है और दसवीं सीढ़ी के पश्चिम तरफ दूसरा चांदा आया है। इस प्रकार से १०० सीढ़ियां और २० चांदे आये हैं। इन सीढ़ियों और चांदों पर अति सुन्दर गलीचा बिछा हुआ है। गलीचे पर कई प्रकार से चित्रकारी, बेल-बूटे, नकसकारी नगों से की हुई है। सीढ़ियों और चांदो के स्थान पर गलीचे का रंग अलग-अलग आया है। यह गलीचा दो मन्दिर का चौड़ा और तीन मंदिर का लम्बा सीढ़ियों पर बिछा है जिसमें से एक मन्दिर सीढ़ियों की चौड़ाई और एक मन्दिर की ऊंचाई और एक मन्दिर चांदों पर बिछा है।

परकोटा कांगरी : इन सब सीढ़ियों तथा चांदों के किनारे उत्तर-दक्षिण की दीवार पर कांगरी बनी है। एक-एक सीढ़ी पर कमर भर ऊंची और एक हाथ की लम्बी दीवार बनी है। जिस पर अति सुन्दर नगों से जड़ित कांगरी बनी है। इस प्रकार चांदो पर भी कमर भर ऊंची छः हाथ लम्बी दीवार आई

है जिस पर सुन्दर कांगरी बनी है यह पूर्व से पश्चिम की ओर चढ़ती दिखाई देती है । अन्त में बीसवें चांदे से एक सीढ़ी और चढ़के दो मन्दिर के लम्बे-चौड़े चौक में आये । इस चौक के दाएं-बाएं एक-एक चबूतरा चार-चार मन्दिर का लम्बा और दो मन्दिर का चौड़ा एक सीढ़ी ऊंचा शोभा ले रहा है ।

बाहरी मन्दिरों की हार : रंगभवन का जो चबूतरा जमीन से एक भोम ऊंचा है । उसकी बाहरी किनार पर कठेड़ा आया है । आगे अन्दर की ओर एक मन्दिर की रौंस छोडकर ५९९९ मन्दिरों की हार चारों तरफ घूमी है । छः हजार मन्दिरों की जगह तो पूरी है परन्तु पूर्व की तरफ १० मन्दिर के हांस के मध्य भाग में बड़े मुख्य दरवाजे के वास्ते दो मन्दिर का लम्बा और एक मन्दिर का चौड़ा एक ही मन्दिर आया है ।

परमधाम के हर वस्तु के गुण : श्री परमधाम की हर वस्तु में चार-चार गुण पाये जाते हैं । नरमाई, चेतनता, प्रकाश और सुगन्धि । इस वास्ते परमधाम के मोहल, मन्दिर, थम्भ, दीवार, दरवाजे, बाग-बगीचे श्री राजश्यामा जी तथा सखियों के आशिक हैं । इन सबको सुख देने के वास्ते अनेक रूप धारण करते हैं । उनके विचार मात्र से ही लम्बाई-चौड़ाई और ऊंचाई कम ज्यादा होती रहती है । इस वास्ते निश्चय करके हिसाब के अनुसार हर वस्तु की लम्बाई-चौड़ाई तथा ऊंचाई जानना जी ।

एक मन्दिर का ब्यान : पूर्व की ओर एक मन्दिर की बाहरी रौंस वाली दीवार का ब्यान किया जाता है । इस प्रकार सब मन्दिरों के बाहरी दीवार की शोभा जानना जी । एक-एक मन्दिर की हद पर बगली दीवारों के सामने बाहरी तरफ अक्शी थम्भ चार पहल के आये हैं । ये थम्भ सौ-सौ हाथ की दूरी पर ४४ हाथ के ऊंचे आये हैं । इन थम्भों के ऊपर ४४ हाथ की ऊंची अक्शी मेहराव आई है । मेहराब के मध्य भाग में नोक पर लाल माणिक का एक फूल आया है और एक-एक फूल दाएं-बाएं आये हैं । जिनके ऊपर चार हाथ

की जगह में पेसानी, इसके ऊपर चार हाथ की जगह में कांगरी और इसके ऊपर दो हाथ की जगह में टुण्डवा और इसके ऊपर एक हाथ की जगह में तख्ता आया है। इसके ऊपर एक हाथ का मोटा, ३३ हाथ का चौड़ा छज्जा और लम्बा तो चारों तरफ घूमा है। इस प्रकार सौ हाथ की ऊंचाई आई है और छज्जे के ऊपर एक हाथ की ऊंची दूसरे भोम की जमीन आई है। इस प्रकार उपरा-ऊपर आठ भोम तक यही बनावट आई है। नवमी भोम की बनावट तो न्यारी ही किस्म की है।

एक मन्दिर की चौड़ाई : बड़ी अक्शी मेहराव में दो थम्भ अक्शी चार पहल के आये हैं। जिनके बीच में दो थम्भ २२-२२ हाथ के ऊंचे आये हैं और इनके ऊपर २२-२२ हाथ की ऊंची तीन मेहरावें आई हैं। इन मेहरावों के नोक पर लाल माणिक का फूल आया है और इसके दाएं-बाएं भी एक-एक फूल आये हैं। चौड़ाई में यह थम्भ ३३-३३ हाथ के अन्तर पर आये हैं। फिर इन एक-एक थम्भ में दो-दो थम्भ ११-११ हाथ की चौड़ाई में ११-११ हाथ के ऊंचे आये हैं। इन थम्भों पर ११-११ हाथ की ऊंची अक्शी मेहरावें आई हैं। इनके मध्य भाग की अक्शी मेहराव में अक्शी थम्भों के बीच ११-११ हाथ के लम्बें-चौड़े दो दरवाजे आये हैं। इन दो दरवाजों पर ११ हाथ की ऊंची दो अक्शी मेहरावें आई हैं और दाएं-बाएं चारों मेहरावों में अक्शी थम्भों के बीच में सुन्दर नूर की जालियां बनी हैं। इन जालियों के ऊपर ११-११ हाथ की ऊंची अक्शी मेहरावें आई हैं।

मध्य की मेहरावें : मध्य की ३३ हाथ की मेहराव में जो ११-११ हाथ की तीन मेहरावें आई हैं उनकी मध्य की मेहराव में दीवार आई है। जिसके आगे झरोखा बना है। एक मन्दिर की जगह में ११-११ हाथ की नौ मेहरावें आई हैं। जिसके छः मेहरावों मे जालीद्वार दरवाजे और दो दरवाजे खुले मन्दिरों में जाने के लिए हैं। मध्य की मेहराव में दीवार आई है। जिसके आगे

झरोखा आया है और तीन मेहरावें ३३-३३ हाथ की आई हैं और एक मेहराव ४४ हाथ की ऊंची आई है। इस प्रकार कुल १३ मेहरावें एक मन्दिर की बाहरी दीवार पर आई हैं। इसी प्रकार सब मन्दिरों की बाहरी दीवारें आयी हैं।

भीतर के सब दरवाजे : एक मन्दिर के दो पाखें के दरवाजे तथा एक भीतरी तरफ का दरवाजा तथा दूसरी हार मन्दिरों के सब दरवाजे चौरस और गोल हवेलियों के सब दरवाजे, पंच मोहलों तथा नौ चौकों के दरवाजें इसी प्रकार से आये हैं। ४४ हाथ के ऊंचे दो अक्शी थम्भों पर ४४ हाथ की अक्शी मेहराव जिसकी नोक पर लाल माणिक का एक फूल आया है। इसके ऊपर दांए-बांए भी एक-एक फूल आया है। इसके ऊपर बारह हाथ की जगह में कांगरी, फूल, बेल-बूटे, पशु-पक्षी सब चित्रकारी बनी है। उस अक्शी मेहराव में दो अक्शी थम्भ ३३-३३ हाथ के जिन पर ३३-३३ हाथ की तीन मेहरावें आई हैं। मध्य की मेहराव में ३३ हाथ का लम्बा और ३० हाथ का ऊंचा दरवाजा आया है। जिसपर ३३ हाथ की मेहरव आई है। दाएं-बाएं दीवार पर थम्भों का अक्स आया है। जिसपर ११-११ हाथ के थम्भ के ऊपर ११-११ हाथ की मेहरावें शोभा ले रही है भीतर तरफ की हवेलियां अन्दर की तरफ छोटी होती गई हैं। इसी प्रकार से दरवाजे भी छोटे होते गये हैं।

चित्रकारी की जोगवाई : दीवारों, थम्भों, दरवाजों पर सब जगह अनेक प्रकार के पशु-पक्षी, जानवर, वृक्ष, फल-फूल आदि सब प्रकार की चित्रकारी बनी है। यदि सखियां रंगभवन के अन्दर ही अन्दर सवारी करने का विचार करती हैं तो चित्रकारी के हाथी, घोड़े, बाघ, शेर आदि जीनों के सहित सुसज्जित हो के आते हैं और नये-नये प्रकार की बोली बोलते हैं। सखियां उन्हीं पर सवारी करके अनेक प्रकार के खेल तमाशे करती हैं तथा चित्रकारी के वृक्षों से फल-फूल तोड़कर खाती हैं और सुन्दर सुगन्धि देती है। परन्तु दीवारों पर

ज्यों के त्यों बने रहते हैं । उस परमधाम की लीलायें विचित्र प्रकार की हैं । कहां तक वर्णन किया जाये, ये लीला बेशुमार है ।

बाहरी हार के सब दरवाजे : बाहरी हार के एक मन्दिर के देखने में पांच दरवाजे आये हैं । परन्तु हिसाब में चार ही हैं । क्योंकि पांखे वाला दरवाजा दोनों मन्दिर में काम आता है । इसलिए सुमार में एक ही दरवाजा गिना जायेगा । दो दरवाजे बाहरी दीवार के एक दरवाजा भीतरी तरफ का और आधा-आधा दरवाजा दोनों बगली दीवारों का लिया जायेगा । जिससे सुमार में चार दरवाजे हुए । तब कुल ५९९९ मन्दिरों के दरवाजे २३९९५ हुए, क्योंकि बड़ा दरवाजा दो मन्दिर का एक ही आया है और उत्तर तरफ वायव्य कोण से ईशान कोण की ओर लाल चबूतरे पर १२०० मन्दिरों के १२०० दरवाजे बढ़ गये । वहां पर एक-एक मन्दिर में बाहरी दीवार पर तीन-तीन दरवाजे आये हैं । झरोखे नही आये हैं । इस तरह सब दरवाजे २५१९५ हुये ।

पूर्व तरफ का झरोखा : ११-११ हाथ के अक्शी थम्भों पर जो नौ मेहरावें आई हैं । उसकी मध्य की मेहराव में जहां दीवार आई है उस दीवार के साथ लगता हुआ जमीन से २२ हाथ की ऊंचाई पर एक झरोखा आया है । यह झरोखा उत्तर से दक्षिण तरफ ११ हाथ का लम्बा और पश्चिम से पूर्व की तरफ ५ हाथ का चौड़ा दीवार से बाहर चांदनी चौक की तरफ निकला हुआ है । यह रौंस से २२ हाथ की ऊंचाई पर शोभा ले रहा है । इस झरोखे में चार थम्भ आये हैं जिसमें दो खुले पूर्व तरफ और दो अक्शी पश्चिम तरफ दीवार पर आये हैं । इन सब थम्भों की ऊंचाई ५-५ हाथ की आई है । इन चार थम्भों के ऊपर चार मेहरावें आई हैं जिसमें एक मेहराब दीवार की तरफ की अक्शी और तीन मेहराव खुली आई हैं । जो अक्शी मेहराव आई है उसमें अक्शी थम्भों के मध्य पांच हाथ का चौड़ा और पांच हाथ का ऊंचा दरवाजा

आया है इस दरवाजे के दाएं-बाएं तीन-तीन हाथ की जगह बाकी बच गई है। एक मेहराव पूर्व की तरफ और एक-एक उत्तर-दक्षिण तरफ खुली मेहराव आई है।

वनों ने मिलान किया : उन झरोखों की मेहरावों मे कठेड़ा नही आया है। क्योंकि पूर्व की तरफ अनार, अमृत और जाम्बू के वृक्षों की डालियां झरोखों के साथ-साथ इसी के सूत में दीवार के साथ आकर लगी हैं। केवल चांदनी चौक के स्थान पर वृक्ष नहीं आये हैं। वहां पर १० मन्दिर के हांस से दाएं-बाएं ७८-७८ मन्दिरों के झरोखों के दक्षिण व पूर्व तथा उत्तर तरफ कठेड़ा आया है और बाकी सब मन्दिरों के आगे रौंस पर खड़े होकर देखो तो २२ हाथ ऊपर वनों के वृक्षों ने आकर छत्री मण्डल बांधा है। रौंस से झरोखे, थम्भ, मेहरावें कुछ दिखाई नही देते हैं। इन तीनों घाटों के वृक्षों की पहली छत्त रौंस से २२ हाथ की ऊंचाई पर आई है और वनों की दूसरी छत्त ७८ हाथ की ऊंची रंगभवन की दूसरी भोम का जो छज्जा आया है उसके साथ आकर लगा है। झरोखों से निकलकर वन की दूसरी भोम में आकर ९५ हाथ आगे चलकर २२ सीढ़ी नीचे उतरकर दूसरी भोम से होते हुए जहां चाहो जा सकते हो। सिर्फ पहली हार वृक्षों की ऊंचाई १२२ हाथ की आई है। बाकी वृक्षों की ऊंचाई १०० हाथ की आई है।

झरोखों की सीढ़ियां : हर मन्दिर के मध्य भाग में जो ११-११ हाथ की दीवार बाहरी रौंस पर आई है उस दीवार के भीतर मन्दिर तरफ मध्य भाग में एक दरवाजा पांच हाथ लम्बा-चौड़ा आया है। इस दीवार के अन्दर गोलाई में होकर २२ हाथ ऊंचाई में सीढ़ियां ऊपर को चढ़ी हैं। तब ये सीढ़ियां चढ़कर ऊपर के पांच हाथ के लम्बे-चौड़े दरवाजे से होकर झरोखों में आकर पांच हाथ की जगह झरोखें की पूर्व मेहराव से निकलकर वन की दूसरी भोम में जाईये। दूसरी भोम से लेकर आठवीं भोम तक झरोखें रौंस से कमर भर ऊंचे आये हैं। यानि मन्दिरों की जमीन से तीन सीढ़ी ऊंचे आये हैं। हर एक

मन्दिर की दीवार में पांच हाथ का लम्बा-चौड़ा एक दरवाजा आया है आगे दीवार में तीन सीढ़ियां ऊपर की ओर चढ़ी । उन सीढ़ियों के ऊपर दीवार के बाहरी तरफ पांच हाथ का लम्बा-चौड़ा एक दरवाजा आया है । ये दोनों दरवाजे और सीढ़ियां दीवार की मोटाई में ही आई हैं । ऊपर के दरवाजे से निकलकर झरोखे में जाइये । इन झरोखों के उत्तर, दक्षिण और पूर्व की ओर थम्भों के बीच कठेड़ा शोभा ले रहा है । नौंवी भोम का झरोखा न्यारे ही किस्म का है । जिसका ब्यान आगे चलकर किया जायेगा ।

झरोखों की गिनती : इस पहली भोम के बाहरी तरफ के सब झरोखें ५९९९ होने चाहिये । परन्तु उत्तर की तरफ लाल चबूतरे के मन्दिरों में १२०० झरोखे नही आये हैं और पूर्व तरफ १० मन्दिर के हांस के सामने नौ झरोखे नही हैं । तब सब झरोखे ४७९० हुये । दूसरी भोम के ५९९० झरोखे हुए और तीन झरोखे पूर्व तरफ १० मन्दिर के हांस में आये हैं । एक झरोखा मुख्य दरवाजे के ऊपर और दो दाएं-बाएं चार-चार मन्दिर के लम्बे दो-दो मन्दिर के चौड़े आये हैं । इस प्रकार सब झरोखे ५९९३ हुये और तीसरी भोम में सब झरोखे ५९९१ आये हैं । १० मन्दिर के हांस के सामने दस मन्दिर का लम्बा और दो मन्दिर का चौड़ा एक ही झरोखा आया है । तीसरी भोम से आठवीं भोम तक ५९९१ ही झरोखे आये हैं ।

पूर्व तरफ का गुर्ज : रंगभवन की दीवार के साथ लगकर बाहरी रौंस पर २०१ हांसो में २०१ गुर्ज आये हैं । पूर्व तरफ के एक गुर्ज का ब्यान किया जाता है इसी प्रकार सब गुर्जों को जानना चाहिए । एक गुर्ज दो हासों के मध्य में जहां कोने पर ३३-३३ हाथ की दाएं-बाएं में जो मेहराव आई हैं उन मेहरावों में एक मेहराव एक मन्दिर की और दूसरी मेहराव दूसरे मन्दिर की लेकर ६६ हाथ का लम्बा-चौड़ा चौरस गुर्ज आया है । इस गुर्ज में पांच दरवाजे आये हैं । पूर्व तरफ दीवार में ४४ हाथ के ऊंचे दो अक्शी थम्भ

आए हैं । इनका अन्तर एक थम्भ से दूसरे थम्भ तक ६६ हाथ का आया है इन थम्भों के ऊपर ४४ हाथ की ऊंची एक अक्शी मेहराव आयी है । इसके ऊपर तीन फूल, पेसानी, टुण्डवा, कांगरी सब मन्दिरों के बनक जैसी आई है । इन थम्भों के बीच मे दो थम्भ २२-२२ हाथ के अक्शी आये हैं इनके ऊपर २२-२२ हाथ की ऊंची तीन मेहराबें अक्शी आई हैं । मध्य के मेहराब में २२ हाथ का लम्बा-चौड़ा दरवाजा आया है और दाएं-बाएं अक्शी थम्भों के बीच में जालीदार दो दरवाजे आये हैं । इसी प्रकार की बनक उत्तर और दक्षिण की दीवार में आई हैं । इस प्रकार तीनों दिशाओं में तीन दरवाजे हुए । पश्चिम की दीवार में दो दरवाजे आये हैं । जिनका ब्यान इस प्रकार है ।

गुर्जों की पश्चिमी दीवार : पश्चिमी तरफ की दीवार में दो अक्शी मेहरावें ३३ हाथ की दिखाई दे रही हैं । फिर एक-एक मेहराव में ११-११ हाथ की तीन मेहरावें अक्शी थम्भों पर आयी हैं । इस प्रकार से ११-११ हाथ की मेहरावें आयी हैं । चार मेहराव में जालीदार दरवाजे दोनों मन्दिरों के दिखाई दे रहे हैं । इनके ऊपर अक्शी मेहरावों की कमाने तीसरे हिस्से में दिखाई दे रही हैं । ये दोनों दरवाजे मन्दिरों के थे । परन्तु गुर्जों के सामने आने से गुर्जों के दरवाजे कहे जाते हैं । गुर्जों के बाहरी तरफ ऊपर ३३-३३ हाथ का छज्जा पूर्व, उत्तर और दक्षिण में तीनों तरफ घूमा है । यहां पर तीसरी भोम का छज्जा नहीं दिखाई देगा क्योंकि वन की दूसरी भोम की डालियां गुर्जों के दरवाजे के ऊपर अक्शी मेहरावों के साथ आकर लगी हैं । वन की तीसरी चांदनी गुर्जों के छज्जों के साथ आकर लगी हैं । इस छज्जे से एक हाथ ऊंची गुर्जों की छत्त आई है ऊपर के सातों भोम के छज्जे, कठेड़ा वनों की चांदनी से दिखाई देगा । केवल चांदनी चौंक की हद के छः गुर्जों के रौंस से लेकर नवमी भोम के छज्जे तक सब दिखाई देगें क्योंकि उन गुर्जों के सामने बन नही आया है । यह गुर्ज रंगभवन के साथ-साथ ऊपरा-ऊपर चले

गये हैं दस भोम ऊपर जाकर चारों थम्भों पर गुमट आये हैं जिस पर कलश, ध्वजा, पताका फहरा रहे हैं ।

गुर्जों के दरवाजें : इन २०१ गुर्जों के तीनों दीवारों के सब दरवाजे पहली भोम के ६०३ आये हैं और भीतरी दीवार के दरवाजे तो श्री रंगभवन के मन्दिरों के हैं इन गुर्जों के आगे ३३ हाथ की चौड़ी रौंस पश्चिम से पूर्व की तरफ आई है । रौंस की किनार पर कठेड़ा शोभा ले रहा है ।

पूर्व तरफ का छज्जा : श्री रंगभवन की पहली भोम का छजा ३३ हाथ का चौड़ा आया है और लम्बा तो चारों तरफ घूमा है । १० मन्दिर के हांस के सामने यह छज्जा नहीं आया है दूसरी भोम का छज्जा तो बन की तीसरी चांदनी से मिला है इसलिए यहां पर कठेड़ा नही है । पूर्व तरफ के दस मन्दिर के हांस के दाएं-बाएं ७८-७८ मन्दिर पर चांदनी चौक की हद आई है । यहां पर उपरा-ऊपर हर भोमों में छज्जे के आगे कठेड़ा आया है । क्योंकि यहां पर कोई वन नही है ।

दस मन्दिर हांस के सामने : पूर्व तरफ के दस मन्दिर के हांस के दाएं-बाएं की खूबी देखकर फिर दस मन्दिर के हांस के सामने की खूबी को आत्मा देखने लगी । दाएं-बाएं तरफ सब हांसों के सामने एक-एक मन्दिर की रौंस की जगह थी । परन्तु दस मन्दिर के हांस के सामने दो मन्दिर की चौड़ी रौंस आई है । यह एक मन्दिर की चौड़ाई पूर्व से पश्चिम और दस मन्दिर की लम्बी उत्तर से दक्षिण ज्यादा जगह चांदनी चौक से ली है । इस प्रकार से १० मन्दिर की लम्बी दो मन्दिर की चौड़ी जगह हो गई है । मध्य में दो मन्दिर का लम्बा-चौड़ा चौक आया है और दाएं-बाएं एक-एक सीढ़ी ऊंचे चार-चार मन्दिर के लम्बे और दो मन्दिर के चौड़े दोनों तरफ दो चबूतरे आये हैं । दक्षिण तरफ के चबूतरे का ब्यान किया जाता है । इसी तरह उत्तर तरफ के चबूतरे का ब्यान जानना जी ।

चबूतरे के पूर्व तरफ : यह चबूतरे चार मन्दिर के लम्बे उत्तर से दक्षिण और दो मन्दिर के चौड़े पूर्व से पश्चिम एक सीढ़ी ऊंचे आये हैं। इस चबूतरे पर पांच थम्भ खूले मन्दिर-मन्दिर के अन्तर पर पूर्व तरफ आये हैं ये थम्भ ४३ हाथ के ऊंचे आये हैं। क्योंकि एक हाथ की जगह नीचे चबूतरे में आई है। इस प्रकार ४४ हाथ की ऊंचाई हुई। दो मन्दिर के चौक के साथ लगता हुआ पहला थम्भ हीरे का (सफेद) दूसरा माणिक (लाल) तीसरा पुखराज (पीला) चौथा पाच का (हरा) पांचवा नीलवी (नीला) रंग के आये हैं इन थम्भों के ऊपर ४४ हाथ की ऊंची मेहराव आई है। एक-एक मेहराव पर तीन-तीन फूल आये हैं। इसके ऊपर १६ हाथ की जगह में अनेक प्रकार की चित्रकारी आई है १२ हाथ की जगह मन्दिर की बाकी थी परन्तु इस चबूतरे पर दूसरी भोम की छत्त कमर भर ऊंची आई है। मन्दिरों की जमीन कमर भर इस चबूतरे से नीची आई है। एक हाथ की जगह इस छज्जे में आने से चार हाथ की जगह बढ़ गई है। इस प्रकार १६ हाथ की जगह में चित्रकारी आई है। हर एक मेहराब दो-दो रंग की आई है। आधी मेहराब एक थम्भ के रंग की आधी मेहराब दूसरे थम्भ के रंग की आई है। इन थम्भों के बीच में कठेड़ा आया है। इन्ही पांच थम्भों के सामने पश्चिम तरफ दो मन्दिर की दूरी पर दीवार में पांच थम्भ अक्शी आये हैं। जिन पर चार मेहरावें अक्शी आई हैं। यह मेहराबें भी दो-दो रंग की आई हैं। पूर्व तरफ की मेहराब व थम्भ खुले आये हैं।

चबूतरे के दक्षिण तरफ : चबूतरे के दक्षिण तरफ के कोने वाले नीलवी के थम्भ से पश्चिम तरफ एक मन्दिर की जगह में सुन्दर कठेड़ा है। इसके आगे ३३ हाथ की जगह में कठेड़ा नही आया है। क्योंकि यहां से एक सीढ़ी नीचे रौंस पर चढ़ने-उतरने की जगह है, इसके आगे ६६ हाथ की जगह गुर्ज ने घेर ली है इस गुर्ज के पूर्व तरफ के दरवाजे के मध्य भाग पर नीलवी के थम्भ का अक्श आया है। यदि दरवाजा खुल जाये तो २२ हाथ का ऊंचा

थम्भ नहीं दिखाई देगा । अगर दरवाजा बंद हो जाये तो पूरा थम्भ दिखाई देगा । इन दोनों नीलवी के थम्भों के ऊपर १३३ हाथ की लम्बी पश्चिम से पूर्व तक एक मेहराव सर्व जोगबाई सहित नीलवी रंग की आई हैं ।

चबूतरा के उत्तर तरफ : चबूतरा के उत्तर तरफ जो दो मन्दिर की जगह है तिनके मध्य भाग में ५० हाथ की जगह में दो मन्दिर के लम्बे-चौड़े चौक में आने-जाने का रास्ता है । इसके दाएं-बाएं ७५-७५ हाथ में सुन्दर कठेड़ा आया है । दो मन्दिर की दूरी पर दाएं-बाएं दो थम्भ हीरा के आये हैं । सो ये मेहराब हीरा के दो मन्दिर की चौड़ी पश्चिम से पूर्व और चबूतरा की जमीन से ८८ हाथ की ऊंची सर्व जोगबाई सहित आई है ।

चबूतरा के पश्चिम तरफ : चबूतरा के पश्चिम तरफ चार मेहरावें अक्शी जो पांच अक्शी थम्भों पर आई है । वे सब मेहंरावें दो-दो रंग की आई हैं । फिर एक-एक मेहराव में अक्शी थम्भों पर तीन-तीन अक्शी मेहरावें आई हैं । फिर एक-एक मेहराव में तीन-तीन मेहरावें आने से एक बड़ी मेहराव में नौ मेहरावें आई हैं । एक मन्दिर में दो दरवाजे खुले और छः दरवाजे जालीदार मध्य में अक्श पहले ब्यान के मुताबिक आया है । इन दरवाजों से निकलकर दीवार की मोटाई में होकर आगे एक सीढ़ी नीचे उतर कर मन्दिर की जमीन पर जाइये । इन सभी मेहरावों का रंग लाल है । सो इसी प्रकार से चारों मन्दिर जानना जी । पाच और नीलवी की जो अक्शी मेहराव आई है सो ३३ हाथ गुर्ज पर और ६६ हाथ मन्दिर पर आई है । दोनों मिलाने से एक मेहराव एक मन्दिर की बनती है । सो इस मेहराव में दो मेहराव एक ३३, एक ६६ हाथ की चौड़ी दीवार में आई है और तीसरी दक्षिण तरफ की मेहराव जो ३३ हाथ की है गुर्ज ने दबा ली है । गुर्ज का दरवाजा २२ हाथ का ऊंचा आया है सो आधा दरवाजा खुला और २२ हाथ का जालीदार दरवाजा इस चबूतरा के सामने आया है । बाकी ११ हाथ का आधा दरवाजा खुला

२२ हाथ का जालीदार दरवाजा रौंस पर आया है । चबूतरा की छत्त १०४ हाथ की ऊंची आई है इस पर नूरमयी चन्द्रवा तना है । जिसके चारों तरफ मोतियों की झालर लटक रही है । नीचे चबूतरा के फर्श पर सुन्दर नूर मई गिलम बिछी है । इस गिलम पर सिंहासन, कुर्सियां धरी हैं । श्री राज श्यामा जी पूर्व मुंह करके सिंहासन पर विराजमान होकर और सखियां दाएं-बाएं बैठकर जो पशु-पक्षी जानवर खेल तमाशा करते हैं उसको देखते हैं । इस चबूतरा की दो भोम आयी है । दूसरी भोम को झरोखा करके कहा गया है । इसी प्रकार से उत्तर वाले चबूतरे का ब्यान जानना जी । इन दोनों चबूतरों के बीच में दूसरी भोम की जगह में छत्त नही आई है । तीसरी भोम में दोनों चबूतरा पर तथा बीच के चौक पर एक ही छत्त आई है ।

मध्य के दो मन्दिर के लम्बे-चौड़े चौक का ब्यान : दोनों चबूतरों के बीच में दो मन्दिर का लम्बा-चौड़ा एक सीढ़ी नीचा २०४ हाथ का ऊंचा ये चौक आया है । इस चौक के उत्तर तरफ तथा दक्षिण तरफ एक-एक चबूतरा आया है । सो इस चबूतरा के दूसरी भोम तक जो एक-एक अक्शी थम्भ हीरा के ८७ हाथ के ऊंचे गये हैं । यही थम्भ नीचे के भोम के हैं । ये चौक दो मन्दिर का लम्बा-चौड़ा है । इस कारण से इसकी जोगबाई दूसरे मन्दिर से दुगुनी आवेगी । ये अक्शी थम्भ दोनों भोमों में काम करता है । इस कारण इसकी ऊंचाई चाहिये तो ८८ हाथ की ऊंची परन्तु एक-एक हाथ की जगह चबूतरे ने घेर ली है । इन दोनों थम्भों के ऊपर ८८ हाथ की ऊंची अक्शी मेहराव आई है । चौक के जमीन से १७६ हाथ तक आई है । जो बड़े दरवाजे पर झरोखा तथा जालीदार सब आये हैं । सो नीचे से १०४ और १०० हाथ की ऊंचाई पर आये हैं । इस मेहराव की नोक पर एक लाल माणिक का फूल तथा एक-एक दाएं-बाएं फूल शोभा दे रहा है । अब इसके ऊपर २४ हाथ की जगह में पेसानी, चित्रकारी, टुंडवा, तख्त अनेक प्रकार के नक्स

बेल-बुटों की शोभा हो रही है जिस प्रकार बादशाही दरवाजों पर शोभा होती है। उससे कोट गुना अधिक शोभा को पा रहा है। मेहराव के ऊपर २४ हाथ की जगह होनी चाहिए परन्तु इस दीवार की शोभा दूसरी भोम की छत्त से तीन हाथ की ऊंचाई पर गई है। एक हाथ की जगह दूसरे भोम के छज्जा की जमीन एक हाथ नीची आनी चाहिए थी सो नहीं आया है। इस प्रकार से चार हाथ की जगह बढ़ गई है। इस चौक के दक्षिण तरफ दूसरी भोम के छज्जा का कठेड़ा दिखाई देता है। दूसरी भोम के थम्भ वही हैं जो नीचे की भोम से उठे हैं। ये हीरा के थम्भ ८८ हाथ ऊंचे गये हैं। चौक के चारों तरफ हीरा के दो खुले और दो अक्शी थम्भ ८८-८८ हाथ ऊंचे गये हैं। यह देखने मे आठ होंगे क्योंकि दाएं-बाएं चबूतरों की दो-दो भोम आई है। इसलिए चौक की ऊंचाई दो भोम की एक ही भोम की आई है। इसलिए गिनती में आठ और देखने में चार होंगे। इसी प्रकार उत्तर तरफ भी कठेड़ा दूसरी भोम में आया है।

मुख्य दरवाजा : बड़ी अक्शी मेहराव जो चौक की जमीन से १७६ हाथ की ऊंचाई तक गई है। ८८ हाथ तो अक्शी थम्भ और ८८ हाथ ऊपर अक्शी मेहराव गई है। इसके मध्य भाग में चौक की जमीन से एक सीढ़ी ऊंची लाल रंग की चौखट में दो किवाड़ दरपन रंग के आये हैं। चौखठ ८८ हाथ की लम्बी-चौड़ी है। एक-एक किवाड़ ४३-४३ हाथ का चौड़ा है। आना चाहिए था ४४ हाथ का, परन्तु चौखट ने एक-एक हाथ की जगह दबा ली है। इस किवाड़ में बेनी शोभा को धरे हैं और सड़ अदवानों पर तथा चौखट पर कई प्रकार की नक्सकारी, बेल-बूटे अनेक प्रकार के नगों से बने हैं। ये दरवाजे अपने आप ही समय पर बंद होते हैं और खुलते हैं ये सब चीजें शोभा के वास्ते हैं। दरवाजे के दाएं-बाएं जो ५६-५६ हाथ की जगह अक्शी थम्भों तक आई है वहां पर अनेक प्रकार की चित्रकारी शोभायमान हो रही है।

दरवाजे के ऊपर की मेहराव : यह मेहराव बड़े दरवाजे से शुरू होकर ऊपर केवल १२ हाथ की ऊंचाई तक गई है। यह अक्शी मेहराव ८८ हाथ चौड़ी उत्तर सें दक्षिण तक गई है। एक सिरे से दूसरे सिरे तक १२ हाथ की ऊंची चौखट से बड़ी मेहराव के अन्दर दाएं-बाएं चबूतरे के पहली भोम तक ऊंची, नोक पर लाल माणिक के फूल, दाएं-बाएं भी लाल माणिक के फूल आये हैं बाकी जगह पर अनेक प्रकार की चित्रकारी आयी है।

चौक के पश्चिम तरफ दीवार का बड़ा झरोखा : बड़ी अक्शी मेहराव के दो अक्शी थम्भों में आठ अक्शी थम्भ दूसरी भोम की जमीन पर आये हैं। यह सब थम्भ ११-११ हाथ की बजाय २२-२२ हाथ के ऊंचे आये हैं। क्योंकि यह चौक सब मन्दिरों से दुगुना आया है। इन थम्भों के ऊपर नौ मेहरावें आई हैं। जो २२ हाथ की ऊंची और २२ हाथ की चौड़ी आई है। उन हर एक पर लाल माणिक के तीन-तीन फूल आये हैं। मध्य के मेहराव में दीवार के आगे बाहर पूर्व तरफ झरोखा निकला हुआ है। यह झरोखा २२ हाथ का लम्बा उत्तर से दक्षिण तरफ, और ११ हाथ चौड़ा पूर्व से पश्चिम की तरफ दीवार से बाहर बड़े दरवाजे के छोटी मेहराव से तीन हाथ ऊपर शोभा ले रहा है। जिसके ऊपर पूर्व, उत्तर और दक्षिण तरफ कठेड़ा आया है। इस झरोखा के पूर्व दो थम्भ खुले उत्तर से दक्षिण तरफ २२ हाथ की दूरी पर आए है और दो थम्भ अक्शी दीवार पर आए हैं। यह सब थम्भ ११-११ हाथ की ऊंचाई के हैं। उत्तर-दक्षिण की खुली मेहरावें पूर्व से पश्चिम थम्भों पर आई है। एक मेहराव खुली जो पूर्व के दो थम्भ खुले हैं २२ हाथ की चौड़ी और २२ हाथ की ऊंची थम्भों सहित आई है। इस प्रकार एक अक्शी मेहराव अक्शी थम्भों पर आई है। पश्चिम तरफ दीवार में एक दरवाजा ११ हाथ का लम्बा-चौड़ा आया है। जिसके दाएं-बाएं साढे पांच-२ हाथ की जगह दीवार पर बाकी मेहराव की रह गई है। उस दरवाजे से निकल कर

दूसरी भोम के मन्दिरों में जाइए । यह दोनों दरवाजे दीवार की मोटाई में ही आए हैं । इस झरोखा के दाएं-बाएं की अक्शी मेहरावों में दो जालीदार दरवाजे २२ हाथ के लम्बे-चौड़े है बाकी तीन-तीन मेहरावे दाएं-बाएं तरफ रही । उनकी मध्य वाली मेहराव में २२ हाथ का दरवाजा आया है । जिसके बाहर पूर्व की तरफ कठेड़ा आया है । दरवाजा के दाएं-बाएं दो जालीदार २२-२२ हाथ के आए हैं इन सभी के ऊपर अक्शी मेहरावें शोभा ले रही हैं । इस हांस की सब जोगबाई लाल रंग की है । यह सब शोभा दो मन्दिरों के चौक में देखकर आत्मा अब चौखट को ऊलंघ कर बड़े मन्दिर के अन्दर चली । यह सब शोभा रंगभवन के बाहर तरफ की हुई । अब अंदर देखिए ।

बड़े मन्दिर के भीतर : दो मन्दिर के चौक के पश्चिम तरफ एक हाथ की ऊंची लाल रंग की चौखट को उलंघ कर मन्दिर के भीतर गए तो दो मन्दिर का लम्बा उत्तर से दक्षिण एक मन्दिर का चौड़ा पूर्व से पश्चिम यह मन्दिर आया है । इस मन्दिर के उत्तर-दक्षिण तरफ एक-एक दरवाजा दिखाई दे रहा है और पश्चिम तरफ की दीवार में ८८ हाथ का लम्बा-चौड़ा एक दरवाजा जिस पर १२ हाथ की छोटी अक्शी मेहराव मानिन्द बड़े दरवाजे के आई है । दाएं-बाएं ५६-५६ हाथ की जगह पर अनेक प्रकार की चित्रकारी आई है । इस दरवाजे के भीतरी तरफ एक मन्दिर की जगह छोड़ कर २८ थम्भ का चौक आया है ।

दो हार थम्भों के : बाहरी हार मन्दिरों के भीतरी तरफ एक मन्दिर की दूरी पर एक हार थम्भों ५९९९ की आई है । यह थम्भ हर एक मन्दिर के पांखे की दीवार के सामने आए है । जगह तो ६००० मन्दिरों की आई है, परन्तु २८ थम्भ के चौक के पूर्व मध्य भाग में एक थम्भ नहीं आया है । इन थम्भों से एक मन्दिर की दूरी पर दूसरी एक हार थम्भों की आई है । जो कुल ५९९१ थम्भ है । क्योंकि २८ थम्भ की चौक में ८ थम्भ नही आये हैं । तब दोनों

हारों के थम्भ कुल ११९९० हुए ।

दूसरी हार मन्दिरों की : थम्भों की दूसरी हार के भीतरी तरफ पश्चिम की ओर एक मन्दिर की दूरी पर ५९८८ मन्दिरों की एक हार आई है । जगह तो पूरी ५९९९ मन्दिरों की है परन्तु ११ मन्दिर २८ थम्भ के चौक में कट गए हैं । हर एक मन्दिर में देखने के चार-चार और गिनती के तीन-तीन दरवाजे आए हैं । बाहरी और भीतरी, पूर्व और पश्चिम तरफ वाली दीवार में एक-एक दरवाजा आया है । दोनों पाखों में दो दरवाजे हैं । ये दरवाजे दोनों मन्दिर में जवाब देते हैं । इसलिए गिनती में दो के बजाय एक ही गिना जाएगा । ये सब दरवाजे ३३-३३ हाथ के लम्बे-चौड़े हैं । इन सब पर ३३-३३ हाथ की अक्शी मेहरावें आई हैं । इन सब मन्दिरों में दरवाजे १७९६४ हुए और २८ थम्भ चौक के दाएं-बाएं के मन्दिर के पांखे का दरवाजा एक मन्दिर में काम देता है । इसलिए एक दरवाजा और बढ़ गया तो कुल दरवाजे १७९६५ हुए ।

मेहरावों की गिनती : इन दोनों मन्दिरों के हारों के बीच में दो हारें थम्भों की आई हैं । एक मन्दिर से दूसरे हार मन्दिर तक तीन मेहरावें चौड़ाई तरफ पूर्व से पश्चिम और ४ मेहरावें लम्बाई तरफ उत्तर से दक्षिण आई है । जिसमें से दो मेहरावें अक्शी दोनों मन्दिरों पर और दो मेहरावें खुली थम्भों पर आई है । तब दो मन्दिरों के बीच में एक मन्दिर की चौड़ी तीन मन्दिर की जगह पर सात मेहरावें आई हैं । तब दोनों हार के ११९८७ मन्दिरों के तथा थम्भों के कुल ४१९९३ मेहरावें सब हुई । परन्तु २८ थम्भ के चौक में चौड़ाई तरफ पूर्व से पश्चिम १६ मेहरावें और लम्बाई उत्तर से दक्षिण में १८ मेहरावें कम हो जाने से तब सब मेहरावें ४१९५९ हुई ।

दूसरी दो हारें थम्भों की : दूसरी मन्दिरों के हार के आगे भीतरी तरफ एक मन्दिर की दूरी पर थम्भों की एक हार आई हैं । एक कम ६ हजार आना

चाहिए परन्तु २८ थम्भ के चौक में इस हार के ८ थम्भ कम हो गए हैं। इसलिए इन थम्भों की हार में कुल ५९९१ थम्भ आए हैं। अब इन थम्भों की हार के आगे भीतरी तरफ एक मन्दिर की दूरी पर दूसरी एक हार थम्भों की आई है जो ५९९९ थम्भ हैं। इन्ही थम्भों की हार पर ही २८ थम्भ के चौक के पश्चिम वाले थम्भ आए हैं। यह जगह पूरी ६००० थम्भ की है परन्तु रसोई वाली हवेली के पूर्व देहलान के थम्भों के सामने पश्चिम वाले दस थम्भ आए हैं। तब कुल थम्भ ५९९९ हुए तब दोनों हारों के कुल थम्भ ११९९० हुए।

एक थम्भ का ब्यान : एक थम्भ ४४ हाथ ऊंचा है। जिसमें नीचे चार पहल, आठ पहल, सोलह पहल, आठ पहल, चार पहल आये हैं। जिसके ऊपर ४४ हाथ की ऊंची मेहराव, ऊपर एक फूल लाल माणिक का, दाएं-बाएं भी एक-एक फूल आया है। बारह हाथ की जगह में दीवार में अनेक प्रकार की चित्रकारी शोभा दे रही है।

चौपाई : चार हांस तले थम्भ के, आठ ऊपर तिन।
सोले बीच आठ तिन पर, चार ऊपर इन॥

इसीप्रकार सभी थम्भ आए हैं।

हवेलियों के हांस : २८ थम्भ के चौक के पश्चिम तरफ जो दस थम्भ आए हैं इसी की सामने चारों तरफ थम्भों की हार २८ थम्भों के चौक के दस थम्भों सहित ५९९९ की आई है। इन थम्भों के चौथी हारों की भीतरी तरफ २३१ हांस बने हैं। हर एक हांस २६ मन्दिर का आया है। भीतरी तरफ ६५० मन्दिर की दूरी पर हांस की चौड़ाई ६ ही मन्दिर की रह गई है। शुरू में एक हवेली २३ मन्दिर की, ड़ेढ-२ मंदिर का दाएं-बाएं की गली मिलाने से २६ मन्दिर की हवेली हुई। इस हांस के भीतरी तरफ ३६ हवेली आई है। अंत की हवेली दाएं-बाएं की गली मिलाने से ६ मन्दिर की ही रह गई

है। जैसे-जैसे पहल अंदर छोटे होते जाते हैं वैसे-वैसे हवेली छोटी होती जाती है। २३१ हांसो में २३१ हवेली लम्बाई में चारों तरफ आई है। इन चारों हारों की कुल हवेली ९२४ आई है। दो-दो हवेलियों के बीच में तीन-तीन गलीयां आई है। इन चारों हारों को एक फिरावा कहते हैं। इन चौरस हवेलियों के भीतरी तरफ एक फिरावा में चार गोल हवेली आई है। हर एक हार में २३१ हवेली है। चारों की ९२४ हवेली हुई। इसी प्रकार ९ फिरावा आए हैं। इन २३१ हवेलियों के त्रिपोलिया वाले रास्ते खड़े भीतरी तरफ २८ मन्दिर का चौड़ा जो चौक बगीचा का है उसमें मिले हैं और ३६ हारों में ३५ आड़े रास्ते आए हैं जो परिक्रमा के वास्ते हैं। इन हवेलियों से पहले मुख्य दरवाजे की तरफ २८ थम्भ का चौक आया है।

२८ थम्भ का चौक – पूर्व तरफ दस मन्दिर का लम्बा जो हांस आया है इन मन्दिरों के पश्चिम तरफ रंगभवन के अंदर एक मंदिर की दूरी पर बगली दीवार के सामने उत्तर से दक्षिण दस मन्दिर की जगह पर दस थम्भ आए हैं। इन दस थम्भों की ९ मेहरावें आई हैं। मध्य की मेहराव दो मन्दिर की चौड़ी है और एक मन्दिर की ऊंची है। यह बड़े दरवाजे के सामने आई है। दक्षिण और उत्तर की तरफ चार-चार मेहरावें एक-एक मन्दिर की चौड़ी और एक-एक मन्दिर की ही ऊंची हैं। रसोई की हवेली के पूर्व देहलान के पूर्व तरफ एक मन्दिर की दूरी पर इसी देहलान के थम्भों के सामने दस थम्भ २८ थम्भ के चौक के आये हैं। इन्हों पर मेहरावें मन्दिर-मन्दिर की ऊंचाई पर आई है। इस चौक के दक्षिण तरफ चार थम्भ आये हैं। जिसमें दो थम्भ दूसरी मन्दिर की हार के हद के आये हैं। बाकी एक-एक थम्भ दाएं-बाएं थम्भों की हार दूसरी और तीसरी के आये हैं। इसी प्रकार थम्भ उत्तर तरफ भी आये हैं। इस २८ थम्भ के बीच में दस मन्दिर का लम्बा उत्तर से दक्षिण और पांच मन्दिर का चौड़ा पूर्व से पश्चिम एक चौक बना है। इस चौक पर गिलम बिछी है मध्य में सिंहासन है इस २८ थम्भ के चौक में दूसरी हार

के १२ मन्दिर कटे हैं। इस चौक के उत्तर-दक्षिण तरफ एक-एक मन्दिर की दूरी पर मन्दिरों की दूसरी हार चालू होती है। बाहरी मन्दिरों के भीतरी तरफ पहली हार थम्भों में एक थम्भ हिसाब का कटा है। देखने को पूरे हैं दूसरी हार में नौ थम्भ कटे, देखने में आठ। इसी प्रकार तीसरी हारों के थम्भ कटे हैं। पहली और चौथी हार के थम्भ २८ थम्भ के चौक के पूर्व और पश्चिम तरफ वाली किनार पर आये हैं। चौथी हार में पहली हार की भांति एक थम्भ कटा है। इस वास्ते इस चौक में हिसाब के १८ थम्भ और देखने में १६ थम्भ कटे हैं।

पहली रसोई की चौरस हवेली – २८ थम्भ के चौक के पश्चिम तरफ एक मन्दिर की दूरी पर रसोई की चौक ८८ मन्दिरों की गिर्द और २३ मन्दिर की लम्बी-चौड़ी है। २८ थम्भ के चौक के पश्चिम तरफ नौ मेहरावें आई हैं। उन की मध्य की मेहराव के सामने एक मन्दिर की दूरी पर इस हवेली के पूर्व का मध्य भाग आया है। हवेली के बाहर चारों तरफ १०० थम्भ आये हैं। जिसमें १०० मेहरावें आयी हैं। २८ थम्भ चौक के पश्चिम तरफ दस थम्भ सुमार में आये हैं। इसके भीतर चारों तरफ ८८ मन्दिर की जगह है। जिसमें चार मन्दिर चार कोने में आये हैं। तब हर एक दिशा में २१ मन्दिर रहे। चारों तरफों के कोना सहित सब मन्दिर ८८ हुए।

पूर्व तरफ की देहलान – हवेली के पूर्व ११ मन्दिर की लम्बी एक मन्दिर की चौड़ी देहलान आई है। यहां पर मध्य भाग में देहलान के कारण दरवाजा नहीं आया है। दीवार की जगह पर दस-२ की दो हारें थम्भों की आई हैं। जिसमें नौ मेहरावें आई हैं। एक-२ मेहराव दाएं-बाएं मन्दिर पर आई है। तब दोनों तरफ की २२ मेहरावें हुई। इस देहलान के उत्तर-दक्षिण तरफ पांच-२ मन्दिर आये हैं।

दक्षिण तरफ की देहलान – हवेली के दक्षिण तरफ दोनों कोनों के बीच २१

मन्दिर की जगह आयी है। मध्य भाग में एक मन्दिर का लम्बा-चौड़ा दरवाजा आया है। जिसमें ८८ हाथ का दरवाजा और ऊपर बारह हाथ की छोटी मेहराब मुख्य दरवाजे जैसी आई है। इस मध्य वाले मन्दिर के चार दरवाजे हैं उत्तर-दक्षिण ८८-२ हाथ का दरवाजा लम्बा-चौड़ा और पूर्व पश्चिम तीस-२ हाथ का दरवाजा आया है ऊपर तीन-२ हाथ की छोटी अक्शी मेहराब आई है। इस दरवाजे के पूर्व तरफ १० मन्दिर इस हवेली के अग्नि कोने के मन्दिर तक आये हैं। और पश्चिम तरफ दस मन्दिर की लम्बी एक देहलान नैरित्य कोने के मन्दिर तक आई है इस देहलान के दक्षिण तरफ दीवार में दरवाजे ज्यों के त्यों आये हैं। उत्तर की दीवार की जगह पर बगली दीवार के सामने नौ थम्भ आये हैं। जिसके ऊपर आठ मेहरावें आई हैं। इन मेहरावों के पूर्व तरफ ८८ हाथ का जो दरवाजा है उस पर एक मेहराव आई है। एक मेहराव पश्चिम तरफ के नैरित्य कोने के मन्दिर की तरफ आई है। जिससे १० मेहरावें देहलान पर आई हैं।

उत्तर तरफ की देहलान – जिस प्रकार दक्षिण की देहलान आई है उसी प्रकार उत्तर में भी दो कोनों के बीच के भाग में ८८ हाथ का दरवाजा है। दरवाजे के पश्चिम तरफ दस मन्दिर की देहलान आई है बाहर उत्तर के दीवार के दरवाजें ज्यों के त्यों आये हैं। भीतरी दक्षिण तरफ के दीवार की जगह पर नौ थम्भ आये हैं। जिसमें आठ मेहरावें आई हैं। देहलान के पूर्व तरफ एक मेहराव दरवाजे पर और एक मेहराव देहलान के पश्चिम तरफ मन्दिर पर आई है। दरवाजे के पूर्व तरफ मन्दिर ज्यों के त्यों आये हैं।

पश्चिम तरफ के मन्दिर – हवेली के पश्चिम २१ मन्दिरों के मध्य भाग में ८८ हाथ का लम्बा-चौड़ा दरवाजा आया है। और एक-एक दरवाजा अगल-बगल में ३०-३० हाथ का आया है। जिस पर तीन-२ हाथ की मेहरावें आई है। इस दरवाजे के दाएं-बाएं १०-२ मन्दिर आये हैं।

मन्दिरों और देहलानों की गिनती – इस हवेली के चारों तरफ ५४ मन्दिर

आये हैं। ३१ मन्दिर की तीन देहलान आई हैं। दक्षिण, पश्चिम तथा उत्तर तरफ तीन बड़े दरवाजे आये हैं। इस प्रकार से सब ८८ मन्दिर की हवेली हुई। प्रत्येक मन्दिर के देखने में दरवाजे चार-चार परन्तु गिनती में तीन-तीन आये हैं। ५४ मन्दिर इस हवेली में आये हैं। तीन मन्दिर के तीन दिशा में तीन बड़े दरवाजे आये हैं। इस प्रकार से ५७ मन्दिरों के कुल दरवाजे १७१ हुए। तीन देहलानों के दाएं-बाएं के दरवाजे तीन तब कुल १७४ दरवाजे हुए।

मन्दिर-मन्दिर के चबूतरे : हर एक हवेली के मध्य भाग वाले बड़े दरवाजे के दाएं-बाएं बाहर रौंस पर एक-एक मन्दिर के लम्बे-चौड़े मन्दिर की दीवार के साथ लगकर कमरभर ऊंचे चबूतरे आये हैं। परन्तु उस रसोई के हवेली के पूर्व तरफ देहलान होने के कारण दरवाजे और चबूतरे नही आये हैं। जिससे उत्तर, दक्षिण और पश्चिम तरफ ६ चबूतरे आये हैं। जिसमें दक्षिण के चबूतरे का ब्यान किया जाता है। इसी प्रकार सभी हवेलियों के सभी चबूतरे आये हैं। वह चबूतरा दरवाजे के दाएं-बाएं एक-एक मन्दिर के लम्बे-चौड़े कमर भर ऊचें दीवार के साथ लगकर आये हैं। इस चबूतरा पर दक्षिण तरफ दो थम्भ खुले, उत्तर तरफ दो थम्भ अक्शी दीवार के साथ आये हैं।

इन थम्भों पर चार-चार मेहरावें आई हैं। पूर्व, पश्चिम तथा दक्षिण तरफ खूली और उत्तर तरफ अक्शी आई है। दक्षिण तरफ चबूतरे के मध्य भाग से २५ हाथ में सीढ़ी मध्य गली में उतरी है। इसके दाएं-बाएं साढ़े सैंतीस-२ हाथ में कठेड़ा शोभा ले रहा है। इसी प्रकार पूर्व-पश्चिम शोभा आई है।

चबूतरे के फर्श पर गिलम और छत में चन्द्रवा शोभा दे रहा है। चबूतरे के उत्तर दो अक्शी थम्भ ४१ हाथ के ऊंचे जिस पर ४४ हाथ की ऊंची मेहराव आई है। दाएं-बाएं तीन-तीन फूल लाल माणिक के आये हैं। १२ हाथ की जगह पर चित्रकारी आई है। इन दो अक्शी थम्भों के बीच में दो अक्शी थम्भ २७ हाथ के ऊंचे गए हैं इसके मध्य में ३० हाथ का लम्बा

पूर्व से पश्चिम २७ हाथ का ऊंचा दरवाजा आया है। दरवाजे के ऊपर तथा दाएं-बाएं तीन अक्शी मेहराव ३३-३३ हाथ की ऊंची आई हैं। चबूतरा कमर भर ऊंचा होने के कारण दरवाजे की ऊंचाई तीन हाथ कम हो गई है और अक्शी थम्भ भी तीन हाथ कम हो गये हैं। इस दरवाजे के भीतर जाने के लिए मन्दिर में कमर भर की सीढ़ी उतरी है। यह सीढ़ी दीवार में आई है। इस दरवाजे के दाएं-बाएं अक्शी थम्भों में दीवार आई है। जिसमें अनेक प्रकार की चित्रकारी है। इस हवेली के ईशान कोना के मन्दिर के पश्चिम तरफ श्याम रंग का मन्दिर आया है। इस मन्दिर में सब प्रकार की रसोई मनचाही तैयार होती है। इस मन्दिर में से अपने लोगों को भोजन मिलता है।

सीढ़ियों वाला मन्दिर : श्याम रंग मन्दिर के पश्चिम तरफ जो मन्दिर आया है उसे सीढ़ियों वाला मन्दिर कहा गया है।

चौपाई : श्याम श्वेत के बीच में, सुन्दर सीढ़ियां शोभित।
बहुत साथ इत आये के, चढ़ उतर करत॥

खास बड़ा रास्ता ऊपर जाने के वास्ते इसी मन्दिर में आया है। वैसे तो हर मन्दिर व देहलानों में सीढ़ियां आई हैं।

हवेली के भीतरी थम्भ की हार : हवेली के चारों तरफ मन्दिर के भीतरी तरफ एक मन्दिर की दूरी पर बगली दीवार के सामने ७६ थम्भों की एक हार चारों तरफ आयी है। एक तरफ २० थम्भ, १९ मेहरावें आई हैं। चारों तरफ कुल मेहरावें ७६ आई हैं।

चौरस चबूतरा बीच का : रसोई की हवेली के भीतरी थम्भ से एक मन्दिर की दूरी पर कमर भर का ऊंचा चबूतरा १७ मन्दिर का लम्बा-चौड़ा आया है। एक दिशा में १८ थम्भ और १७ मेहरावें, तब कुल चारों तरफ ६८ मेहरावें आई हैं। मध्य की मेहराव से हर दिशा में कमर भर की सीढ़ियां

उतरी हैं । सीढ़ियों के दाएं-बाएं आठ-आठ मेहरावें रहीं । इन मेहरावों के नीचे दो थम्भों के बीच में सुन्दर कठेड़ा आया है । इसी प्रकार चारों तरफ जानना जी । ६८ थम्भों के बीच में चबूतरे पर सवा हाथ ऊंची गिलम बिछी है । बैठिए तो बैठ जाए, उठिए तो उठ जाए । इस गिलम के मध्य भाग में १००० पांखड़ी का कमल फूल की आकृती एक मन्दिर की लम्बाई-चौड़ाई में आई है । इसके चारों तरफ दोरी, वेली, कांगरी की चित्रकारी बनी है । इस कमल के फूल पर श्री राजश्यामाजी के बैठने के वास्ते सिंहासन कंचन रंग का रत्नों से जड़ा हुआ अपने लवाजम सहित विराजमान है । इसके सामने पूर्व तरफ दो चौकी नूर की रत्नों से जड़ित चढ़ने-उतरने के वास्ते धरी है । चारों तरफ गिलम पर अनेक प्रकार के बेल बूटे नगों के किये हुए शोभा दे रहे हैं । चारों तरफ किनार पर चार दोरी आई हैं । चारों दिशा में सीढ़ियों के सामने एक-एक मन्दिर के चौड़े आठ-आठ मन्दिर के लम्बे रास्ते आये हैं । जो कमल के फूल के चारों तरफ दोरी वेली कांगरी से आकर लगे हैं । गिलम के किनार पर दो-दो थम्भों के बीच में कठेड़ा के साथ मखमल के तकिए आये हैं । चारों तरफ सब ६४ तकिए हुए । ६८ थम्भों के बीच में सुन्दर चन्द्रवा तना है । चन्द्रवा के चारों तरफ मोतियों की झालर शोभा ले रही है । चन्द्रवा के मध्य भाग में अनेक प्रकार की चित्रकारी आई है । यह सब शोभा रसोई की हवेली और सभी चौरस हवेलियों में आई है । रसोई की हवेली के मध्य भाग में चबूतरे पर सुन्दर तखत और चाकले शोभा दे रहे है । आगे नूर की दो चौकी जिमने के वास्ते रखी है । रास्ते को छोड़ कर चारों खांचों में १२००० कुर्सियां सुन्दर मेंज आदि सखियों के लिए सुन्दर नगों के रत्नों से जड़ित शोभायमान हैं । इस चौक में बैठ कर श्री राजश्यामा जी सब सखियों सहित भोजन करते है ।

चौरस हवेली : जिस प्रकार रसोई की हवेली का वर्णन किया गया है । उसी प्रकार सभी चौरस हवेलियों को जानना जी । कुछ थोड़ा सा फर्क है सो लिखा

जाता है। जैसे रसोई की हवेली में तीन देहलानें ३१ मन्दिर की आई हैं श्याम मन्दिर और सीढ़ियों वाला मन्दिर आया है। ऐसे और हवेलियों में नही आये हैं। इस चौरस हवेली में ८४ मन्दिर और चार दरवाजे तथा बाहिर के आठ चबूतरे तथा सौ थम्भ, भीतरी तरफ ७६ थम्भ और चबूतरे पर ६८ थम्भ आदि जोगबाई ज्यों के त्यों आई हैं। इस हवेली के तीनों हारों में २४४ थम्भ आये हैं हर मन्दिर में तीन-तीन दरवाजे होने से २६४ दरवाजे सब हुए।

चारों चबूतरों पर चौबीस मेहरावें : हर एक हवेली के चारों तरफ त्रिपोलिया आए है। जिसमें दो-दो थम्भों की हारे आई हैं। ये त्रिपोलिया तथा थम्भों की हारें दोनों हवेलियों में गिनती करने में आएगी। बाहिर की एक थम्भ की हार सहित एक हवेली मानी जाती है मध्य की जो गली परिक्रमा के वास्ते आई है जहां पर दो हवेलियों के आपने-सामने बड़े दरवाजे आए हैं वहां पर चौबीस मेहरावें आयी हैं। जिसमें १६ मेहरावें जो चारों चबूतरे के और दो मेहरावें दोनों बड़े दरवाजे पर, आमने सामने दो मेहरावें चबूतरों के बीच के चौक के, और चार मेहरावें मध्य की गली के ऊपर आई है। इन सब मेहरावों में से ६ मेहरावें ६ दरवाजों पर अक्शी आई हैं दो बड़े दरवाजे और चार दाएं-बाएं मन्दिरों के, और १८ मेहरावें खुली हैं। इस प्रकार दो हवेलियों के दरवाजे के सब ठिकानों पर २४ मेहरावें आई हैं।

चार हवेलियों के कोनों पर एक चबूतरा : जहां चार हवेलियों के चार कोने जुड़े वहां मध्य की गली पर एक-एक मन्दिर का लम्बा-चौड़ा कमर भर ऊचां चबूतरा आया है। इस चौरस चबूतरे के चारों तरफ कोनों पर चार थम्भ आये हैं। जिसमें चार मेहरावें बनती हैं चबूतरे के किनारे पर मध्य से २५ हाथ में चारों दिशा में कमर भर की सीढ़ी नीचे उतरी है। इसके दाएं-बाएं चबूतरे पर कठेडा आया है। चबूतरे पर गिलम बिछी है। ऊपर चन्द्रवा, सिंहासन सब योगबाई परिपूर्ण है।

चबूतरों पर चौबीस मेहरावें : चारों हवेलियों के कोने के बीच में चौबीस मेहरावें आई हैं । एक हवेली से दूसरी हवेली की त्रिपोलिया के तीन मेहरावें तब चारों दिशा के १२ मेहरावें और ४ मेहरावें मध्य भाग चबूतरे पर । चबूतरे के हर एक दिशा में आड़े-खड़े रास्तों पर दो दो मेहरावें आई हैं तब चारों दिशा की आठ मेहरावें हुई । तब सब मिल कर २४ मेहरावें हुई ।

गोल हवेली मूल मिलावा : २८ थम्भ चौक के पश्चिम तरफ पहली रसोई की हवेली के सहित चार चौरस हवेली आई है । जिसके पश्चिम तरफ पांचवी गोल हवेली आई है । जिसे मूल मिलावा कहते हैं । इस हवेली की ६४ मन्दिरों की गृद आई है सवा २१ मन्दिर की लम्बी-चौड़ी है जिसके मध्य भाग में चबूतरे के ऊपर श्री राज श्यामा जी तथा सखियों की बैठक होने से मूल मिलावा कहते हैं । इस गोल हवेली की भांति सभी गोल हवेली आई हैं ।

बाहरी थम्भ : इस गोल हवेली के ६४ पहल आये हैं चारों तरफ बाहिर की ओर ६४ थम्भ आये हैं । जिन पर ६४ मेहरावें आई हैं । इन थम्भों के भीतरी तरफ एक मन्दिर की दूरी पर एक मन्दिर की हार आई है ।

मन्दिरों की हार- ६४ मन्दिरों की जगह चारों तरफ आई है जिसमें ६० मन्दिरों की जगह पर ६० मन्दिर आए हैं और चार मन्दिरों की जगह पर ८८-८८ हाथ के चार दरवाजे आए हैं । जिनके ऊपर १२-१२ हाथ की छोटी मेहराव शोभायमान हो रही है । यह चारों दिशाओं में आये हैं इन दरवाजों के दाएं-बाएं जहां पर ४४ हाथ का थम्भ समाप्त होकर अक्शी मेहराव शुरू होती है । वहां पर घोड़े के मुख बने हुए दीवार पर शोभा दे रहे हैं । ८८ हाथ की लम्बी-चौड़ी चौखट के अंदर दो ताक आये हैं । ४३-४३ हाथ का चौड़ा और ८६ हाथ लम्बा आया है । एक-एक हाथ की जगह ऊपर नीचे चौखट ने घेरी है । जिसमें वेनी, सड़, अदवान करके सुन्दर चौक आये हैं । सांकल, कुन्डा भी अपार शोभा को धरण किये हैं । इसी प्रकार का एक दरवाजा भीतरी तरफ आया है । एक-२ दरवाजा दाएं-बाएं ३०-३० हाथ का आया है । ऊपर

तीन-तीन हाथ की मेहराव आई है। अब ६० मन्दिरों में से एक मन्दिर का ब्यान किया जाता है। एक मन्दिर सौ हाथ का लम्बा-चौड़ा आया है। जिसमें देखने के चार-२ गिनती में तीन-२ दरवाजे आए हैं। बाहर की दीवार में पहले वर्णनानुसार दो अक्शी थम्भों पर एक अक्शी मेहराव ऊपर तीन फूल १२ हाथ की जगह में अनेक प्रकार की चित्रकारी आई है। फिर उस अक्शी थम्भों के बीच मे दो अक्शी थम्भ आये हैं। मध्य में तीस हाथ का लम्बा-चौड़ा दरवाजा ऊपर तीन-२ हाथ की मेहराव, दाएं-बाएं घोड़े का मुख बना हुआ है बाकी तीन मेहरावें तीन दरवाजा के ऊपर पहले ब्यानानुसार आये हैं।

दो दोरी और कांगरी- ६४ मन्दिरों की बाहरी दीवार पर लाल रंग की दो दोरी आई हैं इसके ऊपर साथ-२ लगकर कांगरी चली गई है जिसमें से एक मन्दिर की दीवार का वर्णन किया जाता है। हांस के कोनों के साथ लगकर ऊपर की किनार से दो दोरी लाल रंग की सौ हाथ अक्शी थम्भों के साथ होती हुई नीचे उतरी है। सो जमीन के साथ लगकर दीवार के ऊपर ३३ हाथ की लम्बी चली गई है। चौखट के साथ अक्शी थम्भ के ऊपर होकर ३३ हाथ की ऊंची छोटी मेहराव से होकर फिर अक्शी थम्भ पर होकर ३३ हाथ जाकर फिर हांस के कोने के साथ लगकर फिर दूसरे मन्दिर के कोनों के साथ लगकर नीचे को पहले ब्यानानुसार उतरी है। इस दोरी के साथ-२ कांगरी की चित्रकारी भी होती चली गई है।

चौपाई : किनारे दिवारे द्वारने, लाल दोरी दोय दोय।
मन्दिरों की हद लग, शोभा लेत अति सोय॥
दोरी लगती कांगरी, सब ठौरों गिरदवाय।
चित्रामन ताके बीच में, जो देखूं सो अति अधिक शोभाय॥

एक मन्दिर के भीतर – एक मन्दिर का ब्यान किया जाता है इसी प्रकार गोल हवेलियों के और चौरस हवेलियों के दो हारों के मन्दिर, नौ चौकों के मन्दिर सब का बयान एक समान आया है। सेज्या, चौकी, संदूक, सिंहासन,

हिंडोले, शीशे, प्याले, डिब्बे, तवके, सिकीयां, तथा खाने पीने का सामान सोने हीरे के अपार वाशन, अल्मारी, कपाट, गिलम तथा अनेक प्रकार की जोगबाई विधि सहित जो जिस जगह चाहिए सो उसी प्रकार शोभा दे रहे हैं। संदूके और अल्मारियों में अनेक प्रकार के वस्त्राभूषण सब सिनगार की सब चीजें भरी हुई हैं।

चौपाई : अन्दर कै वस्ता धरि, सेज्या चौकी सन्दूक।
जो जित शोभा लेत है, तित देखिए तिन सलूक ॥
कई प्याले, शीशे डब्बे, कई अन्दर गृद देखत।
कै तवके छोटी वड़िया, कै शिकियां लटकत ॥
अन्दर की वस्ता क्यों कहूं, और क्यो कहूं चित्रांमन।
ज्यों मन्दिरों अन्दर देखिए, तो दिल होय रोशन ॥

चार चबूतरों पर चौबीस मेहरावे – जहां दो हवेलियों के दरवाजे आमने-सामने आये हैं वहां चौरस हवेलियों की भांति २४ मेहरावें आई हैं। जहां चार हवेलियों के कोने मिलते हैं वहां पर सुन्दर चौक आये हैं। यहां पर भी चौरस हवेलियों की भांति २४ मेहरावें आई हैं। चौरस चबूतरा नहीं आया है।

भीतर थम्भों की हार – मन्दिरों की हार के भीतरी तरफ बगली दीवार के सामने एक मन्दिर की दूरी पर चौसठ थम्भों की दूसरी हार आई हैं। जिसमें चौसठ मेहरावें आई हैं।

मन्दिर मेहरावे दो-२ रंग के – कमर भर के ऊंचे चबूतरों के चारों दिशा में कमर भर सीढ़ी उतरने से एक सीढ़ी से दूसरी सीढ़ी तक एक खांचा आया है। इसी प्रकार चार खांचे आये हैं। एक खांचा में १६ थम्भ आये हैं। जिसके १२ थम्भ नगो के, ४ धातु के, (सोना, चांदी, लोहा, पीतल) चार थम्भ आये हैं और दो थम्भों के ऊपर जो मेहरावें आई हैं वे भी दो-दो रंग की आई है। परन्तु चारों दिशाओं में जो चार दरवाजे आये हैं उनकी मेहराव

एक-२ रंग की आई है । बाकी दो हारें थम्भों की तथा मन्दिर की एक हार की मेहरावे चबूतरों के थम्भों के जैसी आई हैं । सभी मन्दिर दो-२ रंग के आये हैं ।

चबूतरों पर थम्भों की हार – मन्दिरों के भीतर के थम्भ के हार से एक मन्दिर की दूरी पर भीतरी तरफ एक चबूतरा कमर भर का ऊंचा चौसठ पहल का आया है । इस चबूतरे की किनार पर हांस-२ के कोने पर एक-२ थम्भ आने से सब ६४ थम्भ ऊपर ६४ मेहरावें हुई । चारों दिशाओं में सीढ़ी उतरी है । बाकी में परकोटा आया है ।

चारों दरवाजों के १६ थम्भ चबूतरे के – चबूतरे के पूर्व तरफ दो थम्भ पाच के आये हैं । इसके दाएं-बाएं दो थम्भ नीलवी के, पश्चिम तरफ दो थम्भ नीलवी के, दाएं-बाएं दो थम्भ पाच के आये हैं । दक्षिण तरफ के दो थम्भ माणिक के, दाएं-बाएं दो थम्भ पुखराज के, और उत्तर तरफ दो थम्भ पुखराज तथा दाएं-बाएं दो थम्भ माणिक के आये हैं । इस प्रकार १६ थम्भ आये हैं ।

एक खांचा में १२ थम्भ –एक खांचा में १२ थम्भ नगों के आये हैं इसी प्रकार चारों खाचों मे जानना जी । पूर्व दरवाजा के दक्षिण तरफ दो थम्भ छोड़ कर आगे से १२ थम्भ गिनिए । १-हीरा, २-लसनिया, ३-गोमादिक, ४-मोती, ५-पन्ना, ६-परवाल, ७-हेम, ८-चांदी, ९-नूर, १०-कंचन, ११-पिरोजा, १२-कपूरिया, सो इसी प्रकार उत्तर तरफ दो थम्भ छोड़ कर १२-थम्भ गिनिए । इसी प्रकार पश्चिम तरफ से उत्तर तरफ गिनिए । इसी प्रकार से सभी गिनिए ।

चौपाई : हीरा, लसनियां, गोमादिक, मोती पाने परवाल ।
हेम चांदी थम्भ नूर के, थम्भ कंचन अति लाल ॥
पिरोजा और कपूरिया, याके आठ थम्भ रंग दोय ।
गिन छोड़े दो द्वार से, बने हर रंग चार-चार सोय ॥

पिरोजा और कपूरिया के इस दो रंगों के थम्भ चारों दिशाओं में आठ थम्भ आये हैं। पूर्व के दरवाजे से गिनती चालू करके उत्तर-दक्षिण तरफ गिनिए। इसी प्रकार पश्चिम दरवाजे से चालू करके उत्तर-दक्षिण तरफ जो दो-२ थम्भ छोड़िए एक-२ नंग के हर एक दिशा में चार-२ थम्भ आये हैं। तब सोलह नगों के रंगों के थम्भ चारों दिशाओं में चौसठ हुए।

थम्भ तथा दरवाजे – मूल मिलावा के तीनों हारों में थम्भ आये हैं। एक-२ हार में ६४-२ थम्भ आये हैं। तो कुल थम्भ १९२ हुए। मन्दिर ६४ आये हर एक मन्दिर में तीन-२ दरवाजे कुल १९२ हुए।

गोल चबूतरे पर गिलम –मध्य में चौसठ पहल का कमर भर का ऊंचा चबूतरा आया है। जिसके किनार पर चौसठ थम्भ आये हैं। छत में सुन्दर चन्द्रवा शोभायमान हो रहा है। चारों तरफ मोतियों की झालर शोभा ले रही है। चबूतरे के ऊपर सेंदुरिया रंग की गिलम पशमी बिछी है। जिसके किनार पर श्याम, श्वेत, हरी, जरद इन चार रंगों की दोरी की अक्श आई है। गिलम के मध्य भाग में एक मन्दिर की जगह पर हजार पांखड़ी के कमल की आकृति उस गिलम में शोभा दे रही है। इस फूल के चारों तरफ दोरी वेली कांगरी की चित्रकारी की हुई है। चारों दिशाओं में सीढ़ियों के सामने चार रास्ते एक-२ मन्दिर के चौड़े और सातमन्दिर के लम्बे आकर श्याम रंग की कांगरी से मिल गए हैं। चार रास्ते आने से गिलम के चार भाग दिखाई देते हैं। गिलम पर अनेक प्रकार की चित्रकारी बनी है। जिसकी सुन्दरता का कोई पारावार नही है। यह गिलम सवा हाथ की ऊंची पशम की बनी हुई है। इस पर बैठने से बैठ जाती है और उठने से उठ जाती है। मानो यह स्प्रिंगदार चेतनमयी है। इस गिलम के किनार पर चार रास्ते श्याम रंग को छोड़ कर ६० लाल तकिए के ६४ थम्भों के बीच कठेड़े के साथ आये हैं।

सिंहासन मूल मिलावा – चबूतरों के ऊपर गिलम के मध्य भाग में कमल के फूल के ऊपर एक कंचन का सिंहासन आया है। उसके तीन पाये पूर्व

तरफ और तीन पाये पश्चिम तरफ आये हैं। तीन पायों के बीच में दो ईश आये है। दक्षिण-उत्तर तरफ एक-एक उपले आये हैं जो नगों के हैं। इन ६ पाइयों पर तथा दो उपलों के बीच में जो जगह है सो पांच रंग की रेशमी नीवार से बुनी हुई है। इन ६ पाइयों पर ६ डांडें आये हैं। इन ६ डांडों के ऊपर ६ मेहरावें हैं। जिसमें दो मेहरावें पश्चिम तरफ, एक-एक दक्षिण उत्तर तरफ और दो मेहरावें पूर्व तरफ आये हैं। इन ६ मेहरावों के ऊपर बीच की जगह में गुम्मट आए हैं। ये गुम्मट अंदर से पोले हैं। दो कलश दो गुम्मट के ऊपर और ६ कलश ६ डांडों के ऊपर सोने के आये हैं। ६ डांडों के चारों तरफ सुन्दर नूर के जवेरों की झालर लटक रही है। इस सिंहासन के मध्य भाग में पशमी बिछौना बिछा हुआ है। इसके ऊपर एक गादी दो चाकले कई रंगो के नगों के कई प्रकार की चित्रकारी बनी हुई हैं। इन दोनों चाकलों के पश्चिम तरफ दो तकिए पशम के आये हुए हैं। एक तकिया उत्तर तरफ, एक तकिया दक्षिण तरफ आया है। एक तकिया दो चाकलों के बीच में आया हुआ है ये पांच तकिए पशम के आये हुए हैं। चार तकिए नगों के आये हुए हैं जो उत्तर, दक्षिण, पश्चिम चार पशमी तकिए के पीछे लगकर आये हैं। इन नगों के तकियों में अनेक प्रकार की चित्रकारी नगों से की हुई है। सिंहासन के सामने रत्नों से जड़ित दो नूर की चौकी रखी है गुम्मट के नीचे दो छत्र लाल माणिक के आये हैं। कमल के फूल के अनुसार छत्री के चारों तरफ पाखुड़ी आई है।

श्री राजश्यामा जी की बैठक : श्री राजजी सर्व श्रृंगार करके सिंहासन पर सखियों को अक्षर ब्रह्म की माया रुपी खेल दिखाने के वास्ते. श्रीश्यामा जी के दाहिनी तरफ अपना दाहिना कमल रूपी चरण नूर की चौकी पर और बांया चरण कमल घुटना मध्य के तकिए पर और पिड़ली अंग चाकले पर पूर्व मुख करके बैठे हैं और श्री राज जी के बांयी तरफ श्री श्यामा जी अपने चरण कमल नूर की चौकी पर रख कर पूर्व मुख करके विराजमान हैं।

सखियों की बैठक : श्री राजश्यामा जी मूल मिलावा के मध्य सिंहासन पर विराजमान हैं। इस सिंहासन से ढ़ाई मन्दिर की दूरी पर श्री श्यामा जी के श्रृंगार अनुसार सब सखियां श्रृंगार करके बैठी हैं। पहली पंक्ति में २००० स्वांतसी सखी बैठी हैं। केवल वस्त्रों के रंगो में अन्तर है इन स्वांतसी सखियों से ढ़ाई मन्दिर की दूरी पर ४००० राजसी सखियां बैठी है। इन राजसी सखियों से ढ़ाई मन्दिर की दूरी कठेड़े के साथ लगकर जो लाल तकिए आये हैं उन तकिओं से लगकर ६००० सखियां तामसी स्वभाव वाली बैठी हैं। अनार के दाने के अनुसार एक रूप होकर एक-दूसरे के गले में हाथ डाल कर घुटना टेक कर दुखरूपी माया के खेल को देखने के वास्ते बैठी हैं। श्री राजश्यामा जी सिंहासन पर विराजमान होकर सखियों तथा श्यामा जी को इश्क तथा परमधाम में अपनी स्वरूप की पहचान कराने के वास्ते दुखरूपी खेल स्वप्न द्वारा होकर दिखला रहे हैं। सो गोल हवेली में सबकी परआत्म बैठी है।

चौपाई : सूरत एकै राखिए, मूल मिलावे माहिं।
श्याम श्यामा जी साथ जी, तले भोम बैठे हैं जाहि॥
जो मूल सरूप हैं अपने, जाको कहिए परआतम।
सो परआतम लेयके, विलसिये संग खसम॥

एक खांचे में : सीढ़ियों के सामने चार श्याम रंग के रास्ते आने से चार खाचें हो गए हैं। एक खांचे में १६ थम्भ आये हैं इन १६ थम्भों के बीच में १५ तकिए आये हैं। एक तकिए के साथ सौ सखियां बैठी है। एक तकिया सौ हाथ का लम्बा आया है। एक हाथ की जगह में एक सखी बैठी है तब एक खांचे में किनार पर १५०० सखी बैठी हैं। मध्य की पंक्ति में एक खांचे में १००० सखी तब चारों खांचो में ४००० राजसी सखी बैठी हैं। प्रथम पंक्ति में जो सिंहासन के पास है उसके एक खांचे में ५०० सखी तब चारों खांचो में २००० सखी स्वांतसी स्वभाव वाली बैठी हैं। कठेड़े के साथ चारों

खांचो में कुल ६००० सखी तामसी स्वभाव वाली बैठी हैं तब कुल सखियाँ १२००० हुई ।

तीन स्वभाव कैसे पड़े : परमधाम में राजस, तामस, स्वांतस स्वभाव नही है । वहां पर सब प्रेममयी स्वभाव है । जो २००० सखियां स्वांतसी आगे बैठी हैं । उनका स्वभाव बृजमण्डल में स्वांतसी था । मध्य में जो सखियाँ ४००० बैठी हैं उनका स्वभाव बृजमण्डलमेंराजसी था । कठेड़े के साथ जो सखियां ६००० बैठी हैं । उनका बृजमण्डल में स्वभाव तामसी था । इस खेल के हिसाब से श्री परमधाम में स्वांतसी, राजसी, तामसी बोली जाती हैं ।

नव फिरावा ३६ हारें – श्री रंगभवन के ६००० मन्दिर की गृद लम्बाई-चौड़ाई २००० मन्दिर की आई है एक मन्दिर सौ हाथ का कोस के हिसाब से एक मन्दिर सौ कोस का लम्बा-चौड़ा आया है । इस हिसाब से श्री रंगभवन छ लाख कोस की गृद और दो लाख कोस का लम्बा-चौड़ा आया है ।

साढ़े छः हाथ का हिसाब – बाहरी मन्दिरों की हार से रसोई की हवेली की हद तक साढ़े छः मन्दिर होते हैं । दो मन्दिर की जगह में दो मन्दिरों की हार और दो हार मन्दिरों के बीच में तीन मन्दिर की तीन गली और रसोई की हवेली के पूर्व तरफ जो तीन गली आई है उसमें से डेढ़ गली ली जाएगी । और डेढ़ गली हवेली में ली जाएगी । इस प्रकार साढ़े छः मन्दिर हुए ।

गोल तथा चौरस हवेलियों के आठ फिरावे :-

पहला फिरावा:- पहला फिरावा चौरस हवेलियों का है जिसकी लम्बाई-चौड़ाई २३ मन्दिर, गृद ८८ मन्दिर की है थम्भों की तीन हारें, सौ थम्भ मन्दिरों के बाहरी तरफ, ७६ थम्भ मन्दिरों के भीतरी तरफ और ६८ थम्भ चबूतरे के किनारे पर आये हैं । सब थम्भ २४४ हुए । चारों हवेलियों के मन्दिर ९२ हुए । १२ मन्दिर गलियों के सब मिला कर १०४ मन्दिर का पहला फिरावा

हुआ । परिक्रमा ६००६ मन्दिर की आई हैं ।

दूसरा फिरावा :- यह फिरावा गोल हवेली का आया है । हवेली की गिर्द ६४ मन्दिर की है । लम्बाई-चौड़ाई सवा २१ मन्दिर की है । ६४-२ थम्भों की तीन हारें हैं । कुल थम्भ १९२ हुए । चारों हवेलियों की लम्बाई ८५ मन्दिर की हुई । १२ मन्दिर गलियों के कुल ९७ मन्दिर हुए । हवेली छोटी होने से परिक्रमा ५६०२ मन्दिर की आई है ।

तीसरा फिरावा :- यह फिरावा चौरस हवेलियों का आया है । एक- हवेली की लम्बाई-चौड़ाई १९ मन्दिर की, गिर्द ७६ मन्दिर की है । हवेली के बाहर के थम्भ ८४, भीतर के ६०, चबूतरे पर ५२ आये हैं । कुल थम्भ १९६ हुए । चारों हवेलियों की जगह ७६ मन्दिर की आई है । १२ मन्दिर गलियों के कुल ८८ मन्दिर हुए । बाहर की परिक्रमा ५०८२ मन्दिर की आई है ।

चौथा फिरावा :- यह फिरावा गोल हवेलियों का है । एक हवेली की लम्बाई-चौड़ाई साढ़े १८ मन्दिर की, तीनों हारों के कुल थम्भ १६८ हुए । तब चारों हवेलियों की जगह ७४ मन्दिर की हुई । १२ मन्दिर गलियों के तब यह चौथा फिरावा ८६ मन्दिर का हुआ । बाहरी परिक्रमा ४९६६ मन्दिर की हुई ।

पांचवा फिरावा :- पांचवा फिरावा- चौरस हवेलियों का आया है । लम्बाई-चौड़ाई १५ मन्दिर की, गिर्द ५६ मन्दिर की, बाहरी हार ६८ थम्भों की, भीतरी हार ४४ थम्भों की और चबूतरे पर ३६ थम्भ, कुल १४८ थम्भ हुए । चारों हवेली की जगह ६० मन्दिर की १२ मन्दिर गलियों के तब पांचवा फिरावा ७२ मन्दिर की हुई । बाहरी परिक्रमा ४१५८ मन्दिर की आई है ।

छठा फिरावा :- यह फिरावा गोल हवोली का आया है एक हवेली की गिर्द ४४ मन्दिर की, लम्बाई-चौड़ाई साढ़े १४ मन्दिर की हुई । ४४-२ थम्भों की तीन हारें, कुल थम्भ १३२ आये हैं । चारों हवेलियों की जगह ७० मन्दिर

की हुई । बाहरी परिक्रमा ४०४२ मन्दिर की आई है ।

सातवां फिरावा :- यह फिरावा चौरस हवेलियों का है । हर एक हवेली की लम्बाई-चौड़ाई ११ मन्दिर की आई है । गिर्द ४० मन्दिर की हुई । बाहरी हार में ५२ थम्भ, भीतरी हार में २८ थम्भ और चबूतरे पर २० थम्भ आये हैं कुल १०० थम्भ हुए । चारों हवेलियों की लम्बाई ४४ मन्दिर की १२ मन्दिर गलियों को मिला कर ५६ मन्दिर हुए । बाहर की परिक्रमा ३२३४ मन्दिर की हुई ।

आठवां फिरावा :- यह फिरावा गोल हवेलियों का आया है । एक हवेली की लम्बाई-चौड़ाई साढ़े १० मन्दिर की, गिर्द ३२ मन्दिर की, तीनों हारों के ९६ थम्भ हुए । चारों हवेलियों की जगह ४२ मन्दिर की हुई । १२ मन्दिर गलियों के मिला कर ५४ मन्दिर हुए । बाहरी परिक्रमा तीन हजार एक सौ साढ़े १८ मन्दिर की है ।

नौवां फिरावा:- यह फिरावा पंच मोहलों का है । यह हवेली चौपट की भांति आई है । इस हवेली में पांच मन्दिर आये हैं । एक हवेली की लम्बाई-चौड़ाई तीन मन्दिर की आई है जिसके सब दरवाजे १६ आये हैं । जिसमें चार दिशाओं के चार मन्दिरों के दरवाजे १२, मध्य मन्दिर में दरवाजे ४ आये हैं । मध्य मन्दिर के दरवाजे से निकल कर दिशाओं के मन्दिरों में जा सकते हैं । एक पंच मोहोल के चारों तरफ २० थम्भ आये हैं । चार थम्भ चारों कोनों के आने से कुल २४ थम्भ हुए । तब पंच मोहलों के चारों मोहलों के मन्दिरों की जगह १२ मन्दिर हुई । और साढ़े ११ मन्दिर गलियों के आये हैं कुल मिला कर साढ़े २३ मन्दिर हुए । साढ़े ११ मन्दिर गलियों का कारण यह है कि पंच मोहोल की हवेलियों के बाद भीतरी तरफ डेढ़ गली की आवश्यकता नही है । यहां से फिरावा खत्म हो जाते है । इस फिरावा की बाहरी परिक्रमा १३८६ मन्दिर की हुई । तीन मन्दिर की एक हवेली और तीन मन्दिर की

गली, तब एक हवेली छः मन्दिर की हुई। इस प्रकार से २३१ हवेलियां चारों तरफ आई हैं। इस प्रकार बाहरी मन्दिरों की हार से ३६ हारों तक ६५६ मन्दिर की जगह हुई।

मध्य में नौ चौक :- भीतर के पंच मोहलों के भीतरी तरफ २८ मन्दिर की जगह का चौक रमने के वास्ते आया है। इस चौक के भीतरी तरफ चौरस जगह में नौ चौक आये हैं। सो लम्बाई-चौड़ाई में तीन-२ आये हैं। एक चौक २१० मन्दिर का लम्बा-चौड़ा आया है। तब तीनों चौकों की लम्बाई-चौड़ाई ६३० मन्दिर की हुई। इसकी परिक्रमा २५२० मन्दिर की है।

नव चौक आपस में मिले हैं :- दो चौक के मध्य में एक ही दीवार आयी है। जिसके मध्य भाग में गली रास्ता कुछ भी नहीं है। हर एक चौक में १२ हजार मन्दिर आये हैं। एक चौक में ६४-६४ हवेली आई हैं। हर एक हवेली के मध्य भाग में केवल एक ही रास्ता अन्दर जाने के वास्ते आया है। इस प्रकार से एक चौक के एक दिशा में २४ रास्ते हुये और चारों दिशाओं के ९६ रास्ते हुए।

चार स्तून :- मध्य के नौ चौकों के चारों कोना पर चार थम्भ अर्थात कोट आठ मन्दिर के लम्बे-चौड़े २४ मन्दिरों की गृद में आये हैं। जिसके १६ हांस चारों तरफ आए हैं। एक-२ हांस ड़ेढ-२ मन्दिर का आया है। कोट की दीवार की एक दिशा में एक मन्दिर की चौड़ी आयी है। छे मन्दिर में जल आया है। यह कोट दसवीं चांदनी पर कमर भर ऊंचे चबूतरे के साथ जाकर लगा है। जल का दर्शन यहीं पर होता है। इस कोट की दीवार से दो मन्दिर की दूरी पर पंच मोहोल के भीतर के थम्भों की हार आयी है। इसी प्रकार नौवों चौकों के कोना पर चार स्तून आये हैं।

सब जगह रंग भवन में पानी जाता है :- इन्हीं चारों स्तूनों से रंगभवन की

हर भोम में गुप्ता-गुप्त नलों द्वारा पानी जाता है। ठंड़ा और गर्म जिस प्रकार का चाहिए उसी प्रकार का मिलता है। पानी की कहीं पर कमी नहीं है। पानी दूध से उज्जवल मिश्री से मीठा हर प्रकार की सुगन्धि से युक्त है।

डेढ़ चौकः- इस मन्दिर के चौक के आगे पश्चिम तरफ तीनों चौकों में से डेढ़ चौक रंग परवाली मन्दिर के मध्य तक निकलता है। तब डेढ़ चौक के मन्दिर ३१५ हुये। तब बाहरी मन्दिर की किनार से लेकर मध्य परवाली मन्दिर के मध्य भाग तक सब जगह एक हजार मन्दिर की हुई। ताको बेवरा इस प्रकार है। ६-१/२, + १०४ + ९७ + ८८ + ८६ + ७२ + ७० + ५६ + ५४ + २३-१/२ + २८ + ३१५ = १००० मन्दिर हुये। इसी प्रकार पश्चिम तरफ भी जगह आयी है। रंग परवाली मन्दिर से दक्षिण और उत्तर भी इसी प्रकार जगह आयी है। इसलिए पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण रंगभवन की लम्बाई-चौड़ाई २०००मन्दिर की आयी है।

सिंनगार व शयन के मन्दिर :- श्री रंगभवन की हर एक भोम में सखियों के सिंनगार तथा शयन का एक-एक मन्दिर आया है शयन का मन्दिर तो मध्य के चौक में जो १२ हजार मन्दिर आये हैं। वहां पर हर एक सखी का एक-एक मन्दिर आया है और जो सिंनगार का मन्दिर है। वह बाहर और अन्दर की ओर जो दो हारें मन्दिरों की है। वही सिंनगार के मन्दिर है। परन्तु सिनगार तीसरी भोम में होता है। अब बाहर के हार तो ५९९९ मन्दिर की आई है। एक मन्दिर कम हो गया है और भीतरी तरफ मन्दिरों की दूसरी हार से बारह मन्दिर २८ थम्भ के चौक में आये हैं। यह १३ मन्दिर कम हो गये हैं। तो एक-२ सखी का मन्दिर कैसे बना, यह शंका अति भारी है। इस शंका को दूर करने के लिए श्री राज जी के बेशक इलम से हम शंका रहित हो सकते हैं। उनके हुकम द्वारा वहां सखियों की इच्छानुसार थम्भों में जालीदार दरवाजे बन जाते हैं अर्थात १३ मन्दिर कम होने पर भी

वह मन्दिर बारह हजार हो जाते हैं । तो एक-एक सखी एक-एक मन्दिर में सिनगार करती हैं ।

सबकी एक छतः- दो हजार मन्दिर तथा सम्पूर्ण थम्भों की हार अठ्ठाईस थम्भ का चौक, सम्पूर्ण चौक, गोल हवेलियों तथा नौ चौक इन सब दो हजार मन्दिर की जगह पर एक ही छत आयी है । खाली चार जो स्तून पानी के आये हैं । उनमें छात नहीं आयी है ।

सब भोमों का एक ही वनक :- जिस प्रकार प्रथम भोम का ब्यान किया गया है उसी प्रकार नौ भोमों का ब्यान जानना । मन्दिर पर मन्दिर, अठ्ठाईस थम्भ के चौक पर अठ्ठाईस थम्भ का चौक, हवेली के ऊपर हवेली दरवाजे पर दरवाजे, छज्जों पर छज्जें, झरोखों पर झरोखें इसी प्रकार उपरा-ऊपर दश भोम तक चले गये हैं । परन्तु हर भोम में कहीं-कही पर थोड़ा-थोड़ा अन्तर आता है सो ब्यान किया जा रहा है ।

दूसरी भोम का ब्यान :- रसोई की हवेली में सीढ़ियों वाले मन्दिर से भोम भर की सीढ़ियां चढ़के एक मन्दिर की रौंस पर होकर २८ थम्भ के चौक में आये, फिर पांच मन्दिर का चौक उलंघ कर आगे एक मन्दिर की रौंस छोड़कर आगे दो मन्दिर का लम्बा एक मन्दिर का चौड़ा जो मन्दिर है । उसके पश्चिम तरफ जो अठ्ठासी हाथ का लम्बा-चौड़ा दरवाजा आया है । उस दरवाजे के भीतर जाकर पूर्व तरफ की दिवाल देखने लगे । यहां पर एक बड़ी अक्शी मेहराव में ९ अक्शी मेहरावें अक्शी थम्भों पर दिखाई दे रही हैं । जिसके ६ मेहरावों में जालीदार दरवाजे और दो मेहरावों में खुले दरवाजे जिसके पूर्व तरफ कठेड़ा आया है । यह सब नौ मेहरावें ११-११ हाथ के बजाय २२-२२ हाथ की आयी है । क्योंकि यह मन्दिर दो मन्दिर का चौड़ा आया है । इसकी मध्य की मेहराव में तीन सीढ़ी कमर भर ऊंचे चढ़कर झरोखा

में जाकर दो मन्दिर के लम्बे-चौड़े चौक तथा दाएं-बाएं के दो चबूतरों को देखिये । जिनका ब्यान पहले दूसरी भोम के बड़े झरोखों में बताया जा चुका है । दूसरी भोम मन्दिरों की पूर्व की दिवाल के बाहर लग कर चार मन्दिर का लम्बा और दो मन्दिर का चौड़ा एक ही झरोखा आया है । इस झरोखे के पूर्व तरफ २ थम्भ हीरा के, २ मानिक, २ पुखराज, २ पाच, २ नीलवी के आये हैं । ये थम्भ ४१-४१ हाथ के ऊँचे, ऊपर ४४ हाथ की मेहरावें, ऊपर १६ हाथ की जगह में अनेकों प्रकार की चित्रकारी आयी है । इन थम्भों के बीच में कठेड़ा आया है । यहाँ पर खड़े होकर चारों तरफ की शोभा को देखिये और दक्षिण तरफ एक मन्दिर की जगह में कठेड़ा आया है और ३० हाथ की जगह में कमर भर की सीढ़ी दूसरी भोम के छज्जे पर उतरी है । इसके आगे तीन हाथ की जगह में कठेड़ा आया है । ६६ हाथ की जगह में चौरस गुर्ज आया है । यह आधा गुर्ज इस बड़े झरोखा पर शोभा दे रहा है । झरोखा के पश्चिम तरफ जो मन्दिर आये हैं उन पर चार बड़ी अक्शी मेहरावें थम्भों सहित ८८ हाथ की ऊंची गयी है । जिनके मध्य में तीन-तीन मेहरावें थम्भों सहित ४४-४४ हाथ आई । फिर एक-२ में तीन-तीन मेहरावें थम्भों सहित २२-२२ हाथ की ऊंचाई तक की आयी है । अर्थात् एक बड़ी मेहराव में नौ मेहरावें आयी हैं । मध्य भाग में अक्स और छः जालीदार दरवाजे और दो खुले दरवाजे आये हैं । इन दरवाजों से निकल कर आगे कमर भर की सीढ़ी उतरनी पड़ेगी क्योंकि यह झरोखा मन्दिरों की जमीन से कमर भर ऊंचा आया है । तीन सीढ़ी नीचे उतर कर मन्दिर के चौक में जाईये । इस प्रकार यहां चार मन्दिरों की बनावट आयी है । उत्तर तरफ भी इसी प्रकार जानना जी ।

चार मन्दिर के झरोखा पर गुर्ज की बनावट :- बड़ा झरोखा जो चार मन्दिर का लम्बा दो मन्दिर का चौड़ा और कमर ऊंचा है । इसके नैरित्य कोना पर

६६ हाथ का लम्बा-चौड़ा एक गुर्ज आया है । आधा गुर्ज छज्जा पर, आधा गुर्ज झरोखा पर आया है । इस गुर्ज के उत्तर तरफ का एक दरवाजा खुला और दो जालीदार दरवाजे इस झरोखे पर आये हैं । दरवाजे से कमर भर की सीढ़ी उतर कर गुर्ज में जाइये इस गुर्ज के दक्षिण तरफ एक खुला दरवाजा और दो जालीदार दरवाजे छज्जे पर आये हैं । इस गुर्ज के पूर्व तरफ का दरवाजा व जालीदार में से आधा खुला दरवाजा एक जालीदार दरवाजा झरोखा पर आया है । आधा खुला व एक जालीदार दरवाजा छज्जा पर आया है । झरोखा से कमर भर सीढ़ी उतर कर गुर्ज में जाईये । छज्जा में से कमर भर की सीढ़ी चढ़कर फिर कमर भर की सीढ़ी उतर कर गुर्ज में जाइये । क्योंकि दरवाजे की चौकठ छज्जे से कमर भर ऊंची आयी है । इसी प्रकार उत्तर तरफ का झरोखा आया है ।

भूलवनी के मन्दिर :- अब बाहरी मन्दिरों की हार जो है । रंग भवन के उत्तर तरफ ४० हांस लाल चबूतरा के रंग भवन के पश्चिम से पूर्व तरफ जहां पर आये हैं । अब इस लाल चबूतरा के आगे पश्चिम से पूर्व तरफ अर्थात रंग भवन के ईशान कोना तरफ ११० मन्दिर बाहरी हार के सामने भीतरी तरफ चार हवेली चौरस जो पहली हार में आयी है । चौड़ाई तरफ की भी चार हवेली है । इन १६ हवेलियों की हद में (यह पहला फिरावा चौरस हवेलियों का है) भूलवनी के मन्दिर आये हैं । यह एक हवेली २३ मन्दिर की लम्बी-चौड़ी आयी है । चारों तरफ हवेलियों की जगह ९२ मन्दिरों की जगह हुई । इन चार हवेलियों के बीच में तीन त्रिपोलिया आये हैं । अर्थात ९ गलियां जिनमें ९ मन्दिर की जगह है । तब सब जगह १०१ मन्दिर की हुई । परन्तु १०१ मन्दिरों की जगह में ११० मन्दिरों की ११० हारें आयी हैं । जिसमें लम्बाई व चौड़ाई के १२१०० मन्दिर हुये । यह सब मन्दिर सफेद दर्पण के हैं ।

नव मन्दिर कैसे बढ़े :- सब ठिकानों के मन्दिर १०० हाथ के आये हैं। परन्तु इस भूलवनी के मन्दिर ९१-९१ हाथ के लम्बे-चौड़े आये हैं। इस वास्ते १०१ मन्दिर की जगह में ९ मन्दिर की जगह बढ़ गई। क्यों यह मन्दिर छोटे आये हैं। इसलिए १०१ मन्दिर की जगह में ११० मन्दिरों की ११० हारें आयी हैं।

३६ मन्दिर की रौंस : इस भूलवनी के मन्दिरों के मध्य भाग में १० मन्दिर का लम्बा-चौड़ा चौक आया है। इस चौक का क्षेत्रफल १०० मन्दिर का आया है। इस चौक के चारों तरफ भूलवनी के मन्दिरों की बाहरी किनार ५०-५० मन्दिर की दूरी पर आयी है। इस चौक में से एक मन्दिर की चौड़ी और नव मन्दिर की लम्बी एक रौंस चारों तरफ मन्दिरों के दीवार के साथ आयी हैं। चारों तरफ ३६ मन्दिर की परिक्रमा के वास्ते आयी है। इस रौंस की बाहरी तरफ घेर करके चारों ओर ४० दरवाजे आये हैं।

चौसठ मन्दिर का चबूतरा : ३६ मन्दिर की रौंस के भीतरी तरफ आठ मन्दिर का लम्बा-चौड़ा ६४ मन्दिर का चबूतरा रौंस से एक सीढ़ी ऊंचा आया है। इस चबूतरे के चारों तरफ ३२ थम्भ आये हैं। इन ३२ थम्भों पर ३२ मेहरावें आयी हैं। एक दिशा में ९ थम्भों पर ८ मेहरावें आयी हैं। इस चबूतरा पर कठेड़ा नही आया है। इन ३२ थम्भों के चौक के बीच में छत्त से लगकर चन्द्रवा शोभा ले रहा है। नीचे चबूतरा, चबूतरा पर सुन्दर गिलम मध्य में सिंघासन चौकियों सहित शोभा ले रहा है।

एक मन्दिर का ब्यान : यह मन्दिर ९१ हाथ का लम्बा-चौड़ा आया है। एक बड़ी अक्शी मेहराव के बीच में दो अक्शी थम्भों पर तीन अक्शी मेहरावें आयी हैं। मध्य के दो अक्शी थम्भों के बीच में ३० हाथ का लम्बा-चौड़ा दरवाजा आया है। जिसके ऊपर छोटी तीन हाथ की मेहराव आयी है। इसके दाएं-बाएं अक्शी थम्भों में दिवारों पर अक्शी मेहरावें आयी हैं बाकी वर्णन

पहले अनुसार आया है ।

दरवाजों का हिसाब : हर एक मन्दिर में देखने में चार-चार और गिनती में २-२ दरवाजें आये हैं यह दरवाजे दूसरे मन्दिरों में भी गिनती करी है तब १२००० मन्दिरों के २४००० दरवाजे हुये । परन्तु बाहरी किनार पर जो ११० मन्दिर आये हैं । उनके बाहरी दरवाजे पुरे हैं । आधे दरवाजा का हिसाब हो चुका है । आधे दरवाजे का हिसाब बाकी है । इस कारण से एक दिशा में ५५ दरवाजे अधिक हुये । तब चारों तरफ के दरवाजे २२० ज्यादा हुये और बीच में ३६ मन्दिर की रौंस परिक्रमा के वास्ते जो आयी है । उस रौंस के चारों तरफ घेरकर ४० मन्दिर आये हैं । उनके भी दरवाजे पूरे हैं । आधे-आधे दरवाजे का हिसाब पूरा हो चुका है । तब चारों तरफ के २० दरवाजे हिसाब से ज्यादा हुये । तब इस हिसाब से सब दरवाजे २४२४० हुये । इस भूलवनी के चारों तरफ मन्दिर-मन्दिर के दूरी पर दो-दो थम्भों की हारें आयी हैं । जिस तरह एक-एक हवेली के चारों तरफ आये हैं । परन्तु भूलवनी के मन्दिरों के आगे चबूतरे नही आये हैं ।

खड़ोकली का ब्यान : यह खड़ोकली ताड़वन की हद में आयी है । लाल चबूतरा से पूर्व की तरफ ४० मन्दिर दूरी पर रगंभवन के बाहर एक मन्दिर की रौंस के साथ लगकर आयी है खड़ोकली ३० मन्दिर की लम्बी -चौड़ी आयी है । ४० मन्दिर खड़ोकली के पूर्व तरफ आये हैं । इन्ही ११० मन्दिरों के भीतरी दक्षिण तरफ भूलवनी के मन्दिर आये हैं जो चार हार में चार हवेली आयी है ।

खड़ोकली का चबूतरा : लाल चबूतरा के पूर्व तरफ ३९ मन्दिर की दूरी पर रंगभवन से लगता हुआ दो मन्दिर का चौड़ा पश्चिम से पूर्व तरफ और दक्षिण से उत्तर तरफ रौंस के साथ लगता हुआ ३१ मन्दिर का लम्बा ताड़वन की जमीन से एक भोम ऊंचा चबूतरा आया है । फिर चबूतरा घूमकर पूर्व तरफ

३१ मन्दिर जाकर फिर दक्षिण तरफ घूमकर सीधा ३० मन्दिर जाकर रंगभवन की रौंस के साथ मिल गया है ।

पश्चिम तरफ के रौंस और मन्दिर : पश्चिम तरफ जो दो मन्दिर का चौड़ा चबूतरा आया है । इस चबूतरा पर बाहर वन की तरफ एक मन्दिर की चौड़ी रौंस आयी है और ३१ मन्दिर की लम्बी है । खड़ोकली के नैरित्य कोना से लेकर उत्तर तरफ १६ वृक्ष छोड़ कर चबूतरे के साथ एक मन्दिर का लम्बा उत्तर से दक्षिण, आधा मन्दिर का चौड़ा पूर्व से पश्चिम, चांदा का चौक आया है । इस चांदा के ठीक मध्य में १७वां वृक्ष आया है । वृक्ष के दाएं-बाएं उत्तर-दक्षिण चांदे की आध-२ मन्दिर की जगह बचेगी । इस चौक के दोनों तरफ उत्तर-दक्षिण सीढ़ी उतरी है । इस रौंस के बाहिर तरफ चांदा की जगह छोड़कर किनारे पर कठेड़ा आया है । इस रौंस के भीतरी तरफ चबूतरा के ऊपर एक मन्दिर की जगह में ३० मन्दिर उत्तर-दक्षिण की तरफ आये हैं ।

उत्तर तरफ रौंस और मन्दिर : उत्तर तरफ जो २ मन्दिर का चौड़ा चबूतरा है । इस चबूतरा के ऊपर बाहिर वन की तरफ एक मन्दिर की चौड़ी और पश्चिम से पूर्व तरफ ३२ मन्दिर की लम्बी रौंस आयी है । रौंस के बाहिर तरफ चबूतरा के किनार पर ३३ वृक्ष ताड़ के आये हैं । जिसमें १६-१६ वृक्ष दाएं-बाएं तरफ रहे । मध्य में एक मन्दिर की जगह (जहां सत्रहवां वृक्ष आया है) के साथ दूसरे बगीचा की किनार पर जो चबूतरा एक मन्दिर का लम्बा पश्चिम से पूर्व तरफ और आध मन्दिर का चौड़ा दक्षिण से उत्तर तरफ भोम भर का ऊंचा खड़ोकली के चबूतरा के बराबर आया है । इस चबूतरे के पूर्व-पश्चिम तरफ भोम भर की सीढ़ियां बगीचा की जमीन पर उतरी हैं । सीढ़ियों के उत्तर तरफ कठेड़ा आया है और दक्षिण तरफ तो खड़ोकली के चबूतरा की दीवार आयी है और चांदा के चौक के उत्तर तरफ एक मन्दिर का लम्बा कठेड़ा शोभा ले रहा है और रौंस के बाहिर की तरफ चांदा की

जगह छोड़कर दाएं-बाएं १५-१/२, १५-१/२ मन्दिर का लम्बा कठेड़ा आया है । इस चांदा के ठीक बीच पश्चिम तरफ के अनुसार सत्रवां वृक्ष आया है । इस रौंस के भीतरी तरफ रौंस के साथ लगकर चबूतरा के ऊपर लम्बाई में पश्चिम से पूर्व तरफ २८ मन्दिर आये हैं ।

पूर्व तरफ रौंस और मन्दिर : इस खड़ोकली के पूर्व तरफ जो दो मन्दिर का चबूतरा आया है । इस चबूतरा के ऊपर बाहर वन तरफ एक मन्दिर की चौड़ी और एकतीस मन्दिर की लम्बी- उत्तर-दक्षिण एक रौंस आयी है इस रौंस के बाहिर तरफ किनार पर बगीचा की जमीन में एक चांदा पश्चिम तरफ के चांदा मुताबिक आया है । चांदे की लम्बाई-चौड़ाई भी पहले माफक आयी है । चांदा की जगह छोड़ ३० मन्दिर लम्बा कठेड़ा उत्तर से दक्षिण आया है । इस रौंस के भीतरी तरफ चबूतरा के अन्दर लम्बाई में ३० मन्दिर उत्तर से दक्षिण में आये हैं ।

दक्षिण तरफ दीवार : इस खड़ोकली के अग्नि कोना तथा नैरित्य कोना के जो दो मन्दिर आये हैं । इन दोनों मन्दिर के बीच में २८ मन्दिर की लम्बी और एक मन्दिर की चौड़ी दक्षिण से उत्तर की जगह में एक दीवार आयी है यह रंग भवन के दीवार की रौंस के साथ लगकर आयी है ।

खड़ोकली के मन्दिर : इस खड़ोकली के पशिम-उत्तर और पूर्व तरैफ में कुल ८८ मन्दिर आये हैं । सो इन मन्दिरों की ऊंचाई एक भोम की आई है । इन मन्दिरों की छत से ३३ हाथ का चौड़ा छज्जा निकल कर रौंस पर आया है । इन मन्दिरों के भीतरी तरफ दरवाजें नही आये हैं और दक्षिण तरफ की दीवार में भी दरवाजे नही आये हैं । इन चारों तरफ की भीतरी दीवारों के भीतरी तरफ २८ मन्दिर की लम्बी-चौड़ी जगह में तीन भोम का गहरा जल भरा है । इस खड़ोकली का जल दर्शपर्श दूसरी भोम से होता है ।

एक मन्दिर का ब्यान : ८८ मन्दिर में से एक मन्दिर का ब्यान किया जाता

है । इसी प्रकार सब मन्दिर जानना जी । एक बड़ी अक्शी मेहराव में तीन मेहरावें, फिर एक-एक में तीन-तीन मेहरावें आने से ९ मेहरावें हुई । जिसमें ६ जालीदार दरवाजे, दो खुले दरवाजे तथा मध्य में अक्श आया है । रौंस से कमरभर ऊंचा झरोखा मध्य के अक्स में आया है और पश्चिम तरफ पांखे की दीवार में एक-एक मेहरावें, मध्य में दरवाजा दाएं-बाएं अक्श आया है । जैसे रंगभवन के मन्दिरों में आये हैं ।

सब झरोखे : इन सब ८८ मन्दिरों में ९० झरोखे आये हैं क्योंकि वायब्य और ईशान कोना के दोनों मन्दिरों में दो-२ झरोखे आये हैं । इनकी वनक रंगभवन के झरोखों जैसी आयी है ।

दरवाजों की गिनती : हर एक मन्दिर में देखने के चार-चार और गिनती में तीन-तीन दरवाजे आये हैं । जिससे कुल २६४ दरवाजे हुये । अग्नि और नैरित्य कोना के दक्षिण तरफ की दीवार में से निकल कर रंगभवन की रौंस पर जाईये ।

खड़ोकली के गुर्ज : लाल चबूतरा के पूर्व तरफ ४०वां-४१वां जो मन्दिर आया है । इन दोनों मन्दिरों के पाखें की जो दीवार है । उस दीवार के उत्तर तरफ बाहिर रौंस पर ६६ हाथ का लम्बा-चौड़ा एक भोम भर का ऊंचा चौरस गुर्ज आया है । इस गुर्ज के आगे पूर्व तरफ तीसवां और ३१वां जो मन्दिर आया है । इन दो मन्दिरों के बीच में जो पांखे की दीवार है । उस दीवार के उत्तर तरफ रौंस के ऊपर ६६ हाथ का लम्बा-चौड़ा भोम भर का ऊंचा दूसरा गुर्ज आया है इन दोनों गुर्जों के छज्जे नही आये हैं । बाकी सब वनक श्री रंगभवन के गुर्जो जैसी आई है । इन दोनों गुर्जों के बीच में ३० मन्दिर आये हैं । जो दक्षिण में रंगभवन के हैं और ३० मन्दिर की रौंस आई है रौंस के उत्तर तरफ खड़ोकली के दक्षिण तरफ की दीवार आयी है ।

रौंस के ऊपर पुल : श्री रंगभवन की ३० मन्दिरों की पहली भोम की छत्त

से एक सीढ़ी नीचा आध मन्दिर का चौड़ा छज्जा निकल कर उत्तर तरफ गया है और उत्तर तरफ के ३० मन्दिर की लम्बी खड़ोकली की दीवार में से आध मन्दिर का चौड़ा और ३० मन्दिर का लम्बा छज्जा निकल कर दक्षिण तरफ गया है। दोनों छज्जा मिलकर एक रूप हो गया है। इस प्रकार इस छत्त को पुल करके कहा है। इस पुल के पूर्व व पश्चिम तरफ ३३-३३ हाथ का छज्जा निकलकर दोनों गुर्जों से मिलकर एक रुप हो गया है। ए दोनों गुर्ज पुल वास्ते है। यह पुल ३० मन्दिर ६६ हाथ का लम्बा आया है और एक मन्दिर का चौड़ा उत्तर-दक्षिण आया है।

खड़ोकली का चेहवच्चा : पुल के उत्तर तरफ २८ मन्दिर का लम्बा-चौड़ा एक ताल आया है। जिसकी ११२ मन्दिर की गृद है। यह चेहवच्चा तीन भोम गहरा आया है। जिसकी एक भोम जमीन के नीचे की और दूसरी भोम एक भोम ऊंचे चबूतरे की और तीसरी भोम में खड़ोकली का मन्दिर आया है। इसका जल मिश्री से मीठा, सुगन्ध, शीतल, सुख देने वाला है। आधा मन्दिर रंगभवन का छज्जा और आधा मन्दिर खड़ोकली की दीवार के छज्जा की जगह पर ऊपर रौंस आयी है।

चेहवच्चा के चारों तरफ की रौंस : खड़ोकली के दक्षिण तरफ ३० मन्दिर और ६६ हाथ की लम्बी और दो मन्दिर की चौड़ी रौंस आई है। जिसकी एक मन्दिर की जगह में ३० मन्दिर की लम्बी दीवार तथा छज्जा पर आई है और एक मन्दिर की जगह ३० मन्दिर और ६६ हाथ की चौड़ाई, आधा मन्दिर रंगभवन का छज्जा और आधा मन्दिर खड़ोकली की दीवार के छज्जा की जगह के ऊपर रौंस आयी है। ए दोनों रौसें मिलाने से ३० मन्दिर ६६ हाथ लम्बी है। इन दोनों की छत्त पर चेहवच्चा के रौंस की जगह हुई। इस खड़ोकली के पश्चिम, उत्तर और पूर्व तरफ १३३ हाथ की चौड़ी रौंस चारों तरफ आयी है। यह रौंस मन्दिरों तथा गुर्जों की छात पर बनी है।

रौंस का बाहरी कठेड़ा : खड़ोकली के पूर्व तरफ की रौंस के पूर्व तरफ बाहरी किनारे पर ३१ मन्दिर का लम्बा कठेड़ा आया है । यह कठेड़ा ईशान कोना से चलकर अग्नि कोना अर्थात रंगभवन के मन्दिरों से ३३ हाथ दूर रह गया है । फिर एक कठेड़ा श्री रंगभवन के मन्दिरों के ३३ हाथ के चौड़े छज्जा के साथ लगकर पूर्व तरफ चल गया है । इसी प्रकार से खड़ोकली के उत्तर तरफ वायब्य कोना से नैरित्य कोना तक ३१ मन्दिर का लम्बा जाकर श्री रंगभवन के मन्दिर के छज्जा के साथ लगकर चला गया है । रौंस के उत्तर तरफ बाहरी किनारे पर ३० मन्दिर और ६६ हाथ का लम्बा कठेड़ा आया है ।

भूलवनी की रामत : इन भूलवनी के मन्दिरों में जब खेलने की इच्छा होती है । तब श्री राजश्यामा जी तथा सब सखियां इस भूलवनी के मन्दिरों में खेलते हैं । ये सब मन्दिर सफेद रंग दर्पण के आये हैं । एक मन्दिर में खड़े हो जाईये तो हजारों प्रतिबिम्ब दिखाई देते हैं । असल स्वरूप कौन है । यह पहचान नही हो पाती है जब एक सखी एक मन्दिर से निकलकर दूसरे मन्दिरों में भागती है तब अनेक सखी भागती हुई दिखाई देती हैं । तब पकड़ना अति मुश्किल हो जाता है । क्योंकि सखियों के अनेक प्रतिबिम्ब अनेक मन्दिरों पर पड़ते हैं । यदि कोई सखी अचानक पकड़ी जावे तो दूसरी सखियां सब हंसती हैं । इस प्रकार के अनेको खेल होते हैं ।

जल चबूतरा तथा चादें : खड़ोकली की रौंस की मध्य के भाग में २८ मन्दिर का लम्बा-चौड़ा चेहवच्चा जल का आया है । चेहवच्चा के चारों तरफ एक चबूतरा आया है । जिसपर कमर भर जल आया है । इसी जल चबूतरे पर चारों दिशा में आध मन्दिर के चौड़े एक मन्दिर के लम्बे चबूतरे उठकर रौंस के साथ लगे हैं । इस चबूतरे (चांदे) से दोनों तरफ कमर भर की सीढ़ी उतरी है । चांदो पर सामने कठेड़ा लगा है । सीढ़ियों को छोड़कर चारों तरफों

कठेड़ा आया है ।

खड़ोकली में झीलना : अनेक प्रकार के खेल तमासे करके स्नान करने के वास्ते सखियां खड़ोकली के तरफ आती हैं । भूलवनी के मन्दिरों से चलकर बाहर आठ मन्दिर निकल कर एक सीढ़ी नीचे उतर कर दो मन्दिर की चौड़ी रौंस पार कर चांदे से तीन सीढ़ी उतरकर जल चबूतरा पर खूब स्नान करती हैं । स्नान करके मध्य का चबूतरा जो भूलवनी का है । उस पर आती हैं ।

मध्य के चबूतरा पर सिनगार : स्नान करके भूलवनी के मध्य भाग में जो ६४ मन्दिर का चबूतरा है । जिसके मध्य में सिंहासन है । सिंहासन पर श्री राजश्याम जी बैठते हैं । स्नान करके पहले आठ सखियां कपड़े पहन कर श्री राजश्यामा जी को कपड़े पहना कर तथा सिनगार कराके अपना सिनगार करती है । बाकी सब सखियां एक दूजी को सिनगार करती हैं । श्री राजश्यामा जी के चारों तरफ बैठकर बातें करती हैं । कभी-कभी स्नानकर करके खेलती हैं । यह अपनी इच्छा के ऊपर है । बाकि सब दूसरी भोम पहली भोम के समान आयी है ।

तीसरी भोम : दूसरी भोम में पहली चौरस हवेली की सीढ़ियों वाली मन्दिर से भोम भर की सीढ़ियां चढ़कर उत्तर की मेहराव से निकलकर दक्षिण तरफ आकर चबूतरा के साथ चलकर हवेली के दोनों बड़े दरवाजे उलंघ कर आये । एक मन्दिर की रौंस छोड़कर २८ थम्भ के चौक के ५ मन्दिर चलकर २८ थम्भ के दस थम्भों के पास पूर्व तक पहुंचे ।

चार मन्दिर का चबूतरा : अठ्ठाईस थम्भ के चौक के पूर्व तरफ साथ लगकर रौंस की जगह पर एक चबूतरा कमर भर ऊंचा शोभा ले रहा है । इस चबूतरे के पश्चिम तरफ किनार पर चार थम्भ आये हैं । मध्य भाग में दो मन्दिर का अन्तर थम्भों में आया है और दाएं-बांए एक-एक मन्दिर पर आये हैं ।

मध्य के दो थम्भों के बीच में तीन सीढ़ी २८ थम्भ के चौक में दो मन्दिर की लम्बी उत्तर से दक्षिण एक-एक हाथ की ऊंची आयी है। पश्चिम एक हाथ की चौड़ी आयी है। इन सीढ़ियों के दाएं-बाएं कठेड़ा शोभा ले रहा है। दाएं-बाएं के थम्भों में भी कठेड़ा आया है। इन चार थम्भों के दाएं-बाएं तीन-तीन थम्भ अठ्ठाईस थम्भ के चौक के आये हैं। इस चबूतरा के दक्षिण तरफ २५ हाथ में मध्य से कमर भर की सीढ़ी रौंस पर उतरी है और दांए-बांए तरफ ३७-१/२,-३७-१/२ हाथ में कठेड़ा आया है। इसी प्रकार उत्तर तरफ भी शोभा आई है।

दस मन्दिर की देहलान :- चार मन्दिर चबूतरा के पूर्व तरफ दस मन्दिर की लम्बी उत्तर से दक्षिण तरफ और एक मन्दिर की चौड़ी पूर्व से पश्चिम एक देहलान आयी है। इस देहलान के पश्चिम तरफ मध्य की चार मन्दिर की जगह में चार थम्भ आये हैं। जिनपर तीन मेहरावें आयी हैं। मध्य की मेहराव दो मन्दिर की चौड़ी और दाएं-बाएं एक-एक मन्दिर की चौड़ी आई है। इसके दाएं-बाएं तीन-तीन मन्दिर उत्तर-दक्षिण तरफ आयी हैं। दक्षिण के दिवार पर तीन अक्शी मेहरावें चार अक्शी थम्भों पर आयी है। एक अक्शी मेहराव में तीन अक्शी मेहरावें मध्य की मेहराव में ३० हाथ का लम्बा-चौड़ा दरवाजा आया है। दाएं-बाएं दीवार आयी है। इस दरवाजे के आगे पश्चिम तरफ ३३ हाथ का लम्बा-चौड़ा चांदा (चौक) आया है। इस चौक के उत्तर-दक्षिण कमर भर सी सीढ़ियां उतरी हैं। इस चौक के पश्चिम तरफ कठेड़ा आया है। इस प्रकार की वनक तीनों दरवाजों तथा उत्तर की तीन मन्दिरों की आयी है। इस देहलान के पूर्व तरफ एक-२ मन्दिर दूरी पर दस थम्भ खुले आये हैं। जिसपर नौ मेहरावें आयी हैं मध्य की मेहराव दो मन्दिर की चौड़ी और बगली १० मेहरावें एक-एक मन्दिर की चौड़ी आयी है। जिसमें आठ मेहरावें खुली है और दो मेहरावें अक्शी आयी हैं। दक्षिण के अक्शी

मेहराव में तीन मेहरावें आयी हैं दाएं-बाएं दिवार और मध्य में एक दरवाजा । इस दरवाजे के दक्षिण तरफ एक कमर भर की सीढ़ी दीवार की मोटायी में आयी है सीढ़ी उतर कर पांचवे मन्दिर के चौक में जाइये । इस प्रकार की बनक उत्तर तरफ की दसवीं मेहराव, देहलान के उत्तरी सिरे वाली की आयी है ।

दस मन्दिर का लम्बा छज्जा : दस मन्दिर की देहलान के पूर्व तरफ दस मन्दिर का लम्बा दक्षिण से उत्तर तरफ और दो मन्दिर का चौड़ा, पश्चिम से पूर्व तरफ इस देहलान की जमीन के बराबर एक छज्जा आया है । यह छज्जा नीचे की दोनों चबूतरों, ३६ थम्भों और ४२ मेहरावों के ऊपर तथा बीच के चौक के ऊपर आया है । इस छज्जा के पूर्व तरफ बाहरी किनार पर १० थम्भ खुले और नव मेहरावें खुली आयी हैं । सो इन थम्भों में कठेड़ा लगा हुआ है । मध्य की मेहराव दो मन्दिर की चौड़ी और एक मन्दिर की ऊंची आयी है । इस मेहराव के बीच में दो छत्र आये हैं । इस छज्जा के दक्षिण तरफ १३३ हाथ की चौड़ी और एक मन्दिर की ऊंची मेहराव नीलवी की आयी है । इस मेहराव के नीचे मन्दिर भर में कठेड़ा और ३० हाथ की जगह में सीढ़ी ३३ हाथ के छज्जा पर उतरी है आगे ३ हाथ में कठेड़ा आया है । इसके आगे ६६ हाथ का लम्बा-चौड़ा गुर्ज आया है । यह आधा गुर्ज इस छज्जा पर और आधा गुर्ज इस छज्जा से नीचे ३३ हाथ के चौड़े छज्जा पर आया है । छज्जा से तीन सीढ़ी चढ़कर गुर्ज के आधे दरवाजे से होकर गुर्ज के चौक में जाईये । इस गुर्ज की जमीन, उत्तर तरफ के दस मन्दिर जो कमर भर ऊंचे है । जिस पर देहलान आई है । उनको छोड़कर बाकी के मन्दिर के साथ छज्जा के अनुसार बराबर आई है । अब गुर्ज के मन्दिर के पश्चिम तरफ यदि उत्तर दिशा वाले मन्दिर में जायें अर्थात् गुर्ज के पश्चिम की दिवार पर जो ६ मेहरावें आयी हैं । उनमें से तीन जो उत्तर के मन्दिर अर्थात १० मन्दिर वाले हांस का है । उसमें जाना चाहें तो तीन छोटी

मेहरावें ११-११ हाथ की ऊंची अक्शी थम्भों पर ११-११ हाथ आयी हैं। उनके मध्य में खुला दरवाजा जिस दरवाजे के दाएं-बाएं जालीदार दरवाजे आये हैं। कमर भर की ऊंची सीढ़ियां चढ़कर पश्चिम तरफ वाली १० मन्दिर की देहलान में जाईये। क्योंकि ये कमर भर ऊंची आई है। यदि गुर्ज के पश्चिम दीवार के दक्षिण तरफ वाले दरवाजे से मन्दिर मे जायें तो एक हाथ की ऊंची चौकठ को उलंघ कर मन्दिर में जाइये। इसी प्रकार की वनक छज्जा के उत्तर तरफ वाले गुर्ज की आयी है। वहां पर गुर्ज के पश्चिम दीवार में दक्षिण वाले दरवाजे से तीन सीढ़ी चढ़ना होगा। उत्तर के दरवाजा की जमीन मन्दिर की जमीन के बराबर आयी है। इस छज्जा के उत्तर-दक्षिण तरफ तीन सीढ़ी नीचे मन्दिरों का तथा गुर्ज का छज्जा यहां तक आकर रह गया है। इस बड़े छज्जे के ऊपर सुन्दर गिलम बिछी है। छत से लगकर चन्द्रवा, चारों तरफ झालर शोभायमान है।

देहलान और मन्दिर कैसे :-

देहलान दस मन्दिर का, झेरोखे दस सामिल।
माहे चौक दस मन्दिर का, हुये तीनों मिल कामिल॥
तीसरा हिस्सा एक हांस का, ये जो दस झरोखे।
द्वार थम्भ आगू इन, ना दीवाल बीच इनके॥

पश्चिम तरफ दस मन्दिर का लम्बा एक मन्दिर का चौड़ा एक देहलान आया है और पूर्व तरफ दस मन्दिर का लम्बा और एक मन्दिर का चौड़ा झरोखा आया है। इन दोनों के बीच में एक मन्दिर की चौड़ी जगह बची है। इसे वानी में चौक करके कहा गया है। इन तीनों (झरोखा, चौक, देहलान) की जमीन की बराबर आयी है। वानी में इस प्रकार लिखा है।

दाहिनी तरफ दूजा जो मन्दिर, आये बैठें ताके अन्दर
नीला ने पीला रंग, ताकी उठत कै तरंग॥

मध्य भाग में चार मन्दिर की देहलान आयी है इसके दाहिने तरफ तीन मन्दिर

आये है। देहलान के साथ वाला पहला मन्दिर नीले रंग का है। इसके साथ वाला आधा नीला, आधा पीले रंग का मन्दिर आया है। इसके साथ वाला मन्दिर पीले रंग का आया है। तीन मन्दिर उत्तर आये हैं। तो एक चौपाई में देहलान कहते हैं और एक चौपाई में मन्दिर ब्यान किया गया है। इसका भेद इस प्रकार का है। काम पड़ने पर पूर्व के थम्भों से जालीदार निकल जाती है। इस दीवार पर दो थम्भों के ऊपर एक मेहराव के बीच में तीन मेहरावें एक-एक में फिर तीन-तीन मेहरावें आने से नौ मेहरावें हुई। सो मध्य में अक्श और दो दरवाजे खुले और ६ जालीदार आये है। इसी प्रकार छः मन्दिरों में बनी दिखाई देती है। बगली दीवारों के मध्य में दरवाजा दाएं-बाएं दिवारें आई हैं। इस प्रकार सब दिवारों पर वनक आयी है। इस प्रकार छः मन्दिर समय पर दिखाई देते हैं और मध्य में चार मन्दिर की देहलान। इसके दक्षिण तरफ दूसरा जो मन्दिर नीले-पीले रंग का आया है। उसमें सुख सैय्या है। जिसके चार पाये हैं। चार पायों पर ४ डान्डे शोभित है। सैय्या रेशम की नीवार से बुनी हुई है। चार डान्डों पर छत्री आयी है। चार कलश चार डान्डों पर आये हैं। एक कलश मध्य छतरी पर आया है। इस सुख सैय्या पर गादी, चादर और दक्षिण तरफ दो तकिये और गाल, मसूरे सब जोगवाई है। इस सुख सैय्या के आगे पूर्व तरफ दो सुन्दर नूर की चौकी चढ़ने-उतरने के वास्ते धरी है। इस मन्दिर के पूर्व तरफ २ मन्दिर की दूरी पर मध्य अक्स के सामने कठेड़ा के साथ लगता हुआ गिलम पर एक सिहांसन शोभा खूबी दे रहा है। इस सिहांसन के पश्चिम तरफ दो सुन्दर नूर की चौकी धरी है। दूसरी मन्दिर की हार में २८ थम्भ के चौक के दक्षिण तरफ एक मन्दिर की दूरी पर पहला मन्दिर आसमानी रंग का आया है। यह मन्दिर श्री श्यामा जी के श्रृंगार के वास्ते है। बाकी शोभा पहली भोम की भांति आयी है।

चौथी भोम के पूर्व तरफ का छज्जा : तीसरी भोम के २८ थम्भ चौक के पश्चिम

तरफ जो चौरस हवेली आयी है । उसमें से भोम भर की सीढ़ियां चढ़कर २८ थम्भ के चौक में आकर इस चौक के पूर्व तरफ एक मन्दिर की चौड़ी रौंस को उलंघ कर आगे दो मन्दिर का लम्बा और एक मन्दिर का चौड़ा जो मन्दिर है । उसके किनार पर पहुंचे । इस मन्दिर के दरवाजे को ऊलंघ कर मन्दिर के मध्य भाग जाकर दक्षिण तरफ देखा तो तीन अक्शी मेहराव, मध्य मेहराव में दरवाजा । इसी प्रकार उत्तर तरफ भी वनक आयी है । सामने ८८ हाथ का लम्बा-चौड़ा दरवाजा मन्दिर की जमीन से तीन सीढ़ी ऊंचा आया है । जिसके आगे कमर भर की सीढ़ी आयी है । दरवाजा, सीढ़ियां दीवार की मोटाई में आयी है ! क्योंकि इस बड़े मन्दिर के पूर्व १० मन्दिर का लम्बा दो मन्दिर का चौड़ा छज्जा कमर भर ऊंचा आया है । इस प्रकार बड़े दरवाजे के दाएं-बाएं के मन्दिर जो छज्जा के पश्चिम बराबर आये हैं । उनमें भी तीन-तीन सीढ़ी उतरी है । बड़े दरवाजे में ८८ हाथ की चौड़ी सीढ़ी आयी है । दरवाजे कोउलंघ कर छज्जे पर आये । छज्जा के पूर्व तरफ थम्भ खुले, पश्चिम के अक्शी थम्भ प्रथम भोम की भांति आये हैं । गुर्ज व मेहरावें सब उसी भांति शोभित हैं । छज्जा पर गिलम, सिंहासन, कुर्सियां सब धरी हैं । इस छज्जा के अनुसार चौथी-पांचवी, छठी, सातवीं, आठवीं भोम के छज्जा का ब्यान जानना जी ।

निरत की हवेली : बाहिर के छज्जा से कमर भर सीढ़ी उतर कर एक मन्दिर के चौड़े-दो मन्दिर के लम्बे मन्दिर कोउलंघ कर एक मन्दिर चौड़ी रौंस छोड़कर आगे पांच मन्दिर २८ थम्भ के चौक को उलंघ कर, एक मन्दिर की चौड़ी रौंस को छोड़कर हवेली के मध्य भाग के दरवाजा से होकर अन्दर प्रवेश किया । इसके आगे एक मन्दिर चलकर थम्भ की हार में से मध्य की मेहराव से होकर आगे एक मन्दिर चलकर चबूतरा की पूर्व की किनारे पर होकर चबूतरा १७ मन्दिर का पार करके पश्चिम कमर भर की सीढ़ियां उतर कर तीन मन्दिर चलकर हवेली से बाहर निकले । फिर तीन मन्दिर की त्रिपोलिया

की जगह छोड़कर ऐसी-ऐसी दो हवेलियां त्रिपोलियों सहित पार करके चौथी हवेली जो निरत की आयी है, उसके पूर्व किनारे पर पहुंचे ।

निरत की हवेली का ब्यान : यह हवेली २३ मन्दिर की लम्बी-चौड़ी और ८८ मन्दिर की गिर्द की आयी है । चौरस हवेली के अनुसार सब जोगवाई आई है । थोड़ा सा अन्तर है सो लिखा जाता है । इस हवेली के बाहरी तरफ १०० थम्भ आये हैं । दक्षिण दिशा के मध्य भाग में एक दरवाजा आया है । इस दरवाजे के दाएं-बाएं , पूर्व-पश्चिम तरफ १०-१० मन्दिर आये हैं । दरवाजे के बाहिर रौंस पर मन्दिर की दीवार से लगते हुये दो चबूतरे कमर भर ऊंचे एक-एक मन्दिर के लम्बें-चौड़े दोनों तरफ आये हैं । इन मन्दिरों में हिसाब के तीन-तीन दरवाजे आये हैं । यह मन्दिर लाखी (लाल) माणिक रंग के आये हैं । पश्चिम तरफ मध्य भाग में दरवाजा के दाएं-बाएं दस-दस मन्दिर स्वेत रंग के आये हैं । बड़े दरवाजे के बाहिर दो चबूतरे आये हैं । इसी प्रकार उत्तर तरफ दरवाजा तथा मन्दिर आये हैं । जो पीले रंग (पुखराज) के आये हैं और पूर्व तरफ २१ मन्दिर की जगह पर हरे रंग की २०-२० थम्भों की दो हारें आई हैं ।

चौपाई : हरी दीवार जो मन्दिर, सो सामी है नेक दूर ॥

इन थम्भों के ऊपर दक्षिण से उत्तर तरफ २१-२१ मेहरावों की दो हारें आयी है । मानो कि २१ मन्दिर की देहलान शोभा दे रही है । अग्नि कोना वाला मन्दिर लाखी रंग का आया है । ईशान कोना वाला मन्दिर पुखराज रंग का आया है । नैरित्य कोना वाले मन्दिर की दीवार पूर्व और दक्षिण की तरफ की लाखी रंग की आयी है । पश्चिम और उत्तर वाली स्वेत रंग आई । वायब्य कोना का मन्दिर जिसके पश्चिम और दक्षिण की दीवारे स्वेत रंग की और उत्तर-पूर्व की पीले रंग की आयी है इस हवेली में ६४ मन्दिर आये हैं । तीन मन्दिर की जगह में तीनों दिशा में तीन दरवाजें आये हैं । पूर्व तरफ २१

मन्दिर की देहलान आयी है । इस हवेली के चारों कोना पर २४-२४ मेहरावें आयी हैं । पूर्व तरफ मन्दिर-२ के अन्तर पर मध्य के चबूतरा के पूर्व तरफ तीसरी हवेली के पश्चिम तरफ ६ हारें थम्भों की शोभा ले रही हैं । जिससे देहलान की शोभा अत्याधिक हो रही है ।

मध्य का चबूतरा : इस हवेली के चारों तरफ की शोभा देखकर २१ मन्दिर की जगह पर जो देहलान बनी है । इसकी मध्य की मेहराव में होकर एक मन्दिर की चौड़ी देहलान को उलंघकर आगे एक मन्दिर चलकर एक थम्भ की हार छोड़कर आगे एक मन्दिर चलकर एक चौरस चबूतरा कमर भर ऊंचा आया है । इस चबूतरा पर चारों तरफ ६८ थम्भ आये हैं । जिन पर ६८ मेहरावें आयी हैं । इस चबूतरा के चारों दिशा से कमर भर की सीढ़ियां रौंस पर उतरी है । चबूतरे पर सुन्दर गिलम पशम की बिछी है चारों दिशा में चबूतरे के किनार पर कठेड़ा के साथ सीढ़ियों को छोड़कर सुन्दर तकिये आये हैं । जिस दिशा में जो रंग आये हैं । उस दिशा में उसी रंग के तीनों थम्भों की हारें आयी हैं । ६८ थम्भों के बीच छत से लगकर चन्द्रवा तना है । चारों तरफ नगों की झालर लगी है । गिलम के ऊपर मध्य में सिंहासन सुन्दर शोभा ले रहा है । जिसके आगे दो नूर की चौकी शोभायमान है ।

निरत का होना : कृष्ण पक्ष में १५ दिन तक इस चबूतरे पर बैठकर सब सखियां व श्रीश्यामा जी सहित श्री राज जी नवरंग वाई के जुत्थ सहित किये हुये निरत को देखते हैं । जब श्री राज जी चांदनी चौक से लगभग ६ बजे सब सखियों को लेकर १०० सीढ़ियां व २० चांदे चढ़कर २ मन्दिर के लम्बे-चौड़े चौक डयोढ़ी को पार कर अन्दर की गली को पार कर फिर २८ थम्भ के चौक को पार कर एक गली पार कर ११ मन्दिर की लम्बी एक मन्दिर की चौड़ी देहलान को पार कर आगे दो मन्दिर चलकर कमर भर ऊंचे चबूतरे पर आकर दो घड़ी तक आरोगते हैं । फिर सीढ़ियों वाले मन्दिर से प्रथम भोम से होकर दूसरी भोम व तीसरी व चौथी भोम में उतर वाले

दरवाजे से निकलकर त्रिपोलिया की मध्य की गली से होकर पश्चिम तरफ चले । फिर तीन हवेली चौरस उलंघ कर फिर दक्षिण तरफ घूमकर पूर्व तरफ की देहलान की शोभा देखकर सखियां व श्री राज जी कमर भर ऊंचे चबूतरे पर आये । श्री राजश्यामा जी सिंहासन पर विराजमान हुये श्री श्यामा जी बायीं तरफ सिंहासन पर विराजमान हुई । सखियां सब श्री राजश्यामा के दाएं-बाएं, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण गिलम पर विराजमान हुई । नवरंग वाई १९ सखियों को लेकर श्री राज श्यामा जी के सामने पश्चिम मुख करके नृत्य करने के वास्ते खड़ी हुई । बाकी २८० सखियां तरह-तरह के बाजों को लेकर वजाने के वास्ते बैठी और कई सखियां खड़ी होकर बाजे बजाती हैं । कै प्रकार के स्वरों को पूरती हैं । ३६ राग-रागनियों से अपने धनी के गुणों को गाती हैं इस प्रकार नृत्य का आन्नद अपरम्पार डेढ़ घंटा तक चलता रहता है ।

चौपाई : कै विध के वाजे बजे, नवरंग वाई नाचत ।
हाथ पांव अंग वालत, कही न जाय सिफत ॥
ले बाजे रूहें खड़ी, मृदंग जंन्त्र लाल ।
रंग रवाव चंग तम्बूरा, बोलत वेन रसाल ॥

जिस समय नवरंग वाई नृत्य करती है । सो इनका अक्स-प्रतिबिम्ब दीवारों, सिंहासन सबमें पड़ता है मानो ऐसा दिखाई देता है कि हर ठिकानों पर निरत होती है और दीवारों के पशु-पक्षी तथा पुतली आदि सब कोई नृत्य में स्वर पुरते हैं ।

चौपाई : मेहबूब को रिझावने, अनेक कला साधत ।
और नजर न कर सके, बंध ऐसे ही बांधत ॥

सो ऐसी निरत का वर्णन कौन कर सकता है ।

चौपाई : नामैं जाको नवरंग, ताकि निरत कहूँ क्यों कर ।
अनेक गुन रंग ल्यावहीं, नए-नए दिल धर ॥

इस नृत्य का आनन्द कौन ले सकता है । जिसकी आत्म दृष्दि खुली होवे, रूह की आखों देखिये । सो इस नवरंगबाई जी के नृत्य को देखकर श्री राजश्यामा जी तथा सब सखियां आनन्द में मग्न हो जाती है । अन्त में श्री राज जी महाराज नवरंग बाई को बुला करके पान का बीड़ा देते हैं ।

चौपाई : निरत होत चौथी भौम में, एक पोहोर लग रात ।
हक सुभान रीझ के, हाथ बीड़ी देत कहे बात ॥

तब रात के नौ बजते हैं । इसके बाद श्री राजश्यामा जी तथा सखियां शयन के लिए पांचवी भोम जाते हैं ।

पांचवी भोम का ब्यान

नृत्य देखे पीछे श्री नवरंगवाई को पान देने के बाद श्री राजश्यामा जी उठ बैठते हैं । तब सब सखियां उठकर श्री राजश्यामा जी के साथ चलती हैं सीधे पूर्व तरफ चलकर सीढ़ियों वाले मन्दिर से चढ़कर उत्तर की मेहराव से बाहर निकल कर बीच वाली गली में होके पश्चिम मुख करके ९९० मन्दिर पश्चिम तरफ चलकर मध्य के चौक रंग परवाली मन्दिर में जाकर श्री युगल स्वरूप जी चारों चरण चौकी पर धर कर सुख सैय्या पर बैठे । सब सखियां प्रणाम करके शयन के लिए अपने-अपने मन्दिरों पधारी, वहां पर श्री राज जी को अपनी-अपनी सुख सैय्या पर पौढ़े देखा । कुछ देर आनन्द विलास के उपरान्त शयन किया । पूर्व तरफ रसोई की हवेली के भीतरी तरफ जहां ३६ हारे हवेलियों की खतम हो जाती है तब इसके आगे २८ मन्दिर की जगह चलकर ६३० मन्दिर की लम्बाई-चौड़ाई की जगह में नव चौक आये है । एक चौक २१० मन्दिर का लम्बा-चौड़ा आया है । सब चौक आपस

में मिल करके आये हैं एक दिशा के किनारे पर तीनों चौकों के बाहरी दीवार ६३० मन्दिर की लम्बी दिखाई दे रही है। इस चौक की बाहरी दीवार में मन्दिर-२ की हद पर एक-२ अक्शी मेहराव थम्भों सहित ८८ हाथ की ऊंची आयी है। ऊपर छोटी मेहराव १२ हाथ की आयी है। फिर एक-एक में तीन-तीन अक्शी मेहरावें ३३-३३ हाथ की ऊंची आयी है। इसी प्रकार की बनक चारों तरफ बाहरी दीवार पर आयी है। चारों दीवारों के कोनो पर चार स्तून जल के आये हैं।

बाहरी दीवार के दरवाजे :- ईशान कोना से अग्नि कोना तक ६३० मन्दिर आये हैं। बाहरी दीवार से अन्दर जाने के वास्ते २४ दरवाजें आये हैं। ईशान कोना से दक्षिण तरफ १७ मन्दिर की दीवार छोड़कर आगे एक मन्दिर की जगह में दरवाजा आया है। इस दरवाजे के आगे २४ मन्दिर की दीवार छोड़कर ८८ हाथ का लम्बा-चौड़ा एक दरवाजा आया है इसी प्रकार २४-२४ मन्दिर की दूरी पर ८८ हाथ के लम्बे-चौड़े दरवाजे आये हैं। आठवें दरवाजे के आगे १७ मन्दिर पर बाहरी दीवार पर पहले चौक की हद आयी है। परन्तु आठवें दरवाजे से सीधे ३४ मन्दिर चलकर दूसरे चौक का पहला दरवाजा आयेगा। क्योंकि इसके बीच में दीवार आयी है। इस प्रकार प्रथम चौक की भांति फिर २४-२४ मन्दिर पर दरवाजे आते गये हैं। इस प्रकार से तीन चौक के एक दिशा में २४ दरवाजे आये हैं। चारों दिशा के ९६ दरवाजे आये हैं।

मध्य का चौक :- इन मन्दिरों की हार के भीतरी तरफ एक मन्दिर की दूरी पर एक थम्भ की हार चारों तरफ आयी है। जिसकी एक दिशा में २०७ थम्भ आये हैं। चारों तरफ के चारों खूटों के सब थम्भ ८२८ एक हार में हुए। बाहरी पूर्व तरफ की थम्भ की हार से लगते हुए ९ चौक आये है। पूर्व से पश्चिम तरफ १७ मन्दिर के अन्तर पर चौक आये हैं। इस प्रकार

पूर्व से पश्चिम प्रथम थम्भ की हार से लगते हुए ९ चौक आये हैं। पश्चिम तरफ के ९ चौकों के पश्चिम साथ लगकर २०७ थम्भ आये हैं। इन्ही थम्भों से एक मन्दिर दूरी पर २०८ मन्दिर की एक हार आयी है। इसी प्रकार दक्षिण से उत्तर तरफ के चौकों का ब्यान जानना जी।

४९ चौकों का ब्यान :- चारों तरफों के किनार के चौकों को छोड़कर बीच के चौकों का ब्यान इस प्रकार आया है। यह चौक आठ-आठ मन्दिर के लम्बे-चौड़े अर्थात ६४-६४ मन्दिर के आये हैं। इन सब चौकों के हर एक दिशा में मध्य भाग में दो जुड़ाफें के मन्दिर और दाएं-बाएं तीन-तीन गली जिसमें दो-दो हारें थम्भों की आयी हैं। इन हर एक चौक के चारों तरफ से २४-२४ गली आने से इन चौकों को ४९ चौपड़े कहा जाता है। इन चौपड़ो के कोनो में हवेलियां आयी हैं।

किनार के २८ चौक : बाहर की थम्भ की हार के साथ लगकर भीतरी तरफ एक दिशा पूर्व में सात चौक आये हैं। पूर्व से पश्चिम तरफ आठ मन्दिर का लम्बा और उत्तर से दक्षिण सात मन्दिर का चौड़ा आया है। इस प्रकार से चारों तरफ किनार के सब चौक २८ आये हैं। इन्ही चौकों के तीन दिशा में १८ रास्ते चले हैं। इस वास्ते इन चौकों को त्रिपुड़ा करके कहा है।

चार कोना के चार दोपुड़ा : चारों तरफ थम्भ की हार के भीतरी तरफ चारों कोना में चार दोपुड़ा के चौक आये हैं यह चौक- ७-७ मन्दिर के लम्बे-चौड़े बराबर आये हैं अर्थात ४९-४९ मन्दिर के आये हैं। इस चौक के दोनों तरफ १२ रास्ते चले हैं। इस वास्ते इनको दोपुड़ा करके कहा है। इस प्रकार से दोपुड़ा, त्रिपुड़ा व चौपुड़ा के कुल चौक मिला के ८१ हुए। इन चौकों में सुन्दर गिलम बिछी है।

हवेलियों का ब्यान :- एक हवेली १७ मन्दिर की लम्बी-चौड़ी बराबर आई है। मध्य भाग के एक मन्दिर की जगह में ८८ हाथ का एक दरवाजा आया

है । तब चारों तरफ के कुल ५६ मन्दिर हुये । चारों खूटों के चार मन्दिर मिलाकर ६० मन्दिर हुये । इन सब मन्दिरों में एक-एक दरवाजा आया है और ४ दरवाजे चारों दिशा में भीतर जाने के वास्ते आया है । दरवाजों सहित ६४ मन्दिर की गृद हवेली की आयी है । इन मन्दिरों की हार से बाहरी तरफ एक मन्दिर के दूरी पर १८ थम्भ आये हैं । तब चारों तरफ के सब ७२ हुए । चारों कोनो पर ४ थम्भ नही आए हैं । इन हवेलियों के मन्दिरों के भीतरी तरफ एक मन्दिर की दूरी पर एक दिशा में ११ मन्दिर आये हैं । तब चारों तरफ के ४४ मन्दिर हुये । परन्तु इस हवेली के एक दिशा में भीतर जाने के वास्ते एक बड़ा दरवाजा आया है । इससे मन्दिर ४३ हुये । इन सब मन्दिरों में एक-एक दरवाजा भीतरी तरफ आया है । चारों कोना वाले मन्दिरों को गुर्ज करके कहा है । गुर्ज में दो-दो दरवाजे आये हैं । यह दरवाजे कमर भर ऊंचे रौंस पर आये हैं । कमर भर की सीढ़ी चढ़कर दरवाजों से होकर गुर्ज के चौक पर जाइये । इस गुर्ज के चौक की जमीन मन्दिर के चौक से कमर भर ऊंची आई है । चारों गुर्जों के आठ दरवाजें हुए । इस दूसरी हार मन्दिर से एक मन्दिर भीतरी तरफ ४० थम्भों की एक हार चारों तरफ आई है । एक दिशा में देखने के १० थम्भ आये हैं । तब चारों तरफ के ४० थम्भ हुये । इन चालीस थम्भों के बीच में ९ मन्दिर का लम्बा-चौड़ा कमर भर ऊंचा चौक आया हैं । जिस पर सुन्दर गिलम बिछी है । मध्य में सिंहासन चारों तरफ कुर्सियां रखी हैं । ऊपर चन्द्रवा घेरकर झालर शोभायमान हैं । इस हवेली के दोनों हारों में १०३ मन्दिर और ११२ थम्भ आये हैं । पांच बड़े दरवाजें और ४ गुर्जों के ८ दरवाजें हुये । इसी प्रकार से ६४ हवेली आयी है ।

जुड़ाफों का बयान : पूर्व तरफ के बाहर की २०८ मन्दिर की हार से तीन मन्दिर के अन्तर पर एक दिशा में आठ जुड़ाफें आये हैं । हर एक जुड़ाफा पूर्व से पश्चिम तरफ दो मन्दिर का चौड़ा और दक्षिण से उत्तर १७ मन्दिर

का लम्बा आया है । यह जुड़ाफा नौ चौकों के बीच में आया है । इसी प्रकार पश्चिम २३ मन्दिर की दूरी पर ८ जुड़ाफे आये हैं । तब कुल नौ हारों के ७२ जुड़ाफे हुए । अन्तिम नवमीहार जुड़ाफा से तीन मन्दिर की दूरी पर पश्चिम की तरफ २०८ मन्दिर की एक हार मन्दिरों की आई है । हर एक जुड़ाफा के पूर्व-पश्चिम तरफ तीन-तीन मन्दिर की दूरी पर एक-एक हवेली आयी है । उत्तर-दक्षिण तरफ ६४-६४ मन्दिर वाला चौक चौपुड़ा आया है । इसी प्रकार उत्तर से दक्षिण तरफ ७२ जुड़ाफे आये हैं । तब पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण एक चौक में १४४ जुड़ाफे आये हैं ।

एक जुड़ाफे का ब्यान :- पूर्व तरफ की २०८ मन्दिर की एक हार से पश्चिम तरफ एक जुड़फा का ब्यान किया जाता है । उसी प्रकार सभी जुड़ाफों को जानना जी । एक जुड़ाफा उत्तर से दक्षिण तरफ १७ मन्दिर का लम्बा और पूर्व-पश्चिम दो मन्दिर का चौड़ा आया है । मध्य भाग के चौड़ाई तरफ के दोनों मन्दिरों की जगह में तीन दरवाजे बड़े अन्दर जाने के वास्ते आये हैं । एक दरवाजा मध्य की दीवार में, एक दरवाजा भीतरी तरफ, एक दरवाजा बाहरी तरफ । दरवाजे के दाएं-बाएं ८-८ मन्दिर आये हैं । इन १६ मन्दिरों के दरवाजे बाहर की तरफ ही आये हैं । इस प्रकार भीतरी दरवाजे के दाएं-बाएं मन्दिर आये हैं । इन सब मन्दिरों का एक-एक दरवाजा भीतरी तरफ आया है । चौड़ाई के दो मन्दिरों के बीच में एक ही दीवार १७ मन्दिर की लम्बी आयी है । इस वास्ते इनको जुड़ाफा का मन्दिर कहते हैं । तब एक जुड़ाफा के ३२ मन्दिर हुये और बाहरी मन्दिरों के बाहरी तरफ १८ थम्भ और भीतरी तरफ भी १८ थम्भ आये हैं । तब एक जुड़ाफा के ३६ थम्भ हुये । इन जुड़ाफा के लम्बाई में ६४-६४ मन्दिर वाले चौक आये हैं और चौड़ाई तरफ तीन-तीन मन्दिर की दूरी पर सब हवेलियां आई हैं ।

सब मन्दिरों की गिनती :- एक हवेली में १०३ मन्दिर आये हैं । तो ६४

हवेलियों के सब मन्दिर ६५९२ हुये और एक जुड़ाफा में ३२ मन्दिर तब १४४ जुड़ाफा के ४६०८ सब मन्दिर हुये । बाहरी हार के एक दिशा के २०० मन्दिर तो चारों दिशा के ८०० मन्दिर तब कुल मन्दिर १२००० हुये ।

(दूसरी विधि) सब मन्दिरों की गिनती :- एक चौपड़ा के १२४ मन्दिर तो ४९ चौपड़ा के सब मन्दिर = ६०७६
एक त्रिपुड़ा के १०२ मन्दिर तो २८ त्रिपुड़ा के सब मन्दिर = २८५६
एक दोपुड़ा के ७९ मन्दिर तो ४ दोपुड़ा के सब मन्दिर = ३१६
एक हवेली के ४३ मन्दिर तो ६४ हवेलियों के सब मन्दिर = २७५२
कुल मन्दिर १२००० हुए ।

सब थम्भों की गिनती :- एक हवेली के बाहर-भीतर के सब थम्भ ११२ आये हैं । तब ६४ हवेलियों के सब थम्भ ६१६८ हुये और एक जुड़ाफा के ३६ थम्भ आये हैं । तब १४४ जुड़ाफों के सब ५१८४ थम्भ हुये । बाहरी मन्दिरों के भीतरी तरफ के २०६ हुये । तब चारों तरफ के ८२४ थम्भ हुये । कुल थम्भ १३१७६ हुए ।

बड़े दरवाजों की गिनती :- प्रत्येक मन्दिर के दो बड़े दरवाजे आये हैं । उसकी गिनती लिखी जाती है । हर एक मन्दिर में जो बड़े दरवाजे आये हैं । एक बाहर की तरफ एक भीतर की तरफ । जुड़ाफा में तीन दरवाजे आये हैं । एक बाहर, एक भीतर, एक मध्य में । बाहरी मन्दिरों की दीवार के एक दिशा में १६ दरवाजे तो चारों दिशा के सब ६४ । एक हवेली के दस दरवाजे तो ६४ हवेली के सब मिलाकर दरवाजे ६४० । एक जुड़ाफा में तीन दरवाजे तो १४४ जुड़ाफा के कुल दरवाजे ४३२ । कुल दरवाजे ११३६ हुए । १२००० मन्दिरों के छोटे दरवाजे १२००० । एक चौक के कुल दरवाजा १३,१३६ हुये ।

गुर्ज और दरवाजे :- एक हवेली में चार गुर्ज आये हैं। ६४ हवेली में २५६ हुये। एक हवेली में दरवाजे ८ हुये तो ६४ हवेली के ५१२ हुए। एक हवेली के मध्य में एक चौक तो ६४ हवेली में ६४ चौक हुए।

गलियों की गिनती :- एक दोपुड़ा में १२ गली तो ४ में ४८ हुई। एक त्रिपुड़ा में १८ गली हैं तो २८ त्रिपुड़ा में ५०४ हुई। एक चौपुड़ा में २४ गली आयी हैं। तो ४९ चौपुड़ा में ११७६ हुई। एक हवेली में एक गली आयी है। तो ६४ हवेली में ६४। कुल गलियां १७९२ हुई।

दरवाजों की गिनती :- एक हवेली के दरवाजा से दूसरी हवेली के दरवाजा तक एक ही दरवाजा माना जाता है। दक्षिण से उत्तर तरफ ७२ दरवाजे हुए। पूर्व से पश्चिम ७२ दरवाजे हुए कुल १४४ दरवाजे हुए।

दूसरी विधि : बाहरी मन्दिर की हार से हवेली तक एक दरवाजा, तब ३२ हवेलियों के ३२ दरवाजे हुए। पूर्व से पश्चिम ५६ दरवाजे हुए। उत्तर से दक्षिण ५६ दरवाजे हुए। इस प्रकार से कुल ५६+५६+३२=१४४ दरवाजे हुए।

मेहरावों की गिनती :- एक हवेली के दरवाजा से दूसरी हवेली के दरवाजा तक एक दरवाजा माना जाता है। एक दरवाजे पर २३ मेहरावें हुई। ११ मेहरावें सामने और १२ मेहरावें बगली दाएं-बाएं तरफ होने से २३ मेहरावें होती है। जिसका बेवरा दोनों हवेलीयों की दोनों दरवाजों पर चार मेहरावें, इस जुड़ाफा की तीन मेहरावों के आगे-पीछे दो-दो थम्भों पर दो-दो मेहरावें आयी हैं। इस प्रकार ११ मेहरावें सामने तरफ हुई। हवेली तथा जुड़ाफों के दाएं-बाएं तीन-तीन मेहरावें आई हैं। जिसमें एक-एक मेहराव थम्भ पर आयी है और दो-दो मेहरावें दरवाजों तथा थम्भों पर आयी है। इसी प्रकार से मेहरावे दूसरी हवेली तथा जुड़ाफा के दरवाजा के दाएं-बाएं तरफ आयी

है । यह १२ मेहरावें वगली तरफ हुई । इस प्रकार मेहरावें एक दरवाजे पर हुई कुल १४४ दरवाजों पर ३३१२ मेहरावें हुई ।

रंग परवाली मन्दिर :- नव की नव हारे आने से ८१ चौक बनते हैं । मध्य के चौक में दो मन्दिर का लम्बा-चौड़ा परवाली रंग का लाल मन्दिर आया है । इस चौक के चारों तरफ खांचो में १६-१६ चौक आये हैं और हर एक दिशा में चार-चार चौक आए हैं । इस प्रकार मध्य के चौक के चारों तरफ ८० चौक आये हैं । मध्य रंग परवाली मन्दिर की एक दिशा में दो मन्दिर की चौड़ी और एक मन्दिर की ऊंची अक्शी मेहराव आयी है । जिस पर तीन फूल लाल माणिक के शोभा दे रहे हैं । इस अक्शी मेहराव के बीच में एक ८८ हाथ की लम्बी-चौड़ी सेंदुरिया रंग की चौकठ आयी है । इस चौकठ पर हरे रंगो की अनेक प्रकार की चित्रकारी बनी है । इस चौकठ में दो किवाड़ दर्पण रंग के शोभायमान हो रहे हैं । एक किवाड़ ४३ हाथ का चौड़ा और ८६ हाथ का ऊंचा आया है । जिसमें वेनी, सड़, अदवान आने से चौक बने है । चौक पर कई प्रकार के नंग जड़े हुये हैं और सांकल, कुण्डा की अपार शोभा है । इस दरवाजे के दाएं-बाएं ५६-५६ हाथ की दीवार आयी है । इसी प्रकार की वनक चारों दिशा के चारों दरवाजों पर आयी है । इस मन्दिर के चारों तरफ एक-एक मन्दिर की दूरी पर तीन परिक्रमा आयी है । पहली एक परिक्रमा एक मन्दिर की चौड़ी आठ मन्दिर की लम्बी, दूसरी परिक्रमा रंग परवाली मन्दिर से एक मन्दिर की दूरी पर १६ मन्दिर की लम्बी आयी है । तीसरी परिक्रमा २ मन्दिर की दूरी पर २४ मन्दिर की लम्बी आयी है । चौथी परिक्रमा ३ मन्दिर की दूरी पर ३२ मन्दिर की लम्बी घेर कर आयी है । पूर्व के दरवाजे के सामने तीन मन्दिर की दूरी पर जुड़ाफे के मन्दिरों की चौड़ाई में दो मन्दिर की चौड़ी एक मन्दिर की ऊंची एक अक्शी मेहराव शोभा दे रही है । अब इस रंग परवाली मन्दिर के दरवाजे के भीतर जाइये । तो फर्श

पर गिलम बिछी है । इसके मध्य भाग में नूर की सैय्या विराजमान है । जिस सैय्या के चार पाये है ऊपर दो ईस, दो ऊपले आये हैं । सो पांच रंग की नीवार से बुनी हुई है । जिस पर तरह-तरह से चित्रकारी आयी है । इस नीवार के ऊपर मखमल का गदला ऊपर चादर बिछी हुई है । दक्षिण तरफ दो तकिये धरे है और गाल मसूरे धरे हैं । रजाई, चादर उत्तर तरफ ओढ़ने के वास्ते सब धरे हैं । जितनी जोगवायी सुख सैज्या के वास्ते होनी चाहिए । सो सबधरी है । चार पावा के ऊपर चार डान्डे आये हैं । डान्डों के ऊपर छतरी है, छतरी पर कलश, चार कलश चार डान्डों पर एक कलश मध्य छतरी पर आया है । इस सुख सैय्या के पूर्व तरफ दो सुन्दर नूर की चौकी लाल माणिक की धरी है । इस रंग परवाली मन्दिर के दीवार के साथ वस्त्र, भूषण वासन, सन्दूक खाने की वस्तु अनेक प्रकार की धरी है । दक्षिण की बड़ी मेहराव में दरवाजा के पूर्व-पश्चिम बगली दीवार में पूर्व-पश्चिम दो सुन्दर गुसलखाने बने हैं । अन्दर सब नल, टोटी, फव्वारा सब सुन्दरता शीशा इत्यदि से सुसज्जित है । नल से पानी इच्छा चाही मिलता है ।

सैन करने के वास्ते रंगपरवाली में आना :- श्री राजश्यामा जी समस्त सखियों को लेकर ३६ हवेलियों को उलंघ कर २८ मन्दिर की जगह को ऊलंघकर पूर्व तरफ तीनों चौकों की एक ही दीवार आयी है । उस दीवार में २४ दरवाजें अन्दर जाने के वास्ते आये हैं । सो अग्नि कोना से ईशान कोना तरफ जो बारवां दरवाजा आया है । उस दरवाजा से होकर अन्दर प्रवेश किया । एक मन्दिर चलकर अन्दर का दरवाजा उलंघकर आये । पूर्व तरफ १-१/२ मन्दिर चलकर थम्भ की हार वाली गली में होकर उत्तर तरफ आठ मन्दिर चलकर ५६ मन्दिर वाले चौक में पहुंचे फिर इस चौक के पश्चिम तरफ ६-१/२ मन्दिर चलकर चौथी हवेली के दक्षिण तरफ जो इस चौक के आगे पश्चिम तरफ और बाएं तरफ वाला त्रिपोलिया आया है । उसकी मध्य की गली में होते हुए पश्चिम तरफ चले । दाएं-बाएं तरफ आठ-आठ हवेलियों को ऊलंघकर

मध्य वाले ९वें चौक में दाखिल हुए । इस चौक के पश्चिम के थम्भों के साथ होकर दक्षिण आठ मन्दिर चलकर फिर पश्चिम तरफ एक मन्दिर चलकर जो चौकों के बीच एक ही दीवार आयी है । वहां दो मन्दिर की हारें आपस में मिली हैं । उसके तीनों दरवाजा को उलंघकर आगे १-१/२ मन्दिर चलकर थम्भों की हार वाली गली के साथ में होकर उत्तर तरफ आठ मन्दिर चलकर ५६ मन्दिर वाली चौक में पहुचें । इस चौक के पश्चिम तरफ ६-१/२ मन्दिर चलकर चौथी हवेली उत्तर तरफ चले । दाएं-बाएं चार-चार हवेलियों को पार करके मध्य के ६४ मन्दिर वाले चौक के पूर्व तरफ किनार पर पहुंचे । इस चौक में तीन मन्दिर पश्चिम तरफ चलकर रंग परवाली के मध्य में जो नूरमयी सुख सैय्या है । मन्दिर भर चलकर सुख सैय्या के आगे दो चौकी पर चरण कमल रखकर श्री युगल स्वरुप जी पूर्व की तरफ मुख करके विराजमान हुए । आपन सब सखियां आ-आ करकं श्री राज जी के स्वरुप को हृदय में लेकर शीश झुका कर प्रणाम किया । जब शिर उठाया तो अपने को मन्दिर में श्री राज जी के साथ सुख सैय्या पर बैठे देखा । इस प्रकार सब सखियां अपने-अपने मन्दिर पहुंची । बाकी बीस सखियां आसावन्ती जुत्थ की रह गयीं । उनमें आठ सखियों ने श्री राजश्यामा जी के वस्त्राभूषण उतारकर, शयन के वस्त्र पहनाये । १२ सखियां अपने-अपने बाजे लेकर मेहबूब के गुण गाने लगी । उन आठ सखियों ने फिर श्री राजश्यामा जी के चरण दवाये, एक घड़ी तक यह होता रहा । फिर श्री राज जी की आज्ञानुसार यह सब सखियां अपने-अपने मन्दिर शयन वास्ते गयी । अपनी सुख सैय्या पर श्री राज जी को पौढे देखा । तो स्वयं श्री राज जी के साथ पौढ़ गयी हैं ।

चोपाई : अब कहूँ प्रेम इतको, सुख लेवें चाह्या चित को ।
सुख लेवें सारी रात, सुख लेवें सारी रात ।।

जिस प्रकार मध्य के चौक का बयान किया है उसी प्रकार मध्य के नौ चौकों का ब्यान जानना जी ।

छठ्ठी भोम की बनक :- बाहर की तरफ जो ६ हजार मन्दिर में से एक मन्दिर कम जो एक हार मन्दिरों की आयी हैं और पाखें की दिवारें भी एक कम ६ हजार आयी हैं। इन मन्दिरों के भीतरी तरफ एक कम ६ हजार थम्भों की हार आयी हैं। मन्दिरों और थम्भों के बीच में जो जगह है। इसको देहलान करके कहा गया है इस देहलान में पांखे की दीवार के सामने मन्दिरों के दीवार के साथ लगकर एक कम ६ हजार सुखपाल आये हैं और पूर्व तरफ बड़े दरवाजे के दाएं-बाएं १/२-१/२ मन्दिर की दीवार आयी है। इन दोनों दीवारों के साथ लगकर दो सुखपाल आये हैं। तब सब सुखपाल ६ हजार एक हुये। जब शाम के तीन बजते हैं। उस समय सुखपाल तीसरी भोम के छज्जा के साथ लगकर, श्री राजश्यामा जी तथा सखियों को लेकर सैर करने के लिए वनो में जाते हैं।

सुखपाल की बनक :- श्री लालदास जी की वृत्त।

इन भोम में रहत हैं, सुखपाल छः हजार।
तरह तख्तरवा की, हक हादी रूहें बैठन हार॥
चार पाय नूर के, ऊपर छत्रियां सुखदाय।
झालर मोती झलकत, फिरती गृद शोभाय॥
आठों कलश नूर के, छत्री ऊपर झलकत।
मिने सुजनी जड़ाव बिछौने, साम-सामी तकिये शोभित॥
विच जागा शोभित, अति सुन्दर सुखदाय।
मन बांच्छत हाजर होत है, जब सवारी को जाय॥

सुखपालों के नीचे चार पाये हैं। ऊपर दो ईस दो उपले आये हैं। बीच की सब जगह रत्नों से जड़ी है। चार पावों पर चार डाँडे आये हैं। ऊपर छात आयी है। घेर कर मोतियों की झालर आयी है। छत्त पर दो गुमट शोभा दे रहे हैं। दो कलश दो गुमट पर और तीन कलश सामने आये हैं। इसी

प्रकार तीन कलश पीछे आये हैं और दोनो गुमटों के कलश पर दो ध्वजा पताका फहरा रहे हैं। ए सुखपाल ९ हाथ का लम्बा और ४ हाथ का चौड़ा आया है। लम्बाई के मध्य भाग में तीन हाथ की चौड़ी और चौड़ाई की तरफ, ४ हाथ की खाली जगह आयी है। इस जगह पर दाएं तरफ ३ हाथ का चौड़ा लम्बाई तरफ ४ हाथ का लम्बाई, चौड़ाई तरफ और एक हाथ ऊंचा तख्त आया है। इस तख्त पर पश्मी बिछौना आया है। ऊपर एक गादी, एक चाकला, तीन तकिये धरे हैं। ऊपर एक छत्री लटक रही है। एक-२ गज के गोफने दाएं-बाएं पकड़ने वास्ते लटक रहे हैं। चाकले ऊपर एक सखी बैठत है और चरण नीचे खाली जगह पर शोभित है। इसी प्रकार से दूसरी तरफ तख्त पर साज शोभा आयी है। चाकले पर एक सखी विराजमान है। सुखपाल मन चाही चाल से चलती है।

तखतरवा :- छठ्ठी भोम के २८ थम्भ के चौक में तखतरवा का रहने का ठिकाना है। जब श्री राजश्यामा जी सखियों सहित इकट्ठे बैठ कर जाने का विचार होता है तब छठ्ठी भोम के २८ थम्भ के चौक से तखतरवा बड़े दरवाजे से निकल कर तीसरी भोम की छज्जा से बराबर लग कर खड़ा होता है। उस तखतरवा में बैठकर श्रीराजश्यामा जी तथा सखियां मन चाहे आकाश में उड़कर जहां जाना चाहें चले जातें हैं।

तखतरवा की वनक :- तखतरवा १६ पहल का आया है। हर एक पहल १८-१८ हाथ का आया है ९६ हाथ का लम्बा-चौड़ा और गृद २८८ हाथ का आया है। इसके १६ पावे हैं। ऊपर १६ डान्डे आये हैं। ऊपर एक गुम्मट है। गुम्मट पर एक कलश आया है। १६ डान्डों पर १६ कलश आये हैं। इन १६ कलशों पर ध्वजा पताका फहरा रहे हैं। १६ पावों के ऊपर तथा बीच की जगह पर रत्नों से जड़ित चित्रकारी हुई है। मध्य भाग में गिलम बिछी हुयी है। ऊपर चन्द्रवा तना है। १६ डान्डों के गृद कठेड़ा कमर भर

ऊंचा आया है । चारों दिशाओं में कठेड़े खोल देने पर तीन सीढ़ी बन जाती है । फिर उसी को बन्द कर देतें हैं । तो कठेडा बन जाता है । श्री राजश्यामा जी के वास्ते गिलम पर सिंहासन विराजमान है और घेर करके सिंहासन के चारों तरफ सखियों के वास्ते कुर्सियां धरी हैं । यह तखतरवा मानो एक गोल मकान जैसा आकाश में उड़ता है तो अति सुहावना दिखाई देता है ।

सातवीं भोम का ब्यान :- बाहर की हार एक कम छः हजार मन्दिरों की आयी हैं और इसके भीतर एक कम छः हजार थम्भों की हार आयी है । इन थम्भों पर १ कम छः हजार मेहरावें आयी हैं । हर एक मेहराव में एक-एक हिंडोला लटक रहा है । परन्तु बड़े दरवाजे के भीतरी तरफ जो एक बड़ी मेहराव आयी है । यह मेहराव दो मन्दिर की लम्बी आई है । इस मेहराव के दाएं-बाएं दो हिंडोले लटक रहे हैं । इस प्रकार ६ हजार हिंडोला पहली थम्भों की हार में शोभा दे रहे हैं । इन थम्भों के हार के भीतरी तरफ एक मन्दिर की दूरी पर एक हार और थम्भों की आयी है । यह हार ९ कम छः हजार की आयी हैं । इन थम्भों में १० कम ६००० महरावें आयी हैं इस वास्ते इन मेहरावों में ९ कम ६ हजार हिंडोले आये हैं । यह १० थम्भ २८ थम्भ के चौक के जगह पर नही आने से यहां मेहरावें नही आई हैं । यहां पर इनकी जगह में २८ थम्भ के चौक के छत्त में कुन्डों के साथ दाएं-बाएं के हिंडोलों के ठीक सामने समान उन्तर पर आये हैं । इस प्रकार दोनो थम्भों की हारों में बारह हजार हिंडोलें हुये । जब झूलने का समय होता है । तब चकरी से जंजीरे खुलनी शुरू होती है । हिंडोले नीचे योग्य स्थान तक लटक आते हैं । तब हर एक हिंडोला में श्री राजश्यामा जी अनन्त रूप होकर एक-एक सखि के साथ बैठकर झूलते हैं । एक हिंडोला मध्य की गली में पहुंच कर फिर वापस १ मन्दिर आकर मध्य की गली में फिर हिंडोले से मिलता है । यहां सातवीं भोम में दो हिंडोलों की ताली पड़ती है । झूलते समय कुन्डो

की अति मोहनी आवाज झन्कार होती है ।

चौपाई सुख कहाँ कहूँ सातमी भोम का, जो लेत खट छप्पर ।
हक हादी रुहें झूलत, साम-सामी बांध नजर ।।

यह हिंड़ोले श्री राजश्यामा जी तथा सखियों की इच्छानुसार झूलते हैं ।

हिंडोलों की वनक :- यह सब हिंड़ोले खट छप्पर की भांति के आये हैं । हर एक हिंड़ोले के नीचे चार पाये आये हैं । ऊपर दो ईस और दो ऊपले आने से पलंग बन गया है । बीच की सब जगह नीवार से बुनी हुई है । ऊपर गादला, चादर, तकिया सब रखें हुये हैं । चार पावा पर चार डान्डे ऊपर एक छत्री, छत्री पर एक कलश आया है । चार झान्ड़ो के ऊपर चार जंजीरे मेहराव की चकरी के कड़े तक आयी है । सो इसी तरह से सब हिंड़ोले आये हैं ।

आठवी भोम का ब्यान :- बाहरी-भीतरी दोनों मन्दिरों की हारों के मध्य में १० कम १२ हजार थम्भ आये हैं । सातवीं भोम के अनुसार १२००० हिंड़ोलें आये हैं । थम्भों के दोनों हारोंके मध्य में जो गली आयी है । इस गली में ९ कम छः हजार मेहरावें आयी हैं । जिससे ९ कम ६ हजार हिंडोले आये है । किन्तु थम्भों की मेहराव के कुन्डों के सूत में २८ थम्भ के चौक में कुन्डों में ९ हिंडोले आये हैं । ए सब हिंडोले १८००० हुये । सातवीं भोम के अनुसार सब सखियों के साथ श्री राज जी अन्नत रूप होकर झूलते है । यहां पर मध्य में चार हिंडोलों की ताली पड़ती है ।

चौपाई : सुख हिंडोले आठवीं भोम के, हक हादी रूहें झुलत ।
ए चारों तरफ के झूलने, हक हमको देत लज्जत ।।

नवमी भोम का ब्यान :- बाहरी तरफ जो छः हजार मन्दिरों की जगह आयी है । इस जगह पर कमर भर ऊंचा त्रिपोलिया के साथ लगता हुआ एक चबूतरा घेर करके आया है । यह एक मन्दिर का चौड़ा ६ हजार मन्दिर का लम्बी

इस चबूतरा के भीतरी तरफ किनार पर ६ हजार मन्दिर की लम्बी दीवार चारों तरफ घूमी है। यह दीवार बाहरी हार मन्दिरों की है। इस दीवार पर एक कम ६ हजार अक्शी थम्भ ४४ हाथ के ऊंचे आये हैं। फिर उनके ऊपर ४४-४४ हाथ की अक्शी मेहरावे हैं। इस चबूतरा के बाहरी किनार पर मन्दिर-मन्दिर के अन्तर पर ६०००थम्भ आने चाहिए थे परन्तु २०१ हांस जो आये हैं इसलिए कम हो जायेंगे। तो थम्भ ५७९८ आये हैं। फिर इन थम्भों पर तथा गुर्जों पर मेहरावें खुली शोभा दे रही हैं। इस वाहरी मन्दिर के स्थान पर नवमी भोम में मन्दिर नही आये हैं। केवल भीतरी तरफ की दीवार आयी है। जिससे एक देहलान छः हजार मन्दिर की दिखाई दे रही हैं। पूर्व तरफ एक मेहराव दो मन्दिर की आयी है और फिर एक बड़ी मेहराव में ३-३ अक्शी मेहरावें आयी हैं। मध्य में दरवाजा और दाएं-बाएं अक्शों पर अनेकों प्रकार की चित्रकारी दिखाई दे रही हैं। इस दीवार में जो मन्दिर-मन्दिर के अन्तर पर ४४-४४ हाथ के अक्शी थम्भ आये हैं। उन पर और खुले थम्भों पर खुली मेहरावें एक कम ६ हजार आयी है। इस प्रकार दीवार पर मध्य भाग में ३३ हाथ का लम्बा ३० हाथ का ऊंचा दरवाजा आया है। ऊपर ३ हाथ की मेहराव शोभा ले रही है। दाएं-बाएं अक्शी मेहरावों की शोभा है।

चांदों का ब्यान :- देहलान से निकल कर त्रिपोलिया की तरफ आइये तो ३३ हाथ का लम्बा-चौड़ा कमर भर का ऊंचा चौक आया है। इसके दाएं-बाएं कमर भर की सीढ़ियां उतरी हैं। एक चांदे से दूसरा चांदा ६६ हाथ की दूरी पर आया है और पूर्व तरफ मध्य भाग में एक मन्दिर का लम्बा ८८ हाथ ऊंचा दरवाजा आया है। इस दरवाजे के दाएं-बाएं आध-आध मन्दिर की दीवार आयी है। इस दरवाजे के पश्चिम तरफ एक मन्दिर का लम्बा उत्तर से दक्षिण तरफ और ३३ हाथ का चौड़ा पूर्व से पश्चिम तरफ कमर भर का ऊंचा चौक आया है। इस चौक के उत्तर-दक्षिण तरफ कमर भर की सीढ़ी आयी है। चौक

तथा सीढ़ियों के पश्चिम तरफ कठेड़ा आया है। इस चांदे के चौक के दाएं-बाएं ८३-८३ हाथ के दूरी पर एक-एक चांदा और आया है। यह चांदे देहलान के भीतरी तरफ पश्चिम के ओर आये हैं।

छज्जा चारों तरफ का :- इस मन्दिरों के हांस में दो गुर्ज और आठ थम्भों के ऊपर जो नव मेहरावें खुली आयी हैं। इन मेहरावों के बाहर पूर्व तरफ १० मन्दिर का लम्बा और दो मन्दिर का चौड़ा जो छज्जा आया है। इसके दाऐं-बाएं जो एक-एक मन्दिर का चौड़ा छज्जा आया है। वे इस बड़े छज्जे से आकर एक मन्दिर की जगह में मिल गया है।

छज्जा के ऊपर :- हर एक हांस में छज्जा के ऊपर मध्य भाग में सिंहासन आया है। जिसके ऊपर श्री युगल स्वरूप आकर बैठा करते हैं और सिंहासन के दाएं-बाएं ३०००-३००० कुर्सियां धरी हैं। हर एक कुर्सी पर दो-दो सखियां बैठती हैं इस प्रकार २०१ हांसो के मध्य में सिंहासन तथा कुर्सियां अनेकों प्रकार के वनक की रखी हैं। इस प्रकार से २०१ हांसो में २०१ सिंहासन और १२०६००० सब कुर्सियां धरी हैं। जिस दिशा में श्री राजश्यामा जी और सखियां बैठते हैं। श्री राज जी उस दिशा का ब्यान बड़ी दूर-दूर की तक अपनी अंगुली के इशारों से समझाते हैं।

दसमी चांदनी :- श्री रंग भवन की चांदनी २००० मन्दिर की लम्बी-चौड़ी और ६००० मन्दिर की गृद आयी है। इस चांदनी के तीसरे हिस्से के मध्य भाग में ६६६ मन्दिर का लम्बा-चौड़ा और १९९८ मन्दिर की गृद तथा २०० हांसों का गोलाकार चबूतरा कमर भर ऊंचा आया है। इस चबूतरे के चारों दिशा में पहल (हांस) आये हैं। हर एक हांस की लम्बाई १० मन्दिर की आयी है। नीचे के जो नौ चौक आये हैं उनकी लम्बाई-चौड़ाई ६३० मन्दिर की है। यह चौक चौरस थे इसके बाहिर चारों तरफ कोनों से गोल गृद चबूतरा आया है। गोलाई आने से १८-१८ मन्दिर की जगह चारों तरफ इस चबूतरा

में मिल गयी है । तो इस प्रकार १८ एक तरफ, १८ दूसरी तरफ ३६ मन्दिर की लम्बाई बढ़ जाने से ६३०+३६=६६६ मन्दिर लम्बा-चौड़ा चबूतरा आया है । इस चबूतरा के चारों दिशा के हांसो के सामने कमर भर की सीढ़ी नीचे उतरी है । चारों दिशा की सीढ़ियों की जगह छोड़कर चारों तरफ घेर के एक सुन्दर कठेड़ा आया है और चबूतरा के ऊपर सुन्दर रंग-बिरंगी गिलम बिछी है । गिलम के मध्य भाग में सिंहासन शोभा ले रहा है । इसको घेर कर ६००० कुर्सियां रखी हैं । चबूतरे के बाहरी किनार तरफ हर एक हांस में एक-एक सिंहासन तथा ६००० कुर्सियां आयी हैं । इस प्रकार इस चबूतरा पर भी १२०००० कुर्सियां और २०० सिंहासन आये हैं ।

चारों चेहबच्चें :- इस गोल चबूतरा के चारों कोना पर चार चेहबच्चा शोभा दे रहे हैं । हर एक चेहबच्चा ६ मन्दिर का लम्बा-चौड़ा जिसकी गृद १८ मन्दिर की है । पहल (हांस) १६ आये हैं । इस चेहबच्चा में कई फुहारें लगे हैं । फुहारों का पानी चांदनी के बगीचों के चेंहबच्चे में पड़ता है । इन चेहबच्चों को घेर कर एक मन्दिर की चौड़ी रौंस आयी है जो चेहबच्चा की दीवार पर घूमी है । यह रौंस चबूतरा के एक हांस में रौंस से मिली है । इस रौंस से होकर चबूतरा के गिलम पर जाइये । इस रौंस के भीतरी तरफ चारों दिशा के चारों हांसो से कमर भर सीढ़ी उतरी है । जो कमर भर नीचे जल चबूतरे पर उतरी है । सीढ़ियों को छोड़कर बाकी में कठेड़ा आया है । इस रौंस के बाहरी तरफ तीनों हांसों से कमर भर की सीढ़ी तीन दिशा में उतरी है । बाकी में कठेड़ा आया है ।

आड़े-खड़े चबूतरे :- चांदनी के मध्य भाग गोल चबूतरा से पंच मोहलों तक २८ मन्दिर की जगह आयी है और एक मन्दिर की जगह पंच मोहलों की गली की आयी है । उसे मिलाकर २९ मन्दिर की जगह हुई । जिसमें १८ मन्दिर की जगह चबूतरे में मिल गयी है और ८ मन्दिर की जगह चेहबच्चा

की रौंस तक आयी है। बाकी ३ मन्दिर की जगह चबूतरे से ८ मन्दिर के दूरी पर तीन मन्दिर का चौड़ा कमर भर ऊंचा चबूतरा २३१ पहल का आया है। जो चारों तरफ घूमा है और बाहर किनार पर जो मन्दिर भर चौड़ा और कमर भर का ऊंचा चारों तरफ चबूतरा है। बाहरी पहली हार मन्दिर से दूसरी हार मन्दिर तक ५ मन्दिर की जगह आयी है। पहली हार मन्दिर और पहली गली की जगह पर कमर भर का ऊंचा चबूतरा आया है। फिर ३ मन्दिर की जगह दूसरी हार तक चबूतरे से कमर भर नीची जगह छोड़कर, फिर दूसरे त्रिपोलिया पर तीन मन्दिर का चौड़ा २३१ हांस का लम्बा कमर भर का ऊंचा एक चबूतरा आया है। इस पहले और भीतर दूसरे चबूतरा के बीच ३५ त्रिपोलिया पर ३५ चबूतरे तीन-तीन मन्दिर के चौड़े और कमर भर के ऊंचे २३१ पहल के आये हैं। बाहरी किनार के चबूतरा से लेकर अन्दर के चबूतरा तक ६५४ मन्दिर की जगह आयी है। यह जगह बाहर से पांच मन्दिर और मध्य के चबूतरा के चेहबच्चे अर्थात् ३४१ मन्दिर की जगह छोड़कर अर्थात मध्य से ३४१ मन्दिर और बाहरी दो मन्दिर का चौड़ा चबूतरा तीन मन्दिर की कमर भर नीची जगह। यह पांच मन्दिर छोड़ कर अर्थात ३४१+५=३४६ मन्दिर बाकी १०००-३४६=६५४। इस ६५४ मन्दिर की जगह में नीचे भोम के अनुसार ३६ हवेलियों के बीच में ३५ आड़े रास्ते जो त्रिपोलिया ६००० मन्दिर के लम्बे आये हैं। उन्ही त्रिपोलियों के ऊपर यह ३५ चबूतरे और दाएं-बाएं के दो चबूतरे कुल ३७ चबूतरे कमर भर के ऊंचे आये हैं और नीचे बाहरी किनार तरफ चौरस हवेलियों के बाहर दूसरी मन्दिरो की हार के आगे पश्चिम तरफ साथ लगता हुआ जो त्रिपोलिया आया है। इसी के ऊपर चांदनी पर पहला चबूतरा आया है और मध्य में ३६ फिरावे हवेलियों के पंच मोहलों तक आये हैं। इसके आगे भीतरी तरफ तीन मन्दिर की जगह के ऊपर चेहबच्चों के आगे एक चबूतरा कमर भर ऊंचा भीतरी तरफ आया है। इस प्रकार ३७ चबूतरे कमर भर ऊंचे आये है और नीचे

भोमों में जो हर हवेली के दाएं-बाएं तीन-तीन मन्दिर के चौड़े त्रिपोलिये खड़े सब २३१ आये हैं। सो इसी जगह के ऊपर चांदनी पर खड़े रास्ते तीन-तीन मन्दिर के चौड़े और ६५४ मन्दिर के लम्बें आये हैं। जो कमर भर चांदनी से ऊंचे है।

एक चबूतरे का ब्यान :- एक चबूतरा तीन मन्दिर का चौड़ा आया है। मध्य भाग के एक मन्दिर के स्थान पर कमर भर गहरी एक मन्दिर चौड़ी नहर आयी है। इस नहर के दाएं-बाएं एक-एक मन्दिर की चौड़ी जगह आयी है। उसके मध्य भाग में ३३-३३ हाथ की सुन्दर फुलवाड़ी शोभा युक्त है। फुलवाड़ी के दाएं-बाएं ३३ हाथ की रौंस आयी है। नहरों के मध्य भाग में एक पुल आया है। नहर की लम्बाई में पुल के दाएं-बाएं के रौंस से कमर भर की दो सीढ़ियां नहर में उतरी है। जिसके दाएं-बाएं कठेड़ा आया है। इसी प्रकार नहर के दोनों तरफ फुलवाड़ी और रौसें आये हैं। इसी प्रकार सभी आड़े और खड़े चबूतरों की शोभा है।

बगीचों की गिनती :- चार नहरों के बीच में एक बगीचा कमर भर नीचा आया है नहर चबूतरों पर आयी है। चारों तरफ चबूतरा के मिलने से मध्य भाग में चौरस स्थान पर बगीचा आया है। हर एक बगीचा के चारों तरफ ४-४ नेहरें आयी हैं और चारों कोना पर जहां ४ नहरें मिली हैं। वहां पर चार चेहबच्चें आये हैं। तब चारों तरफ दो नहरें या दो चबूतरों के बीच एक लाईन में २३१ बगीचे हुये। इसी प्रकार ३७ चबूतरों के बीच ३६ हारें आने से बगीचों की कुल संख्या ८३१६ हुई। ये बगीचा चबूतरे से कमर भर नीचे आये हैं।

एक बगीचे का ब्यान :- एक बगीचा के मध्य भाग में आड़ी-खड़ी जगह में एक-एक मन्दिर का चौड़ा चबूतरा कमर भर ऊंचा बड़े चबूतरे के साथ मिलते हुए आया है। एक मन्दिर चौड़े चबूतरे के मध्य भाग में आध मन्दिर

की चौड़ी नहरे आयी है । इस नहर के दाएं-बाएं २५-२५ हाथ की बची हुई जगह पर सुन्दर रौंस रत्नों से जड़ित आयी है । इस चार छोटी नहरों के मध्य भाग में जहां चार छोटी नहरें आकर मिली हैं । वहां पर चेहबच्चा आया है । जिसमें पांच चकरी वाले फुहारे लगे हैं । उनका पानी उछलकर फिर उसी चेहबच्चा में गिरता-पड़ता है । इस बड़े बगीचा में चार चबूतरे छोटे होने से चार छोटे बगीचें आये हैं । इन सब छोटे बगीचों में मन्दिर-मन्दिर के अन्तर पर अनेक प्रकार के फूलों के पौधे आये हैं । हर एक बगीचा के चारों दिशा में कमर भर की सीढ़ी उतरी है । सो इन छोटे बगीचों में आयी है । फिर इन सीढ़ियों के सामने नहरों में भी सीढ़ियां उतरी हैं । सीढ़ियों की जगह छोड़कर चारों तरफ कठेड़ा आया है । बगीचों के चौक में तथा रौंस पर जगह-जगह बैठने के वास्ते सिंहासन, कुर्सियां रखी हैं । चौरस हवेलियों पर फूल के वृक्ष और गोल हवेलियों पर दूव आयी है । इस क्रमानुसार सब आये हैं । पंच मोहलों पर फल-फूलों के वृक्ष आये हैं ।

बड़ी एक नहर के फुहारे :- बड़ी चार नहरों के चार कोना पर (बड़े बगीचों के चार कोना कमर भर ऊंचे) चार चहेबच्चा आये हैं । इसके चार फुहारों का पानी एक दिशा से दूसरे चेहबच्चों में कमानों द्वारा होकर गिर रहा है । उन चार चेहबच्चों का पानी एक दूसरे फुहारे में कमाने अर्थात मेहरावों की सकल में चेहबच्चा में गिरता है । मध्य के फुहारें का पानी चकरी खाकर फिर इसी में ही पड़ता है । इसी प्रकार से सब फुहारें आये हैं ।

सम्पूर्ण फुलवाड़ी :- हर एक बगीचा को घेरकर देखने की आठ-आठ और गिनती की चार-चार फुलवाड़ी आई है बड़ी नहरें एक-एक मन्दिर की जो आयी है । उसके दाएं बाएं ३३ हाथ की रौंस छोड़ कर ३३ हाथ की चौड़ी दोनों ओर फुलवाड़ी आयी है । तब ८३१६ बगीचों की सब फुलवाड़ी ३३२६४ आई है और बाहरी तरफ किनार पर २३१ फुलवाड़ी आई है और भीतरी

तरफ किनार पर २३१ फुलवाड़ी आयी है । तब सम्पूर्ण फुलवाड़ी ३३७३६ हुई ।

सम्पूर्ण नहरें :- एक हार में २३१ नहरें आयी हैं । तब ३७ हारों में आड़ी सब नहरें ८५४७ हुई और खड़ी नहरें एक हार में ३६ आई है । तब २३१ हारों में सब नहरें ८३१६ हुई और हर बगीचा में छोटी-छोटी चार नहरें आयी हैं । तब ८३१६ बगीचों में छोटी नहरें ३३२६४ हुई । तब कुल छोटी बड़ी नहरें ५०१२७ हुई ।

सम्पूर्ण पुलों का ब्यान :- एक हार में आड़ी नहरों में पुल २३१ आये हैं । तब ३७ हारों के सब पुल ८५४७ हुए और बड़ी नहरों में एक हार में ३६ पुल आये हैं । तब २३१ हारों के ८३१६ पुल हुए । इस प्रकार कुल पुल-१६८६३ हुए ।

सम्पूर्ण चेहबच्चें :- एक हार में बड़े चेहबच्चें २३१ आये हैं । तब ३७ हारों के ८५४७ चेहबच्चें हुए और एक बगीचा में एक छोटा चेहबच्चा आया है तब ८३१६ बगीचों के छोटे चेहबच्चें ८३१६ हुए । तब छोटे-बड़े १६८६३ चेहबच्चें हुए ।

सम्पूर्ण छोटे बगीचे :- हर एक बगीचा में चार छोटे बगीचें आये हैं । तब ८३१६ बगीचों के सब छोटे बगीचें ३३२६४ हुए । इस प्रकार से चांदनी का विस्तार अपरम्पार है ।

बगीचों की लम्बाई-चौड़ाई :- नीचे जो हवेलियां आयी हैं । उनके शिर पर चांदनी पर बगीचे आये हैं । जिस प्रकार से ९ फिरावे की हवेलियों की लम्बाई-चौड़ाई आयी है । उसी मुताबिक बगीचों की लम्बाई-चौड़ाई आई है । एक फिरावें में ९२४ बड़े बगीचे और छोटे ३६९६ आये हैं । इस प्रकार हर फिरावे में बगीचों की संख्या इतनी ही आयी है । परन्तु जिस प्रकार से हवेलियां अन्दर

की तरफ छोटी होती गयी हैं । उसी प्रकार बगीचे भी अन्दर छोटे होते गये हैं ।

सीढ़ियों के ऊपर मन्दिर :- पूर्व तरफ मध्य के पहल के बगीचा के ईशान कोना से पश्चिम तरफ नहर के साथ लगकर तीसरे वृक्षों के चौक में चार वृक्षों के ठिकाना पर चार थम्भ एक-एक भोम के ऊंचे आये हैं और पूर्व-पश्चिम तथा दक्षिण की तरफ तीन अक्शी मेहरावें आयी हैं और उत्तर तरफ दो थम्भों के ऊपर एक खुली मेहराव आयी है । सो उत्तर तरफ के चबूतरा के रौंस से नवमी भोम में जाने के वास्ते सीढ़ियां उतरी है और चारों थम्भों के ऊपर छत आयी है । अक्शी थम्भों के ऊपर गोल सीढ़ियां ऊपर जाने के वास्ते आयी हैं ।

बाहरी किनार का चबूतरा :- नीचे बाहिर की तरफ जो ६ हजार मन्दिर की जगह आयी है । इसके साथ लगती हुई भीतरी तरफ जो त्रिपोलियां की पहली गली आयी है । इसी जगह के ऊपर चांदनी पर दो मन्दिर का चौड़ा और ६ हजार मन्दिर का लम्बा (२०१ हांस) का कमर भर ऊंचा चबूतरा आया है । जो चांदनी को घेर करके आया है । इस चबूतरा से ३ मन्दिर के भीतरी तरफ नहर का पहला चबूतरा आया है । जिसके हांस के मध्य भाग में दोनों तरफ से कमर भर की सीढ़ी उतरी है जो ३३-३३ हाथ की जगह में आयी है ।

२०१ चांदो का ब्यान :- चबूतरा के भीतरी तरफ हास-हांस के मध्य भाग में ३३-३३ हाथ का लम्बा-चौड़ा कमर भर ऊंचा चबूतरा इस लम्बे चबूतरा के साथ लगकर आया है । इस चबूतरा के दाएं-बाएं कमर भर की सीढ़ियां उतरी हैं । सीढ़ीयों को छोड़कर बाकी में कठेड़ा आया है । इस २०१ हांस में २०१ ही चांदे आये हैं । परन्तु पूर्व तरफ दस मन्दिर की देहलान का बड़ा चांदा आया है । चांदा उत्तर से दक्षिण दो मन्दिर का लम्बा और पूर्व से पश्चिम

तरफ ३३ हाथ का चौड़ा आया है ।

एक मन्दिर की चौड़ी रौंस :- चबूतरा के ऊपर भीतरी तरफ एक मन्दिर की चौड़ी और ६ हजार मन्दिर की लम्बी रौंस घूमी है । इस रौंस के ऊपर चांदा को छोड़ कर कठेड़ा आया है ।

मन्दिरों की हार :- नीचे बाहरी हार मन्दिरों केऊपर मन्दिर भर के चौड़े और लम्बाई ५९९० मन्दिर के देहलान आये हैं । यह कमर भर ऊंची रौंस के बाहरी तरफ आये हैं ।

एक मन्दिर का छज्जा :- मन्दिर की जमीन से लगता हुआ बाहरी तरफ एक मन्दिर का चौड़ा और ५९९० मन्दिर का लम्बा पूर्व के तरफ दस मन्दिर के छज्जा को छोड़कर २०० पहल का छज्जा आया है । यह छज्जा नवमी भोम के थम्भों पर बना है । इस छज्जा के ऊपर २०१ गुर्ज हांसो के पहल में दो-दो मन्दिर के साथ लगकर आये हैं । इस छज्जा के बाहरी किनार पर चारों तरफ घेर के कठेड़ा आया है । परन्तु दस मन्दिर के हांस के सामने वह कठेड़ा नही आया है । दस मन्दिर के छज्जा के दाएं-बाएं जो दो-दो मन्दिर की जगह है । उसकी एक मन्दिर की जगह में आ कर मिली है ।

एक मन्दिर का ब्यान :- एक मन्दिर का ब्यान किया जाता है । इस प्रकार ५९९० मन्दिर का ब्यान जानना जी । एक मन्दिर, एक मन्दिर का लम्बा चौड़ा आया है । एक मन्दिर के एक तरफ ४४ हाथ के ऊंचे १०० हाथ के अन्तर पर थम्भ आये हैं । जो दो थम्भ अक्शी बगली दिवालों के हैं । उनके सामने आये हैं । इसके ऊपर ४४ हाथ की ऊंची मेंहराव आयी है । ऊपर तीन फूल आये हैं । इसके ऊपर १२ हाथ में तरह-तरह की चित्रकारी बनी है । इन दो थम्भों के बीच में दो थम्भ ३३-३३ हाथ के ऊंचे आये हैं सो इनके ऊपर ११-११ हाथ की मेहराव आयी है । मध्य मेहराव में दीवाल और इसके दाऐं-बाएं ३३-३३ हाथ के लम्बे-चौड़े दो दरवाजे आये हैं । इसी

तरह की बनक चारों तरफ की आई है ।

एक मन्दिर के दरवाजें :- एक मन्दिर में देखने के दरवाजे ८ और हिसाब में ६ आये हैं । क्योंकि पांखे वाला दरवाजा दोनों मन्दिरों में काम देता है । दो दरवाजे बाहर छज्जा पर दो दरवाजे भीतरी तरफ रौंस पर आये हैं । बगली दीवारों में दो-दो दरवाजें आये हैं । इस कारण दोनों पाखों के दरवाजों में से एक ही गिना जायेगा । इस हिसाब से ६ दरवाजे हुये ।

एक मन्दिर के आठ थम्भ :- एक मन्दिर में देखन के १२ थम्भ परन्तु हिसाब के आठ आये हैं । जिसमें चार थम्भ चार कोना वाले और चार थम्भ बगली दीवारों में आये हैं । यह आठों थम्भ दोनों मन्दिरों में काम करते हैं । इस वास्ते दाएं-बाएं बगली दीवारों में दो-दो थम्भ पूरे लिए । हिसाब के चार थम्भ हुए । और दो थम्भ बा हरी छज्जा तरफ और दो थम्भ भीतरी रौंस पर आये हैं । इस हिसाब से आठ थम्भ हुए ।

एक मन्दिर में अक्शी मेहरावें :- एक मन्दिर में अक्शी मेहरावें देखने की चार और हिसाब के तीन आये हैं और बगली तरफ के आध-आध लेने से एक अक्शी मेहराव हुई । इस प्रकार तीन मेहरावें हुई, और बगली अक्शी दरवाजे जो बने हैं जिसमें दीवार के अन्दर गोलाई में होकर ऊपर को सीढ़ियां गयी हैं ।

दरवाजों की गिनती :- एक मन्दिर में ६ दरवाजें आये हैं । ५९९० मन्दिरों के कुल दरवाजे ३५९४० हुए । परन्तु दस मन्दिर के देहलान के दाएं-बाएं के दरवाजे पूरे आये हैं । जिसमें आधे-आधे दरवाजों का हिसाब पूरा हो चुका है । इस वास्ते दाएं-बाएं तरफ का एक-एक दरवाजा और बढ़ गया तब सम्पूर्ण दरवाजे ३५९४२ हुए ।

अक्शी थम्भों की गिनती :- एक-एक मन्दिर के -८-८ थम्भ आये हैं । तब ५९९० मन्दिरों के थम्भ ४७९२० हुए । परन्तु दस मन्दिर के देहलान के दाएं

बाएं चार कोना वाले ४ थम्भों की गिनती दस मन्दिर की देहलान में आयेगी। इस वास्ते देहलान के दाएं-बाएं के मन्दिर में ७-७ थम्भ हुए। परन्तु इन मन्दिरों के मध्य वाले भाग के दो थम्भ हुए। क्योंकि इन मन्दिरों वाले मध्य भाग के दो थम्भ बढ़ गये। इसलिए हिसाब ज्यों का त्यों थिर रहा है।

अक्शी मेहरावों की गिनती :- एक मन्दिर में तीन मेहरावें आयी हैं। ५९९० मन्दिरों के सब अक्शी मेहरावें १७९७० हुये। परन्तु १० मन्दिर के देहलान के दाएं-बाएं दो अक्शी थम्भ पूरे आये हैं। इस वास्ते दाएं-बाएं तरफ का अक्श आ जाने से सम्पूर्ण अक्शी मेहराव १७९७२ हुई।

पूर्व तरफ दस मन्दिर की देहलान :- पूर्व तरफ दस मन्दिरों के हांस में उत्तर से दक्षिण तरफ दस मन्दिर की लम्बी और एक मन्दिर की चौड़ी पूर्व से पश्चिम तरफ एक देहलान मन्दिरों के दाएं-बाएं के सूत में आयी है। जिसमें पूर्व-पश्चिम तरफ १०-१० थम्भों की दो हारें आयी हैं। यह कोना वाले ४ थम्भ अक्शी आये हैं। जिनपर ९-९ मेहरावें आयी हैं। सो मध्य की दो मेहरावे दो मन्दिर की चौड़ी है। बाकी १६ मेहरावें एक-एक मन्दिर की चौड़ी आयी है। इस देहलान के पूर्व तरफ दो मन्दिर की दूरी पर दस थम्भ वाहिर के छज्जा के किनार पर आये हैं। जिस पर ९ मेहरावें आयी हैं। मेहरावों के मध्य में बड़ी मेहराव दो मन्दिर की लम्बी आयी है। सो इन थम्भों के बीच कठेड़ा आया है। उत्तर-दक्षिण तरफ २-२ मन्दिर की जगह आयी है। सो इसके बाहिर तरफ १-१ मन्दिर की जगह में कठेड़ा आया है और एक-एक मन्दिर की जगह में मन्दिर भर चौड़े छज्जा पर जाने का रास्ता आया है और दस मन्दिर के देहलान के पश्चिम तरफ एक मन्दिर दूरी पर रौंस के किनार पर चबूतरा के पूर्व १० थम्भ देहलान के थम्भों के सामने आये हैं। जिस पर ९ मेहरावे आयी हैं। मध्य की मेहराव दो मन्दिर की चौड़ी है। इसी के सामने पश्चिम तरफ चांदा आया है। इस प्रकार पूर्व तरफ की

देहलान ४ मन्दिर की चौड़ी है और दस मन्दिर की लम्बी आयी है। जिसमें ४० थम्भों पर छत आयी है।

एक मन्दिर की चांदनी :- पूर्व की तरफ का एक मन्दिर की चांदनी का ब्यान किया जाता है। इसी प्रकार सभी मन्दिरों की चांदनी जानना जी। हर एक मन्दिर की चांदनी सौ-२ हाथ की लम्बी और चौड़ी आयी है। जिसके पांच भाग हुए दाएं-बाएं तरफ का भाग १२-१/२, १२-१/२ हाथ का आया है और बीच में तीन भाग २५-२५ हाथ के आये हैं। इन भागों में से अध-बीच का छोड़कर दाएं-बाएं के तरफ के भाग में २५-२५ हाथ की जगह में एक-एक गुमटी आयी है। और मध्य भाग में २५ हाथ की जगह आयी है। ऊपर चार थम्भ, ऊपर चार मेहराव, ऊपर गुम्मट, ऊपर कलश, ऊपर ध्वजा, पताका वेरखे फहरा रहें हैं इसी प्रकार दूसरी गुमटी आयी है। इन दोनों गुम्मटीयों के पूर्व, पश्चिम तरफ ३७-१/२,-३७-१/२ हाथ की जगह आयी है। इन देहुरियों से दूसरे मन्दिरों की देहुरियां २५-२५ हाथ की दूरी पर आयी हैं। इस मन्दिर के चांदनी के चार कोना पर चार कंगूरे आये हैं इन कंगूरों पर भी कलश आये हैं। ऊपर तरह-तरह के ध्वजा पताका आये है और घुंघरियां तरह-तरह के आवाज कै स्वरों में करती हैं। पूर्व, पश्चिम तरफ दो-दो कंगूरों के विच में सुन्दर कांगरी बनी हैं। एक कंगूरा दो मन्दिर के चांदनी पर काम देता है।

देहलान की चांदनी :- पूर्व तरफ ४० थम्भों के ऊपर एक ही चांदनी देहलान की आयी है। चांदनी पूर्व से पश्चिम तरफ ४ मन्दिर की चौड़ी और उत्तर से दक्षिण तरफ १० मन्दिर की लम्बी आयी है। जमीन से ११ भोम की ऊंचाई पर आयी है। यह चांदनी दाएं-बाएं मन्दिरों से मिलती हुई एक समान आई है। और दाएं-बाएं की गुमटियों की सूत में इस चांदनी पर २० गुमटियां आयी है।

२० गुमटियों के पूर्व तरफ :- २० गुमटियों के पूर्व तरफ २ मन्दिर ३७ हाथ के दूरी पर किनार पर दस कंगूरे आये है । मध्य भाग में दो मन्दिर के फासले पर दो कंगूरे आये हैं । बाकी सब मन्दिर-मन्दिर के फासले पर आये हैं । इन कंगूरो पर ध्वजा पताका सव आये हैं । दो-२ कगूरों के बीच में कांगरी आयी हैं । इस चांदनी पर दक्षिण की तरफ किनार पर एक मन्दिर ३४ हाथ की जगह पर एक सुन्दर कांगरी आयी है । यह कांगरी पूर्व से पश्चिम तरफ जाकर गुर्जो के मध्य भाग में मिल गयी है । इसी तरह उत्तर तरफ भी कांगरी आयी है पूर्व और उत्तर तरफ कांगरी से २५ हाथ की दूरी पर भीतरी तरफ एक गुमटी चांदनी पर २५ हाथ की लम्बी-चौड़ी लाल रंग की आयी है । इसी प्रकार दक्षिण तरफ की कांगरी से २५ हाथ की दूरी पर भीतरी तरफ चांदनी पर दूसरी गुमटी लाल रंग की २५ हाथ की लम्बी-चौड़ी आयी है । दोनों गुमटीयों पर ध्वजा पताका आये हैं ।

२० गुमटियों के पश्चिम तरफ :- २० गुमटियों के पश्चिम तरफ एक मन्दिर ३७ हाथ की दूरी पर भीतरी किनार पर दस मन्दिर की जगह पर दस कंगूरे, कांगरी, ध्वजा, पताका सव पूर्व की तरह आये हैं । चांदनी के दाएं-बाएं अर्थात उत्तर-दक्षिण तरफ मन्दिर-मन्दिर की जगह में सुन्दर कांगरी आयी है । यह कांगरी भीतरी तरफ रौंस के ऊपर आयी है और दो गुमटियां लाल रंग की दोनों कोनो से २५-२५ हाथ के दूरी पर पूर्व तरफ के दोनों गुमटीयों जैसी आयी है । इस तरह पूर्व की चांदनी पर चौबीस देहुरियां आयी हैं ।

गुमटियों की गिनती :- ५९९० मन्दिर की चांदनी पर ११९८० गुमटियां आयी हैं और २४ गुमटियां पूर्व तरफ की देहलान की चांदनी पर आयी हैं । तब सम्पूर्ण गुमटियां १२००४ हुयी । गुमटियों सहित ऊंचाई १२ भोम की आयी है ।

सम्पूर्ण कंगूरों का ब्यान :- ५९९० मन्दिर घेर करके आये हैं। हर एक मन्दिर के पांखे की दीवार की चांदनी के ऊपर बाहरी तरफ ५९९१ कंगूरे आने चाहिए। परन्तु २०१ हांसो के गुर्जों के मध्य भाग में कंगूरे २०१ नही आये हैं। इस वास्ते बाहिर की तरफ ५७९० कंगूरें आये हैं। चांदनी के भीतरी तरफ इसी कगूंरों के सामने ५९९१ कगूरे आये हैं और दश मन्दिर की देहलान की चांदनी के ऊपर बाहिर की तरफ दस कंगूरे आये हैं। भीतरी तरफ चार मन्दिर की दूरी पर दस कगूरे आये है। तब सम्पूर्ण कंगूरे ११८०१ हुए। इन कंगूरों पर कलश ऊपर ध्वजा पताका फहरा रहे हैं। दो कंगूरो के बीच बाहिर और भीतरी तरफ नूर मयी कांगरी की अपरम्पार शोभा हो रही है।

२०१ गुर्जों का ब्यान :- एक गुर्ज बाहिर मन्दिरों की रौंस में १० (भोम) ऊपर उठकर हांस-हांस के कोना पर २०१ चौरस गुर्ज ६६-६६ हाथ के लम्बे-चौड़े मन्दिरों की चांदनी के साथ वाहरी तरफ साथ लगकर यहां तक आये हैं। इनकी छत ६६-६६ हाथ की लम्बी-चौड़ी आयी है। एक गुर्ज की ग्यारवहीं चांदनी के चारों तरफ कोना पर चार थम्भ आये हैं और ऊपर चार मेहरावें आयी हैं। ऊपर गुम्मट, ऊपर कलश, ऊपर ध्वजा, पताका वेरखे रंग बिरंगे फहरा रह हैं। घूंघरी तरह-तरह की आवाजे कर रही हैं। इसी प्रकार से २०१ गुर्ज आये हैं।

पूर्णमासी के दिन :- पूर्णमासी के दिन शाम को तीन बजे सुखपालों में बैठकर सब कोई सैर करने जाते हैं। दो घड़ी तक वनो में सैर करते हैं। उसके बाद पौने चार बजे सुखपाल आय-२ के रंगभवन के दसवी चांदनी के मन्दिर भर के बाहिर तरफ छज्जा पर आय के खड़े होते हैं। तब सब सुखपालों से उतर कर छज्जों पर खड़े होते हैं। श्री राज जी का हुकुम पाकर सुखपाल अपने ठिकानों पर चले जाते हैं। तब श्री राज जी सखीयों को लेकर मन्दिरों की हार को पारकर रौंस से कमर भर सीढ़ी उतर कर बगीचों में जाते हैं।

यहीं चार घड़ी तक खेल तमासा करते हैं। इसके बाद एक घड़ी तक झीलना करके एक घड़ी में श्रृंगार सजकर ६ बजे श्री राज जी को सभी प्रणाम करते हैं। इसके बाद चांदनी पर तरह-तरह के खेल तमासे करते, कभी चबूतरों पर बैठ कर हांस-विनोद करते हैं। इस प्रकार रात ११.३० बजे तक आनन्द विहार करते हैं। इसके बाद दो घड़ी तक मध्य चबूतरा पर बैठकर आरोगते हैं। फिर श्री राजश्यामा जी सब सखियों को लेकर भोम भर की सीढ़ी उतरकर नौमीभोम, नौवमी भोम से आठवी, सातवी, छठी, पांचवी भोम में आये ३६ हवेलियों को पार कर २८ मन्दिरों की जगह को पार कर आगे ३१५ मन्दिर की जगह चलकर रंगपरवाली मन्दिर में आकर रात के १२ बजे श्री युगल स्वरूप जी शयन करते हैं। बाकी सब सखियां अपने-अपने मन्दिरों में अपने-अपने पिया के साथ विलास करते हुए शयन करती हैं।

रंगभवन के पूर्व तरफ ६ बगीचों का ब्यान :- इस रंग भवन के ईशान कोना से लेकर अग्नि कोना तक १५०० मन्दिर आये हैं। इन मन्दिरों के सामने पूर्व तरफ ५००-५०० मन्दिर के चौड़े उत्तर से दक्षिण तरफ, दो हजार मन्दिर के लम्बे पूर्व से पश्चिम तरफ तीन बगीचे अनार, अमृत, जाम्बू के आये हैं। मध्य भाग में अमृत वन आया है। इसके उत्तर तरफ अनार का बगीचा आया है। अनार के उत्तर लिंबोई, लिबोई के उत्तर केल का बगीचा आया है। अमृत वन के दक्षिण तरफ जाम्बू-जाम्बू के दक्षिण नारंगी, नारंगी के दक्षिण वट का बगीचा आया है। परन्तु इस बगीचा की जगह पर कुंज-निकुन्ज आया है। बड़ोवन के पांच वृक्ष भी शामिल हैं। जिसका ब्यान आगे किया जायेगा। इन ६ बगीचों के बीच पांच रौंसे कमर भर ऊंची है। नारंगी बगीचा के दक्षिण में एक रौंस, इस प्रकार ६ रौसें दो-दो मन्दिर की चौड़ी आयी है। दाएं-बाएं की रौंस सहित एक बगीचा ५०० मन्दिर का चौड़ा आया है। अमृत वन के मध्य भाग में २ मन्दिर का उत्तर से दक्षिण और

१८३२ मन्दिर पूर्व से पश्चिम लम्बी रौंस आयी है । यह चांदनी चौक की पूर्व रौंस से निकलकर वन की रौंस में जाकर मिली है और बगीचों के बीच में रौंस नही आयी है । इस प्रकार ये सातों रौंसे बगीचों की जमीन से कमर भर ऊंची आयी हैं । इन छः बगीचों में नहरें और फुहारें आये हैं । इन नहरों में पानी अग्नि और ईशान कोना के चेहबच्चा से आता है । जो गुप्त रूप से आता है ।

बगीचों के पश्चिम तरफ रौंस :- अनार, अमृत और जाम्बू बगीचों के पश्चिम तरफ और रंग भवन के पूर्व तरफ भोम भर ऊंचे चबूतरे के साथ लगकर बगीचों की जमीन से कमर भर ऊंची दो मन्दिर की चौड़ी एक रौंस आयी है । इस रौंस तथा चांदनी चौक के पश्चिम तरफ धाम चबूतरा के दीवार में मन्दिर-मन्दिर के अन्तर पर १५०० अक्शी थम्भ आये हैं । मध्य भाग में दो थम्भ सौ सीढ़ियों के दाएं-बाएं आये हैं । इन थम्भों पर १५०० मेहरावें अक्शी आनी चाहिए थी । परन्तु मध्य में दो मन्दिर की चौड़ी सीढ़ी आने से दो मेहराव नही आयी है । तब सब मेहरावें १४९८ अक्शी हुई । दो थम्भों के बीच की जगह पर अनेक प्रकार की चित्रकारी पशु-पक्षी, जानवर, पुतली तथा वन, वृक्षों की बेल बुटियां सब बनी हुयी हैं । इस दीवार के आगे दो मन्दिर की चौड़ी रौंस आयी है । इस रौंस के किनार पर दो वृक्षों की हारे २-२ मन्दिर के अन्तर पर दोनों किनारो पर आयी हैं । एक हार रंग भवन की दीवार के साथ तथा दूसरी पूर्व किनार पर आयी है ।

जाम्बू वन का एक बगीचा :- एक जाम्बू वन के बगीचे का ब्यान किया जाता है । इसी प्रकार छः बगीचों का ब्यान जानना जी । इस जाम्बू बगीचा के दक्षिण तरफ एक मन्दिर की रौंस आयी है । अर्थात एक रौंस दोनों बगीचा की इक्ठ्ठी है । इस प्रकार दो मन्दिर की चौड़ी उत्तर से दक्षिण तरफ और पूर्व से पश्चिम तरफ रौंस से लेकर वन की रौंस तक १९९८ मन्दिर की लम्बी

आयी है । इसी प्रकार जाम्बू बगीचा के उत्तर तरफ एक मन्दिर की जगह रौंस में आयी है । एक मन्दिर अमृत वन की जगह रौंस ने ले ली है । सो इस प्रकार से दो मन्दिर की चौड़ी उत्तर से दक्षिण तरफ और वन की रौंस से लेकर पश्चिम तरफ की रौंस तक एक रौंस १९९८ मन्दिर की लम्बी है

इन दोनों रौसों के बीच में ४९८ मन्दिर की चौड़ी कमर भर गहरी बगीचा की जमीन आयी है । दाएं-बाएं रौंस सहित ५०० मन्दिर का चौड़ा बगीचा हुआ । इस बगीचा की जमीन से पश्चिम तरफ दो मन्दिर चौड़ी धाम दीवार के साथ कमर भर की ऊंची रौंस आयी है । इस रौंस के किनार से लेकर पूर्व तरफ १९९८ मन्दिर की जगह वन रौंस तक इस बगीचा की लम्बाई की जगह आयी है । पश्चिम तरफ की रौंस सहित दो हजार मन्दिर का लम्बा एक बगीचा आया है ।

एक बगीचा के लम्बे दो चबूतरे :- बगीचा के उत्तर-दक्षिण तरफ रौंस के साथ लगकर दो-दो मन्दिर के चौड़े और १९९८-१९९८ मन्दिर के लम्बे पश्चिम से पूर्व तरफ एक-एक चबूतरा आया है । एक-एक चबूतरा के दोनों तरफ वृक्ष दो-दो मन्दिर की अन्तर पर लम्बाई तरफ चले गये हैं । इसी प्रकार से दूसरे चबूतरे पर वृक्ष आये हैं । एक चबूतरा की मध्य भाग में एक मन्दिर की चौड़ी और एक भोम भर की गहरी नहर आयी है । इस नहर के दाएं-बाएं १/२-१/२ मन्दिर की चौड़ी रौंस लम्बाई तरफ चली गयी है । दोनों रौसों की किनार पर चार कठेड़ा रास्तों को छोड़कर लम्बाई तरफ चले गये हैं । इसी प्रकार दूसरे चबूतरे की बनक आयी है ।

एक बगीचा में आड़े-खड़े पांच चबूतरे :- बगीचा के पश्चिम तरफ धाम रौंस के साथ लगकर पूर्व तरफ चबूतरा दो मन्दिर का चौड़ा ४९८ मन्दिर का लम्बा उत्तर से दक्षिण तरफ चला गया है । धाम दीवार की पूर्व तरफ ५०० मन्दिर की दूरी पर दूसरा चबूतरा दो मन्दिर का चौड़ा और ४९८ मन्दिर

का लम्बा उत्तर से दक्षिण तरफ आया है। धाम चबूतरा की दीवार से पूर्व तरफ १००० मन्दिर की दूरी पर तीसरा चबूतरा आया है। धाम दीवार से १५०० मन्दिर दूरी पर चौथा चबूतरा आया है। धाम चबूतरा की दीवार से पूर्व तरफ २००० मन्दिर पुरा होने पर इसके भीतरी तरफ दो मन्दिर का चौड़ा पांचवा चबूतरा आया है। हर एक चबूतरा के मध्य में एक मन्दिर की चौड़ी एक भोम की गहरी नहर आयी है। हर एक नहर के दाएं-बाएं एक-एक रौंस आयी है। सो पांचो चबूतरों पर तथा पश्चिम तरफ की रौंस पर दस हारें वृक्षों की दो-दो मन्दिर के अन्तर पर आयी हैं और पांचवे चबूतरा के पूर्व तरफ की कीनार पर वन रौंस के वृक्ष आये हैं। हर एक रौंस के दाएं-बाएं रास्ता को छोड़कर कठेड़ा शोभा ले रहा है।

एक बगीचा के वृक्ष :- पांच नहरों के बीच में चार चौक आये हैं। हर एक चौक में २५० वृक्षों की २५० हारें आयी हैं। एक चौक के कुल वृक्ष ६२५०० हुये। इसी प्रकार चारों चौकों के २५०००० वृक्ष हुए। बगीचा की चौड़ाई ४९८ मन्दिर में २५० वृक्ष आये हैं और लम्बाई तरफ २००० मन्दिर की जगह में १००१ वृक्ष आने चाहिए थे परन्तु पूर्व तरफ की कीनार पर वन रौंस के वृक्ष आये हैं। इस वास्ते लम्बाई तरफ १००० वृक्ष आये हैं। इस प्रकार २५० वृक्षों की १००० हारे आने से कुल २५०००० वृक्ष हुए। ये वृक्ष दो-दो मन्दिर के फासले पर आये हैं।

एक बगीचा के चौक :- एक बगीचा के चार चौक आये हैं। एक चौक का ब्यान किया जाता है। इसी प्रकार सभी चौक आये हैं। २५० वृक्षों की २५० हारे आने से ६२५०० वृक्ष हुए। एक चौक के चारों तरफ कमर भर की ऊंची चार रौसें आयी है। चारों दिशा के मध्य भाग में तथा कोना से आठ सीढ़ी कमर भर की ऊंची रौंस से उतरी है। सीढ़ियों की जगह छोड़ कर चारों तरफ कठेड़ा शोभा ले रहा है! एक चौक के चारों दिशा में चार

नहरें आयी हैं। हर एक नहर के मध्य भाग में एक मन्दिर का लम्बा-चौड़ा एक पुल आया है। हर एक पुल पर जल तरफ कठेड़ा आया है। हर एक बगीचा के चारों कोना पर चार चहेबच्चे हैं। जिसमें फुहारे उछल रहे हैं। हर एक चौक के मध्य भाग में जो दो मन्दिर का लम्बा-चौड़ा चार वृक्षों के बीच में चौक आया है। इस चौक के मध्य भाग में एक मन्दिर की जगह में चार थम्भ, ऊपर चार मेहरावें, ऊपर गुम्मट, कलश शोभा ले रहे हैं। थम्भों के बीच में कुर्सीयां रखी हैं। इस प्रकार एक बगीचा में एक देहुरी बनी और जगह-जगह पर बैठने की जगह बनी है। एक चौक में नहरों के साथ जो वृक्ष ९९६ आये हैं। ये वृक्ष जाम्बू के हैं और मध्य जो वृक्ष आये हैं। वे सब प्रकार फलों के हैं। एक ही बगीचा से सभी प्रकार के फल ले सकतें हैं।

एक बगीचा की नहरें पुल आदि :- एक बगीचा की आड़ी-खड़ी नहरें १३ आयी हैं। १३ ही पुल आये हैं और दस चेहबच्चें आये हैं। चार देहुरी आयी है। चार चौकों में ३२ सीढ़ियां और २५०००० वृक्ष आये हैं।

वृक्षों की ऊंचाई :- रंग भवन के चबूतरा की दीवार के साथ अनार, अमृत, जाम्बू के वृक्ष ७५० होना चाहिए। परन्तु ८२ वृक्ष चांदनी चौक की हद के नही आये हैं। बाकी ६६८ वृक्ष आये हैं। इन वृक्षों की ऊंचाई १२२-१२२ हाथ की आयी है। इन वृक्षों की झालियां एक मन्दिर निकल कर श्री रंगभवन के झरोखों के साथ तथा दीवार के साथ मिलान किया है। इन वृक्षों को छोड़कर बाकी जो वृक्ष हैं। सो ७५ हाथ सीधे थम्भ रूप होकर ऊंचे चले है। वहां ७५ हाथ ऊपर जाकर पत्तियां, टहनीयां निकली हैं और मेहराबे बनना शुरु हुई। दो-दो वृक्षों के बीच में सुन्दर मेहरावें बनी हुयी दिखाई दे रही हैं। मानो रंग बिरंग, चन्द्रवा तना शोभा ले रहा है। इन वृक्षों के थड़ों में दरवाजे बने हैं। इन दरवाजों से होकर पेड़ो की मोटाई

में होकर गोल सीढ़ियों द्वारा चढ़कर दूसरी भोम में जाइये । रंग भवन के पहली भोम के झरोखों से निकलकर एक मन्दिर पूर्व तरफ आकर जो यहां पर ६६८ वृक्ष आये हैं । इनकी ऊंचाई ७८-७८ हाथ की आयी है । इन वृक्षों की ड़ालियां निकल कर रंग भवन के दूसरी भोम के छज्जा के साथ मिलान किया है । सो इन वृक्षों के आगे पूर्व २२ सीढ़ियां उतर कर वन की दूसरी भोम में जाइये । इसके आगे और जितने वृक्ष आये हैं । सो सबों की ऊंचाई १००-१०० हाथ की आयी है । ऊपर तीसरी चांदनी सब वृक्षों की एक समान है । कुछ अन्तर नही आया है । श्री रंग भवन के दूसरी भोम के दरवाजे से निकल कर एक सीढ़ी नीचे छज्जा पर आकर वन की तीसरी चांदनी पर दौड़ते हुये जहां चाहें वहां चले जाइये । वृक्षों की छातों और मेहरावों तथा मूल थड़ो में तरह-तरह के फल लटक रहे हैं । यदि मेवा या फल खाने की इच्छा हो तो मन चाहे तोड़कर खाइये परन्तु तोड़ने के स्थान पर फल ज्यों के त्यों लगे रहते हैं । फल मीठा स्वादिष्ट सुगन्धि से भरपूर है । लिबोई, अनार, अमृत, जाम्बू और नारंगी इन पांचो बगीचों की ऊंचाई दो-भोम तीसरी चांदनी है ।

पांचों बगीचों की चांदनी :- लिबोई, आनार, अमृत, जाम्बू और नारंगी इन पांचो बगीचों की चांदनी पश्चिम से पूर्व तरफ २००० मन्दिर की चौड़ी और उत्तर से दक्षिण २५०० मन्दिर की लम्बी शोभा ले रही है । मानो इस चांदनी पर सुन्दर गिलम रंग-बिरंगी बिछी है । जिसकी सुन्दरता का पारावार नही है । अनार, अमृत और जाम्बू की चांदनी से होकर श्री रंग भवन के दूसरी भोम के छज्जा पर जाइये और लिबोई की चांदनी ताड़वन से मिली है । वहां पर कठेड़ा लगा है । नांरगी के चांदनी से होकर वट पीपल की चौकी में जाइये । लिबोई के चांदनी कि उत्तर तरफ केलवन ५०० मन्दिर की चौड़ा और दो हजार मन्दिर का लम्बा दो भोम तक पांचो बगीचों की चांदनी तक आया है । फिर इसके ऊपर बड़े वन के वृक्षों की केल रूप होकर ऊपर को तीन भोम

गये हैं । इस वास्ते केलवन की तीन भोम और ऊपर को गयी है । इस नारंगी बगीचा के दक्षिण तरफ कुन्जवन की दो भोम तक ऊंचाई आयी है । परन्तु इस कुन्जवन के बीच से होकर बड़ोवन के वृक्ष बड़ रूप होकर पांच भोम ऊपर गये हैं । नारंगी की चांदनी के दक्षिण तरफ बड़ोवन दिखाई दे रहा है और नारंगी चांदनी के दक्षिण बड़ोवन बड़े रूप होकर तीन भोम दिखायी दे रहा है । दो भोम तक तो नीचे इन पांचो बगीचों से मिला हुआ है । अनार, अमृत, जाम्बू कि चांदनी के पश्चिम तरफ श्री रंगभवन की नौ भोम ऊपर गुमटियां गुर्जो के ऊपर गुम्मट सब दिखाई दे रहे हैं और लिंबोई बगीचा की चांदनी से पश्चिम तरफ ताड़वन की आठ भोम दिखाई दे रही हैं और नारंगी वन की चांदनी के पश्चिम तरफ दो भोम वटपीपल चौकी की दिखाई दे रही हैं । ऊपर सुन्दर आकाश शोभा ले रहा है । यहां चांदनी की चारों तरफ की शोभा देखकर नीचे उतरकर जमीन पर आइये ।

नारंगी बगीचा के पश्चिम तरफ :- नारंगी बगीचा के पश्चिम तरफ जहां पर पांचवी नहर आड़ी आयी है । उस नहर के पश्चिम तरफ दो मन्दिर की चौड़ी वटपीपल चौकी के साथ लगकर पूर्व तरफ रौंस आयी है । सो इस रौंस के पश्चिम तरफ चौकी के किनार पर २५० वृक्ष नारंगी के आये हैं । यहां तक नारंगी बगीचा की हद है । नारंगी बगीचा के दक्षिण तरफ दो मन्दिर की चौड़ी रौंस आयी है । इस रौंस के साथ लगकर दक्षिण तरफ कुन्ज-निकुन्ज वन आया है । यह रौंस वन रौंस से चालू होकर पूर्व से पश्चिम तरफ जाकर नारंगी और वट पीपल चौकी के साथ लगकर बड़ोवन के पांच पेड़ों के चौको के साथ जाकर मिली है ।

लिंबोई बगीचा के पश्चिम तरफ :- इस बगीचा के पश्चिम तरफ जहां पांचवी नहर आड़ी आयी है । इस रौंस के पश्चिम तरफ दो मन्दिर की चौड़ी रौंस ताड़वन के पूर्व तरफ साथ लगकर आयी है । इस रौंस के पश्चिम तरफ ताड़वन के वृक्षों के साथ लगकर लिंबोई बगीचा के २५० वृक्ष आये हैं ।

यहीं तक लिंबोई बगीचा की हद है ।

केल के पश्चिम तरफ :- केल के बगीचा के पश्चिम तरफ जहां आड़ी ५वीं नहर आयी है । जो ४९८ मन्दिर की लम्बी उत्तर से दक्षिण की है । इस नहर की रौंस के पश्चिम तरफ दो मन्दिर की चौड़ी और ४९८ मन्दिर की लम्बी दक्षिण से उत्तर रौंस चली गयी है । जिसमें १० मन्दिर तक तो ताड़वन के ईशान कोना तक साथ में गयी है । लिंबोई बगीचा से लेकर यहां तक ५११ मन्दिर ताड़वन के होते हैं ५१० मन्दिर और एक मन्दिर की रौंस आयी है । अब इसके आगे ४८८ मन्दिर की जगह केल की मध्य वाली रौंस आयी है । इस रौंस के पश्चिम किनार से लेकर यहां तक २५० वृक्षों सहित केल की हद आयी है इस बगीचों के पश्चिम तरफ जो ३६७५० वृक्ष आये हैं । वह सब वृक्ष केल बगीचा से कमर भर ऊंचाई पर रौंस की जमीन के बराबर आये हैं । वहां पर नहरें चेहबच्चें नही आये हैं । रौंस का रंग अलग-अलग हो जाने से रौंस अलग-अलग दिखाई दे रही है । इस केल बगीचा के उत्तर तरफ जो दो मन्दिर का चौड़ा और १९९८ मन्दिर का लम्बा पूर्व से पश्चिम तरफ जो चबूतरा गया है । सो इस चबूतरा की उत्तर के रौंस किनार पर जो वृक्ष ९९९ केल के आये हैं । सो इन वृक्षों की उत्तर तरफ की पश्चिम दिशा में मधुवन के चार वृक्ष आये हैं । जिसका हिसाब आगे चलकर बताया जायेगा ।

अमृत बन में चांदनी चौक :- चांदनी चौक के दक्षिण तरफ दो बगीचे जाम्बू और नारंगी के आये हैं और उत्तर तरफ अनार, लिंबोई और केल के आये है । इनके मध्य में २००० मन्दिर का लम्बा और ५०० मन्दिर का चौड़ा अमृत वन आया है । श्री रंगभवन के बड़े दरवाजे के सामने जो भोम भर की सीढ़ियां अमृत वन के मध्य भाग में उतरी हैं । इन सीढ़ियों से दक्षिण तरफ ८२ मन्दिर की जगह आयी है उत्तर तरफ भी इतनी ही आयी है और दो मन्दिर की जगह मध्य भाग में सीढ़ियों की । इस प्रकार १६६ मन्दिर

की लम्बी जगह हुयी । इतनी ही जगह पूर्व से पश्चिम आने से चांदनी चौक १६६ मन्दिर का लम्बा-चौड़ा आया है ।

चांदनी चौक में दो चबूतरे :- श्री रंगभवन की दीवार से ६६-१/२ मन्दिर पूर्व तरफ चबूतरों की पश्चिम किनार आयी है । सो इस चबूतरा की पश्चिम किनार से ३३ मन्दिर दूरी पर पूर्व तरफ चबूतरा की पूर्व किनार आयी है । चबूतरा की पूर्व किनार से ६६-१/२ मन्दिर पूर्व तरफ चांदनी चौक की पूर्व किनार आयी है । चांदनी चौक की उत्तर किनार से दक्षिण तरफ ३३ मन्दिर की दूरी पर उत्तर के चबूतरा की किनार आयी है । इस चबूतरा की उत्तरी किनार से ३३ मन्दिर दूरी पर चबूतरा की दक्षिण किनार है । इस प्रकार से एक चबूतरा आया है । उत्तर के चबूतरा से दक्षिण की किनार से ३४ मन्दिर की दूरी पर दक्षिण तरफ के चबूतरा के उत्तर की किनार आयी है । इस किनार से दक्षिण तरफ ३३ मन्दिर दूरी पर दक्षिण तरफ के चबूतरा की दक्षिण किनार आयी है । इस प्रकार से यह दक्षिण का चबूतरा आया है । दक्षिण तरफ की चबूतरा से दक्षिण तरफ की किनार सें दक्षिण तरफ ३३ मन्दिर दूरी पर चांदनी चौक की दक्षिण की किनार आयी है । ये दोनों चबूतरे ३३-३३ मन्दिर के लम्बे-चौड़े आये हैं ।

चांदनी चौक में रेती :- भोम भर की सीढ़ियों के सामने दो मन्दिर चौड़ी उत्तर से दक्षिण और १६६ मन्दिर की लम्बी पूर्व से पश्चिम तरफ एक रौंस जाकर अमृतवन की मध्य रौंस से जाकर मिल गयी है । इस रौंस पर अनेक प्रकार के नग जड़े हुए शोभा ले रहे हैं । यहां पर रेती नही आयी है । इस रौंस के दक्षिण तरफ ८२ मन्दिर की जगह उत्तर से दक्षिण तरफ और पूर्व से पश्चिम तरफ १६६ मन्दिर की जगह की चौक में ३३ मन्दिर का लम्बा-चौड़ा चबूतरा । चबूतरे को छोड़कर चारों तरफ घेरकर सुन्दर रंगो की रेती बिछी हुयी है । कोई रेती दो खुनी, तीन खुनी, चौखुनी, गोल और चौरस इस तरह की बिछी हुयी है । मानो हीरे,माणिक, मोती, पन्ना और परवाल

आदि अनेक तरह के नग बिछे हैं। इसी प्रकार से रौंस के उत्तर तरफ एक चौक आया है। जिसमें चबूतरा तथा रेती शोभा ले रही है।

चांदनी चौक के दो चबूतरे :- एक दक्षिण तरफ के चबूतरे का ब्यान किया जाता है। इसी प्रकार उत्तर तरफ का चबूतरा आया है। यह ३३ मन्दिर का लम्बा-चौड़ा कमर भर का ऊंचा आया है। सो इस चबूतरे के एक दिशा में ८-१/४ मन्दिर की जगह से मध्य भाग में कमर भर की सीढ़ी चांदनी चौक की जमीन पर उतरी है। सो एक सीढ़ी एक हाथ की चौड़ी सवा आठ मन्दिर की लम्बी आयी है। इन सीढ़ियों के दाएं-बाएं कठेड़ा आया है और इन सीढ़ियों के दाएं-बाएं इन चबूतरे के किनार पर १२-१/४, १२-१/४ मन्दिर की जगह में सुन्दर कठेड़ा शोभा ले रहा है। इस प्रकार से चारों तरफ वनक आयी है। इस चबूतरा के मध्य भाग में एक मन्दिर की मोटायी में अशोक (समी) का वृक्ष आया है। जो हरे रंग का है। इसके चारों तरफ १६-१६ मन्दिर की जगह आयी है। इस जगह पर सुन्दर गिलम बिछी है। पूर्व तरफ मध्य भाग में सिंहासन के दाएं-बाएं तरफ तीन-तीन हजार कुर्सियां रखी हैं। इस प्रकार चारों तरफ वनक आयी है। इस चबूतरे की जोगवाई हरे रंग की आयी है। इसी प्रकार उत्तर के चबूतरे पर आम का वृक्ष आया है। जिसकी वनक लाल रंग की आयी है और कुछ फरक नही है।

चांदनी चौक के दक्षिण तरफ वृक्ष :- दक्षिण तरफ हरे रंग के अशोक के वृक्ष का ब्यान किया जाता है। उसी तरह से उत्तर तरफ के आम के वृक्ष की शोभा आयी है। दक्षिण तरफ के चबूतरा के मध्य भाग में एक मन्दिर का मोटा वृक्ष आया है। यह ७५ हाथ ऊंचा जाकर चारों तरफ डालियों की मेहरावें बनना शुरू हो गयी है। एक मन्दिर की ऊंचाई पर जाकर ३३ मन्दिर की लम्बी-चौड़ी छत नीचे चबूतरा के बराबर आयी है। पेड़ के थड़ में दरवाजा आया है। इस दरवाजा से होकर पेड़ के थड़ से होकर भोम

भर की सीढ़ियां चढकर दूसरी भोम में जाइये । यह छत उसी वृक्ष की है । इस छत के बाहिर चारों तरफ की किनार पर एक दिशा में देखने के ३४ थम्भ इसी वृक्ष के आये हैं । जिस पर अनेक प्रकार की फल-फूलों की चित्रकारी है । इन सब मेहरावों में सुन्दर कठेड़ा आया है । इसी प्रकार चारों तरफ वनक आयी है । चारों दिशाओं की चारों दीवारों के कोनो पर गुम्मट आये हैं । गुम्मट पर ध्वजा पताका सब आये हैं । वृक्ष की ऊंचाई दो भोम तीसरी चांदनी आयी है । चांदनी पर गुम्मट, कलश, ध्वजा, पताका सब शोभित है ।

चांदनी चौक के तीन तरफ रौंस :- चांदनी चौक १६६ मन्दिर का लम्बा-चौड़ा बराबर आया है । इस चांदनी चौक के दक्षिण तरफ दो मन्दिर की चौड़ी और पूर्व से पश्चिम तरफ चांदनी चौक के जमीन के बराबर एक रौंस १६६ मन्दिर की लम्बी धाम दीवार के साथ लगकर दक्षिण तरफ चली गयी । इस रौंस के उत्तर किनार पर ८४ वृक्ष अमृत वन के आये हैं । जिनपर ८३ मेहरावें आयी हैं । इन वृक्षों की ऊंचाई दो भोम तीसरी चांदनी है । दूसरी भोम में इन ८४ वृक्षों के बीच में ८३ कठेड़ा आये हैं और तीसरी चांदनी पर १६६ मन्दिर का लम्बा एक ही कठेड़ा शोभा ले रहा है । इसी प्रकार की वनक उत्तर चबूतरे की आयी है । इस चांदनी चौक के पूर्व तरफ दो मन्दिर की चौड़ी दक्षिण से उत्तर तरफ और १६६ मन्दिर की लम्बी चांदनी चौक की जमीन के बराबर एक रौंस उत्तर-दक्षिण से मिलकर शोभा खुबी को ले रही है । इस रौंस के पश्चिम की किनार पर ८२ वृक्ष ऊपर ८१ मेहरावें आयी हैं और एक-एक वृक्ष दाएं-बाएं के, जिस पर एक-एक मेहराव और आने से ८४ वृक्ष और ८३ मेहरावें सब हुयी । सो इनो की वनक दक्षिण तरफ की रौंस की तरह आई है । इस पूर्व की रौंस के मध्य भाग में दो मन्दिर की चौड़ी और १८३२ मन्दिर की लम्बी पश्चिम से पूर्व अमृतवन के

मध्य भाग में होकर एक रौंस जाकर बन रौंस से मिलकर एक रूप हो गयी है ।

चांदनी चौक के पश्चिम तरफ दस मन्दिर का चबूतरा :- चांदनी चौक के पश्चिम तरफ मध्य भाग में दस मन्दिर का लम्बा उत्तर से दक्षिण तरफ एक मन्दिर का चौड़ा पूर्व से पश्चिम श्री रंग भवन के साथ चबूतरे से लगकर बाहिर तरफ चबूतरा निकला हुआ है । श्री रंग भवन की दीवार से दो मन्दिर का चौड़ा चबूतरा होता है । क्यों की एक मन्दिर की रौंस दाएं-बाएं से आकर इसमें मिल गयी है । दस मन्दिर के चबूतरा की पिठोर में अक्शी थम्भ आये हैं । जिनपर आठ मेहरावें आयी हैं । मध्य भाग में भोम भर की सीढ़ियां चढ़ने से एक मेहराव नही आयी है और दो मेहरावें बगली उत्तर-दक्षिण तरफ शोभा ले रही है । यह १० मन्दिर का लम्बा दो मन्दिर का चौड़ा छज्जा ऊपरा-ऊपर १० भोम तक चला गया है । छज्जा के किनार में हर भोम पर हर भोम में दस-दस थम्भ आये हैं । परन्तु दूसरी भोम में हीरा के दो थम्भ नही आये हैं । क्योकि पहली भोम के दो थम्भ हीरा के दो भोम तक ऊंचे चले गये हैं । तब १० भोम के सब थम्भ ९८ हुये, और हर भोम की ९-९ मेहरावें आयी हैं । परन्तु पहली भोम में आठ ही मेहरावें आयी हैं । इसलिए कुल मेहरावें ८९ हुई । हर एक भोम में दो-दो मेहरावें बगली उत्तर-दक्षिण तरफ आयी हैं । तब दशों भोम की बीस मेहरावे हुयी । तब सम्पूर्ण १०९ मेहरावें हुयी ।

चांदनी चौक में मेहरावें :- दस मन्दिर लम्बे चबूतरा के दक्षिण तरफ भोम भर ऊंचे चबूतरा की पिठौर में ७८ मन्दिर की जगह में ७९ अक्शी थम्भ दिखाई दे रहे हैं । इन थम्भों पर ७८ अक्शी मेहरावें शोभा ले रही हैं । ऊपर मन्दिर भर की चौड़ी रौंस, बाहिर किनार पर कठेड़ा शोभा ले रहा है । इसी प्रकार की बनक उत्तर तरफ आयी है ।

चांदनी चौक के पश्चिम तरफ मन्दिर :- दस मन्दिर के हांस के दाएं-बाएं तरफ ७८-७८ मन्दिर चांदनी चौक के हद में आये हैं। तब दोनों तरफ के सब मन्दिर एक भोम के १५६ हुये। सो उपरा-ऊपर आठ भोम के सब मन्दिर १२४८ दिखाई दे रहे हैं और १२४८ ही झरोखे दिखाई दे रहे हैं। आठों भोम के छज्जे ३३-३३ हाथ के चौड़े उपरा-ऊपर सात छज्जे दिखाई दे रहे हैं। छज्जे की किनार पर कठेड़ा शोभा ले रहा है। ऊपर नवमी भोम का छज्जा मन्दिर भर का चौड़ा निकला दिखाई दे रहा है। जिसके किनार पर १५८ थम्भ, १५६ मेहरावें, कठेड़ा सब दिखाई देता है।

दसमी छात पर मन्दिर गुमटियाँ :- दसवीं छात के ऊपर मध्य के छज्जा के दाएं-बाएं ७८-७८ सब मन्दिर आये हैं। इन मन्दिरों के आगे मन्दिर भर का का चौड़ा छज्जा तथा कठेड़ा सब दिखाई दे रहा है और मन्दिरों की ग्यारवीं चांदनी तथा मध्य के छज्जा पर चांदनी चौक की हद में ३३२ गुमटियां आयी हैं और छज्जा के किनार पर लाल माणिक की गुमटियां आयी हैं। कुल ३३४ गुमटियां दिखाई दे रही हैं। इन गुमटियों पर कलश, ध्वजा, पताका, सब जरा-जरा दिखाई दे रहे हैं।

चांदनी चौक में गुर्ज और कंगूरे :- बड़े छज्जा के दक्षिण तरफ तीन गुर्ज और २३ मन्दिर चांदनी चौक के हद में आये हैं। इसी प्रकार से तीन गुर्ज और २३ मन्दिर उत्तर तरफ आये हैं। इन गुर्जों की ग्यारवीं भोम के ऊपर ६ गुम्मट शोभा ले रहे हैं। जिन पर ध्वजा-पताका सब दिखाई दे रहे हैं। एक गुर्ज में तीन दरवाजे एक भोम में आये हैं। तब ६ गुर्जों के १८ दरवाजे एक भोम में आने से दस भोमों के गुर्जों के १८० दरवाजे चांदनी चौक में दिखाई दे रहे। बड़े छज्जा के दाएं-बाएं ७८-७८ मन्दिर आये हैं। जिस पर ७९-७९ कगूरें आये हैं और १० कंगूरे पूर्व के छज्जा के किनार पर आये हैं। जिसमें से ६ कंगूरे गुर्जों के ठिकाने पर नही आये हैं। इस तरह १६२ कंगूरे आये हैं। इन कंगूरो पर ध्वजा पताका सब दिखायी दे रहे हैं।

चांदनी चौक मन्दिरों के दरवाजे :- चांदनी चौक की हद में १५६ मन्दिर आये हैं। हर एक मन्दिर के दो-दो दरवाजे आये हैं। तब ३१२ दरवाजे एक भोम के हुए। आठों भोम के २४९६। दसवीं भोम में १५६ मन्दिरों के ३१२ दरवाजे आने से कुल तले से लेकर ऊपर तक २८०८ दरवाजे आये हैं और छज्जा के पिछली तरफ पहली भोम में ९ मन्दिरों में १७ दरवाजे आये हैं। दूसरी भोम में १८ दरवाजे आये हैं। तीसरी भोम में १२ दरवाजे आये हैं। चौथी भोम से लेकर आठवी भोम तक हर भोम के १७-१७ दरवाजें आने से पांचो भोमों के ८५ दरवाजे हुए। तब छज्जा के पिछली तरफ सब दरवाजे १३२ हुए। तब सम्पूर्ण दरवाजे चांदनी चौक की हद में २९४० हुये। इस प्रकार चांदनीं चौक में खड़े होकर पश्चिम तरफ की शोभा रूह देखकर आत्मा में वसा कर रूह ने पूर्व तरफ देखा तो चांदनी चौक के दाएं-बाएं अमृत वन अपार शोभा ले रहा है।

चांदनी चौक में वृक्ष कमती :- अमृत वन के बीच में १६६ मन्दिर का लम्बा-चौड़ा चांदनी चौक आ जाने से यहां पर वृक्ष नही आये हैं। सो यहां पर ८२ वृक्षों की ८२ हारें न आने से ६७२४ वृक्ष कम हुए।

अमृत वन के दो बगीचे :- अमृत वन के मध्य भाग में २ मन्दिर की चौड़ी और १८३२ मन्दिर की लम्बी पूर्व से पश्चिम तरफ रौंस आ जाने से दो बगीचे मालूम पड़ते हैं। एक बगीचा उत्तर से दक्षिण तरफ २४८ मन्दिर का चौड़ा और पश्चिम से पूर्व तरफ २००० मन्दिर का लम्बा आया है। इसी प्रकार से रौंस के उत्तर तरफ इतना ही लम्बा-चौड़ा एक बगीचा आया है। दक्षिण तरफ के एक बगीचे का ब्यान किया जाता है। इसी प्रकार से उत्तर तरफ का बगीचा आया है। इन दोनों बगीचों के मध्य में एक रौंस आयी है। जो दोनों तरफ गिनी जायेगी।

बगीचा के चारों तरफ रौंस :- अमृत वन बगीचा के चारों तरफ रौंस आयी

है । श्री रंग भवन की दीवार के साथ लगकर पश्चिम तरफ दो मन्दिर की चौड़ी और दक्षिण से उत्तर तरफ १६६ मन्दिर की लम्बी आयी है । फिर पश्चिमसे पूर्व तरफ चांदनी चौक के साथ लगकर १६६ मन्दिर तक गयी है । फिर दक्षिण से उत्तर तरफ ८४ मन्दिर तक गयी है । फिर पश्चिम से पूर्व तरफ १८३२ मन्दिर जाकर वन रौंस से मिल गयी है । फिर वन रौंस और अमृत वन के बगीचा के साथ लगकर २५० मन्दिर उत्तर से दक्षिण तरफ गयी है । फिर पूर्व से पश्चिम तरफ अमृत वन और जाम्बू वन के बीच में है । २००० मन्दिर लम्बी जाकर धाम चबूतरा के साथ जाकर मिली है ।

अमृत वन के चारों तरफ चबूतरा :- अमृतवन की दक्षिण तरफ के रौंस के साथ लगकर एक चबूतरा १९९८ मन्दिर का लम्बा वन रौंस से चलकर धाम चबूतरा की रौंस पूर्व से पश्चिम तरफ गया है । बाद में धाम रौंस के साथ होकर १६२ मन्दिर दक्षिण से उत्तर जाकर चांदनी चौक के दक्षिण तरफ की रौंस से जाकर मिला है । फिर चांदनी चौक के दक्षिण तरफ की रौंस के साथ लगता हुआ १६६ मन्दिर पश्चिम से पूर्व तरफ चला गया है । फिर मरोर खाकर चांदनी चौक की पूर्व की रौंस के साथ लगकर दक्षिण से उत्तर तरफ ८४ मन्दिर तक जाकर अमृतवन के मध्य में जो २ मन्दिर भर की चौड़ी रौंस आयी है । उसके साथ जाकर मिल गया है । फिर मरोर खाकर अमृतवन की मध्य की रौंस के साथ मिलता हुआ पश्चिम से पूर्व तरफ १८३० मन्दिर जाकर वन रौंस तक चला गया है । फिर मरोर खाकर वन रौंस से मिलता हुआ उत्तर से दक्षिण तरफ २४४ मन्दिर जाकर दक्षिण तरफ के चबूतरा के साथ मिल गया है ।

अमृत वन के आड़े पांच चबूतरे :- धाम चबूतरा की रौंस के साथ लगकर पहिला चबूतरा १६४ मन्दिर का लम्बा उत्तर से दक्षिण तरफ आया है । फिर

धाम चबूतरा की दीवार के पूर्व तरफ ५०० मन्दिर की दूरी पर दूसरा चबूतरा २४४ मन्दिर का लम्बा उत्तर से दक्षिण तरफ आया है। फिर धाम चबूतरा की दीवार से १००० मन्दिर की दूरी पर तीसरा चबूतरा २४४ मन्दिर लम्बा, इसी प्रकार की लम्बाई को लेकर चौथा चबूतरा १५०० मन्दिर धाम दीवार से दूरी पर, पांचवा धाम दीवार से २००० मन्दिर दूरी पर २४४ मन्दिर का लम्बा आया है। इन सब चबूतरों के दोनों किनारों पर वृक्षों की दो हारें आयी हैं। परन्तु पांचवे चबूतरा की पूर्व किनार पर वन रौंस के वृक्ष आये हैं। हर एक चबूतरा के मध्य में एक मन्दिर की जगह में नहर भोम भर की गहरी आयी है। दाएं-बाएं रौंस आयी है। रास्तों की जगह छोड़कर कठेड़ा आये है। नहरों के मध्य भाग में पुल आये हैं। रौंस से सीढ़ियां बगीचों में उतरी हैं।

अमृतवन के एक बगीचा के वृक्ष :- पांच आड़ी नहरों के बीच में चार बगीचा आये हैं। हर एक बगीचा ५०० मन्दिर का लम्बा पूर्व से पश्चिम, २४८ मन्दिर चौड़ा उत्तर से दक्षिण तरफ आया है। इन सब बगीचों में दो-दो मन्दिर के फासलें पर वृक्ष आये हैं। एक बगीचे के पूर्व से पश्चिम तरफ १२५ वृक्षों की २५० हारें तथा उत्तर से दक्षिण २५० वृक्षों की १२५ हारें आने से एक बगीचा के कुल वृक्ष १२५००० हुए। परन्तु चांदनी चौक के जगह में वृक्ष नही आये हैं। आधी चांदनी चौक में पश्चिम से पूर्व ४१ वृक्षों की ८२ हारें और दक्षिण से उत्तर तरफ ८२ की ४१ हारें टूट जाने से कुल वृक्ष ३३६२ कम हो जाने से बगीचे में १२१६३८ वृक्ष हुए।

अमृत वन के उत्तर तरफ का बगीचा :- जिस प्रकार से दक्षिण तरफ के बगीचे का ब्यान किया गया है। उसी प्रकार उत्तर तरफ के बगीचा का ब्यान है। उसी प्रकार रौंस, उसी प्रकार वृक्ष आये हुये हैं। अमृतवन में किनार पर आम के वृक्ष आये हैं। बाकी जगह में सभी प्रकार के वृक्ष आये हैं। अमृत वन के दोनों तरफ के बगीचों के कुल वृक्ष २४३२७६ आये हैं। इसी प्रकार

छः बगीचों की शोभा देखकर अग्नि कोना के चेहबच्चा की तरफ आईये ।

चारों चेहबच्चा रंग भवन की जगह में :- रंगभवन के चारों कोना में चार चेहबच्चा आये हैं । यह चेहबच्चें रंग भवन की जगह में आये हैं । क्योंकि रंग भवन की जगह चौरस आयी है । उसी जगह में भोम भर का ऊंचा चबूतरा गोल पहलदार बना है । तब रंग भवन के चारों कोना की जगह में चार चेहबच्चें आये हैं ।

रंगभवन की हर दिशा में १५०० मन्दिर :- श्री रंग भवन की बाहिर की तरफ जो मन्दिरों की हार आयी है । इन मन्दिरों की दीवारें जो बाहिर और भीतर की तरफ आयी है अन्दर की दीवार १०० हाथ की आयी है और बाहिर की दीवार १०२ हाथ की आयी है । तब १०० मन्दिर की जगह में २ मन्दिर की जगह बाहरी किनार की अधिक हुयी और ६००० मन्दिर की जगह में १२० मन्दिर की जगह बढ़ गयी।चारों तरफ १५०० मन्दिर का हिसाब बांधा गया है वह अन्दर वाली दीवार से बांधा गया है । जैसे पूर्व तरफ १५०० मन्दिर के सामने तीन घाट आये हैं । वह भीतरी दीवार के सामने आये हैं । इस वास्ते तीनों बगोचों के ऊपर १४७० झरोखें श्री रंगभवन के आये हैं और ३० झरोखें दोनों ईशान, अग्नि कोना वाले चेहबच्चा पर आये हैं ।

१२० मन्दिर की जगह चारों चेहबच्चों पर आयी है :- एक चेहबच्चा के १६ हांस आये हैं । एक हांस ३० मन्दिर का आया है । एक हांस चेहबच्चा का श्री रंगभवन की रौंस से मिला है । इस वास्ते रंग भवन के ३० झरोखें चेहबच्चा के हांस में आये हैं । इसी प्रकार चारों तरफ १२० मन्दिर बढ़ोत्तरी के चारों चेहबच्चा पर आये हैं । इस वास्ते हर एक दिशा में १५०० मन्दिर की जगह यर्थात रह गयी है । यदि बाहिर की दीवार से हिसाब बांधा जाता तो चारों चेहबच्चा श्री रंगभवन से अलग हो जाते । अगर साथ मिलाते तो

दाएं-बाएं के बगीचों में जगह कम हो जाती है ।

अग्नि कोना के चेहबच्चा का ब्यान :- श्री रंगभवन के अग्नि कोना में तले के जमीन से एक कोट दीवार मन्दिर भर का चौड़ा और भोम भर का ऊंचा गोलाकृत एक चबूतरा १६ हांस का उठा । हर एक हांस ३०-३० मन्दिर का आया है । तब इस कोट की गृद ४८० मन्दिर की हुयी, और लम्बाई-चौड़ाई १६०-१६० मन्दिर की हुयी । श्री रंग भवन के पूर्व-ईशान कोना से लेकर अग्नि कोना में ५१ गुर्ज आये हैं उस गुर्ज के सामने पूर्व तरफ जो ३३ हाथ की चौड़ी रौंस आयी है । इस रौंस के किनार पर जो चबूतरे के हांस का कोना आया है । इस कोना के दाएं-बाएं तरफ के हांस में से १५-१५ मन्दिर की जगह में इस कोट का पश्चिम का हांस मिला है और बाकी के १५ हांस दीवार को छोड़कर चारों तरफ आये हैं । मानो चेहबच्चा की दीवार ४५० मन्दिर श्री रंगभवन के चबूतरा की दीवार से बाहिर निकली हुयी शोभा खुवी ले रही है ।

अग्नि कोना के चेहबच्चा का पानी :- जमीन से भोम भर की कोट की ऊंचाई से जो भीतर तरफ देखिए तो १५८ मन्दिर का लम्बा-चौड़ा १६ हांस का गृद ४७४ मन्दिर का एक पानी का चेहबच्चा मानो एक ताल दो भोम का गहरा दिखाई दे रहा है । इस ताल के चारों तरफ मन्दिर भर की रौंस कोट दीवार पर आयी है ।

चेहबच्चा के भीतर तरफ के चांदे :- पानी के चारों तरफ एक मन्दिर की चौड़ी रौंस एक मन्दिर की कोट दिवार के ऊपर आयी है । इस रौंस के भीतर कमर भर जल की गहराई में कोट की दीवार में से एक मन्दिर का चौड़ा छज्जा चारों तरफ निकला है । चारों दिशा में हांसो के मध्य भाग में कमर भर के ऊंचे चार चबूतरे एक-एक मन्दिर के लम्बे-चौड़े रौंस के बराबर उठे ।

इन चबूतरों के भीतरी जल तरफ कठेड़ा लगे हुए हैं और दाएं-बाएं तरफ कमर भर की सीढ़ी जल के चबूतरा (छज्जा) पर उतरी है। यहां पर कमर भर का पानी भरा है। यदि इस छज्जा के भीतरी तरफ जांये तो दो भोम का गहरा पानी भरा है। चांदो की सीढ़ियां छोड़कर बाकी में कठेड़ा लगा है।

चेहबच्चा के बाहरी तरफ के चांदे :- इन पानी के चेहबच्चा को घेर करके जो एक मन्दिर की चौड़ी रौंस आयी है और वह रौंस श्री रंग भवन के मन्दिरों के आगे जो एक मन्दिर की रौंस आयी है। यहां एक बराबर आयी है। मानो दो मन्दिर की चौड़ी पूर्व से पश्चिम तरफ और ३० मन्दिर की लम्बी उत्तर से दक्षिण तरफ उस हांस पर दिखाई देगी, जो पश्चिम तरफ मिला है। चेहबच्चा की बाहरी रौंस की बाहरी किनार (वन तरफ) भोम भर नीचा दो मन्दिर की चौड़ी रौंस पर कोट की दीवार के साथ लगकर एक मन्दिर का चौड़ा, और पानी तरफ दो मन्दिर की लम्बाई रौंस तरफ। इस प्रकार तीन चबूतरे भोम भर के ऊंचे उठकर चेहबच्चा की रौंस के बराबर आये हैं। इन चबूतरों के चौक एक-एक मन्दिर के चौड़े और दो-दो मन्दिर के लम्बे आये हैं। इन चबूतरों के दाएं-बाएं तरफ भोम भर की सीढ़ी नीचे के रौंस पर उतरी है। चबूतरा के चौक के वन तरफ तथा सीढ़ियों के वन तरफ कठेड़ा आये हैं। चबूतरा के चौक के भीतरी तरफ रौंस आयी है और सीढ़ियों के भीतरी तरफ कोट दीवार आयी है। इसी प्रकार से तीनों दिशाओं में चांदो की शोभा जानना जी। चेहबच्चा के पश्चिम तरफ जो हांस आये हैं और जो रंग भवन के साथ मिला है इस हांस के दाएं-बाएं तरफ अर्थात उत्तर-दक्षिण तरफ चेहबच्चा के नैरित्य और वायब्य कोना कहे हैं। इसके साथ लगकर श्री रंगभवन तथा चेहबच्चा के बीच की जगह में एक मन्दिर का लम्बा-चौड़ा नीचे से ऊपर तक एक चबूतरा आया है। इस चबूतरा पर धाम की रौंस से तथा चेहबच्चा की रौंस से आ-जा सकते हैं। इस चबूतरा से

उत्तर तरफ भोम भर की सीढ़ी नीचे की रौंस पर उतरी है। यह सीढ़ी रंगभवन के चबूतरा के तथा चेहबच्चा के कोट दीवार के साथ लगकर आयी है। इसी प्रकार से मध्य हांस के दक्षिण तरफ चौक और सीढ़ी आयी है।

रौंस के बाहरी तरफ कठेड़ा :- तीनो चांदो की जगह छोड़कर तथा पश्चिम तरफ एक हांस दो मन्दिर की जगह छोड़कर तथा (जो दो चौक एक-एक मन्दिर के आये हैं) जहां से नीचे सीढ़ियां उतरी हैं। चारों तरफ घेरके ४४२ मन्दिर की जगह में कठेड़ा आया है।

चांदे के चौकों का अन्तर :- चेहबच्चा की गृद ४८० मन्दिर की आयी है। जिसके उत्तर, दक्षिण और पूर्व तरफ चांदे आये हैं। पश्चिमी तरफ का हांस रंगभवन के चबूतरे के साथ लगा हुआ है। एक चांदा के मध्य भाग से लेकर दूसरे चांदा के मध्य भाग तक १२० मन्दिर की जगह आयी है। इस प्रकार चारों चांदो का ब्यान है।

चबूतरा के पिठोर में जाम्बू के वृक्ष :- चेहबच्चा के पश्चिम हांस के उत्तर अर्थात् वायब्य कोना के साथ लगकर पहला वृक्ष जाम्बू का एक मन्दिर के चबूतरा के चौक के ऊपर आया है। यहां से लेकर उत्तर के चांदा के पश्चिम तरफ चांदा के चौक के साथ लगकर सीढ़ियों के बीच में चबूतरा के पिठौर में दो-दो मन्दिर के अन्तर पर ५३ वृक्ष जाम्बू वन के लगे हुए हैं। जिनपर बावन मेहरावें चेहबच्चा की रौंस से २२ हाथ की ऊंचाई पर आई हैं। बावन मेहरावों के बीच में १०४ मन्दिर की जगह हुयी। १५ मन्दिर पश्चिम तरफ के हांस के छूट गये हैं। और एक मन्दिर उत्तर तरफ के आधा चांदा का छूट गया है। इस प्रकार १२० मन्दिर की जगह उत्तर के मध्य चांदा तक हुआ। उत्तर चांदा के चौक के पूर्व तरफ साथ लगकर सीढ़ियों के बीच में पहला वृक्ष जाम्बू का हुआ। इन वृक्षों से लेकर पूर्व के चांदा के उत्तर तरफ सीढ़ियों के बीच में यहां तक ६० वृक्ष जाम्बू के आये है और उनपर ५९

मेहरावें आयी है । इन वृक्षों के बीच में ११८ मन्दिर की जगह हुयी और एक मेहराव उत्तर के चांदा पर आयी है । तब १२० मन्दिर की जगह पूर्ण हुयी । एक मन्दिर उत्तर के चांदा की और एक मन्दिर पूर्व की चांदा की जगह ली जिससे १२० मन्दिर होते हैं । वायब्य कोना से लेकर पूर्व के चांदा तक ११३ वृक्ष जाम्बू के, चेहबच्चा की दीवार के साथ लगकर रौंस पर आये हैं । जिनके ऊपर ११२ मेहरावें दिखाई दे रही हैं ।

जाम्बू और नारंगी की रौंस :- पूर्व के चांदा के चौक के नीचे पूर्व तरफ जो एक मन्दिर की रौंस आयी है । इस रौंस के पूर्व तरफ साथ लगती हुयी दो मन्दिर की चौड़ी उत्तर से दक्षिण तरफ और १९९८ मन्दिर की लम्बी पश्चिम से पूर्व तरफ जाम्बू और नारंगी के बगीचा के मध्य में होकर एक रौंस जाकर वन रौंस से मिली है । इस रौंस के उत्तर तरफ जाम्बू के वृक्ष आये हैं और रौंस के दक्षिण तरफ नारंगी के वृक्ष आये हैं । इन वृक्षों पर जो मेहरावें आयी हैं आधी मेहराव नारंगी की है । आधी जाम्बू की है । इस प्रकार जो रौंस दो बगीचों के बीच में आयी है । वहां पर इसी प्रकार की जोगबाई आयी है । इस मध्य की रौंस के उत्तर तरफ एक चबूतरा दो मन्दिर का चौड़ा वन रौंस के साथ आकर फिर चेहबच्चा की रौंस के साथ लगकर धाम रौंस से आकर मिल गया है । फिर धाम रौंस के साथ लगकर उत्तर तरफ जाकर फिर जाम्बू और अमृत की मध्य के रौंस के साथ लगकर पूर्व तरफ चला गया है । चबूतरा के मध्य में नहरे और दाएं-बाएं रौंसे आयी है ।

चबूतरा के पिठोर में नारंगी के वृक्ष :- चेहबच्चा के पूर्व तरफ के चांदा से लगता हुआ सीढ़ियों के बीच में दक्षिण तरफ का पहला वृक्ष नारंगी का आया है । इस वृक्ष से लेकर चेहबच्चा के दक्षिण तरफ के चांदा के चौक से लगता हुआ पूर्व तरफ सीढ़ियों के बीच में जो वृक्ष आया है यहां तक ६० वृक्ष

नारंगी के आये हैं। चबूतरे की पिठौर में आये हैं। चेहबच्चा के ऊपर रौंस से २२ हाथ की ऊंचाई पर ५९ मेहरावें वृक्षों के ऊपर आयी हैं। इस प्रकार से १२० मन्दिर का हिसाब हुआ। चेहबच्चा के कोट को घेरकर जो दो मन्दिर की चौड़ी रौंस आयी है। इस रौंस से लगता हुआ एक चबूतरा नारंगी वन में चेहबच्चा के दक्षिण तरफ के चांदा तक आया है। फिर घूमकर दक्षिण तरफ चला गया है।

एक वृक्ष चौकी का चेहबच्चा पर :- इस चेहबच्चा के दक्षिण तरफ के चांदा से पश्चिम तरफ की दीवार से लेकर चेहबच्चा के नैरित्य कोना तक वटपीपल चौकी की हद आयी है। इस चेहबच्चा के कोट दीवार से लगकर और श्री रंगभवन के दक्षिण तरफ अग्नि कोना में एक मन्दिर की चौड़ी रौंस के साथ लगकर नहर का एक चबूतरा वट पीपल के चौकी का आया है। फिर इस चबूतरा की दक्षिण तरफ ९८-१/२ मन्दिर की लम्बी एक नहर चेहबच्चा की कोट दीवार से लगकर ८० मन्दिर तक आयी है। फिर इसके आगे चेहबच्चा के दक्षिण तरफ का हांस गोलायी लेकर पूर्व तरफ घूम गया है। श्री रंगभवन के दक्षिण तरफ बड़े चेहबच्चा के नैरित्य कोना तरफ एक वृक्ष वट का इस चबूतरा के सामने ५० मन्दिर की दूरी पर आया है। इस वृक्ष ने ५२ मन्दिर की छत्री मण्डल पूर्व तरफ ल्याय कर चेहबच्चा के जल के चबूतरा तक अपनी चारों तरफ छत्तरी बांधी है। यह छत्तरी नैरित्य कोना के सीढ़ियों से लेकर दक्षिण तरफ के आधे चांदा तक १०५ मन्दिर की जगह में छाया कर रखी है।

चेहबच्चे पर जाम्बू नारंगी की छत्री मण्डल :- जाम्बू के ११३ वृक्षों ने और नारंगी के ६० वृक्षों ने दो मन्दिर की लम्बी छत्री ल्याय कर चेहबच्चा के जल के चबूतरा तक इनो ने अपनी छत्री मण्डल बांधा है। चेहबच्चा की रौंस से ऊपर देखिए तो २२ हाथ की ऊंचाई पर चारों तरफ वृक्षों ने अपनी

छत्री मण्डल बांधा है और कठेड़ा चारों तरफ शोभा ले रहा है । इस छत्री से ७८ हाथ की ऊंचाई पर चेहबच्चा के चारों तरफ वृक्षों ने दूसरा छत्री मण्डल बांधा है । जहां वृक्षों की दूसरी भोम आयी है । वहां पर चारों तरफ कठेड़ा दिखाई दे रहा है । यह कठेड़ा जाम्बू-नारंगी की चांदनी तथा चौकी की तीसरी भोम का कठेड़ा जानना जी । चौकी की दो भोम और ऊपर आयी है । उनके कठेड़ा भी दिखाई दे रहे हैं । जिस प्रकार से अग्नि कोना के चेहबच्चा का ब्यान किया गया । उसी प्रकार से श्री रंगभवन के चारों कोना में आये हुये चेहबच्चों का ब्यान जानना जी । केवल चेहबच्चों पर वृक्षों का छत्री मण्डल अलग-अलग प्रकार का आया है ।

वटपीपल की चौकी :- श्री रंगभवन के अग्नि कोना से लेकर नैरित्य कोना तक ५० हांस आये हैं । मन्दिरों के दक्षिण तरफ में एक मन्दिर की चौड़ी धाम रौंस आयी है । इस धाम रौंस से एक भोम नीचे धाम चबूतरा की दीवार के साथ लगकर एक मन्दिर की चौड़ी उत्तर से दक्षिण और १५०० मन्दिर की लम्बी पूर्व से पश्चिम एक चबूतरा की रौंस आयी है । इस रौंस पर ५० चादों की सीढ़ियां धाम रौंस से उतरी हैं ।

चांदो का ब्यान :- धाम चबूतरा के साथ लगकर एक मन्दिर की चौड़ी जो धाम चबूतरा की रौंस जमीन पर आयी है । इस रौंस पर धाम चबूतरा के साथ लगकर एक मन्दिर का लम्बा एक चौरस चबूतरा एक भोमभर का ऊंचा हांस के मध्य भाग में से उठा । सो धाम रौंस के बराबर आकर मिल गया है । इस चबूतरा के दक्षिण तरफ कठेड़ा लगा हुआ है । चबूतरा के पूर्व-पश्चिम तरफ भोम भर की सीढ़ियां धाम चबूतरा की रौंस पर उतरी हैं । सीढ़ी एक मन्दिर की लम्बी उत्तर से दक्षिण और एक हाथ की चौड़ी पूर्व से पश्चिम तरफ आयी है । सो इन सीढ़ियों के दक्षिण तरफ कठेड़ा आया है और उत्तर तरफ चबूतरा की दीवार आयी है । जिस प्रकार एक चांदा

का ब्यान किया गया है उसी प्रकार सभी चांदों का ब्यान जानना जी । रंग भवन की रौंस के साथ लगकर अग्नि और नैरित्य कोना में १६-१६ हांस का एक चेहबच्चा आया है । वहां से भी एक-एक सीढ़ी उतरी है । चांदा के चबूतरा के दक्षिण तरफ पाव मन्दिर की रौंस परिक्रमा करने के वास्ते नहर के चबूतरे की आयी है ।

अग्नि तथा नैरित्य कोना से सीढ़ी उतरी :- अग्नि कोना के चेहबच्चा के पश्चिम तरफ और नैरित्य कोना के चेहबच्चा के पूर्व तरफ एक-एक हांस जो रंग भवन के साथ मिला है । इन हांसो के दक्षिण व पूर्व तरफ एक मन्दिर का लम्बा-चौड़ा चौक बना है । ये चौक धाम चबूतरा और चेहबच्चा के दीवार के बीच में बना है । इन चौकों के साथ भोम भर की सीढ़ी उतरी है । इन चेहबच्चों से गुप्ता-गुप्त पानी वट पीपल की चौकी में जाता है ।

चौक की लम्बाई-चौड़ाई :- श्री धाम चबूतरा की दीवार से लेकर उत्तर से दक्षिण तरफ ५००मन्दिर की चौड़ी और पूर्व से पश्चिम १५०० मन्दिर की लम्बी रंगभवन के भीतरी मन्दिरों के हिसाब से आयी है परन्तु मन्दिरों के बाहरी दीवार से तो १४७० मन्दिर चौकी के सामने आये हैं । १५-१५ मन्दिर अग्नि तथा नैरित्य कोना के चेहबच्चों के सामने आये हैं ।

चौकी के आड़े-लम्बे चबूतरे :- धाम चबूतरा की रौंस के साथ लगकर दक्षिण तरफ एक मन्दिर का चौड़ा और पूर्व से पश्चिम तरफ १५०० मन्दिर का लम्बा चबूतरा जमीन से कमर भर ऊंचा आया है । इस चबूतरे की दक्षिण तरफ ९८-१/२ मन्दिर की जगह छोड़कर दूसरा चबूतरा मन्दिर भर का चौड़ा १५०० मन्दिर का लम्बा पहले चबूतरे की भांति आया है । इसी प्रकार ९८-१/२, ९८-१/२ मन्दिरों की जगह छोड़कर ६ चबूतरे आये हैं । इन चबूतरों की बीच में ५ सन्धे आये हैं । इन पांच सन्धो के बीच में ४९२ मन्दिर की जगह हुयी । ६ मन्दिर के चबूतरे हुये और एक मन्दिर की रौंस

उत्तर तरफ और एक मन्दिर की दक्षिण तरफ रौंस आयी है । इस प्रकार से उत्तर से दक्षिण तरफ ५०० मन्दिर की जगह आयी है ।

चौकी के खड़े चबूतरे :- नारंगी बाग के पूर्व वन रौंस से पश्चिम तरफ १९९६ मन्दिर के दूरी पर नारंगी बाग का पांचवा चबूतरा दो मन्दिर का चौड़ा और कमर भर का ऊंचा उत्तर से दक्षिण तरफ ४९८ मन्दिर का लम्बा आया है । इस चबूतरा के साथ लगकर दो मन्दिर की चौड़ी रौंस पूर्व से पश्चिम तरफ आयी है । इस रौंस के पश्चिम के किनार पर २५० वृक्ष नारंगी बन के आये है । इन वृक्षों के साथ लगकर चौकी का पहला चबूतरा कमर भर का ऊंचा पूर्व से पश्चिम तरफ एक मन्दिर का चौड़ा और ४९८ मन्दिर का लम्बा उत्तर से दक्षिण तरफ आया है । फिर पश्चिम तरफ बीच में ९८ मन्दिर ९३-१/२ हाथ की जगह छोड़कर दूसरा चबूतरा पहले चबूतरा जैसा आया है । इसी प्रकार से पश्चिम तरफ ९८ मन्दिर ९३-१/२ हाथ जगह बीच-बीच में छोड़कर १६ चबूतरे कमर भर ऊंचे पहले चबूतरे की भांति आये हैं । इन १६ चबूतरों के बीच में १५ सन्धे आयी हैं । तब १५ सन्धों की सब जगह १४८४ मन्दिर की हुयी और १६ मन्दिर की जगह १६ चबूतरे की हुयी । इस प्रकार पूर्व से पश्चिम तरफ की लम्बाई १५०० मन्दिर की हुयी ।

चबूतरों का ब्यान :- एक चबूतरे का ब्यान किया जाता है । इसी प्रकार से सब चबूतरे आये हैं । एक चबूतरा के मध्य भाग में आध मन्दिर की चौड़ी और एक भोम गहरी नहर आयी है । इसके दाएं-बाएं पाव-पाव (१/४ भाग) मन्दिर की जमीन से कमर भर ऊंची रौंस बनी है । इस रौंस से वन तथा नहर तरफ कमर भर की सीढ़ी जगह-जगह पर उतरी है और नहर के मध्य भाग में १/२ मन्दिर के लम्बे-चौड़े पुल आये हैं । रौसों में सीढ़ियों की जगह छोड़कर कठेड़ा शोभा ले रहा है ।

चौक का ब्यान :- चार रौसों के बीच में एक चौक कमर भर नीचा आया

है । यह चौक उत्तर से दक्षिण तरफ ९८-१/२ मन्दिर के चौड़े चौकों की १५ की पांच हारें आयी हैं और पूर्व से पश्चिम तरफ ९८ मन्दिर ९३-१/२ हाथ के लम्बे चौकों के ५ की १५ हारें आयी हैं । तब सब चौक ७५ हुए ।

चौक के चारों तरफ :- एक चौक के चारों तरफ का ब्यान किया जाता है । इसी प्रकार से सब चौक जानना । एक चौक के चारों तरफ नहरें आयी हैं और हर एक नहर के मध्य भाग में १/२ मन्दिर का चौड़ा पुल पाया है । इस पुल के दाएं-बाएं रौंस से कमर भर की एक सीढ़ी जल के डूबे हुये चबूतरे पर उतरी है । यहां पर कमर भर जल है । इन नहरों की गिनती दूसरे चौकों में भी आयेगी । इन चारों नहरों के साथ लगती हुयी चार रौसें चौकी की जमीन से लेकर कमर भर की ऊंची ९८-१/२,-९८-१/२ मन्दिर की लम्बी और २५-२५ हाथ की चौड़ी आयी है । एक चौक के मध्य भाग से ८ मन्दिर की जगह से कमर भर की सीढ़ी चौक में उतरी है और एक-एक सीढ़ी मध्य की सीढ़ी के दाएं-बाएं रौंस से उतरी है यह सीढ़ी भी आठ मन्दिर की जगह में आई है इस तरह से एक चौक में १२ सीढ़ियां उतरी हैं और चार सीढ़ियां चारों कोना से गोलाई लेकर उतरी हैं । तब एक चौक में १६ सीढ़ियां और १६ ही कठेड़ा चारों तरफ आये हैं ।

चौकी के चेहबच्चें :- एक चौक के चारों कोना पर चार नहरों में चार चेहबच्चें आये हैं । एक चेहबच्चा का ब्यान किया जाता है । इसी प्रकार सभी चेहबच्चें आये हैं । एक चेहबच्चा में पांच फुहारें आये हैं । चार फुहारा चारों कोना पर और एक मध्य में आया है । इनका पानी चकरी दार होकर अपने-अपने चौको में ही पड़ता है । इस चेहबच्चा के चारों तरफ २५-२५ हाथ की रौंस चारों तरफ, जल तरफ कठेड़ा, चारों कोना से चौकों में सीढ़ी उतरी है ।

७५ चौकों में ७५ चबूतरे :- चार रौंसो के बीच में एक चौक आया है ।

ऐसे ही ७५ चौक आये हैं। एक चौक का ब्यान किया जाता है। एक चौक के मध्य भाग में ३३ मन्दिर का लम्बा-चौड़ा और कमर भर का ऊंचा चबूतरा आया है। चबूतरा की एक दिशा में आठ मन्दिर की जगह में कमर भर की सीढ़ी चौक के जमीन पर उतरी है। इसके दाएं-बाएं चबूतरा की किनार पर १२-१/२,-१२-१/२ मन्दिर का कठेड़ा आया है। इसी प्रकार की बनक चारों तरफ आयी है। चबूतरा के मध्य भाग में एक मन्दिर का मोटा पीपल का वृक्ष चार भोम का ऊंचा आया है। इस वृक्ष के चारों तरफ १६-१६ मन्दिर की जगह बची है। इस चबूतरा पर सुन्दर गिलम बिछी है। हर एक दिशा में एक-एक सिंहासन और दाएं-बाएं तीन-तीन हजार कुर्सियां आयी हैं। इस प्रकार की वनक चारों तरफ आयी है।

चौकी के कुल वृक्ष :- उत्तर-दक्षिण तरफ १५ वृक्षों की पांच हारें और पूर्व से पश्चिम तरफ ५ की १५ हारें आने से कुल वृक्ष ७५ हुयें। एक वृक्ष वट का दूसरा पीपल का इसी प्रकार आये हैं। सब अलग-अलग रंगों के आये हैं। एक एक रंग में अनेक रंग आए हैं। इन सब वृक्षों की थड़ों में दरवाजें आये हैं। दरवाजे से होकर अन्दर ही अन्दर सीढ़ियां ऊपर को गयी हैं। हर एक वृक्ष के चारों तरफ ४९-१/२ मन्दिर की मेहरावें नहरों के मध्य भाग तक गई है। इसी प्रकार दो वृक्षों के बीच में एक मेहराव ९९ मन्दिर की लम्बी और एक मन्दिर की चौड़ी मोटी आयी है और एक मन्दिर की जगह दो वृक्षों में आयी है। हर मेहराव के मध्य भाग में एक चकरी लगी है। जिस चकरी में खट्ट छप्पर की भांति का एक-एक हिंड़ोला नहरों के मध्य भाग पर झूलने के वास्ते लटक रहे हैं। मेहराव के ऊपर सब सगह पत्ती और सुन्दर झालियों से भरी हुयी है। यही सुन्दर छत इन वृक्षों पर आयी है। इस प्रकार की बनक सब वृक्षों पर आयी है। श्री रंगभवन के साथ दक्षिण तरफ जो १५ वृक्ष आये हैं। इन वृक्षों की पहली भोम की ऊंचाई एक मन्दिर की ऊंचाई से ऊत्तर तरफ ४९ मन्दिर और २८ हाथ की

मेहराव जाकर आगे २२ सीढ़ियां हाथ-२ की ऊँची चढ़कर आगे उत्तर तरफ दो मन्दिर की छात जाकर श्री रंगभवन के दक्षिण तरफ के झरोखों से तथा इनके सूत में दीवाल से मिलान किया है। इस दो मन्दिर की छात के नीचे श्री रंगभवन की रौंस तथा चादों वाली रौंस आयी है। चादों वाली रौंस के साथ लगकर नहर के उत्तर तरफ वाली रौंस (२५ हाथ) पर खड़े होकर ऊपर देखें तो ऊपर एक भोम की ऊंचाई से उलटी २२ सीढ़ियां दिखाई दे रही हैं। इस दो मन्दिर की चौड़ी छत से ७८ हाथ की ऊंचाई पर दूसरी छात (वृक्षों की दूसरी भोम) आयी है। ऊपर दो भोमें भोम-भोम पर आयी हैं। हर भोम में हिंड़ोला, मेहरावों की ऊंचाई बराबर आयी है हर एक वृक्ष का थड़ ४४ हाथ के ऊपर ४४ हाथ की मेंहराव ऊपर १२ हाथ की जगह में कई प्रकार की चित्रकारी रंगभवन के समान आयी है।

चौकी के वृक्षों की चौकों का ब्यान : चार वृक्षों के बीच में एक चौक आया है। ऐसे उत्तर से दक्षिण तरफ १४ चौकों की चार हारें आयी हैं और पूर्व से पश्चिम तरफ चार चौकों की १४ हारें आने से कुल चौक ५६ हुए। इन चौकों के चारों तरफ ५०-५० मन्दिर की दूरी पर चौकी की नहरों की हद आयी है। हर एक चौक नहरों तथा रौसों सहित १००-१०० मन्दिर का लम्बा-चौड़ा आया है। उत्तर से दक्षिण तरफ चार चौकों के बीच में ४०० मन्दिर की जगह हुई और ५० मन्दिर उत्तर तरफ रंग भवन के तथा ५० मन्दिर दक्षिण तरफ कुन्जवन तरफ के चौकी की नहर की हद है। इस प्रकार चौकी की चौड़ाई ५०० मन्दिर की आयी है। लम्बाई तरफ १४ चौकों के बीच १४०० मन्दिर की जगह हुयी और ५० मन्दिर पूर्व नारंगी बगीचे की तरफ नहर की हद है और ५० मन्दिर पश्चिम बड़ोवन की तरफ चौकी की नहर की हद आयी है। इस प्रकार १५०० मन्दिर की लम्बाई पूर्व से पश्चिम आई है। चेहबच्चा के चारों तरफ चार नहरें जा रही हैं। नहरों के मध्य भाग में चार वृक्षों की मेहरावों में चार हिंडोला लगे हुये हैं। इन हिंडोलों

की ताली चेहबच्चों पर पड़ती है ।

चौकी की नहरें और पुल :- हर एक चौक के चारों तरफ चार नहरें आध-आध मन्दिर की चौड़ी और एक-एक भोम की गहरी तथा ९८-१/२-९८-१/२ मन्दिर की लम्बी आयी है । नहर के मध्य भाग में पुल आया है। पुल के दाएं-बाएं चार सीढ़ियां जल के डूबे चबूतरा पर उतरी है । नहरों के दाएं-बाएं रौंस आयी है । पुल तथा सीढ़ियों की जगह छोड़कर कठेड़ा आया है । सब नहरें उत्तर से दक्षिण १५ की ६ हारे आने से ९० और पूर्व से पश्चिम तरफ ५ की १६ हारे आने से ८० हुयी । तब आड़ी और खड़ी सब नहरे १७०-हुयी । सब नहरों पर एक-एक पुल आने से सब १७० पुल आये हैं ।

चौकों के चेहबच्चे :- हर चौक के चारों कोना पर चार चेहबच्चा आये हैं । जो १/२-१/२ मन्दिर के लम्बे-चौड़े भोम भर के गहरे आये हैं । हर चेहब्च्चा में पांच फुहारे चकरीदार आये हैं । चेहबच्चा के चारों तरफ रौंस आयी हैं । रौंस के चारों तरफ कठेड़ा आया है । यह सब चेहबच्चें दूसरे चौक में भी गिने जायेंगे । यह चेहबच्चें उत्तर से दक्षिण १६ की ६ हारें, पूर्व से पश्चिम ६ की १६ हारें आने से कुल ९६ चेहबच्चा आये हैं । चौकी के चारों कोना वाले चेहबच्चों से पानी गुप्ता-गुप्त वृक्षों के थड़ों से होकर ऊपर को पांचवी चांदनी पर जाता है । चांदनी पर चार चबूतरे कमर भर ऊंचे एक-एक मन्दिर के लम्बे-चौड़े बने हुये है । मध्य में आधा मन्दिर का लम्बा-चौड़ा एक चेहबच्चा आया है । इनको घेर कर चारों तरफ पाव-पाव मन्दिर की चौड़ी रौंस आई है । रौंस के भीतरी तरफ चार चांदों द्वारा होकर कमर भर की सीढ़ी जल के चबूतरे पर उतरी है । चारों चांदो की जगह छोड़कर घेरकर कठेड़ा आया है रौंस के चारों तरफ चांदों से कमर भर की सीढ़ी चांदनी पर आई है । चांदो की जगह छोड़ कर कठेड़ा आया है । चेहबच्चे पांच भोम के गहरे आये हैं । एक चेहबच्चा में पांच फुहारे आये हैं । इसी प्रकार से चार चेहबच्चें

आये हैं । इस प्रकार कुल १०० चेहबच्चा वट-पीपल चौकी में आये हैं ।

रौसों तथा नहरों का ब्यान :- हर एक चौक के चारों तरफ चार रौसें २५-२५ हाथ की चौड़ी, और ९८-१/२,-९८-१/२ मन्दिर की लम्बी आयी हैं । इन रौसों से चौकों तरफ तथा नहरों तरफ सीढ़ियां उतरी हैं । तब ७५ चौकों की ३०० नहरें आयी हैं । १५ निजधाम की तरफ, १५ कुन्जवन तरफ, ५ नारंगी वन की तरफ, ५ बड़ोवन की तरफ सब मिलाकर ३४० नहरें हुयी ।

हिंड़ोलों का ब्यान :- दो वृक्षों के बीच में जो एक मन्दिर की चौड़ी और ९९ मन्दिर की लम्बी जो एक मेहराव आयी है । इस मेहराव के मध्य भाग में चकरी लगी हुयी है । जिसके साथ हिंड़ोला खट छप्पर की भांति लगा हुआ है । झूलते समय हिंड़ोलों से चकरी खुलकर नीचे पुलों पर उतरते हैं तब एक-एक हिंड़ोला में श्री राजश्यामा जी तथा १२००० सखियां बैठकर झूलते हैं । जब हिड़ोला ताली देने के वास्ते ५० मन्दिर चेहबच्चा की तरफ जाता है तब जंजीरें खुलने लगती है । हिड़ोला के वापस होने पर जंजीरों का लिपटना शुरू हो जाता है । इस प्रकार से एक चेहबच्चा पर चार हिंडोला की ताली पड़ती है एक चेहबच्चा पर चार हिंडोलों की पीठ मिलती है । हर एक भोम में हर एक हिंडोला में श्री राजश्यामा जी समस्त सखियां अनन्त रूप होकर झूलते हैं । तो बड़ी भारी घोर सुन्दर सुहावनी गर्जना होती है । ये सब हिड़ोले मन पर चलते हैं । मन चाहे सुख देतें हैं । कहां तक वर्णन किया जाय । हर एक भोम के सब हिंड़ोले उत्तर से दक्षिण तरफ १४ की पांच हारे आने से ७० हिंड़ोले, पूर्व से पश्चिम ४ की १५ हारें आने से ६० हिडोले । कुल १३० हिंडोले आये हैं । चार भोम के सब ५२० हुये । ये सब हिंड़ोले खट छप्पर की भांति आये हैं । हे रुह अपनी हिंडोले में बैठकर अनेक प्रकार की सुख लिजिए ।

चौकी के चारों तरफों का ब्यान :- वट पीपल की चौकी के पूर्व की नहर के पूर्व तरफ रौंस के साथ लगकर नारंगी वन के २५० वृक्ष लगे हुये है ।

यहां तक नारंगी वन की हद आयी है । दक्षिण तरफ दो मन्दिर के दूरी पर कुन्ज-निकुन्ज की हद आयी है । चौकी और कुन्ज-निकुन्ज के बीच में दो मन्दिर की चौड़ी रौंस आयी है । एक मन्दिर चौकी की जगह और एक मन्दिर कुन्ज-निकुन्ज की जगह रौंस वास्ते आयी है । चौकी की पश्चिम तरफ की नहर के पश्चिम तरफ की रौंस के साथ लगकर बड़ोवन के वृक्ष आये हैं । उत्तर तरफ की नहर के उत्तर तरफ वाली रौंस के साथ लगकर उत्तर तरफ एक मन्दिर की चौड़ी रौंस आयी है । इसी रौंस पर ४८ चांदे आये हैं ।

उत्तर के १५ वृक्षों का रंग भवन से मिलान :- रंग भवन के दक्षिण तरफ जो १५ वृक्ष वट पीपल के चौकी के आये हैं । इन वृक्षों न उत्तर तरफ ४९ मन्दिर २८ हाथ की मेहरावें उत्तर तरफ ल्याय कर फिर २२ सीढ़ियां चढ़कर (बनाकर) फिर दो मन्दिर सीधा उत्तर तरफ चलकर झरोखों के साथ और रंगभवन की दीवार के साथ मिलान किया है । मानो दो मन्दिर का चौड़ा छत बना है । इस प्रकार इन वृक्षों ने १५०० मन्दिर का लम्बा और दो मन्दिर का चौड़ा छत्री मण्डल बांधा है । इसकी लम्बाई भीतरी दीवार से मानी गयी है और बाहरी दीवार के १४७० मन्दिर इन चौकी के सामने आये हैं । यह छात चांदा तथा रौंस पर २२ हाथ की ऊंचाई पर आयी है । परन्तु नीचे से १२२ हाथ की ऊंचाई हो गयी है और बाकी सब वृक्षों की ऊंचाई १०० हाथ की आयी है । श्री रंगभवन की पहली भोम के मन्दिरों से सीढ़ियां चढ़कर झरोखों की मेहरावों में होकर दक्षिण तरफ दो मन्दिर जाकर २२ सीढ़ियां उतर कर वन की दूसरी भोम में जाइये । जो दूसरी भोम की रंगभवन के साथ दो मन्दिर की चौड़ी १५०० मन्दिर लम्बी छत से २२ हाथ की सीढ़ियां उतरी हैं । बाकी भोमों में ऐसा नही है । वन की तीसरी छात की मेहरावों ने रंगभवन की दूसरी भोम के ३३ हाथ चौड़े छज्जों से मिलान किया है । इससे वन की तीसरी छात से होकर रंगभवन के दूसरी भोम के छज्जा पर होकर मन्दिर में जाइये और वन की चौथी छात से होकर रंगभवन के तीसरी

भोम में जाइये । वन की पांचवी से रंगभवन की चौथी भोम में जाइये ।

चौकी की पांचवी चांदनी :- वट पीपल की चौकी की चांदनी १५०० मन्दिर की लम्बी पूर्व से पश्चिम शोभा ले रही है और चौड़ाई ५०२ मन्दिर की उत्तर से दक्षिण आयी है । जगह तो ४९८ मन्दिर की आयी है । परन्तु दक्षिण तरफ के वृक्षों ने दो मन्दिर को चौड़ी रौंस को उलंघकर वड़ोवन के वृक्षों के थड़ों से मिलान किया है । इस वास्ते दो मन्दिर की जगह दक्षिण तरफ बढ़ गयी है । उत्तर तरफ जो १५ वृक्ष आये हैं । सो एक मन्दिर चबूतरा के रौंस और एक मन्दिर धाम रौंस को उलंघ कर छज्जा से मिलान किया है । इस वास्ते दो मन्दिर की जगह उत्तर तरफ बढ़ जाने से ५०२ मन्दिर की चांदनी हो गयी है । इस चांदनी के चारों कोना पर चार चेहबच्चें शोभा ले रहे हैं । जिसका ब्यान पहले हो चुका है ।

चांदनी के पूर्व तरफ :- चौकी की चांदनी के पूर्व तरफ ५०१ मन्दिर ६७ हाथ का लम्बा कठेड़ा शोभा ले रहा है और दो भोम नीचे नारंगी वन की चांदनी दिखाई दे रही है और यमुना जी के पाल पर चौकी से एक भोम ऊंचा बड़ोवन के वृक्ष दिखाई दे रहे हैं । इसी प्रकार से चार हारें और पूर्व तरफ दिखाई दे रही है । दिखाई तो बड़ोवन के तीन भोमें दे रही हैं । परन्तु इस चांदनी से एक ही भोम ऊंचा गया है ।

चांदनी के दक्षिण तरफ :- चौकी की चांदनी के दक्षिण तरफ बड़ोवन के पेड़ो ने आकर चौकी की भोमों से मिलान किया है । चौकी की चांदनी से एक भोम ऊंचे बड़ोवन के वृक्ष आये हैं । इसी प्रकार बड़ोवन की चार हारें और आयी हैं ।

चांदनी के पश्चिम तरफ :- चौकी के पश्चिम तरफ वड़ोवन के वृक्षों के थड़ आये हैं । चौकी के हर भोमों से मिलान किया है । इस चांदनी की ऊंचाई से वड़ोवन एक भोम और ऊंचा आया है ।

चांदनी के उत्तर तरफ :- चौकी की चांदनी के उत्तर तरफ सात भोमें निजधाम के मानों सात खण्ड दिखाई दे रहे है । हर एक भोम के १४७० मन्दिर उपरा ऊपर दिखाई दे रहे हैं और दाएं-बाएं के १५-१५ मन्दिर चेहबच्चा के ऊपर आये हैं । हर एक भोम में १४७० झरोखे आये हैं । ३०-३० झरोखे हर एक भोम के दाएं-बाएं चेहबच्चा पर आये हैं । ४९ गुर्ज चांदनी के सामने आये हैं । दो गुर्ज चेहबच्चा पर आये हैं । इन सब गुर्जों पर ध्वाजा, पताका गुमटों के ऊपर आये हैं । २९४० गुमटियां इस चांदनी के सामने आये हैं और तीस-तीस गुमटियां चेहबच्चा पर आयी हैं । इन सब पर कलश, ध्वजा पताका सब दिखाई दे रहे हैं । १४२२ कंगूरे इस चांदनी के सामने आए हैं । १५-१५ कंगूरे दाएं-बाएं चेहबच्चा पर आए हैं । दो कंगूरों के बीच में अनेक प्रकार की कांगरी शोभा ले रही है । हर एक भोम के ऊपरा-ऊपर छज्जा तथा कठेड़ा और नवमी भोम का छज्जा दिखाई दे रहा है । इस चांदनी के पश्चिम-उत्तर तथा दक्षिण तरफ जहां चाहो जा सकते हो । कुछ रूकावट नही आएगी । इस चांदनी की शोभा देख कर फिर तले की भोम में आए ।

नैरित्य कोना का चेहबच्चा :- श्री रंग भवन के नैरित्य कोना में १६ हांस का चेहबच्चा श्री धाम रौंस के साथ लगकर आया है एक हांस उत्तर तरफ की रंगभवन साथ मिला है बाकी १५ हांस चारों तरफ घूमे हैं जल को घेर करके एक मन्दिर की चौड़ी रौंस आयी है और बाहरी तरफ तीनों दिशा में तीन चांदे आये हैं इनकी गृद ४८० मन्दिर की आयी है लम्बाई-चौड़ाई १६० मन्दिर की है यहां की सब वनक अग्नि कोना के चेहबच्चा के समान आई है ।

एक वट वृक्ष चेहबच्चा पर :- इस नैरित्य कोना के चेहबच्चा के उत्तर-पूर्व के चांदा के उत्तर किनार से लेकर चेहबच्चा के उत्तर हांस अर्थात् कोना तक वटपीपल चौकी की हद आयी है । चेहबच्चा की कोट दीवार के साथ लगकर और श्री रंगभवन के दक्षिण तरफ एक मन्दिर की चौड़ी धाम चबूतरा की

रौंस के साथ लगकर चौकी की नहर में जो चेहबच्चा आया है। इस चेहबच्चा के दक्षिण तरफ ९८-१/२ मन्दिर की लम्बी एक नहर दक्षिण को गयी है। सो चेहबच्चा के कोट के साथ ८० मन्दिर तक आयी है। फिर इसके आगे चेहबच्चा के पूर्व तरफ का तीसरा हांस गोलाई लेकर दक्षिण तरफ घूम गया है। श्री रंगभवन के दक्षिण तरफ और चेहबच्चा के ईशान कोना तक एक वृक्ष वट का इस चेहबच्चा के सामने ५० मन्दिर के दूरी पर आया है। इस वृक्ष ने ५२ मन्दिर की लम्बी छत्री ल्याय कर चेहबच्चा के जल से डूबे हुए चबूतरा तक अपनी चारों भोम की चार छतरी मण्डल बांधा है। छतरी ने उत्तर तरफ के हांस के पूर्व तरफ आधा चांदा तक १०५ मन्दिर तक की जगह में छाया कर रखी है।

बड़ोवन के तीन वृक्ष चेहबच्चा पर :- अब पूर्व के चांदा के दक्षिण तरफ कोट की दीवार के साथ लगकर सीढ़ियों के बीच में एक वृक्ष बड़ोवन का आया है। दुसरा वृक्ष १२० मन्दिर की दूरी पर इस बड़े चेहबच्चे के दक्षिण के चांदा से पश्चिम तरफ कोट की दीवार के साथ लगकर सीढ़ियों के बीच में आया है। मानो पूर्व के चांदा से पश्चिम के चांदा तक तीन वृक्ष बड़ो-वन के पांच भोम की ऊंचाई लेकर आये हैं। इन वृक्षों ने दो मन्दिर की चौड़ी छतरी ल्यायकर चेहबच्चा के जल के डूबे हुए चबूतरे पर छाया मण्डल बांधी है।

नैरित्यकोना के चेहबच्चा के साथ नूरबाग :- इस चेहबच्चा के पश्चिम के चांदा से उत्तर की किनार से लेकर चेहबच्चा के वायब्य कोना तक नूरबाग की हद आयी है। चेहबच्चा की कोट दिवार के साथ लगकर नहर में एक चेहबच्चा नूर बाग का आया है। फिर इस चबूतरा के पश्चिम तरफ १४७ मन्दिर की लम्बी एक नहर आयी है। जो पूर्व से पश्चिम तरफ गयी है। परन्तु बड़े चेहबच्चा के साथ १०० मन्दिर तक ही गयी है। फिर इसके आगे चेहबच्चा के पश्चिम तरफ का हांस गोलाई लेकर दक्षिण तरफ घूम गया है।

श्री रंग भवन के पश्चिम तरफ बड़े चेहबच्चा के वायब्य कोना तक कोट की दीवार के साथ दक्षिण तरफ की नहर के दक्षिण तरफ एक रौंस आई है रौंस के दक्षिण तरफ बड़े चेहबच्चा की दीवार के साथ १०४ अक्शी फीलपाये आये हैं। फूलबाग का छज्जा जो एक मन्दिर का चौड़ा आया है। सो इस चेहबच्चा के उत्तर तरफ के हांस के पश्चिम तरफ की किनार अर्थात वायब्य कोना ले लेकर पश्चिम तरफ के हांस तक १०३ मन्दिर की जगह में नूरबाग का छज्जा नही आया है। बड़े चेहबच्चा की एक मन्दिर की चौड़ी जो एक रौंस आयी है। सो एक सौ तीन मन्दिर तक नूरबाग की छात के ऊपर जो दक्षिण तरफ नहर आयी है। इस नहर की दक्षिण की रौंस के साथ मिलकर एक रूप हो गयी है।

नैरित्य कोना के चेहबच्चा पर फूलबाग के वृक्ष :- रंग भवन के पश्चिम तरफ रौंस के साथ लगकर जो दक्षिण का खड़ा चबूतरा फूल बाग का पूर्व से पश्चिम तरफ गया है। इस चबूतरा के साथ दक्षिण तरफ ३५ वृक्षों ने दक्षिण तरफ ५ मन्दिर की छत्री बढ़ाकर बड़े चेहबच्चा के डूबे हुये जल चबूतरा पर छत्री मण्डल बांधा है। (दो भोम का) इस फूल बाग के वृक्षों की ऊंचाई दो भोम की आयी है।

चेहबच्चा पर छत्री मण्डल :- ईशान कोना से लेकर पूर्व तरफ के चांदा तक चौकी के एक वृक्ष की चारों भोमों की चार छतरी इस चेहबच्चा के जल चबूतरा पर आयी है। कोट के पूर्व के चांदा से लेकर पश्चिम के चांदा तक बड़ोबन की तीन वृक्ष जिनकी ऊंचाई पांच भोम की आयी है। उनकी पांच छत्री जल के चबूतरा पर आयी है। पश्चिम के चांदा से लेकर वायब्य कोना तक फूलबाग के ३५ वृक्षों की ऊंचाई दो भोम की आयी है। तब इन वृक्षों के छज्जा जल के डूबे हुये चबूतरा पर आये हैं। इन वृक्षों की छत्रियों में हर भोम में जल तरफ कठेड़े लगे हुये हैं। फूल बाग के हद में दो कठेड़े आये हैं। और वड़ोबन के पांच कठेड़ा और चौकी के चार कठेड़ा आये

हैं । चेहबच्चा के वृक्ष की पहली भोम की ऊंचाई १२२ हाथ की आयी है । दूसरी भोम की ऊंचाई ७८ हाथ की आयी है ।उपर -ऊपर १००-१०० हाथ की आयी है । फूल बाग के दोनों भोमों की ऊंचाई १००-१०० हाथ की आयी है । फूलबाग के पहली भोम का मिलान दूसरे वृक्षों के दूसरी भोम से हुआ है । दूसरे वृक्षों की पहली भोम जो १२२ हाथ पर आयी है । वहां फूल बाग की तरफ कुछ नही आया है । फिर ऊपर दूसरी भोम या तीसरी चांदनी सबका मिलान हुआ है ।

फूलबाग की लम्बाई-चौड़ाई :- श्री रंगभवन के नैरित्य कोना से लेकर वायब्य कोना तक ५० हांस आये हैं । १५०० मन्दिर के पश्चिम तरफ एक मन्दिर चौड़ी धाम रौंस आई, इस धाम रौंस से भोम भर नीचे जमीन पर १५०० मन्दिर की लम्बाई-चौड़ाई में १०० बगीचे नूरबाग के आये हैं । इस नूरबाग में ६६००० लोह थम्भ एक भोम में कमर भर कम अर्थात धाम रौंस से कमर भर नीचे तक आकर एक ही छत्त १५०० मन्दिर की लम्बी-चौड़ी आयी है । यह १५०० मन्दिर का हिसाब भीतरी मन्दिरों से किया गया है । बाहरी हार के केवल १४७० मन्दिर इस फूलबाग के सामने आये हैं ३० मन्दिर नैरित्य कोना वायब्य कोना के चहेबच्चा पर आये हैं । फूलबाग और नूरबाग में इन्ही बड़े चेहबच्चों से गुप्ता-गुप्त पानी जाता है ।

फूलबाग के आड़े ११ चबूतरे :- श्री रंग भवन की रौंस के साथ लगकर नूरबाग के चांदनी पर पूर्व से पश्चिम तरफ पौने तीन-२ मन्दिर का चौड़ा और नैरित्य कोना के चेहवच्चा की कोट दीवार से लेकर वायब्य कोना के चेहवच्चा की कोट दीवार तक १५०० मन्दिर का दक्षिण से उत्तर तरफ कमर भर का ऊंचा चबूतरा पहला आया है । इस चबूतरा के पश्चिम तरफ १४७ मन्दिर की जगह छोड़ कर दूसरा चबूतरा प्रथम चबूतरा की लम्बाई-चौड़ाई की भांति आया है । इसी प्रकार से १४७-१४७ मन्दिर की दूरी पर बीच में जगह छोड़कर ११ चबूतरे आये हैं । इन ११ चबूतरा के बीच में ९०

सन्धे आयी है । तब १० सन्धो की जगह १४७० मन्दिर की हुयी । ११ चबूतरों की जगह ३० मन्दिर की हुयी । इस प्रकार १५०० मन्दिर की चौड़ाई फूलबाग की हुयी ।

फूलबाग के ११ खड़े चबूतरे :- दक्षिण तरफ नैरित्य कोना के चेहबच्चा की कोट दीवार से लगकर २-३/४ मन्दिर का चौड़ा दक्षिण से उत्तर तरफ धाम रौंस के साथ जो पहला चबूतरा आड़ा आया है । इस चबूतरा के पूर्व तरफ की रौंस की किनार के साथ लगकर पहिला चबूतरा खड़ा १५०० मन्दिर का लम्बा पूर्व से पश्चिम तरफ कमर भर ऊंचा इस नूरबाग की चांदनी के दक्षिण किनार पर आया है । फिर उत्तर तरफ १४७ मन्दिर की जगह छोड़कर दूसरा चबूतरा आड़े चबूतरा के पश्चिम तरफ की रौंस के साथ लगकर पौने तीन मन्दिर का चौड़ा दक्षिण से उत्तर तरफ और पूर्व से पश्चिम तरफ १४९७-१/४ मन्दिर का लम्बा कमर भर का ऊंचा आया है । इसी प्रकार उत्तर तरफ १४७ मन्दिर की जगह छोड़कर नौ चबूतरे और आये हैं । जिनमें आठ चबूतरे और चबूतरों जैसे आये हैं । और नवा चबूतरा पहला चबूतरा जैसा आया है । इन ११ चबूतरों के बीच में १० सन्धें आयी है । जिसमें १४७० मन्दिर की जगह हुयी । और ३० मन्दिर की जगह ११ चबूतरों की हुयी । इस प्रकार १५०० मन्दिर की लम्बाई उत्तर से दक्षिण तरफ फूल बाग की हुयी ।

फूलबाग के एक चबूतरे का ब्यान :- फूलबाग के एक चबूतरे का ब्यान किया जाता है । इसी तरह सब चबूतरों का ब्यान जानना । चबूतरा के मध्य भाग में पौन मन्दिर की चौड़ी और कमर भर की गहरी एक नहर आयी है। इस नहर के दाएं-बाएं एक-२ मन्दिर की जगह आयी है । जिसके मध्य भाग में सुन्दर फुलवाड़ी रंगों की आयी है । इसके दाएं-बाएं रौंस फूलबाग की जमीन से कमर भर की ऊंची आयी है । इसी प्रकार से नहरों के दाएं-बाएं तरफ भी दो रौसें और मध्य में फुलवाड़ी जानना जी ।

फूलबाग का मन्दिर भर का चौड़ा छज्जा :- दक्षिण, पश्चिम तथा उत्तर चबूतरों के बाहरी किनार के बाहरी तरफ चबूतरों से कमर भर नीचे एक मन्दिर का चौड़ा छज्जा नूर बाग की छत से तीनों तरफ निकला है। बगीचें में जो रौंसों से सीढ़ी उतरी हैं। इन्ही सीढ़ियों की सामने नहर के बाहरी रौंस से कमर भर की सीढ़ियां छज्जों पर उतरी हैं। और फूल बाग के चारों तरफ कोना पर जो चार चेहवच्चा १६-१६ हांस के आये हैं। ए फूलबाग के छज्जे लम्बे जाकर बड़े चेहबच्चों की कोट दीवारों से मिले हैं यदि चेहबच्चों की रौंस पर जाना हो कमर भर की सीढ़ी छज्जा से चढ़ कर बड़े चेहबच्चा की रौंस पर जाइयें। इस छज्जा के बाहरी तरफ लगकर बड़ोवन के पांच वृक्ष चौड़ाई तरफ आये हैं। छज्जों से होकर बड़ोवन की दूसरी भोम में जाइये।

एक चौक के चारों तरफ का ब्यान :- ११ नहरों के बीच में १० चौक आये हैं। पूर्व से पश्चिम तथा दक्षिण से उत्तर १० की १० हारें आने से कुल १०० चौक आये हैं। एक चौक के चारों तरफ एक रौंस ३३ हाथ की चौड़ी ५८९ मन्दिर ३३ हाथ की लम्बी आयी है। इस रौंस से चौक की तरफ चारों दिशा में १६ सीढ़ियां कमर भर की उतरी हैं। इन सीढ़ियों के जगह को छोड़कर सभी जगह कठेड़ा आया है। चारों कोना की सीढ़ियां गोलाई में उतरी हैं। इस रौंस से बाहिर चारों तरफ ३३ हाथ की चौड़ी और ५९० मन्दिर ६६ हाथ की लम्बी एक फुलबाड़ी आयी है। इस फुलबाड़ी के बाहिर चारों तरफ ३३ हाथ की चौड़ी ५९२ मन्दिर की लम्बी नहर के साथ एक रौंस आयी है। इस रौंस से जल तरफ चारों दिशा में १६ सीढ़ियां कमर भर की उतरी हैं और चार सीढ़ियां चारों कोना में गोलाई में चारों चेहबच्चा में उतरी हैं। सीढ़ियों की जगह छोड़कर कठेड़ा चारों तरफ शोभा ले रहा है। इस रौंस के बाहिर तरफ चारों दिशा में चार नहरें आयी हैं। चारों कोना में चार चेहवच्चा आये हैं। यह चेहबच्चा और नहर दूसरे चौकों में गिनी

जायेगी ।

चौक के चारों कोना पर चार चेहबच्चा :- फूलबाग के एक चौक के चारों तरफ कोना पर नहरों के बीच में चार चेहबच्चा आये हैं । एक चेहबच्चा में पांच फुहारे आये हैं । चारों दिशाओं के फूहारों का पानी उछल कर कमानों द्वारा होकर चार चेहबच्चों में पड़ता है । और चार चेहबच्चा का पानी उछल कर एक चेहबच्चे में पड़ता है । मध्य का फुहारा चक्रावदार है । इसका पानी चकरी खाकर इसी में पड़ता है । इस चेहबच्चा के चारों कोना से सीढ़ियां गोलाईदार होकर पानी में उतरी हैं । सीढ़ियों की जगह छोड़ कर कठेड़ा आया है । चेहबच्चा के ऊपर एक दिशा में एक रौंस ३३ हाथ की चौड़ी और पौन मन्दिर की लम्बी आयी है । इस रौंस के साथ लगकर ३३ हाथ की चौड़ी और पौन मन्दिर की लम्बी फुलबाड़ी आयी है । इस फुलबाड़ी के साथ लगकर ३३ हाथ की चौड़ी और पौन मन्दिर की लम्बी एक रौंस और आयी है । इसी प्रकार की वनक चेहबच्चा के चारों दिशा में आयी है ।

एक बगीचा का ब्यान :- आड़ी-खड़ी नहरों के बीच में १०० चौक आये हैं । १०० चौकों में १०० बगीचे आये हैं । एक बगीचे की लम्बाई १४७ मन्दिर की आयी है । दाएं-बाएं आधा-२ चबूतरा लेने से १५० मन्दिर का लम्बा-चौड़ा एक बगीचा हुआ ।

चौक में आड़े चबूतरे :- आड़ी-खड़ी नहरों के चबूतरा की रौंस की किनारे से पश्चिम तरफ ३६ मन्दिर के दूरी पर एक चबूतरा आड़ा एक मन्दिर का चौड़ा उत्तर से दक्षिण तरफ कमर भर का ऊंचा आया है । इस चबूतरा के पश्चिम किनारे से पश्चिम तरफ ३६ मन्दिर के दूरी पर दूसरा चबूतरा पहले चबूतरा जैसे आया है । इसी प्रकार ३६ मन्दिर दूरी पर तीसरा चबूतरा आया है । तीसरे चबूतरे के पश्चिम तरफ ३६ मन्दिर दूरी पर बड़े चबूतरे की किनार आयी है । इस प्रकार एक बगीचा में आड़े तीन चबूतरें आये हैं ।

चौक में खड़े चबूतरे :- बड़ी नहर जो खड़ी आयी है । इस नहर के बाहरी रौंस के उत्तर की किनारे से ३६ मन्दिर उत्तर तरफ एक चबूतरा दक्षिण से उत्तर तरफ एक मन्दिर का चौड़ा १४७ मन्दिर का लम्बा पूर्व से पश्चिम कमर भर का ऊंचा आया है । इस चबूतरा के उत्तर तरफ ३६ मन्दिर की दूरी पर दूसरा चबूतरा पहले जैसा आया है । इसी प्रकार से तीसरा चबूतरा ३६ मन्दिर की दूरी पर आया है । तीसरे चबूतरे के ३६ मन्दिर दूरी पर बड़े चबूतरा की किनार आयी है । इसी प्रकार से एक चौक में आड़े-खड़े सब २४ चबूतरे आये हैं । हर एक चबूतरा ३६ मन्दिर का लम्बा और एक-२ मन्दिर का चौड़ा आया है । इस प्रकार एक चौक में १६ बगीचे हुए । और नव चेहबच्चें आये हैं ।

चौक के चबूतरों का ब्यान :- एक चबूतरा के मध्य भाग में आध-२ मन्दिर की चौड़ी और ३६ मन्दिर की लम्बी कमर भर की गहरी नहर आयी है । इस नहर के दाएं-बाएं पाव-२ मन्दिर की चौड़ी रौसें आयी हैं । इन रौसों से जल तरफ तथा बगीचा तरफ कमर भर की सीढ़ियों की जगह को छोड़कर कठेड़ा आया है । इसी प्रकार सभी चबूतरें आये हैं ।

एक बगीचा में नव चेहबच्चा :- एक चौक में तीन आड़ी और तीन खड़ी नहरों के आने से ९ चेहबच्चें आये हैं । जिसमें चार चेहबच्चा चारों दिशा के और चार चेहबच्चा चार कोना के और एक मध्य में आया है । यह आध-आध मन्दिर का लम्बा-चौड़ा आया है इस चेहबच्चा के चारों कोना से कमर भर की सीढ़ी जल में उतरी हैं सिढ़ियों की जगह छोड़कर चारों तरफ कठेड़ा आया है इस प्रकार सभी चेहबच्चा आये हैं । चारों दिशा वाले और एक मध्य का यह पांच फुहारे चक्रावदार आये हैं । चक्री खाकर जल इसी चेहबच्चा में पड़ता है चारों कोना वाले चेहबच्चा में पांच-पांच फुहारे आये हैं जिसमें दो दिशाओं के फुहारे का पानी ३७-१/२ - ३७-१/२ मन्दिर की मेहराब बनाकर दिशा की दो बड़ी नहरों में पड़ता है । दो दिशा के फुहारों

का पानी ७३-१/२ मन्दिर की मेहराब बनाकर दूसरे कोना के चेहबच्चा में पड़ता है पांचवां मध्य का फुहारा उछल कर मध्य में ही पड़ता है । इसी प्रकार से चार कोना वाले चेहबच्चा आये हैं ।

एक चौक में १६ चौक :- फूलबाग के एक बड़े चौक के चारों तरफ चार बड़ी नहरें आयी हैं । बीच में तीन आड़ी और तीन खड़ी नहरें आने से एक दिशा में चार चौक हुये । जो मध्य में चार चौक आये हैं । इन हर एक चौक के चारों तरफ चार नहरें आयी हैं । हर चौक के चारों कोना पर चार चेहबच्चा आये हैं । यह नहरें और चेहबच्चें हर एक बगीचा में गिनती करते हैं । इन चारों के चारों दिशाओं में आठ चौक और आये हैं । इन आठ चौकों की हर एक दिशा में तीन-२ नहरें आयी हैं । और चौथी तरफ बड़ी नहर आयी है । हर एक के दोनों कोनो में दो-२ चेहबच्चा आये हैं । नहर और चेहबच्चों की दूसरे चौको में भी गिनती होती है । और बाकी रहे चार कोना के सो कोना में भी चार चौक आयें हैं । हर एक चौक में दाएं-बाएं दो-दो छोटी नहरें आयी हैं । और दो-दो दाएं-बाएं बड़ी नहरें आयी हैं । ये सब नहरें दूसरे चौकों में भी गिनती है । हर एक चौक के कोना पर एक छोटा चेहबच्चा आया है । और एक-२ चेहबच्चा बड़ी नहर का आया है । यह चेहबच्चे दूसरे चौकों में भी गिनती करते हैं । नहर और चेहबच्चों में कमर भर पानी आया है ।

एक छोटे चौक का ब्यान :- फूलबाग के एक बड़े चौक में १६ छोटे चौक आये हैं । एक-२ चौक ३६-३६ मन्दिर का लम्बा-चौड़ा आया है । हर एक चौक के चारों तरफ एक-२ रौंस पाव-२ मन्दिर की चौड़ी आई है । और १४५ मन्दिर की लम्बी चारों तरफ कमर भर ऊंची आयी है । चारों दिशा में चार नहरें आयी हैं । चारों कोना पर चार चेहबच्चा आये हैं । नहर और चेहबच्चों की दूसरी चौकों में भी गिनती होती है । सो हर एक चौक में १३

वृक्षों की १३ हारें आने से १६९ सब वृक्ष हुये । ये वृक्ष सब तीन-२ मन्दिर की दूरी पर आये हैं । ये सब वृक्ष अलग-२ रंगों के और अलग-२ फूलों के आये हैं । इन सब वृक्षों के पेड़ों में, मेहरावों में, छत पर फूल-पत्ते आये हैं । इन वृक्षों के चारों तरफ डेढ़-२ मन्दिर की मेहरावें निकली हैं । दो वृक्षों की मेहरावें आपस में मिल जाने से एक मेहराव तीन मन्दिर की वन जाती है । ये सब मेहराव आपस में मिली हैं । छोटी-२ नहरों पर एक-२ मन्दिर की मेहराव आयी हैं । और बड़ी नहर पर पौने तीन-२ मन्दिर की मेहराव हैं इस प्रकार सौ बड़े बगीचों के वृक्षों की मेहरावें मिलने से एक छत फूलबाग की हो गयी है । सो इन वृक्षों की दो भोम तीसरी चांदनी आयी है ।

एक बगीचे की सीढ़ियां :- फूलबाग के एक बगीचे में १६ चौक आये हैं एक चौक के एक तरफ नहर रौंस के किनारे पर १३ वृक्ष आये हैं । सो वृक्ष के दाएं-बाएं १-१/२, १-१/२ मन्दिर लेने से तीन मन्दिर की जगह हुयी । इन मन्दिर की जगह से रौंस से कमर भर की सीढ़ियां बगीचें में उतरी है और इसी प्रकार दूसरी जल तरफ रौंस से, इन सीढ़ियों के सामने चार नहरों में चार सीढ़ियां उतरी है । चौक के चारों कोना से चार सीढ़ियां गोलाईदार होकर चौक में उतरी है । हर एक सीढ़ी के मध्य भाग में वृक्ष आया है । तो इस प्रकार हर एक चौक में ८-८ सीढ़ीयां आयी है । सीढ़ियों की जगह को छोड़ कर चारों तरफ कठेड़ा शोभा ले रहा है ।

एक बगीचा की रौसें :- फूलबाग की एक बगीचा में १६ चौक आये हैं । हर एक चौक में एक-एक रौंस आने से १६ रौंसें हुयी । जिसमें मध्य की चारों चौकों की चारों रौंसे १४५-१४५ मन्दिर की लम्बी आयी है । और चार दिशाओं के ८ चौकों की १०८-१/२, १०८-१/२– मन्दिर की लम्बी रौंसे आयी है । और चारों कोनों के चारों चौकों की ७२-१/४, ७२-१/४ मन्दिर की लम्बी रौंसें आयी हैं । इन रौसों पर जगह-२ पर बैठने के वास्ते कुर्सियां

तखत आदि आये हैं ।

फूलबाग के वृक्षों की गिनती :- फूलबाग के एक बगीचा में १६ बगीचा आये हैं । हर एक बगीचा में १६९ वृक्ष आने से १६ बगीचों के वृक्ष २७०४ हुये । दक्षिण तरफ बाहिर के किनार पर एक बगीचा में ५२ वृक्ष आये हैं । एक दिशा के सब बगीचा के सब वृक्ष ५२० हुये । दक्षिण, पश्चिम और उत्तर तरफ के सब १५६० हुये । चार वृक्ष चार कोना वाले, तब सम्पूर्ण फूलबाग के १०० बगीचों के कुल वृक्ष २७१९६४ हुये ।

वृक्षों की ऊंचाई :- फूलबाग के वृक्षों के थड़ों में दरवाजें आये हैं । थड़ें ४४ हाथ सीधा जाकर मेहरावें बनना शुरू हुआ । ४४ हाथ तक मेहरावें आयी । ऊपर १२ हाथ की जगह में अनेक प्रकार की चित्रकारी आयी है ऊपर सब वृक्षों की एक ही छत आयी है । दो-२ वृक्षों की बीच में तीन-२ मन्दिर के मेहरावें आयी हैं । छोटी नहर के ऊपर एक मन्दिर की मेहराबें है, बड़ी नहर के ऊपर २-३/४, २-३/४ मन्दिर की मेहराब आयी हैं । दक्षिण, उत्तर और पश्चिम तरफ किनारों के वृक्ष एक लाइन में ५२० आये हैं । इन वृक्षों में एक-२ मन्दिर का चौड़ा छज्जा निकल कर नूरबाग के एक मन्दिर के चौड़े छज्जे को उलंघ कर बड़ोवन के साथ मिलान किया है । फूलबाग के पूर्व तरफ आड़े चबूतरे के पश्चिम तरफ जो ५२० वृक्ष दसों बगीचों के आये हैं । इन वृक्षों ने तीन-२ मन्दिर और ४२ हाथ का चौड़ा छज्जा निकाल कर श्री रंग भवन की पहली भोम के छज्जे के साथ मिलान किया है । श्री रंगभवन की दूसरी भोम के दरवाज़े से निकल कर एक सीढ़ी नीचे उतर कर छज्जों पर होकर फूलबाग की दूसरी भोम में चले जाइये । वृक्षों के थड़ों पर थड़ ऊपर को ४४ हाथ ऊंचे और ४४ हाथ की जगह में मेहराव आयी । और १२ हाथ की जगह में अनेक प्रकार की चित्रकारी आयी है । ऊपर तीसरी छत १५०२ मन्दिर की लम्बी-चौड़ी आयी है । वृक्षों की थड़ों में होकर

ऊपर को सीढ़ी चढ़कर ऊपर तीसरी चांदनी पर जाकर चारों तरफ की शोभा देखिये ।

धाम रौंस के साथ आड़ा चबूतरा :- रंगभवन के पश्चिम तरफ मन्दिरों के साथ लगकर एक मन्दिर की चौड़ी धाम रौंस आयी है । इस धाम रौंस के साथ लगकर पश्चिम तरफ जो पहला चबूतरा आड़ा आया है । इस चबूतरे के मध्य भाग में पौन मन्दिर की चौड़ी और १४९४ १/२ मन्दिर की लम्बी दक्षिण से उत्तर तरफ एक नहर आयी है । इस नहर के दक्षिण-उत्तर तरफ पौने तीन-२ मन्दिर का चौड़ा एक-२ चबूतरा धाम रौंस के साथ लगकर १५००-१५०० मन्दिर के लम्बे पूर्व से पश्चिम चले गये हैं । उस बड़ी नहर पर एक-एक पुल पौन-पौन मन्दिर भर के चौड़े बगीचों के मध्य भाग के सामने आने-जाने के वास्ते आये हैं । दस पुलों के बीच नव सन्धे आयी हैं । आधी-आधी सन्ध उत्तर-दक्षिण तरफ आयी है । दो पुलों के बीच में १४९ मन्दिर की जगह आयी है । इस १४९ मन्दिर की जगह में ३०० चेहबच्चें आये हैं । और बीच में ३०१ सन्धि आयी है । हर एक चेहबच्चा नहर के मध्य भाग में पौने २५ हाथ का लम्बा-चौड़ा आया है । एक-एक चेहबच्चा में पांच-पांच फुहारे लगे हुये हैं । चार फुहारें चारों दिशा में एक मध्य में आया है । लम्बाई तरफ जो दो फुहारा आये हैं । सो उनका पानी उलंघकर पौने २५ हाथ कमानों द्वारा होकर दूसरे चेहबच्चों में पड़ता है । और दो फुहारे जो चौड़ाई तरफ आये हैं । इनका पानी भी उलंघकर पौने २५-२५ हाथ कमानों द्वारा इसी नहर में ही पड़ता है । मध्य में जो फुहारा आया है । उसका पानी उछल कर उसी चेहबच्चा में पड़ता है । दो चेहबच्चों के बीच में जगह २४-३/४ हाथ की आयी है । तब नव सन्धो के सब चेहबच्चा २७०० हुये । और दक्षिण तरफ जो आधी सन्ध ७१-३/४ मन्दिर की आयी है । उसमें १५० चेहबच्चे आये हैं । यह चेहबच्चें भी पौने चौबीस-२ हाथ के लम्बे-चौड़े आये

हैं। इनमें १५१ सन्धे आयी हैं। इन सन्धों में पानी भरा है। हर सन्ध २३-२३ हाथ की आयी है। चेहबच्चा की दिवारें पानी में डूबी हुयी हैं। इनमें से नहर का पानी आने-जाने के वास्ते सुराख बने हैं। इसी प्रकार उत्तर तरफ भी आधी सन्ध में १५० चेहबच्चें और १५१ सन्धे आयी हैं। इन चेहबच्चों के दक्षिण पौने तीन मन्दिर के चौड़े चबूतरा में एक चेहबच्चा उत्तर तरफ जानना। उस बड़ी नहर में सब चेहबच्चा ३००० हुये। इन चेहबच्चों के पूर्व तरफ श्री रंगभवन के १४७० मन्दिर २९४० दरवाजें और १४७० झरोखें आये हैं। इसी वास्ते कहीं पर चेहबच्चें दरवाजे के सामने कहीं पर झरोखे के सामने आये हैं। और कही अक्शी थम्भों के सामने और कहीं अक्शी मेहरावों के सामने आये हैं। श्री राजश्यामा जी तथा समस्त सुन्दर साथ उन झरोखों में जाकर बैठते हैं। यह झरोखे नहर के रौंस से, नहर के चेहबच्चों से कमर भर ही ऊंचे आये हैं। सामने फुहारे उछल रहे हैं। दो मन्दिर दूरी पर कोई-२ बूंद उड़ कर मोतियों के समान श्री राजश्यामा जी तथा सखियों के ऊपर पड़ती है। सो अपरम्पार शोभा हो रही है।

नहरों का ब्यान :- हर एक बगीचा के पूर्व से पश्चिम तरफ चार की तीन हारें आने से १२ नहरें हुयी। दक्षिण से उत्तर तरफ चार की तीन हारें आने से १२ नहरे हुयी। इस प्रकार से आड़ी-खड़ी २४ नहरें हुयी। ये नहरें छोटी है। हर एक नहर १/२–१/२ मन्दिर की चौड़ी कमर भर की गहरी आई है। और ३६ मन्दिर की लम्बी आयी है। १०० बगीचों की २४०० नहरें हुयी। पूर्व से पश्चिम तरफ आड़ी नहरों के बीच में धाम रौंस के साथ वाली रौंस को छोड़ कर दस की दस हारें आने से १०० नहरें हुयी। दक्षिण से उत्तर तरफ १० की ११ हारें आने से ११० नहरें हुयी। यह आड़ी और खड़ी नहरें २१० हुयी। हर एक नहर पौन मन्दिर की चौड़ी कमर भर की

गहरी और १४७ मन्दिर की लम्बी आयी है। एक नहर धाम रौंस के साथ लगकर पौन मन्दिर की चौड़ी कमर भर की गहरी १४९४ १/२ मन्दिर की लम्बी आयी है। इससे सम्पूर्ण नहरें २६११ हुयी।

पुलों का ब्यान :- आड़े ११ चबूतरे आने से एक चबूतरे में १० नहरें आयी है। इन दसों नहरों के मध्य में पौन-पौन मन्दिर के लम्बे-चौड़े पूल आए हैं तब सम्पूर्ण पूल १० की ११ हारें आने से तथा ११ की १० हारें आने से २२० पूल हुए।

चेहबच्चों का ब्यान :- एक बड़े बगीचा में ९ चेहबच्चा आए हैं। तो १०० बगीचा के ९०० चेहबच्चा हुये। पूर्व तरफ ९ की ९ हारे आने से ८१ हुये। उत्तर, पश्चिम तथा दक्षिण तरफ ९-९ चेहबच्चा आने से २७ हुये और ४ चेहबच्चा कोना वाले सो ११२ चेहबच्चा हुये। ये बड़ी नहरों के है। ये पौन-पौन मन्दिर के लम्बे-चौड़े आये हैं। धाम रौंस के साथ लगकर एक आड़ी नहर में ३००० छोटे चेहबच्चें आये हैं। तब सम्पूर्ण चेहबच्चें ४०१२ हुये। फूल बाग के चारों कोना पर चार चेहबच्चा बड़े १६-१६ हांस के आये हैं। परन्तु यह चेहबच्चा फूल बाग की हद से अलग आये हैं। इस वास्ते गिनती में नही हैं।

रौसों का ब्यान :- फूलबाग के एक बड़े बगीचा में १६ बगीचा आये हैं। हर एक बगीचा में एक रौंस आयी है। तब १६ बगीचों में १६ रौंस हुयी। इन रौसों की लम्बाई-चौड़ाई का हिसाब पहले लिखा जा चुका है। एक बगीचा में नव चेहबच्चा आये हैं। हर एक चेहबच्चा के चारों दिशाओं में चार रौसें आयी हैं हर एक रौंस पाव-२ मन्दिर की चौड़ी आयी है और आध-आध मन्दिर की लम्बी है। तव नव चेहबच्चों की ३६ रौसें हुयी। एक बड़े बगीचा के

चारों तरफ एक रौंस आयी है। यह रौंस ३३ हाथ की चौड़ी ५८९ मन्दिर ३३ हाथ की लम्बी चारों तरफ घेरकर आयी है। तब एक बड़े बगीचा में ५३ रौसें हुयी। तो सब बड़े बगीचों में ५३०० रौसें हुयी। बड़े नहर के चारों तरफ एक रौंस ३३ हाथ की चौड़ी २९६ मन्दिर ८२ हाथ की लम्बी आयी है। तब २१० नहरों के २१० रौसें हुयी। बड़े चेहबच्चा के चारों तरफ एक रौंस आयी है। इस प्रकार ११२ चेहबच्चा की ११२ रौंस हुयी। हर एक रौंस ३३ हाथ की चौड़ी और ४ मन्दिर ३३ हाथ की लम्बी आयी है। धाम रौंस के साथ वाले आड़े चबूतरा पर जो नहर आयी है। इस नहर के पश्चिम तरफ साथ लगकर जो रौंस आयी है। वह रौंस ३३ हाथ की चौड़ी और १४९५ मन्दिर और ८२ हाथ की लम्बी आयी है। इस नहर के पूर्व तरफ जो रौंस आयी है। सो ३३ हाथ की चौड़ी १४९५ मन्दिर ८४ हाथ की लम्बी आयी है। एक रौंस बाहरी किनार पर ३३ हाथ की चौड़ी और ६००० मन्दिर की लम्बी आयी है। जो चारों तरफ घूमी है। इस प्रकार सम्पूर्ण रौसें मिलाकर ५६२५ हुयी।

फुलवाड़िया :- एक बड़े बगीचा के चारों तरफ एक फुलवाड़ी है। एक दिशा में ५ जगहों पर रास्तें नहरों पर आने-जाने के वास्ते और एक रास्ता नहर पार करने के वास्ते आया है। एक रास्ता पुल के सामने और चार रास्ता सीढ़ियों के सामने आये हैं। तब चारों तरफ के २० रास्ते हुये। परन्तु इसको एक लम्बी फुलवाड़ी कहेंगे क्योकि जगह फुलवाड़ी की है। तब १०० बगीचों की १०० फुलवाड़ी हुयी। एक सौ बारह बड़े चेहबच्चा आये हैं। हर एक चेहबच्चा के चारों तरफ चार फूलवाड़ी आयी हैं। हर एक बगीचा पौन मन्दिर की लम्बी और ३३ हाथ की चौड़ी आयी है। तब ४४८ फुलवाड़ी चेहबच्चों की हुयी। दक्षिण, पश्चिम, उत्तर बाहिर नहरों के बाहरी तरफ ३०-फुलवाड़ियां आयी हैं। हर एक फुलवाड़ी १४८ मन्दिर ३३ हाथ की आयी

है। पूर्व तरफ के आड़े चबूतरा के पश्चिम ९ नहरों के सामने नव फुलवाडी आयी हैं। हर एक फुलवाड़ी ३३ हाथ की चौड़ी पौन मन्दिर की लम्बी है। धाम रौंस के पश्चिम तरफ एक फुलवाड़ी ३३ हाथ की चौड़ी और १४९-१/२ मन्दिर की लम्बी आयी है। परन्तु १० पुलों के सामने १० रास्ते आने जाने के वास्ते हैं। तब सम्पूर्ण फुलवाड़ी ५८८ हुयी।

सीढ़ियों का ब्यान :- एक बगीचा में १६ चौक आने से तथा एक चौक में आठ सीढ़ी आने से एक बड़े चौक में १२८ सीढ़ियां आयी हैं। सौ बड़े बगीचों में १२८०० सीढ़ियां आयी हैं। दक्षिण तरफ बाहरी चबूतरा के किनार की रौंस के किनार से छज्जा तरफ ४० सीढ़ियां उतरी हैं। इसी तरह पश्चिम, उत्तर तरफ रौंस से छज्जा पर ४०-४० सीढ़ियां उतरी हैं। एक बड़े बगीचे में २४ नहरें आयी हैं। हर एक नहर में रौंस से २-२ सीढ़ियां उतरी हैं। तब २४ नहरों के ४८ सीढ़ियां हुयी। तो १०० बगीचों के नहरों के ४८०० सीढ़ियां हुयी। एक बगीचा में ९ चेहबच्चा आये हैं। हर एक चेहबच्चा में चार-चार सीढ़ियां उतरी हैं। तब एक बगीचा के ९ चेहबच्चा की ३६ सीढ़ियां हुयी। १०० बगीचों की चेहबच्चों की ३६०० सीढ़ियां हुई। बड़ी नहर जो २१० आयी हैं। हर एक नहर के लम्बाई तरफ चार-चार सीढ़ियां दोनों तरफ उतरी हैं। तो २१० नहरों की १६८० सीढ़ियां हुयी। ११२ बड़े चेहबच्चा पर ४ सीढ़ियां प्रति चेहबच्चा के हिसाब से ४४८ सीढ़ियां आयी हैं। धाम रौंस के साथ लगती हुयी एक नहर १४९४ १/२ मन्दिर की लम्बी आयी है। जो उत्तर-दक्षिण तरफ आयी है। इस नहर के पूर्व-पश्चिम तरफ ४०-४० सीढ़ियां उतरी हैं। तब फूल बाग की सम्पूर्ण सीढ़ियां २३५२८ हुयी।

फूलबाग के चारों कोना पर चार चेहबच्चा :- फूलबाग के चारों कोना पर चार चेहबच्चा १६-१६ हांस के आये हैं। जिसमें दो चेहबच्चा श्री रंगभवन के नैरित्य तथा वायव्य कोना के हैं सो वही चेहबच्चा फूलबाग के अग्नि कोना

और ईशान कोना के चेहबच्चे कहे जातें हैं। नूरबाग और अन्नबाग की सन्ध के बाहिर बड़ोवन की जगह में दो चेहबच्चा १६-१६ हांस के नैरित्य कोना और वायब्य कोना में आये हैं।

फूलबाग के नैरित्य कोना का चेहबच्चा :- फूलबाग के नैरित्य कोना के चेहबच्चा का ब्यान किया जाता है। नूरबाग के दक्षिण तरफ का जो ग्यारमां चबूतरा खड़ा पूर्व से पश्चिम तरफ गया है। इस चबूतरा के बाहिर रौंस के किनार पर जो फिलपाए आये हैं। वह नूरबाग के नैरित्य कोना के पूर्व ३० मन्दिर जगह में ३१ फिलपाये अक्शी आये हैं। इन ३१ फिलपायों के साथ लगकर इस चेहबच्चा के कोट के उत्तर का एक हांस आया है। बाकी १५ हांस चारों तरफ घेर के आये हैं। हर एक हांस ३०-३० मन्दिर का आया है। तब १६ हांसो की ४८० मन्दिर की गृद हुयी। लम्बाई-चौड़ायी १६० मन्दिर की आयी है। यह कोट एक भोम ऊंचा उठकर फूलबाग के दक्षिण के चबूतरा के बाहरी रौंस के साथ लगकर आया है। कोट के भीतरी तरफ पानी का चेहबच्चा १५८ मन्दिर का लम्बा-चौड़ा आया है। इस पानी के चारों तरफ एक मन्दिर की रौंस आयी है। यह रौंस कोट दीवार पर बनी है। नूरबाग का छज्जा एक मन्दिर का दक्षिण और पश्चिम तरफ का इस कोट दीवार में आकर मिला है। रौंस पर से कमर भर की सीढ़ी नूरबाग के पश्चिम तथा दक्षिण तरफ के छज्जा पर उतरी है। चेहबच्चा के दक्षिण तथा पूर्व और पश्चिम तरफ भोम भर की सीढ़िया चांदों के चौक में उतरी है। सीढ़ियों के बाहिर वन तरफ कठेड़ा लगा हुआ है। रौंस के बाहिर तरफ रौंस की जगह छोड़कर तथा उत्तर तरफ की हांस की जगह छोड़कर चारों तरफ कठेडा आया है। रौंस के भीतरी तरफ चार चांदो से कमर भर की सीढ़ी जल से डूबे हुये चबूतरा पर उतरी है। इसके आगे दो भोम का पानी गहरा है। चारों चांदो की जगह छोड़कर कठेड़ा आया है चेहबच्चा की रौंस तथा फूलबाग की रौंस दोनों बराबर आयी हैं।

चेहबच्चा पर बड़ोवन के वृक्ष :- नैरित्य कोना के चेहबच्चा के उत्तर के हांस के पूर्व तरफ एक मन्दिर दूरी पर नूरबाग के छज्जा के साथ लगकर एक वृक्ष बड़ोवन का आया है। फिर १०४ मन्दिर की जगह छोड़कर चेहबच्चा के पूर्व चांदा से उत्तर तरफ सीढ़ियों की बीच कोट की दीवार से लगकर दूसरा वृक्ष वड़ोवन का आया है। फिर १२० मन्दिर की जगह छोड़कर दक्षिण के चांदा के पूर्व तरफ कोट दीवार के साथ लगकर सीढ़ियों के बीच में तीसरा वृक्ष बड़ोवन का आया है। १२० मन्दिर की जगह छोड़कर चेहबच्चा के पश्चिम तरफ के चांदा के दक्षिण तरफ कोट दीवार साथ लगकर सीढ़ियों के बीच में चौथा वृक्ष वड़ोवन का आया है। फिर १०५ मन्दिर की जगह छोड़कर चेहबच्चा के उत्तर हांस के पश्चिम तरफ एक मन्दिर की दूरी पर छज्जा के साथ लगकर पांचवा वृक्ष आया है। इन वृक्षों ने दो मन्दिर का लम्बा छज्जा ल्याय कर इस चेहबच्चा के जल से डूबे हुये चबूतरे पर छत्री मण्डल बांधा है। सो पांच भोम की चार छत्री उपरा-ऊपर गयी है। पहली भोम की ऊंचाई दो भोम की आयी है। इस प्रकार से वायब्य कोना का चेहबच्चा तथा वृक्षों का ब्यान जानना जी।

बड़ोवन के वृक्ष फूलबाग के तीन तरफ :- फूलबाग के उत्तर तरफ के छज्जा के साथ लगकर बडोवन के वृक्ष आये हैं। चौड़ाई में दक्षिण तरफ से उत्तर तरफ पांच वृक्षों की ५ हारे आयी हैं। यह वृक्ष फूलबाग के वायब्य कोना के चेहबच्चा की परिक्रमा करके फूलबाग तथा नूरबाग के पश्चिम तरफ साथ लगकर गये हैं। उत्तर से दक्षिण तरफ लम्बाई में अन्नवन के बगीचों में होकर वृक्ष गये हैं और चौड़ाई तरफ अन्नवन के बीच में पांच वृक्षों की पांच हारें पूर्व से पश्चिम तरफ गयी हैं। फूलबाग के नैरित्य कोना के चेहबच्चा की परिक्रमा करके फूलबाग के दक्षिण तरफ छज्जा के साथ लगकर बड़ोवन के वृक्ष आये हैं और चौड़ाई उत्तर-दक्षिण तरफ ५ वृक्षों की पांच हारें आयी हैं। सो तीनों तरफो के वृक्षों की ऊंचाई पांच भोम छट्ठी चांदनी आयी है।

सो हर भोम की मेहरावों में तरह-तरह के हिंड़ोले आये हैं । जिसका पूरा ब्यान आगे चलकर बताया जायेगा ।

फूलबाग की तीसरी चांदनी :- फूलबाग की तीसरी चांदनी १५०२ मन्दिर की लम्बी-चौड़ी आयी है । जगह तो १५०० मन्दिर की है । परन्तु एक मन्दिर का चौड़ा छज्जा चारों तरफ निकलने से २ मन्दिर की जगह बढ़ गयी ।

चांदनी के उत्तर-पश्चिम तथा दक्षिण तरफ :- इस फूलबाग की चांदनी के उत्तर, पश्चिम तथा दक्षिण तरफ बड़ोवन के वृक्ष आये हैं । जिनकी पांच हारें चौड़ाई तरफ आयी हैं । इन वृक्षों की ऊंचाई पांच भोम की आयी है । एक भोम नूर बाग के छज्जा तक, दो भोम फूलबाग के साथ आये हैं । इसके ऊपर दो खण्ड तीन तरफ दिखाई दे रहा है और तीनों तरफ दो कठेड़े चौथी भोम तथा पांचवी भोम के आये हैं इस फूलबाग की चांदनी से तीनों तरफ जहां चाहो जा सकते हो । उपरा-ऊपर बड़ोवन के वृक्षों से होकर जहां पर पांच पेड़ खत्म हो जाते हैं फिर पेड़ में से उतर कर जहां चाहो वहां जा सकते हो ।

चांदनी के पूर्व तरफ :- चांदनी के पूर्व तरफ श्री रंगभवन के छज्जा से होकर एक सीढ़ी चढ़कर तीसरी भोम के मन्दिरो में जाइये । फूलबाग के चांदनी के पूर्व तरफ देखिए तो आठ भोम निजधाम की दिखाई दे रही है । हर एक भोम के १४७० मन्दिर आये हैं । सो उपरा-ऊपर आठ भोम तक चले गयें है । दाएं-बाएं के १५-१५ मन्दिर चेहबच्चा पर आये हैं । तीसरी चांदनी से कमर भर ऊंचे १४७० झरोखे रंग भवन के तीसरी भोम के दिखाई दे रहे हैं । ये उपरा-ऊपर ६ भोम तक आये हैं । हर एक भोम के दरवाजे २९४० दिखाई दे रहे हैं और तीस-तीस दरवाजें दाएं-बाएं बड़े चेहबच्चा पर शोभा ले रहे हैं और दो गुर्ज दांए-बांए चेहबच्चा पर आये हैं । इन सब गुर्जों के ध्वजा, पताका सब दिखाई दे रहे हैं । यहां से आठ भोम की ऊंचाई पर

२९४० गुमटियां दिखाई दे रही हैं । रंगभवन के चांदनी पर १४२२ कंगूरे दिखाई दे रहे हैं । १५-१५ कंगूरे दाएं-बाएं चेहबच्चों पर आये हैं । दो कंगूरो के बीच सुन्दर कांगरी शोभा ले रही है । हर भोम के उपरा-ऊपर के छज्जे कठेड़े तथा नवमी भोम के छज्जे भी दिखाई दे रहे हैं । इस चांदनी की शोभा देखकर फिर रंगभवन के वायब्य कोना पर आये ।

श्री रंगभवन के वायब्य कोना का चेहबच्चा :- श्री रंगभवन के वायब्य कोना में १६ हांस का चेहबच्चा धाम रौंस के साथ लगकर आया है । जिसकी एक हांस पूर्व तरफ श्री रंगभवन की रौंस के साथ मिलान किया है । बाकी १५ हांस बाहिर तरफ घूमें हैं । जल को घेर करके एक मन्दिर की रौंस कोट दीवार की आयी है । इस रौंस के भीतरी तरफ तीनों दिशा में तीन चांदें हैं । इस चेहबच्चा की बाहरी गृद ४८० मन्दिर की आयी है । लम्बाई-चौड़ाई १६० मन्दिर की है । जिसकी बनक अग्नि कोना के चेहबच्चा की भांति है ।

चेहबच्चा के साथ नूरबाग :- वायब्य कोना के चेहबच्चा का एक हांस पूर्व तरफ श्री रंगभवन के रौंस के साथ मिला है । इस चेहबच्चा के पूर्व के चांदा से दक्षिण किनार से लेकर बड़े चेहबच्चा के अग्नि कोना तक नूरबाग की हद आयी है । चेहबच्चा की कोट दीवार के साथ लगकर श्री रंगभवन के पश्चिम तरफ चबूतरा की दीवार के साथ लगकर आड़ी नहर में एक चेहबच्चा नूरबाग का आया है। फिर इस चेहबाच्चा के पश्चिम तरफ १४७ मन्दिर की लम्बी एक नहर पूर्व से पश्चिम तरफ गयी है । परन्तु ये सब ब्यान श्री रंगभवन के नैरित्य कोना के चेहबच्चा के पश्चिम तरफ चांदा के उत्तर किनार से लेकर बड़े चेहबच्चा के उत्तर हांस के पश्चिम किनार तक जो ब्यान लिखा गया है । उसी प्रकार से वायब्य कोना के चेहबच्चा के पूर्व चांदा से दक्षिण की किनार से लेकर बड़े चेहबच्चा के अग्नि कोना तक ब्यान जानना जी ।

चेहबच्चा पर फूलबाग के वृक्ष :- जिस प्रकार नैरित्य कोना के चेहबच्चा पर

फूलबाग के वृक्ष आये हैं । उसी प्रकार के वायब्य कोना के चेहबच्चा पर आये हैं । इसका ब्यान नैरित्य कोना के चेहबच्चा पर देखिए ।

चेहबच्चा पर बड़ोवन के वृक्ष :- दक्षिण तरफ के चांदा के पश्चिम तरफ सीढ़ियों के बीच में वृक्ष बड़ोबन का कोट के साथ आया है और दूसरा वृक्ष १२० मन्दिर की दूरी पर पश्चिम के चांदा से उत्तर तरफ सीढ़ियों के बीच में आया है । तीसरा वृक्ष १२० मन्दिर के दूरी पर उत्तर तरफ चांदा के पूर्व तरफ सीढ़ियों के बीच में आया है । जिनकी ऊंचाई पांच भोम की आयी है । जिसका ब्यान नैरित्य कोना के चेहबच्चा के अनुसार आया है ।

वायब्य कोना के उत्तर के चांदा से ईशान कोना तक :- इस वायब्य कोना के चेहबच्चा की एक हांस पूर्व दिशा वाली श्री रंगभवन के साथ मिल गयी है । इस चबूतरा की ईशान कोना से लेकर उत्तर के चांदा तक १०५ मन्दिर की जगह आयी है । इस ईशान कोना के साथ उत्तर तरफ जो चेहबच्चें का हांस आया है । इस हांस से लगकर लाल चबूतरा का एक हांस (३० मन्दिर) मिल रहा है इस वास्ते चेहबच्चा के ईशान कोना पर चांदा तथा सीढ़ियां जो आनी थी वह भोम भर की सीढ़ियां नही आयी है । सो लाल चबूतरा के वायब्य कोना के साथ लगकर तथा चेहबच्चा के पूर्व वाले हांस के उत्तर के हांस के कोना में चबूतरा की पिठौर में पहला वृक्ष वड़ोवन का शोभा दे रहा है । इसी प्रकार ३०-३० मन्दिर पर दो वृक्ष बड़ोवन के और आये हैं । तीसरे वृक्ष से चबूतरा के उत्तर दिशा का चांदा चौदह मन्दिर की दूरी पर शोभा ले रहा है । इन वृक्षों की ऊंचाई एक भोम दूसरी चांदनी आयी है । परन्तु इन वृक्षों की एक भोम में श्री रंग भवन की दस भोमें आयी हैं । इन वृक्षों ने दो मन्दिर का छज्जा ल्याय कर के बड़े चेहबच्चा के जल से डूबे हुये चबूतरा पर एक भोम का छत्री मण्डल बांधा है । इस तीसरे वृक्ष

के आगे उत्तर तरफ ३० मन्दिर की दूरी पर चौथा वृक्ष बड़ोवन का आया है । यह बड़े चेहबच्चा की हद से १५ मन्दिर आगे उत्तर तरफ निकल गया है । चेहबच्चा उत्तर के चांदा से पश्चिम के चांदा तरफ घूम गया है ।

चेहबच्चा पर वृक्षों की छत्री मण्डल :- चेहबच्चा के अग्नि कोना से लेकर दक्षिण के चांदा तक फूलबाग के ३५ वृक्षों ने दो भोम की छत्री मण्डल डूबे हुए जल चबूतरा पर बांधा है और दक्षिण के चांदा से उत्तर के चांदा तक बड़ोवन के तीन वृक्ष जिनकी ऊचाई पांच भोम की आयी है इनके चार छत्री डूबे हुए जल चबूतरें पर आयी हैं । सो बड़ोवन के वृक्षों की ऊंचाई जमीन से ५ भोम है । चेहबच्चा की रौंस से चार भोम की है । इन वृक्षों के पहली भोम की ऊंचाई दो भोम की आयी है और ऊपर भोम-भोम की आयी है । इस वास्ते चार ही छत्री आयी है । उत्तर के चांदा से ईशान कोना तक बड़ोवन के तीन वृक्ष जिनकी ऊंचाई १० भोम की जितनी एक ही भोम में आयी है । इन वृक्षों ने एक ही छज्जा जल के डूबे हुये चबूतरा पर डाला है । उन वृक्षों की छत्रियों के हर भोम में कठेड़े लगे हुये है । फूलबाग की हद के दो कठेड़े और बड़ोवन के चार, लाल चबूतरा की तरफ के बड़ोवन की चांदनी का एक ही कठेड़ा आया है । चेहबच्चा के ऊपर छत नही आयी है ।

नूरबाग :- श्री रंगभवन के पश्चिम तरफ चबूतरा की दीवार के साथ लगकर पूर्व से पश्चिम तरफ पौने तीन मन्दिर का चौड़ा नैरित्य कोना के चेहबच्चा की कोट की दीवार से लेकर वायब्य कोना के चेहबच्चा के कोट दीवार तक १५०० मन्दिर का लम्बा दक्षिण से उत्तर तरफ पहला चबूतरा कमर भर ऊंचा आया है । इस चबूतरे के पश्चिम तरफ १४७ मन्दिर की जगह छोड़कर दूसरा चबूतरा दक्षिण-उत्तर तरफ आया है । इस प्रकार से ११ चबूतरें आड़े आये हैं । जिनमें १० संधे आयी हैं । इस प्रकार से १५०० मन्दिर की चौड़ाई नूरबाग की आयी है ।

११ खड़े चबूतरे :- नैरित्य कोना की चेहबच्चा के कोट दीवार के साथ लगकर पौने तीन मन्दिर का चौड़ा दक्षिण से उत्तर तरफ नूरबाग का १५०० मन्दिर का लम्बा पूर्व से पश्चिम चबूतरा आया है । फिर १४७ मन्दिर की जगह छोड़कर दूसरा चबूतरा दक्षिण से उत्तर तरफ पौने तीन मन्दिर का चौड़ा आया है । इस प्रकार से ११ चबूतरे खड़े आये हैं । जिनमें १० सन्धे आने से १५०० मन्दिर की लम्बाई नूरबाग की आयी है ।

चबूतरों का ब्यान :- नूरबाग के एक चबूतरा का ब्यान किया जाता है । इसी प्रकार सब चबूतरें आये हैं । एक चबूतरा के मध्य भाग में पौन मन्दिर की चौड़ी और १४७ मन्दिर की लम्बी, भोम भर की गहरी-नहर आयी है । इसके दाएं-बाएं रौसें फुलवाड़ी, कठेड़ा आदि आये हैं । सो फूलबाग की तरह सब जोगबाई आयी है ।

नूरबाग का समूह ब्यान :- नूरबाग के एक बड़े बगीचा में १६ चौक आए हैं । एक चौक में १३ वृक्षों की १३ हारें आयी हैं । तो कुल वृक्ष १६९ हुये १६ चौकों के २७०४ हुये और १०० बगीचों के २७०४०० हुये । बाहरी किनार पर एक दिशा में ५२० वृक्ष आये हैं । तो चारों दिशा के २०८० वृक्ष हुये तब सम्पूर्ण वृक्ष २७२४८० हुये । सब अलग-अलग रंगो के अलग-अलग जातियों के एक ही भोम में आये हैं । इसमें ६६००० फीलपाये आये हैं ।

नहरें :- एक बगीचा में २४ नहरें आयी हैं । तब १०० बगीचा के सब नहरें २४०० हुयी । बड़ी नहर पूर्व से पश्चिम १० की ११ हारें आने से ११० हुयी । दक्षिण से उत्तर तरफ भी १० की ११ हारें आने से ११० हुयी । सब सम्पूर्ण नहरें २६२० हुयी ।

पुल :- पूर्व से पश्चिम तरफ १० की ११ हारें आने से ११० पुल हुये । दक्षिण से उत्तर तरफ भी १० की ११ हारें आने से ११० पुल हुये । तब

कुल पुल २२० हुये । हर एक पुल पौन मन्दिर का लम्बा-चौड़ा हर एक नहर के मध्य भाग पर आया है ।

चेहबच्चा :- एक बड़े बगीचे में ९ छोटे चेहबच्चा आये हैं । तब १०० बगीचों के ९०० चेहबच्चा हुये । पूर्व के चबूतरा पर ११ चेहबच्चा आये हैं । तब ११ चबूतरा के चेहबच्चा १२१ हुये । तब सम्पूर्ण चेहबच्चे १०२१ हुये । नूरबाग के चारों कोना पर चार चेहबच्चा आये हैं । जो १६ हांस के चेहबच्चा आये हैं । ये नूरबाग के हिसाब में नही है ।

रौंस :- नूरबाग के एक बड़े बगीचे में ५३ रौसें आयी हैं । तब १०० बगीचों की ५३०० रौसें हुंयी । बड़ी नहर के चारों तरफ एक रौंस आयी है । इस प्रकार २२० नहरों पर २२० रौसें हुयी । बड़े चेहबच्चा के चारों तरफ एक रौंस आयी है । तो १२१ चेहबच्चों की १२१ रौसें हुयी । वाहर की किनार पर तीन दिशा में एक ही रौंस आयी है । सो ४४९८ मन्दिर और ६६ हाथ की लम्बी और ३३ हाथ की चौड़ी आयी है । पश्चिम तरफ की रौंस का ब्यान अन्नवन में आयेगा। तब सम्पूर्ण रौसें ५६४२ हुयी । पूरा वर्णन फूलबाग में देखिये ।

फुलवाड़ी :- एक बगीचा में चारों तरफ एक फुलवाड़ी आयी है तो १०० बगीचों की १०० फुलवाड़ी हुयी । एक चेहबच्चा के चारों तरफ चार फुलवाड़ी आयी है । तो १२१ चेहबच्चों की ४८४ फुलवाड़ी हुयी । बाहर की किनार के उत्तर, दक्षिण तथा पूर्व तरफ की फुलवाड़ी ३० हुयी और पश्चिम तरफ की फुलवाड़ी अन्न बन में आयेगी । तब सम्पूर्ण फुलवाड़ी ६१४ हुयी । इनका पूर्ण ब्यान फूलबाग में देखिए ।

सीढ़ी :- एक बड़े बगीचा में २१२ सीढ़ियां आयी हैं तो १०० बगीचों की २१२०० सीढ़ियां हुई । दक्षिण तरफ बाहर के किनार के बाहरी तरफ चालीस

सीढ़ियां आयी है और एक बड़ी नहर में आठ सीढ़ियां आयी हैं। तब २२० नहरों में १७६० सीढ़ियां हुई। उत्तर तरफ बाहर के किनार के बाहर तरफ ४० सीढ़ियां आयी हैं। हर एक चेहबच्चा में चार-चार सीढ़ियां आने से बड़े १२१ चेहबच्चों की ४८४ हुई। तब सम्पूर्ण सीढ़ी २३५२४ हुई। पूर्ण ब्यान फूलबाग में देखिये।

फीलपाये :- इस नूरबाग में जो ११ चबूतरे पूर्व से पश्चिम तरफ पौने तीन-पौने तीन मन्दिर के चौड़े और दक्षिण से उत्तर तरफ १५०० मन्दिर के लम्बे आये हैं। सो इन चबूतरों के बाहरी किनार पर मन्दिर-मन्दिर के अन्तर पर लम्बाई तरफ फीलपाए आये हैं। चबूतरा के एक तरफ के फीलपाए १५०४ आये हैं। दसों बगीचा की किनार पर १४८० हुए। और ११ नहरों के २२ हुए। और एक-एक फीलपाए पूर्व, पश्चिम के बाहरी किनार पर आये हैं। तब सम्पूर्ण फीलपाए एक लाईन में १५०४ हुए। इसी प्रकार चबूतरों के बाहरी तरफ किनार पर भी १५०४ फ़ीलपाए आये हैं तब एक चबूतरा के बाहरी किनार पर ३००८ हुए। तब ११ चबूतरों के सब फीलपायें ३३०८८ हुए। जिसमें पूर्व तरफ के धाम चबूतरा की पिठौर में १५०४ फीलपाए अक्सी आये हैं। इन थम्भों पर १५०३ अक्सी मेहरावें आयी हैं और जो ११ चबूतरे खड़े दक्षिण से उतर तरफ पौने तीन-तीन मन्दिर के चौड़े और पूर्व से पश्चिम १५००-१५०० मन्दिर के लम्बे सब आये हैं। इस एक चबूतरा के दोनों बाहरी व भीतरी तरफ ३००८ फीलपाए हुए तब ११ खड़े चबूतरों ३३०८८ हुए तब सम्पूर्ण ६६१७६ हुए।

दस खिडकियां :- इस नूरबाग के पूर्व तरफ धाम चबूतरा की दीवार १५०० मन्दिर की लम्बी आयी है। जिसमें से १५ मन्दिर दक्षिण की और १५ मन्दिर उत्तर तरफ नैरित्य और वायब्य कोना के चेहबच्चा पर आये हैं। इन दोनों चेहबच्चों के बीच में १४७० मन्दिर की जगह आयी है इस जगह में दीवार की पिठौर में १५०४ अक्सी फीलपाए, तिनपर १५०३ अक्सी मेहरावें आयी हैं। इन अक्शी मेहरावों में १० खिड़कियां (छोटे दरवाजे) दिखाई दे रही

हैं । श्री रंगभवन के नैरित्य कोना में १६ हांस का जो चेहबच्चा आया है उस चेहबच्चा के उत्तर तरफ श्री रंग भवन के पश्चिम तरफ फूलबाग का पहला गुर्ज आया है । इस गुर्ज के मन्दिर से उत्तर तरफ १५ मन्दिर के दूरी पर नूरबाग चालू होता है । अब इसके आगे उत्तर तरफ ७३-१/२ मन्दिर की जगह छोड़कर कर इस मन्दिर के उत्तर तरफ की जो पांखे की दीवार आयी है सो दीवार चौड़ी आयी है । इस दीवार में ३ मेहराव दोनों मन्दिरों के तरफ आयी है । सो मध्य की मेहराव में ३३ हाथ का लम्बा-चौड़ा एक दरवाजा आया है । सो दरवाजा के ताक पांखे के दिवार में ही खुलते व बन्द होते हैं । सो इसी प्रकार से दीवार के दूसरी तरफ मन्दिर में दरवाजा बना है । यह दरवाजा भी उसी दीवार के दूसरी तरफ दीवार में ही खुलता है । दोनों दरवाजों के बीच में ३३ हाथ का लम्बा पूर्व से पश्चिम और ८ हाथ का चौड़ा दक्षिण से उत्तर तरफ एक चौक आया है । इस चौक के पूर्व तरफ दीवार आयी है । इस चौक के पश्चिम तरफ एक हाथ नीचे एक सीढ़ी आयी है । सीढ़ी एक हाथ की चौड़ी पूर्व से पश्चिम तरफ और ८ हाथ की लम्बी दक्षिण से उत्तर तरफ आयी है । इस प्रकार की २० सीढ़ियां आयी हैं । इन २० सीढ़ियों के पश्चिम तरफ साथ लग कर इन्ही सीढ़ियों के बराबर ८ हाथ का चौड़ा पूर्व से पश्चिम तरफ और ८ हाथ लम्बा उत्तर से दक्षिण तरफ एक चांदा आया है । बीसवीं सीढ़ी और चांदा का रंग अलग-अलग है सो चांदा व सीढ़ी अलग-अलग दिखायी पड़ती है । फिर २० सीढ़ी और दूसरा चांदा आया है । इसी प्रकार १०० सीढ़ी और ४ चांदे आये हैं । जहां पर १००वीं सीढ़ी खत्म हुई, इसके आगे पश्चिम तरफ चबूतरा दीवार के अक्सी मेहराव में ८ हाथ की लम्बी-चौड़ी खिड़की आयी है वह खिड़की उलंघ कर फिर इसके आगे ३३ हाथ रौंस, फिर फुलवाड़ी को उलंघ कर नूरबाग के बगीचों में जाकर अनेक तमासे करिये । इन १०० सीढ़ियों का उतार चढ़ाव १३३ हाथ का है । जिसमें १०० हाथ धाम रौंस की जगह आयी है और ३३ हाथ की उसी बगली दीवार की जगह आयी है । ये सब १३३

हाथ की जगह हुई । ऊंचाई १०० हाथ की आयी है । यह सब सीढ़ियां व चांदे श्री रंग भवन के नीचे चबूतरा के उदर में तथा धाम रौंस के नीचे चबूतरे के उदर भाग में होकर आयी है । फिर इस मन्दिर को छोड़कर उत्तर तरफ १४७ मन्दिर छोड़कर उत्तर तरफ जो १४७वें मन्दिर की दीवार पांखे की आयी है उसमें १०० सीढ़ियां व चार चांदे पश्चिम तरफ उतरे हैं । जिसके आगे चबूतरा में खिड़की आयी है । इसी प्रकार से १४७वें-१४७वें मन्दिर की दूरी पर दस खिड़कियां पांखे की दीवार में से पश्चिम तरफ नूरबाग में उतरी हैं । इन सीढ़ियों के सामने धाम चबूतरा की पिठोर में अक्शी मेहरावों में १० खिड़कियां आयी हैं । इन खिड़कियों से निकलकर नूरबाग में जाना पड़ता है । इस दसवीं खिड़की के मन्दिर से उत्तर तरफ ७३-१/२ मन्दिर पर नूर बाग की हद आयी है । इस हद से १५ मन्दिर दूरी पर श्री रंगभवन के वायव्य कोना के चेहबच्चा के सामने ५१ वां गुर्ज आया है । जो फूल-बाग का ५१ वां गुर्ज समझा जाता है । इस प्रकार से १५०० मन्दिर के बीच में दस जगहों पर दस खिड़कियां आयी हैं ।

नूरबाग के चारों तरफ :- नूरबाग के पूर्व तरफ साथ लगकर धाम चबूतरा की दीवार जिसमें १० खिड़कियां शोभा ले रही हैं और दक्षिण तरफ एक मन्दिर के दूरी पर छज्जा के साथ लगकर बड़ोवन के वृक्ष शोभा ले रहे हैं । नूरबाग के पश्चिम तरफ भी ५ हारे आयी हैं । ये सब वृक्ष अन्नवन में आये हैं और इसी प्रकार से उत्तर तरफ एक मन्दिर के दूरी पर छज्जा के साथ लगकर वृक्ष आये हैं और दक्षिण तरफ से उत्तर तरफ पांच हारें आयी हैं । इन तीनों तरफों के वृक्षों की पांच भोम छठी चांदनी ऊंचाई आयी है । हर भोम में हिंडोले भी आये हैं ।

नूरबाग और फूलबाग में अन्तर :- नूरबाग में जो ब्यान लिखा है, यदि समझ न आये तो फूलबाग में देख लेना क्योंकि फूलबाग, नूरबाग का ब्यान एक समान है । नूरबाग में ६६१७६ फीलपायें और १० खिड़कीयां अधिक आयी

है । नूरबाग के वृक्षों की एक भोम आयी है और फूलबाग के वृक्षों की २ भोमें आयी हैं । फूलबाग की धाम रौंस के साथ जो चबूतरा पर नहर आयी है, उस नहर में ३००२ चेहबचें आये हैं । परन्तु इसी नहर के नीचे धाम चबूतरा के साथ नूरबाग में ११ चेहबच्चें और १० नहरें आयी हैं । नूरबाग के चारों कोना पर जो १६-१६ हांस के चार चेहबच्चें आये हैं सो नूरबाग में खाली उनकी दीवार १६-१६ हांस की दीखाई पड़ती है । परन्तु फूलबाग में जल, चांदे, रौसें, कठेड़े सबों का दर्शन होता है । यह चारों चेहबच्चें मानो फूलबाग व नूरबाग के मददगार हैं । बाकी सब जोगबाई बराबर आयी है ।

नूरबाग के पश्चिम अन्नवन :- नूरबाग के पश्चिम तरफ जो ११वां चबूतरा आड़ा १५०० मन्दिर का लम्बा आया है, इस चबूतरा के पश्चिम तरफ १४७ मन्दिर की दूरी पर एक चबूतरा २-३/४ मन्दिर का चौड़ा और १५०० मन्दिर का लम्बा दक्षिण से उत्तर तरफ आया है । इसी प्रकार १४७-१४७ मन्दिर की दूरी पर १० चबूतरे आये हैं । इन १० चबूतरों के बीच में ९ सन्धे आयी हैं और एक सन्ध नूरबाग की तरफ है । तब दसों सन्धो की जगह १४७० मन्दिर हुई । १० चबूतरों की जगह २७-१/२ मन्दिर की हुई । तब पूर्व से पश्चिम तरफ १४९७-१/२ मन्दिर जगह अन्नवन की चौड़ी हुई ।

लम्बाई :- नूरबाग में ११ चबूतरे खड़े आये हैं । हर एक चबूतरा पौने तीन-२ मन्दिर का चौड़ा दक्षिण से उत्तर और १५०० मन्दिर का लम्बा पूर्व से पश्चिम तरफ गया है । सो १५०० मन्दिर तक नूरबाग की हद आयी है और १४९७-१/२ मन्दिर की हद अन्नवन की आयी है और १४९७-१/२ मन्दिर की हद दूबदुलीचा की आयी है । तब ग्यारह चबूतरों में दस सन्धे आयी हैं । १० सन्धों की जगह १४७० मन्दिर की हुयी और ११ चबूतरों की जगह ३० मन्दिर की हुयी । तब सब १५०० मन्दिर की लम्बाई दक्षिण से उत्तर अन्नबन की हुई ।

१०० देहुरी :- इस अन्नवन के आड़े और खड़े चबूतरों के बीच में १००

चौक आये हैं । हर एक चौक में खड़ी और आड़ी तीन-तीन नहरे आने से १६ चौक, २४ नहरें और ९ चेहबच्चें आये हैं । मध्य का चेहबच्चा आधे मन्दिर का लम्बा-चौड़ा आया है । इस चेहबच्चा के चारों कोना पर चार थम्भ आये हैं । ऊपर ४ मेहरावें आयी हैं । जिनके ऊपर गुम्मट आये हैं । ऊपर कंगूरे, कलश, ध्वजा-पताका अति सुन्दर शोभा युक्त हैं । इस प्रकार हर बगीचा में देहुरी आयी हैं । इस बगीचा के चारों तरफ रौंस, फुलवाड़ी, चार नहरों के कोनों पर चार चेहबच्चा तथा चौको में सीढ़ियां, कठेड़े सब जोग-बाई नूरबाग की तरह आयी है । केवल देहुरी ही ज्यादा आयी है ।

१६०० चौक :- एक बगीचा में १६ चौक आने से १०० बगीचें में १६०० चौक हुए । हर एक चौक ३६ मन्दिर का लम्बा-चौड़ा आया है । हर एक चौक में अलग-अलग रंगो व अलग-अलग जातियों के अन्नों के खेत लहरा रहे हैं । कोई चीज की यहां पर कमी नही है । चौकों में मेवे, फल, साक, जमीनकन्द, गेहूँ, जौ आदि अनेक प्रकार के अन्न अनादि काल के बने दिखायी देते हैं । सर्वदा एक रस विद्यमान हैं । वस्तु को ले लेने पर भी वस्तु अपने स्थान पर ज्यों की त्यों दिखाई देती हैं । यह परमधाम के बगीचों की बातें हैं ।

नहरें, पुल, चेहबच्चें :- १०० बगीचों में छोटी नहर २४०० आयी हैं । बड़ी नहर पूर्व से पश्चिम १०० आयी हैं और उत्तर से दक्षिण तरफ १० की ११ आने से ११० नहरें हुयी । तब सब नहरें २६१० हुई । २१० नहरें जो बड़ी आयी है हर एक नहर के मध्य भाग में एक पुल आने से २१० पुल आये हैं और चबूतरा पर ११ चेहबच्चा आये हैं । पूर्व से पश्चिम तरफ ११ चेहबच्चों की १० हारें होने से ११० चेहबच्चा हुए । तो सम्पूर्ण चेहबच्चें १०१० हुए ।

रौसें :- अन्नवन की रौसें एक बगीचा की ५३ आयी हैं तो १०० बगीचों की ५३०० हुई । २२० बड़ी नहरों की २२० रौंसे आयी हैं । ११० चेहबच्चों

की ११० रौंसे आयी हैं । उत्तर, दक्षिण तरफ बाहरी किनार पर एक-एक रौंस आयी है । पश्चिम तरफ की रौंसों की गिनती दूब-दुलीचा में आयेगी । तब सम्पूर्ण रौंसे ५६३२ हुई । इनका विस्तार फूलबाग में देखिये ।

फुलवाड़ी :- १०० बागीचों की १०० फुलवाड़ी आयी हैं और ११० चेहबच्चों की ४४० फुलवाड़ी आयी हैं और उत्तर व दक्षिण तरफ बाहर नहर पर २० फुलवाड़ी आयी हैं । पश्चिम तरफ की फुलवाड़ी दूब-दुलीचा में आयी है । तब सम्पूर्ण फुलवाड़ी ५६० हुई । विस्तार से फूलबाग में देखिये क्योंकि वर्णन एक समान है ।

सीढ़ियां :- एक बगीचा में २१२ सीढ़ियां आने से १०० बगीचों की २१२०० सीढ़ियां हुयी । एक बड़ी नहर में ८ सीढ़ियां आने से २१० बड़ी नहर की १६८० सीढ़ियां हुई । हर एक चेहबच्चा में ४ सीढ़ी आयी तो ११० चेहबच्चा में ४४० सीढ़ी हुयी । उत्तर व दक्षिण बाहर तरफ ८० सीढ़ियां आयी हैं । पश्चिम तरफ की सीढ़ियां दूबदुलीचा में आयेगी । तब सम्पूर्ण सीढ़ियां २३४०० हुयी ।

अन्नबन के चारों तरफ :- अन्नबन के पूर्व तरफ नूरबाग दिखाई दे रहा है । दक्षिण तरफ एक मन्दिर के दूरी पर कुन्ज-निकुन्ज दो भोम का ऊंचा आया है और उत्तर तरफ एक मन्दिर के दूरी पर बड़ोवन की नहरें चेहबच्चें आये हैं । सो यह बड़ोवन पांच भोम का ऊंचा और पश्चिम तरफ दूब-दुलीचा शोभा ले रहा है ।

अन्नबन और नूरबाग में अन्तर :- अन्नबन और नूरबाग एक जैसा है । कुछ फर्क नही है । नूरबाग में फीलपायें और वृक्ष आये हैं । सो यहां अन्न के अनेक खेत लहरा रहे हैं । अन्नवन में १०० देहुरी आई है । सो नूरबाग में नही है । विस्तार से पढ़ना हो फूलबाग के ब्यान को देखें ।

दूब दुलीचा :- अन्नबन के पश्चिम तरफ जो एक चबूतरा आड़ा आया है

यह चबूतरा अन्नबन और दूबदुलिचा के दोनों बगीचों में काम देता है। इस चबूतरासेपश्चिम तरफ १४७ मन्दिर की दूरी पर एक चबूतरा आड़ा आया है। सो इतने ही इतने मन्दिर की दूरी पर ९ चबूतरे और आये हैं। यह दस चबूतरे आड़े हुए। इसी प्रकार चौड़ाई दूब-दुलीचा की पूर्व-पश्चिम तरफ १४९७-१/२ मन्दिर की हुई। लम्बाई तरफ ११ खड़े चबूतरे आये हैं। जिनमें १० सन्धे आयी हैं। सो सब जगह दक्षिण से उत्तर तरफ १५०० मन्दिर की आयी है। इन आड़े-खड़े चबूतरों के बीच में १०० चौक आये हैं। हर एक चौक के चारों तरफ फुलवाड़ी, रौंसें, चारों दिशा में ४ नहरें, पुल तथा कोनो पर चेहबच्चें आये हैं। हर एक बड़े बगीचा में १६ चौक, २४ छोटी नहरें आयी हैं और नव चेहबच्चा तथा चारों कोना के चेहबच्चा पर एक एक देहुरी आयी है। बाकी बनक फूल बाग जैसी आयी है। १०० बगीचों में १६०० चौक हुए। एक चौक ३६ मन्दिर का लम्बा-चौड़ा आया है। हर एक चौक अलग-अलग रंगो की घास-दूब के शोभा से युक्त है। दूब की फूल बेल चित्रकारी आयी है। जगह-जगह पर सिंहसन कुर्सियां बैठने के वास्ते धरे हैं।

दूब-दुलीचा का समूह ब्यान :- सम्पूर्ण नहरें छोटी-बड़ी २६१० आयी हैं। बड़ी २१० नहरों पर २१० पुल आये हैं। और छोटे-बड़े चेहबच्चे सब १०१० आये हैं। दक्षिण-पश्चिम और उत्तर तरफ एक ही रौंस बाहर की किनार पर ४४९५ मन्दिर की लम्बी और ३३ हाथ की चौड़ी आयी है। सम्पूर्ण रौसें ५६३२ हैं। फूलवाड़ी ५७० आयी हैं। यहाँ अन्नवन से १० फुलवाड़ी अधिक आयी हैं। सम्पूर्ण सीढ़ियाँ २३४४०आयी हैं। अन्नवन के बगीचा से ४० सीढ़ियां अधिक आयी हैं। सो यह सीढ़ियां दूब-दुलीचा के पश्चिम तरफ चबूतरा के किनार पर आयी हैं। अन्नवन में अन्न के खेत हैं। यहां पर दूब-घास युक्त खेत शोभा ले रहे हैं।

चारों तरफ :- दूब-दुलीचा और अन्नवन के दक्षिण तरफ एक मन्दिर की

दूरी पर कुन्ज-निकुन्ज दो भोम का ऊंचा आया है । उत्तर तरफ एक मन्दिर की दूरी पर बड़ोवन की नहरें चेहबच्चें आये हैं । सो बड़ोवन ५ भोम का ऊंचा है । पश्चिम तरफ पश्चिम की चौगान का मैदान है । जो बहुत शोभायमान है ।

पश्चिम की चौगान :- दूब-दुलीचा के पश्चिम चबूतरा से उत्तर की किनार से अर्थात दूब-दुलीचा के वायब्य कोना से लेकर पश्चिम तरफ जवेरों की नहरों तक ४५०० मन्दिर की चौड़ी और दूब दुलीचा के वायब्य कोना से दक्षिण तरफ जवेरों की नहरों तक ९००० मन्दिर की लम्बी ये चौगान शोभा ले रही है । अगर एक-एक मन्दिर १००-१०० कोस का लें । तो ४-१/२ लाख कोस चौड़ी और ९ लाख कोस लम्बी उत्तर से दक्षिण तरफ हुई । इस चौगान में सुन्दर चौक बने हुए हैं । हर एक चौक में सुन्दर रेती कै रंगों की बिछी हुई है । हर एक चौक का रंग आकाश तरफ छाया हुआ है । सो इस चौगान में श्री राजश्यामा जी तथा समस्त सुन्दर साथ पशु-पक्षी अर्थात् हाथी, घोड़े, शेर, चीते तथा गरुड़ों पर बैठकर दौड़तें हैं । उसको पकड़ने की वास्ते सब कोई दौड़तें हैं और कई प्रकार के खेल तमाशें किये जाते हैं । जैसे दौड़ना, कूदना, उड़ना, लड़ना, भमरियां खाना और गुलाटियाँ खाना आदि कई प्रकार के खेल करते हैं । जिसका वर्णन इस जुबां से असम्भव है ।

चौगान के चारों तरफ :- इस पश्चिम की चौगान के पूर्व तरफ ईशान कोना से लेकर अग्नि कोना तक ९००० मन्दिर की लम्बाई मानी जाती है । जिसमें १५०० मन्दिर में दूब-दुलीचा उत्तर से दक्षिण तरफ इस चौगान के साथ आया है । आगे साढ़े सात हजार मन्दिर में चौगान के पूर्व साथ-साथ दूब-दुलीचा के दक्षिण तरफ कुन्ज-निकुन्ज जवेरों की नहरों तक आया है । इस कुन्ज-निकुन्ज की ऊंचाई दो भोम की आयी है । पश्चिम की चौगान के उत्तर तरफ अर्थात ईशान कोना से वायब्य कोना तक ४-१/२ लाख कोस में लगता

पश्चिम-चौगान के अग्नि कोना से लेकर वायब्य कोना तक जवेरों की नहरें गोलाई पहलदार हो कर आयी हैं। इन जवेरों के वृक्षों की ऊंचाई ५ भोम की आयी है।

पांच सौ बगीचे : पश्चिम-चौगान को देखकर दूब-दुलीचा अन्नबन से होकर फूलबाग के वायब्य कोना से सोलह हांस के चेहबच्चा से भोम भर की सीढ़ी चढ़ के फूलबाग के बगीचों में दाखिल भए। यहां पर पांच सौ बगीचा देखने लगे। जिसका ब्यान-एक सौ बड़े बगीचे सब आए हैं। हर एक बगीचा के चारों तरफ नहर, रौंस के साथ जो ३३ हाथ की चौड़ी फुलवाड़ी आई है इसको बगीचा में गिनती किया है चार सौ बगीचे चार सौ फुलवाड़ी के आए हैं और सौ बगीचे बड़े आए हैं इस तरह से पांच सौ बगीचे हुए। इस फूलबाग के चारों कोना पर सोलह-सोलह हांस के ४ चेहबच्चें आए हैं। इन चारों चेबच्चों को घेर करके बड़ोवन की पांच हारें फिरी हैं। और नूरबाग तथा फूलबाग के साथ लगकर बड़ोवन की पांच हारें १२५ मन्दिर के अन्तर से पांच सौ मन्दिर के चौड़ाई की हद में अन्नवन के बीच में होकर हौजकौसर की तरफ चली गई हैं इन वृक्षों की पांच भोम और छठ्ठी चांदनी आई है हर एक भोम में हिंड़ोला आए हैं।

लाल चबूतरा :- श्री रंग भवन के उत्तर तरफ वायब्य कोना से लेकर ईशान कोना तक ५० हांस आये हैं। हर एक हांस ३०-३० मन्दिर का होने से १५०० मन्दिर हुए। सो इन मन्दिरों के सामने उत्तर तरफ एक मन्दिर की चौड़ी उत्तर से दक्षिण तरफ और पश्चिम से पूर्व तरफ १५०० मन्दिर की लम्बी धाम रौंस आयी है। वायब्य कोना के सामने वाले गुर्ज से लेकर पूर्व तरफ ४० हांस तथा १२०० मन्दिर के सामने उत्तर तरफ रौंस के साथ लगकर ३० मन्दिर का चौड़ा उत्तर से दक्षिण और वायब्य कोना के चेहबच्चा की कोट दीवार से लगकर लाल चबूतरा की पश्चिम तरफ की दीवार की चौड़ाई आयी है। पश्चिम से पूर्व तरफ ११८५ मन्दिर का लम्बा लाल चबूतरा आया

है । लम्बाई की जगह १२०० मन्दिर की थी किन्तु लाल चबूतरा के १५ मन्दिर वायब्य कोना के चेहबच्चा पर आ गये है यदि इन मन्दिरों के भीतरी तरफ की दीवार से गिनती करे तो १२०० मन्दिर पूरे हो जाते हैं ।

लाल चबूतरा की गिलम :- लाल चबूतरा पर ३० मन्दिर की चौड़ी दक्षिण से उत्तर और १२०० मन्दिर की लम्बी पूर्व से पश्चिम एक गिलम बिछी है । हर एक हांस का रंग अलग-अलग होने से गिलम न्यारी-२ सी प्रतीत होती है । इन गलीचों पर अनेक प्रकार की चित्रकारी बेल-बूटे नगों से की हुई है । ३० मन्दिर का लम्बा-चौड़ा गलीचा दिखायी देता है ।

सिंहासन व कुर्सियां :- हर एक हांस के मध्य भाग में एक-एक सिंहासन आया है । तब ४० हांसो के ४० सिंहासन हुए । हर एक सिंहासन के दाएं-बाएं ३-३ हजार कुर्सियां धरी हैं । तब एक हांस में ६ हजार कुर्सियां हुई । प्रत्येक कुर्सी पर २-२ सखी बैठती हैं । तब चालीस हांसो की सब कुर्सियाँ २ लाख ४० हजार हुई । ये सब कुर्सियाँ अलग-अलग नमूने की आयी हैं जिस हांस में चाहे वहां बैठकर सामने के पशु-पक्षी का तमाशा देख सकते हैं

उत्तर तरफ के चांदे :- लाल चबूतरा के उत्तर तरफ हर एक हांस के मध्य में लाल चबूतरा की दीवार से लगकर एक मन्दिर का लम्बा-चौड़ा एक चबूतरा बगीचा की जमीन से एक भोम का ऊंचा उठकर लाल चबूतरा के बराबर आया है । इस चबूतरा के चौक से पूर्व-पश्चिम तरफ १००-१०० सीढ़ियां उतरी हैं । चौक तथा सीढ़ियों के उत्तर तरफ कठेड़ा आया है । इसी प्रकार से ४० चांदे आये हैं ।

पूर्व तरफ का चांदा :- लालचबूतरा के पूर्व तरफ चबूतरा की दीवार के मध्य भाग में और ताड़वन के पश्चिम के चबूतरा की बाहरी तरफ जो २५ हाथ की रौंस आयी है । उस रौंस पर १२-१/२ हाथ का चौड़ा पश्चिम से पूर्व और एक मन्दिर का लम्बा दक्षिण से उत्तर तरफ एक चबूतरा ९७ हाथ का ऊंचा उठकर लाल चबूतरा के बराबर आया है । इस चौक से दक्षिण

तरफ ९७-९७ सीढ़ी ताड़बन के चबूतरा की रौंस पर उतरी है । चबूतरा की रौंस जमीन से ३ हाथ ऊंची आयी है । यह सीढ़ी १२-१/२ हाथ की लम्बी पूर्व से पश्चिम और एक हाथ की चौड़ी उत्तर से दक्षिण तरफ आयी है । इस चांदा के चौक और सीढ़ियों के पूर्व सुन्दर कठेड़ा शोभा ले रहा है । सो लाल चबूतरा के साथ ४१ चांदे हुए ।

लाल चबूतरा के चारों तरफ :- लाल चबूतरा के पश्चिम तरफ साथ लगकर वायब्य कोना का चेहबच्चा १६ हांस का दिखाई दे रहा है और लालचबूतरा के उत्तर तरफ हांस-हांस के कोना पर चबूतरा की दीवार के साथ लगकर ४१ वृक्ष बड़ोबन के आये हैं । जिनकी ऊंचाई एक भोम की दस भोम जितनी आयी है । लाल चबूतरा के पूर्व तरफ दीवार के साथ लगकर ताड़बन के ३१ वृक्ष आये हैं । इन सब की ऊंचाई १० भोम की एक ही भोम की आयी है और लालचबूतरा के दक्षिण तरफ ११८५ मन्दिर श्री रंगभवन के दिखाई देते हैं और १५ मन्दिर वायब्य कोना के चेहबच्चा पर आये हैं । दोनों मिलाकर १२०० मन्दिर हुये । सो इन १२०० मन्दिरों में झरोखे नही आये हैं । तब हर एक मन्दिर में तीन-तीन दरवाजे आने से सब दरवाजें ३६०० और ४१ गुर्ज आये हैं । हर एक गुर्ज में तीन-तीन दरवाजें आने से १२३ दरवाजे गुर्ज के हुये और १२०० मन्दिर का लम्बा पश्चिम से पूर्व तरफ और ३० मन्दिर का चौड़ा दक्षिण से उत्तर जो लाल चबूतरा आया है । सो इसी को पहली भोम का एक ही झरोखा करके कहा है और ऊपर दूसरी भोम का ३३ हाथ का चौड़ा छज्जा तथा कठेड़ा सब दिखाई दे रहा है । सो इस तरह की बनक सात भोम तक आयी है । ऊपर नवी भोम का एक मन्दिर का चौड़ा और ४० हांस का लम्बा छज्जा दिखाई दे रहा है । इस छज्जे के किनार पर १२०१ थम्भ मन्दिर-मन्दिर के अन्तर पर सब आये हैं । सो थम्भों में कठेड़ा तथा १२०० ऊपर खुली मेहराबें शोभा ले रही हैं और इसके ऊपर बड़ोबन की छत दिखाई दे रही है । सो इस कारण से ऊपर की देहलाने तथा गुमटियां गुर्ज कुछ भी दिखाई नही देते हैं ।

बड़ोबन के वृक्षों का ब्यान :- लाल चबूतरा के उत्तर तरफ चबूतरा की दीवार

के पिठौर में हांस-हांस पर साथ लगकर ४१ वृक्ष बड़ोबन के आये हैं। इन वृक्षों की ४१ की ४१ हारें दक्षिण से उत्तर तरफ १२०० मन्दिर तक आयी हैं। तब सम्पूर्ण वृक्ष १६८१ हुए। और दक्षिण से उत्तर तरफ ४० अखाड़ों की ४० हारें आने से १६०० अखाड़े हुये। सब वृक्ष एक-२ मन्दिर के मोटे और एक-एक भोम के ऊंचे आये हैं। परन्तु इन वृक्षों की एक भोम में श्री रंगभवन की दस भोमें आयी हैं। इन वृक्षों के थड़ों में सुन्दर दरवाजे बने हैं। पेड़ के अन्दर से ऊपर को सीढ़ी गोलाई में होकर चढ़ी है। श्री रंगभवन की हर भोम के छज्जों के सामने इन पेड़ों में से ५ हाथ का चौड़ा और लम्बा चारों तरफ घेर के एक छज्जा निकला हुआ है। इस छज्जा की किनार पर चारों तरफ कठेड़ा घेरकर शोभा ले रहा है। इस पेड़ में से भोम भर की सीढ़ी चढ़कर मेहराब से निकल कर छज्जा के किनार पर खड़ा होकर चारों तरफ की शोभा को देखिए। इस छज्जा में से होकर दूसरे पेड़ों पर नही जा सकते हैं, क्योकि यह छोटा सा छज्जा रास्ते में प्रणाम करने के लिए बना है। इस प्रकार से श्री रंगभवन के छज्जों के सामने एक पेड़ में से ९ छज्जें निकले हुए हैं। इसी प्रकार से १६८१ वृक्ष आये हैं।

वृक्षों के छज्जों का ब्यान :- हर एक वृक्ष के चारों तरफ दसवी छात से १४-१/२,-१४-१/२ मन्दिर की लम्बी और एक-एक मन्दिर की चौड़ी मेहराब आयी है। दो वृक्षों की झालियों की मेहराबे मिलने से उनकी मेहराबे २९ मन्दिर लम्बी दिखाई दे रही हैं और लाल चबूतरा के साथ ४१ जो वृक्ष आये हैं। इन वृक्षों की मेहरावे दक्षिण तरफ ३० मन्दिर जाकर श्री रंगभवन की दसवी चांदनी के उत्तर तरफ जो एक मन्दिर का चौड़ा छज्जा आया है। उससे जाकर मिलान किया है। इन सब वृक्षों के ऊपर एक ही छत आयी है। श्री रंगभवन की दसवी चांदनी तथा वृक्षों की चांदनी एक समान आयी है।

१६०० अखाड़े :- लाल चबूतरा के उत्तर तरफ चार वृक्षों के बीच में एक अखाड़ा आया है। तब लाल चबूतरा के साथ ४० अखाड़े हुये। दक्षिण से उत्तर तरफ ४० अखाड़ों की ४० हारें आने से १६०० अखाड़े हुये। हर एक

अखाड़ा ३० मन्दिर का लम्बा-चौड़ा आया है और १२० मन्दिर का गृद आया है। इन सब अखाड़ों में कई रंगों की रेती बिछी है। इन सब १६०० अखाड़ों में अनेक प्रकार के पशु-पक्षी अपनी-अपनी जाति के साथ अपने-अपने अखाड़ों में आकर खेल तमासे दिखाते हैं। श्री राजश्यामाजी भोम भर के ऊंचे लाल चबूतरा के सिंहासन पर बैठते हैं और हर एक कुर्सी पर दो दो सखियां बैठती हैं। यहां पर बैठकर पशु-पक्षियों तथा जानवरो के खेलों को देखते हैं। अनेक नये-नये खेल तमाशों को देखकर कोई हंसे बिना नही रहता है।

हिड़ोलें :- १६८१ वृक्ष जो बड़ोवन के आये हैं। सो दो-दो वृक्षों के बीच में एक-एक मेहराब २९-२९ मन्दिर की लम्बी और एक-एक मन्दिर की चौड़ी आयी है। इन सब मेहराबों के मध्य भाग में चकरियां लगी हुयी हैं। चकरियों के साथ-साथ हिंड़ोले लगे हुये हैं। जब झूलने की इच्छा होती है। तब चकरियों में से जजीरें खुलने से सब हिंड़ोले नीचे आ जाते हैं और जमीन से एक भोम और कमर भर ऊंचे आकर लाल चबूतरा के कठेड़ा के साथ तक ऊंचाई से झूलते हैं। केवल इनपर बैठने के वास्ते यह नीचे जमीन तक जाते हैं। नीचे पशु-पक्षी खड़े होकर जो श्री राजश्यामाजी व समस्त सुन्दर साथ अनेक रूप धारण कर हिंडोलों में झूलते हैं। उनकी शोभा को मुंह उठाकर देखते हैं। यह सब हिंड़ोले खट छप्पर के भांति आये हैं। हर एक चौक में चार हिंड़ोलों की ताली पड़ती है। ये शोभा सब चौकों की आयी है। झूलने के समय हिंड़ोलों की सुन्दर सुहावनी अवाजे सुनकर पशु-पक्षी मुग्ध होकर नाचने लगते हैं।

हिड़ोलों की गिनती :- ४१ वृक्षों के ४० मेहराबों में ४० हिंड़ोले आये हैं। तब दक्षिण से उत्तर ४० की ४१ हारें आने से १६४० हिंड़ोले हुये। इसी प्रकार पश्चिम से पूर्व तरफ ४० की ४१ हारें आने से १६४० हिड़ोले हुये। तब सम्पूर्ण ३२८० हिंड़ोले हुये।

बड़ोवन के चारों तरफ :- बड़ोबन के दक्षिण तरफ लाल चबूतरा भोम भर

का ऊंचा १२०० मन्दिर का लम्बा दिखाई दे रहा है। पूर्व तरफ १६ हांस में ४८० मन्दिर में ताड़वन आया है। १६-१/४ हांस में केलवन आया है। और पौने आठ हांस में अर्थात २३२ मन्दिर में मधुवन आया है और २६९ मन्दिर मधुवन की जगह और उत्तर तरफ आयी है और पश्चिम तरफ एक मन्दिर की दूरी पर बड़ोवन के वृक्ष आये हैं। यह वृक्ष पांच भोम के आये हैं। इस बड़ोवन के चारों तरफ नहरें चेहबच्चें सब आये हैं।

लाल चबूतरा के उत्तर तरफ बड़ोवन की चांदनी :- लाल चबूतरा के उत्तर तरफ जो ४१ वृक्ष आये हैं। सो लाल चबूतरा के उत्तर तरफ १७ वृक्ष तक जो बड़ोबन आया है। इन १७ वृक्षों के अन्दर १६ सन्धे आयी हैं और एक सन्ध लाल चबूतरा की हुयी। हर एक सन्ध ३०-३० मन्दिर की आयी है। तब १७ सन्धों की जगह ५१० मन्दिर की हुयी। सो इसी ५१० मन्दिर की जगह पर बड़ोबन की चांदनी आयी है। सो दक्षिण से उत्तर तरफ ५१० मन्दिर की चौड़ी और लम्बाई पूर्व से पश्चिम तरफ बाहरी मन्दिर के बाहरी दीवारों के हिसाब से ११८५ मन्दिर की हुयी और दो मन्दिर का छज्जा पश्चिम तरफ आया है। तब ११८७ मन्दिर की लम्बी चांदनी हुयी और बाहरी मन्दिरों की हार के भीतर की दीवार के हिसाब से १२०२ मन्दिर की लम्बी चांदनी आयी है।

चांदनी पर चार चेहबच्चें :- बड़ोबन के पश्चिम तरफ जो १६ वृक्ष बड़ोवन के आये हैं। इनमें से नैरित्य कोना में जो वृक्ष आया है। इस वृक्ष के पूर्व तरफ इसी लाइन में जो साथ वाला दूसरा वृक्ष (लाल चबूतरा के साथ उत्तर तरफ) सो इसकी चांदनी पर चेहबच्चा आया है। इसी लाईन में इसी वृक्ष के उत्तर तरफ जो १५वां वृक्ष आया है। दूसरा चेहबच्चा इस वृक्ष की चांदनी पर आया है और इन्ही दोनों वृक्षों के पूर्व तरफ ३९वां-३९वां जो वृक्ष आया है। उन वृक्षों की चांदनी पर दो चेहबच्चा आये हैं। कुल चार चेहबच्चा इस चांदनी पर आये हैं।

एक चेहबच्चा :- एक चेहबच्चा गोल १/२ मन्दिर का लम्बा चौड़ा और चांदनी

से कमर भर ऊंचा १-१/२ मन्दिर की गृद आयी है । ११ भोम का गहरा आया है । इस चेहबच्चा के कोट की दीवार वृक्ष के बीच में से ही होकर आयी है । चेहबच्चा के चारों तरफ पाव मन्दिर की रौंस चांदनी से कमर भर ऊंची आयी है । चांदे के दोनों तरफ कमर भर की सीढ़ी उतरी है । चांदो की जगह छोड़कर चारों तरफ घेर कर कठेड़ा आया है और रौंस के बाहरी तरफ भी चार चांदों के चौकों से दाएं-बाएं कमर भर की सीढ़ी बड़ोबन की चांदनी पर आयी है । चांदों की जगह को छोड़कर चारों तरफ घेरकर कठेड़ा आया है और चेहबच्चा के बीच में पांच फुहारें आये हैं । इनका पानी उछलकर चेहबच्चों में ही पड़ता है ।

चांदनी से नीचे जाने को सीढ़ियां :- बड़ोबन की चांदनी से दक्षिण से उत्तर तरफ ४१ वृक्षों की १६ हारें आने से ६५६ वृक्ष बड़ोबन के लगे हुये हैं । चार चेहबच्चों के वृक्षों को छोड़कर बाकी सब वृक्षों में से नीचे को सीढ़ी उतरी है । चांदनी से नीचे उतरने का जो रास्ता है सो उतरते समय या नीचे से ऊपर जाते समय रास्ता खुल जाता है पीछे फिर बन्द हो जाता है । बन्द होने पर कुछ मालूम नही होता है कि रास्ता कौन सी जगह में है । ये सब रास्तें सखियों की इच्छा से बन्द व खुलते हैं । इसलिए चांदनी पर कूदने-दौड़ने व खेल-तमासा करते कोई रूकावट नही होती है ।

चांदनी के पश्चिम तरफ :- बड़ोबन की चांदनी के पश्चिम तरफ दो मन्दिर का चौड़ा पूर्व से पश्चिम और १२०० मन्दिर का लम्बा दक्षिण से उत्तर तरफ एक छज्जा निकला हुआ शोभा ले रहा है । वायब्य कोना के १६ हांस के चेहबच्चा पर जल के डूबे हुये चबूतरा तक अपनी छाया मण्डल की है । इस छज्जा की किनार पर १२०० मन्दिर का लम्बा कठेड़ा आया है ।

चांदनी के दक्षिण तरफ :- बड़ोवन की चांदनी के दक्षिण तरफ श्री रंगभवन की दसमी चांदनी का एक मन्दिर का चौड़ा छज्जा व बड़ोवन की चांदनी ये दोनों बराबर आयी है इस बड़ोवन की चांदनी के छज्जा से एक मन्दिर का चौड़ा जो छज्जा श्री रंगभवन को उलंघ कर आगे ११८७ मन्दिर दिखाई

दे रहे हैं और १३ मन्दिर वायव्य कोना के चेहबचा पर आये हैं हर एक मन्दिर के दो-दो दरवाजे छज्जा पर आये हुये हैं और मध्य में एक अक्स दिखाई दे रहा है। तब सब मन्दिरों के २४०० दरवाजें हुए और १२०० अक्स आये हैं। ४१ गुर्ज आये हैं। हर एक गुर्ज में तीन-तीन दरवाजे आने से १२३ दरवाजे गुर्जों के आये हैं और ११६० कंगूरे आये हैं। दो-दो कगूंरो के बीच में सुन्दर कांगरी है और २४०० गुमटियां, कलश, ध्वजा, पताका सब आये हैं।

चांदनी के पूर्व तरफ :- बड़ोवन की चांदनी के पूर्व तरफ ५१० मन्दिर का लम्बी दक्षिण से उत्तर तरफ और ३०० मन्दिर का चौड़ा पूर्व से पश्चिम तरफ ताड़वन की चांदनी आयी है। दोनों चांदनी के बीच में हद मर्यादा वास्ते कठेड़ा आया है। बीच में आने-जाने के वास्ते रास्ते बने हैं।

चांदनी के उत्तर तरफ : बड़ोवन की चांदनी के उत्तर तरफ २४० भोम और ९६००० कोस का ऊंचा बड़ोवन आया है। हर भोम ४०० कोस की आया है

एक लाख कोस की ऊंचाई :- एक भोम की ऊंची बड़ोवन की चांदनी से उत्तर तरफ-पश्चिम से पूर्व तरफ १२०० मन्दिर की लम्बी और दक्षिण से उत्तर तरफ ७२० मन्दिर की जगह की चौड़ाई में दक्षिण से उत्तर तरफ ४१ वृक्षों की २५ हारें आने से सब वृक्ष १०२५ हुये। ये सब वृक्ष नीचे के वृक्षों पर आये हैं। इन सब वृक्षों की भोम २४० आयी हैं। सब भोमें श्री रंगभवन के समान ऊंची आयी हैं। हर एक भोम ४०० कोस की ऊंची आने से एक लाख कोस की ऊंचाई इस बड़ोवन की आयी है।

२५० भोम के ऊंचे बड़ोवन के चारों तरफ :- इस बड़ोवन के वृक्षों के दक्षिण तरफ बड़ोवन की चांदनी ५१० मन्दिर की चौड़ी, उत्तर से दक्षिण तरफ और १२०२ मन्दिर की लम्बी पश्चिम से पूर्व तरफ आयी है और पूर्व तरफ ४८८ मन्दिर की केलवन की चांदनी आयी है और २३२ मन्दिर मधुवन की चांदनी है। इसके आगे उत्तर तरफ ४०० कोस की जगह में मधुवन ५००

भोम का ऊंचा आया है । हर एक भोम ४०० कोस की ऊंची होने से तो मधुवन २ लाख कोस का ऊंचा आया है । इस मधुवन के उत्तर तरफ ४०० कोस की जगह में महावन आया है । जिसकी ऊंचाई १००० भोम की आयी है । हर भोम ४०० कोस की होने से महावन की ऊंचाई ४ लाख कोस की आयी है । पश्चिम तरफ दो मन्दिर का छज्जा निकला हुआ है । इस छज्जा के किनार पर कठेड़ा आया है । इसके नीचे पांच भोम के बड़ोवन के वृक्षों की चांदनी शोभा ले रही है ।

२५० भोम बड़ोवन की चांदनी :- इन सब १०२५ वृक्षों की २४० भोमें आयी हैं और नीचे की एक भोम में दस भोमें जितनी ऊंचाई आयी है तब २५० भोम केऊपर एक ही चांदनी आयी है । चांदनी दक्षिण से उत्तर तरफ ७२० मन्दिर की चौड़ी और १२०२ मन्दिर की लम्बी पूर्व से पश्चिम तरफ आयी है । चांदनी के दक्षिण तरफ १२०० मन्दिर, पूर्व व पश्चिम तरफ ७२०-७२० मन्दिर का लम्बा कठेड़ा आया है । उत्तर तरफ १२०० मन्दिर का लम्बा कठेड़ा शोभायमान है । उत्तर तरफ के रास्तों से होकर मधुवन के चांदनी पर जाइये ।

ताड़वन :- लाल चबूतरा के पूर्व तरफ जो दस हांस आये हैं उसी दस हांस में अर्थात् तीन सौ मन्दिर पूर्व से पश्चिम चौड़ा और उत्तर से दक्षिण १७ हांस ५१० मन्दिर का लम्बा धाम रौंस के तले धाम चबूतरा की पिठौंर के आगे यह ताड़वन आया है ।

खड़े रास्ते :- ग्यारह गुर्जों के सामने ११ रास्ते १ मन्दिर के चौड़े और ३०-३० मन्दिर के लम्बे उत्तर से दक्षिण चबूतरें आये हैं । ११ खड़े रास्तों की १७ हारें आने से कुल १८७ चबूतरें आये हैं ।

आड़े रास्ते :- एक मन्दिर चौड़े उत्तर से दक्षिण, ३० मन्दिर के लम्बे पूर्व से पश्चिम ये चबूतरे धाम रौंस से एक मन्दिर दूरी पर आये हैं । १० रौसों की १८ हारें आने से कुल १८० रौंसें आयी हैं । कुल रौसें ३६७ आयी हैं । परन्तु एक बगीचा में खड़ोकली आने से एक रौंस की कमी हो गयी है ।

बगीचा :- आड़े-खड़े रास्ते होने के कारण कुल १७० बगीचा आये हैं । एक

बगीचा के किनारे चौफरे १२० पेड़ ताड़ के आये हैं। १२० पेड़ों के भीतर २९ वृक्षों की २९ हारें आने से ८४१ पेड़ और जिनस के आये हैं। तिन वृक्षों की १० भोमें आयी हैं। परन्तु ताड़ के जो वृक्ष आये हैं उनकी १० भोम की एक ही भोम ही आयी है। ताड़वन के हर एक बगीचा में ताड़ के समेत ९६१ वृक्ष आये हैं। ३० की ३० हारें आने से एक बगीचा में ९०० चौक बनते हैं। १० भोम की ९००० चौक बने। एक बगीचा में हिंडोला १८००, दस भोम के १८००० हिंडोला हुये। जैसा बेवरा एक बगीचा का तैसे ही १६९ बगीचों का है रौसों के कुल चेहबच्चा १९८, एक सौ चवालिस मध्य की रौंस के और ५४ चौफर के किनार की रौंसन के हैं जिनमें से बड़ा हिंड़ोला खटछप्पर के जिनस के चक्राव की जुगती के ३६७, तिनमें एक हिड़ोला खड़ोकली के आ जाने से कम हो गया है। ताड़वन के किनार के बगीचों के किनार के वृक्ष १६७८ ताड़ के आये हैं।

ताड़ के दाहिनी तरफ पूर्व लिबोई का घाट ५०० मन्दिर में आया है और पश्चिम बड़ोवन विराजमान है। १७ वृक्ष लों बराबर आगे केल का बगीचा रोसन है। केलवन के १० मन्दिर और ६ वृक्ष ताड़ के मुकाबिल आये हैं। एक रौंस चबूतरा के कीनार पर ३१ वृक्ष ताड़ के हैं। १५ वृक्ष दाएं रहे, १५ वृक्ष बाएं है। मध्य का जो ३१वां वृक्ष आया है। इसी प्रकार दूसरे बगीचा के ३१ वां वृक्ष इन दोनों वृक्षों के मेहराव में चकरीदार हिंडोला आया है। वटपीपल की चौकी की भांति। चारों तरफ के चार हिंडोलों की ताली पड़ती है। एक चेहबच्चा पर चार हिंड़ोलों की पीठ मिलती है। यहां पर नहर व चेहबच्चा वट पीपल चौकी की भांति आये हैं। नहरों की लम्बाई यहां पर कम है धाम रौंस से जो सीढ़ियां चांदो द्वारा उतरी हैं। वे भी वटपीपल की चौकी की भांति आयी हैं। ईशान कोना के चेहबच्चा से जो सीढ़ी ताड़वन में आई है। वह नैरित्य कोना के चेहबच्चा की भांति है। वृक्षों के थड़ों से ऊपर को सीढ़ियां गयी हैं। ताड़ के वृक्षों में उसी भांति सीढ़ियां आयी हैं। जैसे बड़ोवन के वृक्षों में आयी है। बड़ोवन व ताड़वन की चांदनी एक भांति आयी है। बड़ोवन की चांदनी पर चार चेहबच्चें आये हैं। सो यहां

नहीं हैं। एक बगीचा के ताड़ के वृक्ष १२० तो १६९ बगीचा के २०२८०, १६७८ ताड़ के वृक्ष बाहरी गृद के, सब २१९५८ वृक्ष हुये। एक बगीचा में ८४१ वृक्ष और जिनस के, तो १६९ बगीचों के १४२१२९ वृक्ष एक भोम के, दशों भोम के १४२१२९० और जिनस के वृक्ष हुयें। एक बगीचा के चौक ९०० तो १६९ बगीचों के १५२१०० चौक हुये तो दशों भोम की १५२१००० चौक हुये।

एक चौक के हिंडोला १८०० तो १६९ बगीचों के हिंड़ोला ३०४२००० हुए। रंगमोहल के उत्तर लाल चबूतरा से पूर्व तरफ ताड़वन की हद में १३ गुर्ज आये हैं। पहला गुर्ज लाल चबूतरा से ३० मन्दिर पर, दूसरा १० मन्दिर पर, तीसरा २० मन्दिर पर, चौथा १० मन्दिर पर, पांचवां २० मन्दिर पर आगे छठ्ठा गुर्ज से लेकर सभी गुर्ज तीस-तीस मन्दिर पर आये हैं। खड़ोकली के दाएं-बाएं दो गुर्ज आये हैं। सो एक भोम के ही आये हैं। भूलवनी के सामने तीन गुर्ज और २० मन्दिर आये हैं।

ईशान कोना का चेहबच्चा : रंगभवन के ईशान कोना में जो चेहबच्चा आया है वह सोलह हांस (४८० मन्दिर) का गृद और १६० मन्दिर का लम्बा-चौड़ा आया है। मनिन्द सब जोगबाई अग्नि कोना के चेहबच्चा के समान आई है। इस चेहबच्चा पर तीन वन आए हैं अनार, जाम्बू और ताड़ के, इस चेहबच्चा की एक मन्दिर की चौड़ी और एक भोम की ऊंची दिवाल आई है। जिसका एक हांस रंग भवन के रौंस के साथ मिला है। बाकी पन्द्रह हांस चारों तरफ घूमें हैं। इस चेहबच्चा की रौंस मन्दिर भर की चौड़ी है। ए रौंस दिवाल पर बन गई है। इस रौंस का दो किनारा है। जल के तरफ चार चांदे जल के चबूतरे पर बने हैं। चांदा की जगह को छोड़कर चारों तरफ घेर करके कठेड़ा है। दूसरी किनार वन दिस की है। जिसके तीन तरफ चांदों से भोमभर की सीढ़ियां उतरी है। चांदा की जगह छोड़कर चारों तरफ कठेड़ा आया है। नैरित्य कोना से दक्षिण के चांदे तक चेहबच्चा की दिवाल के साथ लगकर अनार के ५३ वृक्ष आए हैं जिस पर ५२ मेहरावें

आई हैं । दो-दो मन्दिर के फासले पर सब वृक्ष आए हैं । दक्षिण के चांदा से पूर्व के चांदा तक ६० वृक्ष और साठ मेहरावें अनार की आई हैं । पूर्व के चांदा से पूर्व तरफ दो मन्दिर की चौड़ी रौंस श्री यमुना जी तक चली गई है । ए रौंस लिंबोई और अनार के घाट के बीच में आई है । पूर्व के चांदा से उत्तर के चांदा तक ६० वृक्ष और साठ मेहरावें लिंबोई घाट के हैं । और उत्तर के चांदा से वायब्य कोना तक १०५ वृक्ष ताड़वन के आए हैं जिसपर १०४ मेहरावें सब आई हैं । यह वृक्ष मन्दिर-मन्दिर के अन्तर पर आए हैं । लिंबोई घाट के और अनार घाट के ४०-४० वृक्ष कम हुए हैं । हर हार एक वृक्ष टूटा है । अग्नि कोना के चेहबच्चा पर तीन वन आए हैं जाम्बू, नारंगी और वट पीपल चौकी की । नैरित्य और वायब्य कोना के चेहबच्चा पर बड़ोवन के पांच वृक्ष चारों तरफ घूमें हैं । ईशान कोना पर तीन वन आए हैं अनार, लिंबोई और ताड़ के ।

केलवन :- अब इस ताड़वन के आगे केलवन आया है । ४४८ मन्दिर का चौड़ा दक्षिण से उत्तर ताड़वन के साथ लगता हुआ ताड़वन के सिराहना से लेकर मधुवन के किनार लों और केलवन को माहे लेके बड़ोवन की पांच हारें श्री यमुना जी को गयी है । केलवन के वृक्ष ३७५०० चाहिए । परन्तु इनमें से १५० की ५ हारें केल की ताड़वन के किनार दीवार के मुकाबिल की इतघटी । तब सही वृक्ष केलवन के ३६७५० रहे और ताड़वन की पुखराज दिस का जो अठारवां चबूतरा है । इन चबूतरा की बाहरी किनार से लग के आयी जो ३१० ताड़वन की हारे हैं । उन हार के मुकाबिल केल की पांचवी हार आयी है और इस बड़ेवन के तरफ बड़ोवन का सत्रहवां वृक्ष मुकाबिल आया है और ३१० वृक्ष ताड़वन के और पांचमो वृक्ष केल का ये तीनों वृक्ष दोरीबन्ध बराबर आये हैं और १७वां वृक्ष से दो मन्दिर जगह छोड़कर दो-२ मन्दिर के अन्तर से केल के वृक्ष आये हैं और इन १७वें वृक्ष से लेकर आगे १७ वृक्ष तक (३३ वृक्ष तक) पांच वृक्ष बड़ोवन से निकले है । १७वें वृक्ष से तीन वृक्ष बीच में छोड़के दूसरा वृक्ष आया है इसी विधि से १७ वृक्षों में से ५ वृक्ष निकसे सो श्री यमुना जी लों चले गये हैं और पुखराज

की दिस में एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष तक बीच में ६० वृक्ष केल के आये हैं और १२२ मन्दिर भर जगह रही और चाहिए थी १२५ मन्दिर की जगह, वहां १० मन्दिर केल के जो ताड़वन के मुकाबिल आये हैं। सो यहां मन्दिर छूटे और यमुना जी की दिस एक वृक्ष से दूसरे तक १२५ मन्दिर का अन्तर है। अब लालचबूतरा की किनार से लेकर तैतिसवें वृक्ष तक केलवन की हद आयी है। ३३ वृक्षों में ३२ सन्धे आयी हैं। एक-एक सन्ध ३०-३० मन्दिर की ताके सब मन्दिर ९६० हुये और ३० मन्दिर लाल चबूतरा की चौड़ाई के लिए तब सब मन्दिर धाम दिवाल से लेकर ३३ वृक्ष लों ९९० मन्दिर हुए। अब ३३ वृक्ष के आगे मधुबन आया है।

मधुवन की हद :- बड़ोवन के ३३ वृक्षों के आगे ८ वृक्ष और बड़ोवन आये हैं। उन ८ वृक्षों की गिनती में इस ३३वें वृक्ष को भी लिया है। तब ९ वृक्ष में ८ चौक हुये। ये वृक्ष दोनों तरफ जवाब देता है और दो तरफ चौक पड़ता है। तिस वास्ते इस वृक्ष को लिया गया है। इन ९ वृक्षों में ८ सन्धे आयी हैं। तिन ८ सन्धो में २४० मन्दिर भर जगह बची होती है। अब इस ३३ वृक्षों से आगे १२० मन्दिर पर एक हार मधुवन की आयी है और एक हार फिर बड़ोवन के ४१वें वृक्ष के बराबर आयी है। इस वृक्ष से आगे १३०-१३० मन्दिर पर दो हारे मधुबन की और आयी है। मधुबन केल के पुल के बराबर चली है और पुल से दोरी बन्ध बराबर आयी है और केल के माहे होकर आयी जो ५ हारें बड़ोवन की है। वह हारें और मधुवन की हारे दोरी बन्ध बराबर हैं और मधुवन के आगे जो चार हारे महावन की हैं। वह हारें मधुवन के बराबर और रौसों से रौंस मिली है। अब यहां से पुखराज के तरफ चलना है।

ताड़वन के किनारे ही किनारे होकर बड़ोवन में आये। फिर बड़ोवन में १५वें वृक्ष से अर्थात लाल चबूतरा के आगे पूर्व से पश्चिम जो १५वां

वृक्ष है या १४वां चौक जो है। उसमें से सीधा उत्तर तरफ मुख करके पुखराज को चले। यह पश्चिम से पूर्व को २६वां अखाड़ा है और पूर्व से पश्चिम को १५वां अखाड़ा है। उस अखाड़ा से उत्तर तरफ सीधा चलकर मधुवन की किनार पर पहुंचे।

मधुवन :- मधुवन सर्व सुख शोभा का समुद्र है। इसके पेड़ बड़ेउ तंग ऊंचे हैं। एक पेड़ से दूसरे पेड़ तक १२५ मन्दिर का अन्तर है। जो चार वृक्षों की चौकड़ी है। इस चौकी की गृद ५०० मन्दिर की है। इनकी छत ४०० कोस की ऊंची आयी है। भोम पर भोम ५०० भोम ऊपर गयी है। जिससे इसकी ऊंचाई दो लाख कोस की आयी है और तले नहरें और चहेबच्चा सीढ़ियां वटपीपल चौकी की भांति रोसन हैं। पेड़ों की मेहरावों में हिंड़ोले रोसन हैं। ये मधुवन श्री यमुना जी के केल के पुल से चला है। सो पुखराज और बंगलन की सन्ध में आये जो चेहबच्चा है। उन चेहबच्चा लों आयके फेर पुखराज के गृद घूमा है। इसकी चार हारें पुखराज को घेरकरके आयी है एक हार में ४००० वृक्ष आये हैं। तो चारों हारों के १६००० वृक्ष हुये। परन्तु ४८ वृक्ष घट गये हैं। क्योंकि पुखराज के दक्षिण एक नहर आयी है। जिसका पानी महावन, मधुवन, बड़ोवन में होता हुआ ताड़वन के चेहबच्चों व नहरों में आता है। इस नहर के आने से एक हार के तीन वृक्ष घटे तो ४ हार आने से १२ वृक्ष घटे। इसी प्रकार से पश्चिम तरफ घाटी आयी है। जिसके ऊपर से पुखराज की चार लाख कोस ऊंची चांदनी पर सीढ़ियां चढ़ती हैं। इस घाटी के आने से एक पंक्ति के ३ वृक्ष घटे, ४ हारों के १२ वृक्ष घटे। इसी प्रकार से उत्तर तरफ भी घाटी आयी है और पूर्व तरफ चेहबच्चा आया है। जिससे दोनों तरफों की १२-१२ घटे, तो चारों तरफों के कुल ४८ वृक्ष घटे, तो मधुवन के कुल वृक्ष १५९५२ हुये। इन वृक्षों की थड़ों से सीढ़ियां ऊपर को गयी हैं। इसकी चांदनी से दक्षिण तरफ जाना हो तो बड़ोवन की एक लाख कोस की चांदनी से तथा १० भोम

बड़ोवन की चांदनी से रंग मोहोल की दसवी चांदनी पर जाइये । यदि उत्तर तरफ जाना हो तो महावन की ४ लाख कोस की ऊंची चांदनी से पुखराज की चांदनी पर जाइये । बाकी शोभा सब वटपीपल की भांति आयी है ।

महावन :- मधुवन की भांति महावन भी ४०० कोस का चौड़ा और लम्बाई में पूर्व से जहां से मधुवन की हद आयी है मधुवन की उत्तर से वन रौंस की किनार से शुरू होकर पुखराज को घेर के आये हैं । एक पंक्ति में ४००० वृक्ष आये हैं । इसी प्रकार ४ हारें आयी हैं । जिससे १६००० वृक्ष हुये । परन्तु मधुवन के वृक्षों की भांति महावन के ४८ वृक्ष पुखराज के दक्षिण में नहर, पश्चिम, उत्तर में घाटी तथा पूर्व में एक हांस के चेहबच्चा होने के कारण से घट गये हैं जिससे कुल वृक्ष १५९५२ आये हैं । ये वृक्ष पुखराज को घेर करके जो रौंस कमर भर ऊंची आयी है । उससे५० कोस की दूरी पर पहली पंक्ति आयी है इस पंक्ति से १२५ मन्दिर (१०० कोस) की दूरी पर दूसरी पंक्ति है । इसी प्रकार से महावन की दो हारें और आयी हैं । महावन के बाद ४ हारें मधुवन की आयी हैं । पुखराज को घेर करके जो पहली हार महावन की आयी है । जिस प्रकार पुखराज के पांचो पेड़ों के छज्जा बाहरी तरफ बढ़े हैं । उसी भांति महावन के वृक्षों ने भी पुखराज की तरफ अपना छत्री मण्डल किया है । जिससे पुखराज की चांदनी और महावन की ४ लाख कोस की चांदनी एक बराबर आयी है । महावन की चांदनी से पुखराज की चांदनी पर जाइये । कोई फर्क नही आयेगा । मधुवन की शोभा व महावन की शोभा में कोई अन्तर नही है । केवल मधुवन की ऊंचाई दो लाख कोस (५०० भोम) और महावन की ऊंचाई चार लाख कोस (१००० भोम) की आयी है । १२५ मन्दिर के लम्बे-चौड़े चौक के मध्य भाग में कमर भर ऊंचे चबूतरे पर महावन का वृक्ष १००० भोम लिए हुये शोभायमान है । एक भोम ४०० कोस की आयी है वृक्ष के चारों तरफ की नहरे जहां पर

मिलती है । वहां पर चेहबच्चा शोभायमान है । चेहबच्चों में फुहारों की शोभा अपरम्पार है । नहरों के मध्यभाग में पुल शोभायमान है । रौंसों से कमर भर की सीढ़ियां चौकों में उतरी हैं । पेड़ों के थड़ों से सीढ़ियां ऊपर को गयी हैं । पेड़ों की मेहरावों में हिड़ोले वटपीपल की चौकी की भांति आये हैं । इन वृक्षों की ऊंचाई के कारण से वाणी में इसे लम्बा वन करके कहा है बाकी शोभा वटपीपल चौकी की भांति आयी है ।

पुखराज के दक्षिण की नहर :- जिन मेंहरावों से होकर बड़ोवन से चले उन्ही मेहरावों के सामी एक रौंस चबूतरा आया है । उस रौंस चबूतरे पर होकर दाएं-बाएं मधुवन और महावन की शोभा को देखते-देखते उसी रौंस से पुखराज के दक्षिण चेहबच्चा पर आये । ये नहर एक हांस की चौड़ी पुखराज की तरहटी से निकलकर चेहबच्चा में होकर महावन, मधुवन को पानी देकर बड़ोवन और ताड़वन को पानी पहुंचाती है । पुखराज के दक्षिण तरफ जो चेहबच्चा आया है । वहां पर रूह खड़ी होकर पुखराज की तरफ पीठ करके रंग मोहल को देखने लगी । प्रथम रूह ने चेहबच्चा को देखा, पुखराज को घेर करके जो रौंस कमर भर की ऊंची ५०० मन्दिर की चौड़ी आयी है । इस रौंस पर दक्षिण तरफ चबूतरा के दीवार से लगकर जमीन पर एक हांस का चेहबच्चा आया है । २०० कोस का लम्बा-चौड़ा बराबर इसको घेरकर ५० कोस की रौंस आयी है । इस रौंस के चारों तरफ चारों चांदो से सीढ़ियां जल चबूतरे पर उतरी हैं और दूसरी तरफ भी कमर भर की सीढ़ियां वन रौंस प्रर उतरी है । इस चेहबच्चा से नहर निकलकर श्री रंगभवन की तरफ जाती है । नहर की चौड़ाई २०० कोस की है । और ५०-५० कोस की दोनों तरफ पाल आयी है । पाल के दांए-बांए आधे-आधे चौक आये हैं । वहां पर आधे चबूतरे पर लम्बाई तरफ नौ नहरें आयी हैं । जो चारों तरफ घूमी है । ये महावन, मधुवन होती हुयी बड़ोवन वन में गुप्त रूप से होकर

गुप्ता-गुप्त जाकर ताड़वन व सोलह हांस के चेहबच्चों में प्रवेश होती हैं ।

केलवन का मूल :- ताड़वन के उत्तर केलवन ४८८ मन्दिर हद लेकर आया है । १० मन्दिर केलवन के ताड़वन ने दाबे हैं । लम्बाई में तो २३०० मन्दिर का है । बड़ोवन से जो वृक्ष केलवन माहें होकर गये हैं । ये केल रूप धारण किये हैं । ताड़वन के उत्तर तरफ जो १८वां चबूतरा आया है । उसके साथ ३०० वृक्ष ताड़के आये हैं । इसी के सूत में पूर्व तरफ छट्ठा वृक्ष केल का आया है । पश्चिम इसी की सूत में १७वां वृक्ष बड़ोवन का आया है । जो १७वां वृक्ष बड़ोवन का है इसे केल का वृक्ष कहते हैं । इस वृक्ष से आगे उत्तर तरफ तीन वृक्ष बीच-बीच में छोड़कर इकीसवां, पचीसवां, २९वां और ३३वां जो वृक्ष बड़ोवन के आये हैं । यही वृक्ष केल से होकर जाने से केल के कहे जाते हैं । ये वृक्ष जिस घाट में जायेंगे । उन्ही वृक्षों का रूप धारण करते हैं ये पांचो वृक्ष १२०-१२० मन्दिर के अन्तर पर आये हैं । पांचवे पेड़ से उत्तर तरफ ८ मन्दिर पर केल की हद आयी है । केल के वृक्ष दो-दो भोम के आये हैं । परन्तु पांच वृक्ष जो बड़ोवन से आये हैं । ताड़वन की हद तक १० भोम तक आये हैं । उसके बाद ५ भोम होकर केलवन से होकर पाल पर चला गया है । केल के छोटे जो वृक्ष हैं । वे दो-दो मन्दिर के अन्तर पर आये हैं । जिससे चौड़ाई में दो बड़ोवन के वृक्षों के बीच में ५९ वृक्ष केल के आये हैं । इन पांच बड़ोवन के वृक्षों से पूर्वतरफ १२० मन्दिर की दूरी पर दूसरी हार बड़ोवन की आयी है । इनो का आपस में अन्तर १२२-१२२ मन्दिर का आया है । दो वृक्षों के भीतर ६० वृक्ष केल के दो भोम वाले आये हैं । पहले उत्तर तरफ ८ मन्दिर की दूरी पर केल की हद आयी है । अब यहां पांचवा पेड़ ठीक हद पर आया है । फिर दूसरी हार से १२२ मन्दिर दूर तीसरी हार बड़ोवन की आयी है । पहला वृक्ष ताड़ के साथ लगकर और पांचवा केल के उत्तर की हद पर । इनके बीच भी

६० हारें छोटे वृक्षों की आयी है । अब तीसरी हार के पूर्व तरफ ५८ मन्दिर दूरी पर चौथी हार बड़ोवन की आई है । पहला वृक्ष तीसरी हार के पहले वृक्ष के पूर्व-दक्षिण की ओर से ११ मन्दिर की दूरी पर जहां से ठीक केलवन शुरू होता है । जो ११ मन्दिर ताड़वन ने दावें हैं । ये ठीक वहीं पर आया है । यहां से ताड़वन की चौड़ाई पूरी हो जाती है । अब चौथी हार का पहला वृक्ष केल और लिबोई के ठीक मध्य भाग में ताड़वन के साथ लगकर आया है । इस हार के दो वृक्षों में १२५ मन्दिर का अन्तर है । अब यहां से १२५ मन्दिर लम्बाई-चौड़ाई में होकर केलवन होते हुये पाल पर गये हैं । ताड़वन के उत्तर तरफ २-२ मन्दिर के अन्तर पर छोटे वृक्ष आये हैं ।

मधुवन के पांच वृक्ष :- ताड़वन के उत्तर तरफ बड़ोवन के जो पांच वृक्ष आये हैं । जो पांचवा वृक्ष उत्तर तरफ का है । वह वृक्ष तीन तरफ सुमार किंया जाता है । बड़ोवन में भी, केलवन में भी और मधुवन का पहला वृक्ष कहते हैं । इस वृक्ष से तीन-तीन वृक्ष बीच में छोड़कर उत्तर तरफ जो ३७वां और ४१वां वृक्ष आये हैं । वे मधुवन के दूसरे-तीसरे वृक्ष हुये । तीसरे वृक्ष से उत्तर तरफ १३०-१३० मन्दिर पर चौथा, ५वां वृक्ष मधुवन का आया है । पूर्व तरफ जो हार आयी है । वह १२० मन्दिर पर आयी है । उत्तर-दक्षिण में १२५ मन्दिर का अन्तर है । इस प्रकार बड़ोवन से मिलते हुये गये हैं । ताड़वन की हद में ये वृक्ष १० भोम तक आये हैं । फिर केल के पुल तक पांच भोम होकर बड़ोवन के वृक्षों की भांति गये हैं । इसी कारण से ताड़वन की चांदनी १७ हांस तक बड़ोवन की चांदनी व मधुवन व रंगमोहल इन चारों की चांदनी एक समान आयी है । अब पुखराज पहाड़ की शोभा देखिए ।

पुखराज :- महावन की जमीन से कमर भर ऊंची रौंस ४०० कोस की चौड़ी पुखराज को घेर करके आयी है । आगे मूल कुण्ड तक गयी है । इस रौंस

पर दो वृक्षों की हारें आयी हैं। रौंस के भीतरी तरफ भोम भर की ऊंची दीवाल उठी सो ४ लाख कोस की गृद आयी है। जिसके १००० हांस आये हैं हांस-हांस पर गुर्ज आये हैं। इन्ही गुर्जो से भोम भर ऊंचे चबूतरे पर सीढ़ियां गयी हैं और हांस के मध्य में दरवाजा आया है। चबूतरा भोम भर पोला आया है। जिसके नीचे तरहटी में जाने वास्ते सीढ़ियां लगी हैं। इसी चबूतरे पर ही पुखराज पहाड़ शोभायमान है।

पुखराज की तरहटी :- तरहटी एक भोम नीचे जमीन में आयी है। जिसकी गृद ४ लाख कोस की है। लम्बाई-चौड़ाई १३३३३३ कोस की है। दीवार में जो हजार दरवाजें आये हैं। उन दरवाजों के आगे भोम भर की सीढ़ी उतरी हैं। ४०० कोस की रौंस जो तरहटी की दीवार के साथ लगकर आयी है। इस रौंस के आगे कमर भर नीचे ४०० कोस की चौड़ी बगीचों को घेर करके रौंस आयी है। इस रौंस से कमर भर नीचे बगीचा आया है। ४०० कोस का लम्बा-चौड़ा बराबर बगीचों में नहरें, फुहारें व मध्य बगीचा में फीलपायें आये हैं। इसी प्रकार ५२ बगीचों के आगे कमर भर ऊंची ४०० कोस की रौंस आयी है। ऐसी वनक १००० हांस में ५२००० बगीचों व ५२००० फिलपायों की आयी हैं। बगीचों के आगे जो ४०० कोस की रौंस है। यहां तक दीवार से २२००० कोस की जगह हुयी। इस रौंस के आगे ४०० कोस की चौड़ी कमर भर ऊंची मोहलातों की रौंस आयी है। इसके आगे एक हांस में एक मोहल आया है। मोहल को घेरकरके त्रिपोलिया आये हैं। जिसमें दो हारे थम्भों की आयी है। त्रिपोलिया सहित मोहोल ४०० कोस का लम्बा-चौड़ा बराबर आया है। मोहोल को घेर करके मन्दिर आये हैं। जिसमें चारों दिशा में चार दरवाजे हैं। दरवाजा के दाएं-बाएं एक-एक चबूतरा कमर भर ऊंचे आये हैं। मन्दिरों के आगे थम्भों की हार इसके आगे कमर भर ऊंचा चबूतरा किनार पर जिसमें थम्भ व कठेड़ा शोभित है। चारों

दिशा में सीढ़ियां शोभित है । चबूतरे पर गिलम, गिलम पर सिंहासन, कुर्सियां विराजमान हैं । चौड़ाई में इसी प्रकार ५३ मोहोल आये हैं । १००० हांस में ५३००० मोहल हुये । मोहलातों के आगे ४०० कोस की चौड़ी रौंस मोहलातों को घेर करके आयी है । मोहलातों व दोनो रौंसों सहित २२००० कोस हुये । अब मोहलातों की रौंस के आगे कमर भर नीचे ताल की पाल ४०० कोस की आयी है । इस पाल से नीचे कमर भर २५० कोस का ताल का चबूतरा आया है । किनार से लेकर ताल चबूतरा तक ४४६५० कोस हुये । इतनी ही दूसरे तरफ आये हैं । बीच में ४४००० कोस में तालाब आया है । सब मिलाके १३३३३३ कोस हुये ।

मोहलात और फीलपाए घटे :- ताल के एक दिशा में नहर के दोनों तरफ २५०-२५० कोस की रौंस आयी है और ४००-४०० कोस में पाल आयी है जिससे एक दिशा में १७०० कोस की जगह दबी, एक हार में ४ मोहलातें कमहुयी,चारों दिशाओं में १६ मोहलातें कम हुयी । तो ५३ हारों की ८४८ मोहल कम हुये । तब सही मोहल ५२१५२ हुये । इसी प्रकार से बगीचों की ५२ हारों के ८३२ कम हुये । तब सही बगीचे व फीलपाये ५११६८ हुये ।

पांच पेड़ :- खजाने के ताल में पांच मोहल आये हैं । चार मोहल चार दिशा में एक मोहल मध्य में आया है । रौंस के किनारे ताल में थम्भ उठकर रौंस के बराबर ९०० कोस का लम्बा-चौड़ा बराबर एक चबूतरा चौरस आया है । बीच में ४०० कोस की हवेली और दाएं-बाएं २५०-२५० कोस की रौंस आयी है । नहर की रौंस तीन तरफ घूमकर फिर दूसरी तरफ जाकर मिल गयी है । हवेली को घेरकर के मोहल, भीतर थम्भ और बगीचा बीच में कमर भर ऊंचा चबूतरा किनार पर थम्भ व गिलम, सिंहासन और कुर्सियाँ सब आये हैं । इस प्रकार से चारों दिशा में चार मोहल आये हैं । पांचवा

मध्य का मोहल ताल के मध्य में ९०० कोस का चौरस टापू आया है। ४०० कोस में हवेली दाएं-बाएं २५०-२५० कोस की रौंस आयी है। हवेली के चारों तरफ मन्दिरों की भीतरी दीवार से लगकर भरा हुआ पानी का थम्भ ऊपर आकाशी मोहल तक गया है। मानो खड़ोकली के समान है।

तरहटी की ऊंचाई :- तरहटी की ऊंचाई दो भोम की आयी है। ऊपर छात सब एक हो गयी है। १३३३३३ कोस की लम्बी-चौड़ी बराबर और बाहिर की जमीन से तरहटी की ऊंचाई एक भोम की आयी है।

पश्चिम तरफ घाटी की तरहटी :- चार लाख कोस की लम्बाई और चार सौ कोस की चौड़ाई है। दाएं-बाएं की रौंस से भोम भर की ऊंची दीवार उठी है। ऊपर दोनों दीवारों पर एक ही लम्बी छात आयी है। इस दीवार में हांस-हांस की हद पर गुर्ज आये हैं। जिन गुर्जो पर ऊपर जाने के वास्ते सीढ़ियां चढ़ी हैं। दो गुर्जो के बीच में दरवाजा आया है। चौड़ाई तरफ १०० कोस में सीढ़ियां चढ़ी हैं। दो गुर्जो के मध्य दरवाजे जो आये हैं। उस दरवाजे के आगे भोम भर की सीढ़ियां तरहटी में उतरी हैं ५० कोस की पाल पर, पाल के आगे ५० कोस की रौंस आयी हैं। कमर भर नीचे रौंस के आगे २०० कोस में जल की नहर आयी है। नहर के दूसरी तरफ की रौंस व पाल पहले जैसी ही आयी है। इस तरह से ४०० कोस का हिसाब आया है। पुखराज की तरहटी की बाहरी दीवार से लगकर घाटी की तरहटी में एक चेहबच्चा आया है। २०० कोस का लम्बा-चौड़ा बराबर घेर करके ५० कोस की रौंस और दूसरी तरफ चार चांदे आये है और दूसरी तरफ ५० कोस की पाल रौंस को घेर करके आयी है। इसकी ऊंचाई दो भोम जमीन से आयी है। बाहरी तरफ भोम भर की ऊंची दीवार है। इस दीवार के

साथ लगकर ४०० कोस की रौंस आयी है । जिस रौंस पर दो हारे वृक्षों की आयी है । इसी प्रकार से उत्तर की घाटी की बनक आयी है ।

गोल चबूतरा :- बाहर की रौंस से भोम भर की ऊंची दीवार आयी है । घेर कर चारों तरफ तरहटी की छात १३३३३३ कोस की लम्बी-चौड़ी आयी है । ४ लाख कोस की गृद भोम भरऊंचे चबूतरे पर तीसरे हिस्सा के मध्य में एक चौरस चबूतरा एक भोम का ऊंचा ४४४४४ कोस का आया है । चारों दिशा में सीढ़ी उतरी है । बाकी जगह मे कठेड़ा शोभा ले रहा है ।

चौरस चबूतरा :- इस ४४४४४ कोस के चौरस चबूतरा पर पांच पेड़ तरहटी से तीन भोम उठकर चबूतरा पर जाहिर भये हैं । चारों दिशा के जो पेड़ हैं । उनके दाएं-बाएं ६-६ मोहल आये हैं । मानिंद आकाशी के इस प्रकार चारों तरफ मोहल आये हैं । कोने का मोहल दो तरफ जवाब देता है । इनकी ऊंचाई दो भोम की आयी है । इन मोहलों को घेर करके २५० कोस की रौंस आयी है । मध्य के मोहल से दिशा के पेड़ २२००० कोस दूर आये हैं । दिशा के पेड़ से दूसरे दिशा वाले पेड़ पर जाना हो तो ३३००० कोस जाना पड़ेगा । इस चौरस चबूतरा से गोल चबूतरा की किनार ४४००० कोस दूरी पर आयी है । १३ मोहल जो एक दिशा में आये हैं । उनकी किनार से होकर परिक्रमा देवें तो १७६००० कोस होगी । यदि पेड़ ही पेड़ होकर परिक्रमा देवें तो १३३००० कोस की होती है । हिसाब से तो १३२००० कोस आता है । परन्तु पेड़ को घेर करके रौंस पर होकर जाना पड़ता है इस वास्ते १००० कोस बढ़ गये हैं ।

चौदह मेहरावें :- ये पांचो पेड़ पांच भोम उठकर छट्ठी छात से छज्जे निकले मध्य के पेड़ से चारों तरफ २२ कोस का छज्जा निकले ।

इस छज्जा पर चौड़ाई में २२ थम्भ आये हैं। और लम्बाई तरफ कोस-कोस के अन्तर पर थम्भ आये हैं। यह थम्भ एक भोम ऊंचे उठे हैं। फिर छत पड़ गयी। फिर उस पर २२ कोस का छज्जा आगे निकला। छज्जा पर थम्भो की हारें, पीछे तरफ मोहल आये हैं। इस प्रकार २५० भोम के छज्जा निकले। छज्जों पर थम्भ पीछे मोहलातें आती गयी। चारों दिशा में जो चार पेड़ आये हैं उनके छज्जा चार तरफ निकले है। मध्य के पेड़ के तरफ २२ कोस का छज्जा आया है। दिशा के पेड़ से दिशा की पेड़ तरफ ३३ कोस का आया है। जिस पर चौड़ाई तरफ ३३ थम्भ आये हैं और लम्बाई तरफ कोस-कोस के अन्तर पर आये हैं। बाहरी तरफ ४४ कोस के छज्जे आये हैं। चौड़ाई तरफ ४४ थम्भ तथा लम्बाई तरफ कोस-कोस पर थम्भ आये हैं। इन पांचो पेड़ों के छज्जा निकले। आगे-आगे थम्भ पीछे-२ मोहलाते बनती गयी। पश्चिम की तरफ घाटी की मोहलात गोल चबूतरा की कीनार से ४४००० कोस दूर आयी है। उन घाटी की पांच भोम छट्ठी चांदनी से छज्जा निकलना शुरू हुआ। आगे-आगे थम्भ पीछे-पीछे मोहलाते बनती गयी। २५० छज्जा निकले परन्तु घाटी का मोहल १०० कोस का आया। १०० कोस दूसरी तरफ में मोहल आये हैं दोनों के बीच में १०० कोस खाली जगह है। इन मोहलात के छज्जा अलग-अलग निकले है। ४४ कोस का चौड़ा और १०० कोस का लम्बा इस छज्जा पर चौड़ाई तरफ ४४ थम्भ, लम्बाई तरफ कोस-कोस पर थम्भ आये हैं। इस प्रकार से २५० छज्जे निकले है। मध्य के पेड़ से चारों पेड़ों की तरफ ५५०० कोस तक अपनी छाया डाली है और चारों पेड़ में से एक पेड़ ने अपनी २५० भोमों में ५५०० कोस की छाया ड़ाली है। इस प्रकार से चारों दिशा के पेड़ों ने दिशाओं की तरफ ४१२५ कोस तक छाया डाली है। बीच में २४७५० कोस की जगह बाकी रही। पश्चिम के पेड़ ने पश्चिम के तरफ ११००० कोस तक अपनी छाया २५० भोमों में डाली है। पश्चिम

की घाटी ने पूर्व तरफ २५० भोमों में ११००० कोस की छाया ड़ाली है। बीच में ६६००० का पाट पड़ गया है। इसी प्रकार उत्तर तरफ पाट बाकी रहे। इस प्रकार से मध्य पेड़ के पश्चिम के छज्जा और पश्चिम पेड़ के पूर्व के छज्जा के बीच १६५०० कोस की जगह बाकी रही। दिशाओं के पेड़ों के छज्जा के बीच में २४७५० कोस का फरक है इसी प्रकार से पश्चिम घाटी व पश्चिम पेड़ के पश्चिम छज्जा के बीच में ६६००० कोस का फरक है। दक्षिण के तरफ पेड़ के भी छज्जा निकले है। सामने महावन के वृक्ष भी रौंस के पास आये हैं। उन पेड़ों ने भी अपनी छत्री छज्जा माफक बढ़ाई है। २५० भोम के बाद जो २५१ वां छज्जा जो पेड़ का आया है वह छज्जा व महावन की छत्री एक हो गयी। इसी प्रकार से २५१वें छज्जे ने पुखराज के पश्चिम पेड़ के पश्चिम छज्जे ने ६६००० कोस की जगह को पाट लिया व मध्य के पेड़ के छज्जों ने व दिशाओं वाले पेड़ों के छज्जों ने २५१ छज्जा पर सब दिशाओं की जगह को पाट लिया। २५१ भोम से ७५० भोम तक ४४-४४ कोस के चौड़े छज्जे गृदवाय बढ़ते गए है इसमें आगे-आगें थम्म पीछे-पीछे मोहलाते बनती गयी है। जिससे ४ लाख कोस १००० भोम की ऊची चांदनी पर ४ लाख कोस गृद की १३३३३३ कोस की लम्बी- चौड़ी चांदनी बन गयी। जिससे इस चांदनी के नीचे १४ मेहरावें भोम भर ऊंचे चबूतरे पर दिखाई देती हैं। आठ मेहरावें तो चौरस चबूतरा पर आयी हैं और दो-दो मेहरावें दोनो घाटियों की। घाटी के मेहराव के नीचे वृक्ष जाकर लगा है। इस कारण से घाटी की दो मेहरावें हुयी। दोनों घाटियों की चार मेहरावें हुयीं। पूर्व तरफ भी घाटी के समान दो मेहरावें आयी है। इस कारण से १४ मेहरावें हुयी।

हजार हांस की मोहलात :- पुखराज की चांदनी के चारों तरफ ४०० कोस का छज्जा निकल कर नीचे जो ४०० कोस की रौंस आयी है उसके ऊपर

आया है । छज्जा की किनार पर कठेड़ा आया है । आगे ढलकता छज्जा आया है । भीतरी तरफ छज्जा की किनार पर कमर भर का ऊंचा चबूतरा उठा, जो ४०० कोस का चौड़ा और १००० हांस का लम्बा गोलाई में आया है । एक हांस का ब्यान । मध्य में ५० कोस का दरवाजा । जिसके भीतरी तरफ त्रिपोलिया आया है । एक गली १६-१/२ कोस की आयी है । दरवाजे के दाएं-बाएं ५०-५० कोस की हवेली बराबर आयी है । हवेली के बाहर तरफ ५० कोस का लम्बा-चौड़ा कमर भर ऊंचा चबूतरा हवेली से लगकर आया है । इस चबूतरा के तीन तरफ छज्जा और छज्जा पर कठेड़ा आया है । चबूतरा पर चार थम्भ ऊपर मेहराव आये हैं । इस हवेली के दाएं-बाएं २५ कोस का त्रिपोलिया आया है । जिसमें थम्भ आये हैं गली ८-१/४ कोस की आयी है । इस गली के दाएं-बाएं एक-एक हवेली आयी है । इस हवेली के दाएं-बाएं हांस की हद ५० कोस पर आयी है । ५० कोस दूसरे हांस के लिए । इन १०० कोस में एक गोल गुर्ज आया है । जिसमें बाहर तरफ तीन-तीन दरवाजें आये हैं । भीतरी तरफ दो हार थम्भों की आयी है । जिसमें तीन गली, एक गली ३३ कोस की आयी है । ऐसी वनक दरवाजे के दाएं-बाएं आयी है । एक हांस में चार हवेलियों की चार हारें आयी हैं । तो एक हांस की १६ हवेली हुयी । हर एक त्रिपोलियों में हवेलियों के कोनों पर चौरस चबूतरे कमर भर ऊंचे आये हैं रंगमोहल की तरह, जिस पर २४ मेहरावें आयी हैं । बड़े त्रिपोलियां में बड़े चबूतरे छोटे त्रिपोलियों में छोटे चबूतरे आये हैं । भीतरी तरफ बड़े दरवाजे के दाएं-बाएं चौरस चबूतरे (यानी गुर्ज) आये हैं । बाहरी गुर्ज की तरह से भीतरी तरफ भी गोल गुर्ज के सामने आठ मेहरावें चबूतरे पर आयी हैं । १०० कोस का लम्बा ३३ कोस का चौड़ा जिस पर आठ थम्भों पर आठ मेहरावें आयी हैं । तीन मेहराव भीतरी तरफ तीन मेहराव बाहिर वन की तरफ और एक-एक मेहराव दाएं-बाएं आयी है ।

गोल गुर्जो के त्रिपोलिया में दो-दो चौरस

चबूतरे हवेली के आयेहै मध्य की गली पर कुछ नही आयी है । हर एक हांस में तीन-तीन भाव आये हैं । चार हवेली भीतर की ४ हवेली बाहिर की इनके सामने कमर भर की सीढ़ियां भीतर और बाहिर तरफ उतरी हैं ।

एक हवेली :- एक हांस के हवेली में जो १६ हवेली आयी हैं । सो एक हवेली ५० कोस की लम्बी-चौड़ी आयी है । हवेली के एक तरफ ५० मोहल चारों तरफ २०० मोहल आये हैं । भीतरी तरफ एक हार थम्भन की । थम्भों के भीतरी तरफ तीसरे हिस्से में एक चौरस चबूतरा कमर भर ऊंचा उठा । चबूतरे से चारों दिशा में सीढ़ियां । सीढ़ियों को छोड़कर किनार पर थम्भ व कठेड़ा आये हैं । थम्भों की मेहरावों में हिंडोले आये हैं । चबूतरा पर गिलम, सिंहासन, कुर्सियां सब जोगवायी आयी है । चबूतरा को घेर करके चारों तरफ चार दरवाजे के सामने की जगह छोड़कर वन, बगीचे, फुहारें आये हैं । इसी प्रकार सब हवेली आयी है ।

चारों दिशा में :- चारों दिशा में चार बड़े दरवाजे आये हैं । सो दरवाजे ३०० कोस के चौड़े और ऊंचे पांच भोम तक एक ही मेहराव आयी है । इस दरवाजे के बाहिर तरफ छज्जा ऊपर १०० कोस के चबूतरे कमर भर ऊंचे दो आये हैं । जिन चबूतरों पर चार-चार थम्भ उठे हैं । इन चबूतरों की ऊंचाई पांच भोम तक की आयी है । दोनों चबूतरों के मध्य १०० कोस का चौक आया है । ऐसे दो चबूतरे भीतरी तरफ भी आये हैं । दाएं-बाएं गुर्ज त्रिपोलिया आये हैं । दाएं-बाएं त्रिपोलिया की ५-५ भोम दरवाजे के बीच के चौक से सब दिखाई देते हैं । दरवाजे के दाएं-बाएं जो चार-चार हवेली आये हैं । उनके ८-८ चबूतरे भी दिखाई देते हैं । दोनों तरफ हवेलियों के ४० त्रिपोलियां, चबूतरे, थम्भ, पांचों भोम के दिखाई देते हैं । ऐसी वनक चारों दरवाजों पर आयी हैं । हजार हांस की हवेलियों की ऊंचाई ५ भोम की, चारों बड़े दरवाजों की ऊंचाई १० भोम ११वीं चांदनी आयी है । २०००

चौखुटे गुर्ज बाहर तैसे ही भीतर २००० गुर्ज । बाहर १००० गोल गुर्ज है । मेहरावें सब उपरा-ऊपर आये हैं ।

चारों दरवाजों की चांदनी :- पुखराज के चांदनी से १० भोम ११वीं चांदनी आयी है । बाहर-भीतर चौखुटे गुर्ज यहां तक आये हैं । फिर यहां से चार थम्भ उठे । ऊपर गुम्मट, कलश, ध्वजा, पताका शोभा दे रहे हैं इनकी ऊंचाई पुखराज के चांदनी से १२वीं आयी है ।

चार हार हवेली की चांदनी :- हजार हवेलियां पांच भोम उठकर सब पर एक छत आयी है । इस छात के बाहर भीतर तरफ भोम भर ऊंची दीवार आयी है । हजार गोल गुर्ज यहां तक आये हैं । जिनकी ऊंचाई ६ भोम ७वीं चांदनी है । गोल गुर्जों को भी घेर करके चांदनी आयी है । २००० चौखूटे गुर्ज भी यहां तक आये हैं । सो यहां से चार-चार थम्भ उठकर ऊपर गुम्मट, कलश, ध्वाजा, पताका सब आये हैं । हर एक गुर्ज के बाहिर तरफ कठेड़ा कांगरी आयी है । इनकी ऊंचाई ६ भोम ७वीं चांदनी आयी है । आठ मेहरावें चबूतरे के सो भी यहां तक आये हैं । यहां से थम्भ उठकर ऊपर गुम्मट, कलश ध्वजा, पताका सब आये हैं । १००० अष्ट मेहराबी चबूतरें हैं । इन चौखूटे गुर्जों में तथा गोल गुर्जों में तथा अष्ट मेहराबी चबूतरे के बाहिर तरफ हर एक भोम में छज्जे निकले है । हर एक भोम के चौखूटे गुर्जों से अष्ट मेहराबी चबूतरे पर जा सकते हो । चांदनी पर से भी जा सकते हो । जो ४००० त्रिपोलियां आये हैं । सो हर एक हांस में ४ हवेली है । सो चार रास्ते हुये । इसी को त्रिपोलिया करके कहा है । १००० हांस के ४००० रास्ते हुये ।

आकाशी मोहोल :- पुखराज की ४ लाख गृद चांदनी के मध्य भाग में एक चौरस चबूतरा खजाने के ताल के ऊपर ४४००० कोस का लम्बा-चौड़ा बराबर कमर भर ऊंचा आया है । इसके चारों तरफ चबूतरे से कमर भर नीचे सीढ़ी

उतरी है। ४४००० कोस की चौड़ाई में बाग-बगीचे आये हैं। जिनमें नहरे-फुहारे चेहबच्चा चलते हैं। इस चबूतरा की किनार पर एक दिशा में १३ जगह पर कमर भर की सीढ़ी उतरी हैं। हर एक हवेली के दरवाजे के सामने ४०० कोस की जगह से सीढ़ी उतरी हैं। यहां पर कठेड़ा नही आया है। ऐसी ही हर हवेली के सामने सीढ़ी आयी है। बाकी जगह पर कठेड़ा आया है। ऐसी वनक चारों तरफों आयी है। कठेड़ा से १००० कोस दूरी पर १३ हवेली एक दिशा में आयी हैं। इस प्रकार से १३ की १३ हारें आने से कुल हवेली १६९ आयी हैं। इन हवेलियों के चारों तरफ १००० कोस की रौंस आयी है और कोना की हवेली के कोना पर एक गोल गुर्ज पांच पहल का आया है। १००० कोस का लम्बा-चौड़ा ३००० कोस की गृद आयी है। इन गुर्जों में ५ दरवाजें आये हैं। हवेली की भोमों से मिलान किया है। हवेली की हर भोम से इस गुर्ज में आ जा सकते हैं। ऐसी वनक चारों कोना पर आयी हैं।

लम्बाई-चौड़ाई का हिसाब :- एक दिशा में १३ हवेली आयी है। मध्य की हवेली ३६०० कोस की लम्बी-चौड़ी बराबर है। बाकी १२ हवेली बची सो एक हवेली २८०० कोस की लम्बी-चौड़ी आयी है। ऐसी १२ हवेलियों में १२ त्रिपोलिया आये हैं। एक त्रिपोलिया चार सौ कोस का, तो १२ त्रिपोलिया ४८०० कोस के हुए। दाएं-बाएं की दो रौंस २००० कोस में आयी है। तब सब कोस ४४००० हुये।

एक हवेली :- किनार के मध्य की हवेली ३६०० कोस की लम्बी-चौड़ी बराबर मध्य में ४०० कोस का दरवाजा आया है। दरवाजे के बाहिर रौंस पर दो गुर्ज चौखूटे १३३ कोस के लम्बे-चौड़े बराबर जिनपर चार-चार थम्भ उठकर आकाश तक चले गये हैं। बीच के हिस्सा में १३३ कोस का दरवाजा आया है। दरवाजे के भीतर ४०० कोस का लम्बा-चौड़ा चौक आया है।

सो दाएं-बाएं गुर्जों के पीछे तरफ ऊपर जाने को सीढ़ियां आयी हैं। ऐसी बनक बाकी तीनों तरफों के दरवाजे में आयी है। एक हवेली के तीन तरफ १३३ कोस का दरवाजा, दरवाजे के दाएं-बाएं चौरस चबूतरे १३३ कोस के लम्बे-चौड़े बराबर आये हैं। बड़ा ४०० कोस का जो दरवाजा आया है। दरवाजा के दाएं-बाएं ४-४ मोहल आये हैं। एक मोहल ४००-४०० कोस का आया है। ऐसी वनक हवेली के चारों तरफों आयी है। कोना का मोहल दो तरफ को जवाब देता है। हवेली के भीतर तरफ एक हार थम्भों की आयी है। इसके भीतर कमर भर नीचे वन-बगीचे, नहरें, फुहारें आये हैं। हवेली के तीसरे हिस्से में कमर भर का ऊंचा एक चौरस चबूतरा आया है। चारों तरफ उतरने को सीढ़ियां चबूतरा के किनार पर थम्भ आये हैं। थम्भों के बीच में कठेड़ा आया है। थम्भों के ऊपर मेहरावें जिनमें हिंड़ोले आये हैं। चबूतरा पर गिलम सिंहासन आया है।

एकमोहल :- एक हवेली के एक दिशा में ८ मोहल और एक दरवाजा आया है। उस एक मोहल का ब्यान। एक मोहोल ४०० कोस का लम्बा-चौड़ा बराबर आया है। चारों तरफ मन्दिर आये हैं। भीतर तरफ थम्भ की हार आयी है। तीसरे हिस्सा में कमर भर ऊंचा चबूतरा जिस पर थम्भ मेहरावें और हिंड़ोले आये हैं। मध्य में गिलम सिंहासन सब आये हैं। चबूतरों को घेर करके कमर भर नीचे बगीचे नहरे, फुहारे आये हैं। यह तो एक हवेली ३६०० कोस वाली का हिसाब हुआ। २८०० कोस की जो हवेली है। उसमें चार सौ कोस का दरवाजा, दरवाजे के दाएं-बाएं तीन-तीन मोहोल एक मोहोल ४००-४०० कोस का लम्बा-चौड़ा आया है। यह छोटी हवेली और बड़ी हवेली में कोई फरक नहीं आया है। सब हवेलियों के मध्य में जो हवेली है। सो बड़ी है। इन हवेली के एक दिशा में ६ हवेली बड़ी आयी है। चारों दिशा की २४ और २५ वीं मध्य में हवेली बड़ी है। एक हवेली ३६०० कोस

की है । बाकी सब २८०० कोस की है । बड़ी हवेली के बाहिर तरफ रौंस पर दो चबूतरे हैं । थम्भ की हार नही आयी है और बाकी १२ हवेलियों के सामने दो-दो हार थम्भों की लम्बाई तरफ गयी है । छोटी हवेली की किनार आयी है । जिसमें तीन सन्धे आयी हैं । एक सन्ध १३३ कोस की आयी है । तीन सन्ध के ४०० कोस हुये । बड़ी हवेली की दीवार तक थम्भ आये हैं । परन्तु निशान निकालते समय बड़ी हवेली के सामने एक हार थम्भों की और छोटी हवेलियों के सामने २ हारें दिखाई पड़ती हैं । इन सब हवेलियों की ऊंचाई १००० भोम और ४००००० कोस की होती है । एक रौंस पर २६ चौखूटे गूर्ज और १२ त्रिपोलिया के गूर्ज आये हैं । चारों तरफ ५२ दरवाजें, १०४ चौखूटे गुर्ज, ४८ त्रिपोलिया के गुर्ज, ४ गोल गुर्ज १००० भोम तक उपरा-ऊपर चले गये हैं । नीचे तरहटी में जो पांच पेड़ उठे हैं । सो चारों पेड़ दिशा के पुखराज के चांदनी तक रह गये हैं । पांचवा पेड़ मध्य का जो पानी से भरा हुआ है । सो आकाशी की चांदनी पर जो कमर भर का चबूतरा आया है । उसके नीचे से फूटा है । वहां से पानी निकल कर चांदनी पर आता है ।

आकाशी मोहल की चांदनी :- जब आकाशी मोहल की १००० भोम पूरी हुयी । तब ऊपर एक ही चांदनी आयी है । इस चांदनी के तीसरे हिस्सा में कमर भर का ऊंचा चबूतरा आया है । चारों दिशा में कमर भर की सीढ़ी उतरी है और बाकी में कठेडा आया है । चबूतरे पर गिलम, सिंहासन, कुर्सियां आदि जोगबाई परिपूर्ण है । चांदनी पर बगीचे, नहरें, चेहबच्चे, फुहारे आदि हैं और किनार पर ऊंची भोम भर की दीवार आयी है और बाहिर तरफ १०४ चौखूटे गुर्ज आये हैं । गुर्जो पर थम्भ उठकर गुम्मट, कलश, ध्वजा, पताका आदि आये हैं । इस प्रकार से सब गुर्जो में और ४८ त्रिपोलिया के गुर्जों की चांदनी यहां पर आयी है और गोल गुर्ज कोना के सो यहां तक

आये हैं। घेर करके सुन्दर कांगरी है। मध्य के चबूतरा के कोना में से चांदनी पर बड़ा पानी का पूर कई झरनों के समान निकलता है। सो आकाशी के सब बगीचों में पहुंचाकर पुखराज की चांदनी पर सब बगीचों में पानी पहुंचा कर हजार हांस की मोहलातों में पानी पहुंचा कर पूर्व को पानी चला, सो छज्जा के तले ही तले होकर अर्थात छज्जा के बीच में गुप्त रुप होकर पुखराजी ताल की चांदनी पर होकर ४ धाराओं में होकर पानी २० भोम से पुखराजी ताल में गिरता है। सो शोभा परिपूर्ण दृश्य दिखता है।

पश्चिम की घाटी :- एक पश्चिम की घाटी का ब्यान किया जाता है। इसी प्रकार से उत्तर की घाटी का ब्यान जानना जी। घाटी का चबूतरा ४०० कोस का चौड़ा और ४ लाख कोस का लम्बा आया है। सीढ़ियों का उतार चढाव ६ लाख कोस का आया है। दाएं-बाएं दो रौंसें आयी हैं जिनपर दो वृक्षों की हारें आयी हैं और सामने भी रौंस आयी हैं। इन सीढ़ियों से चढ़कर चबूतरे पर आइये। अब चबूतरे की लम्बाई के ओर एक हांस लिया और चौड़ाई में तो ४०० कोस की जगह है। ४०-४० कोस की रौंस दोनों ओर छोड़कर बीच में ३२० कोस की जगह आयी हैं। इस जगह पर मन्दिर आये हैं। एक मन्दिर ११ कोस के बराबर आया है। चौड़ाई तरफ २९ मन्दिर, लम्बाई तरफ ३६ मन्दिर आये हैं। यह एक हांस का बेवरा है। १००० हांसों में ऐसे ही मन्दिर आये हैं। अब यहां से पश्चिम से पूर्व को चले तो पहली भोम केवल पहले हांस पर आायी है। दूसरे हांस पर दो भोम, तीन हांस पर तीन भोम। इसी प्रकार ज्यों-ज्यों हांस की गिनती ज्यादा होती गयी है। उसी प्रकार भोमें भी बढ़ती गयी। उधर घाटी के पूर्व में पश्चिम से पूर्व तक १००० हांसों में से ८९० हांस तक मन्दिर आये हैं। ११० हांस अर्थात ४४००० कोस की जगह गोल चबूतरा के बीच में बाकी रही। इस जगह की पूर्ती पांचवी भोम के बाद जो छज्जे बढ़े हैं। उन्होने की है। ८९०

हांस के पूर्व तरफ पहला छज्जा ४४ कोस का छट्ठी चांदनी से बढ़ा । तो ४४ कोस में पूर्व तरफ और ४० कोस दाएं-बाएं जो रौंस की जगह थी वहां तक बढ़ा तो चौड़ाई में यहां से ३६ मन्दिर हो गये । पहले २९ आये थे । ४४ कोस के छज्जा पर ११-११ कोस के लम्बे-चौड़े बराबर मन्दिरों की तीन हारें आयी हैं और ११ कोस में छज्जा रहा । छज्जा की किनार ३६ मन्दिर की जगह में ३७ थम्भ आये । फिर इसी प्रकार सातवीं भोम पर फिर इन्ही थम्भों के ऊपर छात आयी है और आगे ४४ कोस का छज्जा बढ़ा । तो अब नीचे जो ४४ कोस का छज्जा था । वहां पर चार हारें मन्दिरों की आ गयी । अब जो ४४ कोस का छज्जा निकला उस पर तीन हारें मन्दिरों की आयी है । आगे ११ कोस का छज्जा चौड़ा जिस पर ३७ थम्भ आये हैं । इसी प्रकार से भोम-भोम पर छज्जे निकलते गये । आगे छज्जा रहा पीछे मोहलातें बनती गयी । इसी प्रकार से सब छज्जे बढ़े । २५० छज्जों के बाद एक लाख कोस पर उन्होंने पुखराज के पेड़ से मिलान किया जो ६६००० कोस का एक ही छज्जा आया है । पेड़ से ८९० हांस तक का अन्तर ८८००० कोस का था । दोनों तरफ से ४४-४४ कोस का छज्जा निकलने से २५० भोम तक २२००० कोस तक जगह घेरी तो बाकी २५० भोम के ऊपर एक छात घाटी की हुयी । ८९० हासों में से २५० हांस कम, क्योंकि भोम-भोम पर हांस कम होता गया तो यहां पर ६४० हांस पर पुखराज अर्थात १४ मेहरावों की चांदनी पर और पूर्व तरफ भी पाट पड़ने से सब एक ही लम्बी-चौड़ी छात आयी है । इसी प्रकार उपरा-ऊपर छज्जा निकलते गये । अन्त ८९० भोम ऊपर जाकर पुखराज और घाटी की छत मिल गई है । सब छत एक हो गई है ।

सीढ़ियों का ब्यान :- एक हांस की चौड़ाई हमारे पास ३२० कोस की है ४०-४० कोस की रौंस आयी है । अर्थात चौड़ाई में २९ मन्दिर आये हैं । आगे छज्जे निकलने से मन्दिर बढ़े है । चार-चार मन्दिर बढ़ जाने से

३७ मन्दिर और ३८ थम्भ आये हैं। ८९० हांस तक चौड़ाई २९ मन्दिर की आयी है अब एक हांस में जो २९ मन्दिर की चौड़ाई है। उसमें केवल १०-१० तो दाएं-बाएं आये हैं। बीच में ९ मन्दिर की खाली जगह बची। यहां पर मन्दिर नही आये हैं। यहां दूसरे हांस के पहली भोम में सब मन्दिर आये हैं। दूसरी भोम में सब मन्दिर नही आये। इसी प्रकार तीसरी हांस में दो भोमों में मन्दिर सब आये हैं। तीसरी भोम में ९ मन्दिर नही आये हैं। इसी प्रकार से हर एक हांस के आखरी भोम में बीच-बीच के ९-९ मन्दिर छूटते गये। हर एक हांस की ९ मन्दिर की खाली जगह पर सीढ़ियां ऊपर चढ़ी। एक हांस ४०० कोस का होने से एक हांस सीढ़ियों का चढ़ाव-उतराव ६०० कोस का आया है। एक कोस के मन्दिर १०० तिनमें एक मन्दिर की सिढ़ियां १०० आयी है। १०० सिढ़ियों के ऊपर एक मन्दिरी चांदा है इस प्रकार एक कोस मे ५०० सीढ़ी और ५० मन्दिरी चांदे आए हैं इसके ऊपर एक कोसी चांदा आया है अब एक हांस में दो सौ कोस में दस लाख सीढ़ी , एक लाख मन्दिरी चांदे और २०१ कोसी चांदे आए हैं। इसके आगे एक हांस में बचे २०० कोस में एक ही चांदा आया है इस प्रकार १००० हांस में एक अरब सीढ़ी, एक करोड़ मन्दिरी चांदे, दो लाख कोसी चांदे और एक हजार दो सौ कोसी चांदे आए हैं।

गुम्मट कैसे आये है :- हर एक हांस के मध्य में ९ मन्दिरों की चौड़ी सीढ़ियां छोड़कर दाएं-बाएं १०-१० मन्दिर की चौड़ी और एक हांस की लम्बी एक छात भोम पर आयी है। उन दस-दस मन्दिरों के दाएं-बाएं बाहरी तरफ ४०-४० कोस का छज्जा आया है। जो नीचे रौंस थी। ४०० कोस की छात के १३ हिस्से किये ३१-३१ कोस की १३ सन्धे आयी हैं। छात पर एक-एक सन्ध में ४०-४० कोस दाएं-बाएं उत्तर-दक्षिण छोड़कर क्योंकि १० मन्दिर के चौडाई के हिसाब से ११० कोस की आयी है। ४०-४० कोस जगह छोड़कर ३० कोस की जगह बीच में बची और पूर्व-पश्चिम ३१ कोस की

जगह छोड़कर इस जगह पर चार थम्भ उठे । ऊपर गुम्मट, कलश, ध्वजा पताका आये हैं अर्थात १३ सन्ध में से एक सन्ध छोड़कर एक गुमट आया है । तो एक हांस पर ६ गुम्मट आये हैं । इस प्रकार से १००० हांस पर ६ हजार गुम्मट आये, दोनों तरफ १२००० गुम्मट आये हैं । इसी प्रकार से उत्तर की भी घाटी शोभायमान है ।

बंगला की तरहटी :- तरहटी भोम भर नीचे जमीन पर आयी है । जिसकी लम्बाई-चौड़ाई एक लाख कोस की आयी है और गृद चार लाख कोस की है बाहिर दो वृक्षों वाली रौंस से एक भोम की ऊंची दीवार उठी । एक दिशा में एक लाख कोस की लम्बी है । जिसमें २५० हांस आये हैं । एक हांस की हद में गोल गुर्ज आये हैं । हांस-हांस के मध्य में दो गुर्जों के मध्य में एक दरवाजा तरहटी में जाने के वास्ते आया है । ऊपर जाने के वास्ते गुर्जो में सीढ़ियां आयी हैं । एक दिशा में २५० दरवाजें आये हैं । परन्तु अधबीच की कुण्ड की जगह (बंगला के पूर्व) गुर्ज नही आये है । दरवाजे के सामने सीढ़ियां उतरी हैं । ४०० कोस की रौंस से कमर भर नीचे वन की रौंस आयी है । हांस-हांस की जगह पर सीढ़ियां उतरी हैं । एक-एक हांस का लम्बा-चौड़ा बराबर बगीचा आया है । मध्य में फीलपाये आये हैं । सो ताल पर ३८ बगीचें आये हैं । हांस-हांस के लम्बे-चौड़े हजार हांस में ३८००० बगीचे आये हैं । मोहोल या बगीचे का ब्यान पुखराज की तरहटी के भांति आया है । बगीचों के आगे ४०० कोस की रौंस । इसके आगे कमर भर ऊंची ४०० कोस की मोहलातों की रौंस आयी है । आगे एक हांस ४०० कोस का लम्बा-चौड़ा बराबर घेर करके १००० मोहलात इस तरह ताल तरफ ३९ मोहलातें आयी हैं । तो हजार हांस को घेर करके ३९००० मोहलातें हुयी । मोहोलों के आगे ४०० कोस की रौंस इसके आगे कमर नीचे ४०० कोस की पाल, इसके आगे कमर भर नीचे १०० कोस की ताल की रौंस

आयी है । दीवार से लेकर यहां तक ३३३०० कोस होते हैं । इतनी ही जगह दूसरी तरफ आयी है इतने ही में ताल ३३४०० कोस का आया है । इस प्रकार से एक किनार से लेकर दूसरी किनार तक एक लाख कोस का हिसाब पुरा हुआ । पुखराज की तरहटी की भांति इसमें भी पूर्व-पश्चिम तरफ मोहलाते कम होयेंगी । इसकी मोहलाते दो भोम की आयी हैं । ऊपर एक ही पूरी छात आयी है ।

बंगलों का चबूतरा :- बाहिर की जमीन से भोम भर का ऊंचा चबूतरा आया है । एक लाख कोस का लम्बा-चौड़ा बराबर चार लाख कोस की गृद आयी है । चारों तरफ कठेड़ा आया है । कठेड़ा के साथ चार सौ कोस की चौड़ी रौंस घेर करके आयी है । इस रौंस के आगे ५ वृक्ष बड़ोवन के, ४ वृक्ष फिलपायों के आगे ५ वृक्ष बड़ोवन के यह १४ वृक्ष हुये । बीच में १३ सन्धे आयी हैं । हर एक सन्ध २५०० कोस की आयी हैं और भीतरी तरफ ४०० कोस की रौंस चारों तरफ घेर करके आयी है । इन वृक्षों और फिलापायों की ऊंचाई एक ही भोम आयी है । परन्तु एक ही भोम ५ भोंम जितनी ऊंचाई आयी है । इन चौदह वृक्षों की मेहरावें चौड़ाई तरफ २५०० कोस की आयी है और लम्बाई तरफ १२५० कोस की सब मेहरावें आयी हैं । बाहिर तरफ चार हारें जो फिलपायों की आयी हैं । पहली हार में २०४, दूसरी में २००, तीसरी में १९६, चौथी हार में १९२ फील पाये आये हैं । सब फिलपाये ७९२ हुये । भीतर रौंस से कमर भर नीचे बची जमीन बंगलो की आयी है । किनार से ३३३०० कोस जगह हुयी । इतनी ही जगह बंगलो के दूसरी तरफ आयी है । चारों दिशा से कमर भर की सीढ़ी बंगलो की रौंस पर उतरी है ।

बगंला की जमीन :- ३३३०० कोस के फिलपाये दाएं तरफ इतने ही बाएं तरफ बीच में ३३४०० कोस की बंगलो की जगह आयी है । पहले १२५

कोस की रौंस आयी जिस पर सीढ़ियां उतरी हैं। आगे ३२० कोस में बंगला आया है। आगे २५ कोस में नहर, आगे ३२० कोस में चेहबच्चा आया है। आगे २५ कोस में नहर, फिर बंगला, फिर नहर, फिर चेहबच्चा इसी प्रकार से ९७ नहर आयी है। जिसके २४२५ कोस हुये। ४८ बंगलों के १५३६० कोस, ४८ चेहबच्चों के १५३६० कोस हुये। सब ३३३९५ कोस हुए। दूसरे हिसाब से बंगलों की जमीन ३३४०० कोस की है। एक कोस बराबर ५ मन्दिर के आये हैं। तब ३३३३३ कोस के सब मन्दिर १६६६०० हुये। पहले एक रौंस ५०० मन्दिर की यह रौंस बन रौंस से कमर भर नीची आयी है। एक नहर १२५ मन्दिर की तो ९७ नहरें १२१२५ मन्दिर की हुयी। एक बंगला १६०० मन्दिर का, तब ४८ बंगला ७६८०० मन्दिर हुये। एक चेहबच्चा १६०० मन्दिर का तो ४८ चेहबच्चा ७६८०० मन्दिर के हुये। बंगले के दूसरे तरफ भी रौंस ५०० मन्दिर की तब कुल १६६७२५ मन्दिर पुरे हुये।

एक नहर :- एक नहर १२५ मन्दिर की कमर भर ऊंची आयी है। जिसमें २५ मन्दिर में नहर। नहर के दाएं-बाएं ५०-५० मन्दिर की पाल आयी है। १६ मन्दिर का बीच में मोहल आया है। मोहलों के ऊपर गुमट, कलश आये हैं। उनकी ऊंचाई एक भोम की आयी है। दाएं-बाएं १७ मन्दिर की जगह आई है जिसके ३-३ हिस्से हुए। दाएं-बाएं दो रौसें बीच में फुलवाड़ी आई है। इसी प्रकार की सब नहरें आयी है।

एक चेहबच्चाः- एक चेहबच्चा १६०० मन्दिर का लम्बा-चौड़ा बराबर आया है। मध्य में ८०० मन्दिर का लम्बे-चौड़े चबूतरे पर ६०० मन्दिर में ताल आया है। यानी चेहबच्चा आया हैं। चेहबच्चा के चारों तरफ १००-१०० मन्दिर की पाल आयी है। इस पाल के चारों दिशा में चार चादें जल के तरफ उतरे हैं। कमर भर के जल चबूतरे पर स्नान करिये। पाल की दूसरी

तरफ चारों दिशा में भोम भर की सीढ़ियां उतरी है । जो बगीचों में आयी हैं । पाल की किनार पर सब जगह कठेड़ा आया है । इस चेहबच्चा के आगे-पीछे घेर कर ४००-४०० मन्दिर के बगीचे आये । इस प्रकार से १६०० मन्दिर की जगह हुयी । इस चेहबच्चा के चारों दिशाओं में चार बगीचें और चार बगीचा कोना के इन बगीचों के वृक्षों की ऊंचाई ३० भोम की आयी है । मन्दिर भर की भोम है । नहरें, फुहारें, चेहबच्चें चलते हैं । ऐसे सब बगीचे आये हैं । ऐसी बनक सब चेहबच्चों की आयी है । चेहबच्चा को घेर करके बारह-बगीचे आये हैं ।

एक बंगला :- एक बंगला की जगह १६०० मन्दिर की आयी है । जिसमें ८०० मन्दिर का लम्बा-चौड़ा चबूरतरा भोम भर का ऊंचा आया है । चारों दिशा से भोम भर की सीढ़ी चबूतरा के ऊपर चढ़ो है । चबूतरा के किनार पर थम्भों की हार आयी है । ५-५- मन्दिर के फासले पर एक दिशा में १६० थम्भ आये हैं । इस प्रकार चारों तरफ ६४० थम्भ आये हैं । थम्भों के बीच में कठेड़ा आया है । १०० मन्दिर की जगह आगे चलकर एक हार मन्दिरों की आई है । इसे दरबार बोला जाता है । मध्य में एक मन्दिर का दरवाजा, दरवाजे के दाएं-बाएं ३००-३०० मन्दिर आये हैं । एक दिशा में ६००, चारों तरफ के २४०० मन्दिर हुये । भीतर एक थम्भ की हार आयी है । इसके भीतर कमर भर का ऊंचा चबूतरा आया है । चारों दिशाओं से कमर भर की सीढ़ी चढ़ी है । चबूतरा के कीनार पर थम्भ आये हैं । ५-५ मन्दिर के फासले पर थम्भों के बीच में कठेड़ा, चबूतरा पर गिलम, सिंहासन, कुर्सियां आदि जोगबाई आयी हैं । श्री राज जी सिंहासन पर, सखियां घेर कर कुर्सियों पर बैठती हैं । बंगलों की एक भोम में मन्दिरों की पांच भोम आयी हैं । भीतर चबूतरा के थम्भ, और मन्दिरों के बाहिर तरफ के थम्भ आये हैं । जिससे बंगला बोला जाता है । मन्दिर की हार भीतर थम्भों की हार इसको बंगलें का मन्दिर कहा जाता है । बंगलों की एक भोम में मन्दिर १२०००

आये हैं । बंगलों के पांचो भोमों के मन्दिरों की संख्या (२५ भोम की) ६०००० हुये । बंगले के चारों तरफ बारह बगीचे आये हैं । इनमें वृक्ष मन्दिर-मन्दिर के फासले पर आये हैं । ऊंचाई भी मन्दिर की आयी है । बंगले के मन्दिरों में इन बगीचों की छत मिली है । हर एक बगीचा की भोम से आकर के चबूतरे पर बैठे श्री युगलस्वरूप के दर्शन मन्दिरों की हर भोम से करिये क्योंकि कि चबूतरे की छत नहीं आयी है । जहाँ बंगलों की चांदनी आयी है । वहीं पर इस चबूतरा पर छात आयी है । इस वास्ते मन्दिरों की २५ भोम से होकर दर्शन कर सकते हैं ।

एक बंगला की चांदनी :- बंगले की पांच भोम के ऊपर ८०० मन्दिर की लम्बी-चौड़ी छात बराबर आयी है । जिस छात पर ६०० मन्दिर का लम्बा-चौड़ा एक चबूतरा कमर भर का ऊंचा आया है। इस चबूतरे के चारों कोना पर चार थम्भ आये हैं । ऊपर गुम्मट, कलश आये । एक बंगला के चारों कोना पर जो चार चेहबच्चा आये हैं । उन चारों चेहबच्चा से फुहारे उठ कर एक दूसरे में पड़ते है । इस प्रकार से चारों तरफ से कमाने आकर कलश की नोक पर लग रही हैं । सब बगीचों के वृक्ष बंगलों की पांच भोम तक रहे । तथा फीलपाये व बड़ोबन के सब वृक्ष इस ऊपर की छात को लग रहे हैं । अपरम्पार शोभा है ।

एक बंगला के बगीचे :- एक बंगला के चारों तरफ बारह बगीचें आये हैं । ८ दिशा में चार कोना पर । एक बगीचा ४०० कोस का लम्बा-चौड़ा बराबर है । हर एक बगीचा के वृक्ष मन्दिर-मन्दिर के फासले पर आये हैं । ऊंचाई भी मन्दिर-२ की आयी है । इन वृक्षों की ऊंचाई में ३० भोमें आयी हैं । बंगलें की ८०० मन्दिर छत तक भोम मन्दिर-२ की आयी है । नहरें, चेहबच्चें, फुहारें आये हैं । ऐसी ही बनक सब बंगलो के बगीचों की आयी है ।

बंगलों की गिनतीः- एक लाईन में ४८ बंगले हैं । ऐसी ४८ हारें आने के

कुल बंगले २३०४ आये । और इतने ही चहेबच्चा आये हैं । फीलपायों में जानवरों के मुख बने है । कहीं हाथी, कहीं शेर, कही घोड़ा इनों के मुखों से पानी तीर के समान निकल कर कोना के चहेबच्चा में पड़ता है । इन सब जगह का पानी तरहटी में जो फीलपाये बगीचों में आये हैं । उनसे उतर कर तरहटी में जाता है । बंगलों के चबूतरा से पुखराज के चबूतरा पर जाना हो तो चेहबच्चा के उत्तर-दक्षिण जो चौड़ी दीवाल है । उस दीवार पर होकर जाइये ।

बड़ी देहलान :- बंगला के पूर्व तरफ पाल जो ३३३०० कोस की आयी है । ताल के तरफ जो ४०० कोस की रौंस आयी है । उस रौंस से लगकर मध्य भाग में पूर्व तरफ देहलान आयी है । सो लम्बाई में अधबीच के कुण्ड के पश्चिम तरफ जो पाल आयी है । उस पाल के जल तरफ जो ७५ कोस की रौंस आयी है । सो रौंस के पश्चिम की कीनार से आकर लगी है । अर्थात् बड़ोबन के वृक्ष फीलपायों के सामने इस देहलान के थम्भ आये हैं । इस देहलान के थम्भों के दाएं-बाएं १२५०-१२५० कोस पर वृक्ष और फीलपाये आये हैं । सो लम्बाई ४३९७३ कोस की हुयी । और चौड़ाई तरफ ८ थम्भ जिन पर ७ मेहरावें आयी हैं । एक मेहराव १२५० कोस की आयी है । तो सात मेहरावों के कोस ८७५० हुये । यह देहलान की चौड़ाई हैं ।

कुण्ड का बयान :- चांदनी के मध्य भाग में १२००० कोस की लम्बी ४०० कोस की चौड़ी देहलान आयी है । बाहरी तरफ थम्भ आये हैं । भीतरी तरफ दीवार आयी है । ऐसी बनक चारों तरफ आयी है । इस दीवार के भीतर तरफ पानी का कुण्ड आया है । ११२०० कोस में कुण्ड है । देहलान की कीनार से चांदनी की कीनार ४४००० कोस दूरी पर आयी है । इस तरह से चारों तरफ दूर कीनार आयी है । देहलान की चांदनी से ४४ कोस का छज्जा चारों तरफ निकला । उस छज्जा पर बाहरी तरफ थम्भ, थम्भों पर

कठेड़ा आया है । इस छज्जे के भीतरी तरफ दीवार । इस दीवार तक कुण्ड का पानी बढ़ा । इस छज्जा की छात से फिर ४४ कोस का छज्जा निकला । इस छज्जा की कीनार पर थम्भ भोम भर ऊंचे, थम्भों के बीच में कठेड़ा आया है । भीतरी तरफ दीवार आयी है । अब ताल कुण्ड का पानी इस दीवार तक आया है । इस प्रकार भोम-२ छज्जा आता गया । पीछे-२ पानी बढ़ता गया ।मानिन्द उल्टी सीढ़ी के, इसी प्रकार २५० छज्जा निकले । तो एक लाख कोस पुरे हुये । तब पुखराज का २५१वां छज्जा निकला । तब बीच में ६६००० का पाट पट गया । पुखराज के चारों तरफ ६६००० का पाट पटा । उत्तर, पश्चिम घाटी, पूर्व पुखराजी ताल और दक्षिण में महाबन के वृक्षों ने मिलान किया हैं । यहां से बंगले व पुखराज की घाटी में जहां चाहो आ जा सकते हैं । अधबीच के कुण्ड में भी जा सकते हो । पूर्व तरफ का छज्जा देहलान के साथ जा मिला है । २५० छज्जों ने ११००० कोस की छाया चांदनी पर डाली है । यहां तक ताल बढ़ा । यहां १ लाख कोस में ताल ३३२०० कोस का हो गया । अब यहां से सीधी दीवार ७३० भोम तक चली गयी है । कोस २९२००० हुये । यहां ताल का बढ़ना बन्द हुआ । अब यहाँ से फिर ४४ कोस का छज्जा निकला भोम भर का ऊंचा छज्जा के पीछे मन्दिर बने । ११ कोस की लम्बी-चौड़ी बराबर, तीन हारें मन्दिरों की आयी । ११ कोस का छज्जा रहा । फिर ४४ कोस का छज्जा इसके पीछे ताल तक की जगह तक मन्दिर बने । इसी प्रकार से आगे-२ छज्जा घेर करके थम्भ पीछे-२ सब जगह मन्दिर ही मन्दिर आये हैं । मध्य में ३३२०० कोस का ताल ऊंचा बराबर जा रहा है । इसी प्रकार से यहाँ से ७३० छज्जा निकले । ७३० भोम के २९२००० कोस हुये । परन्तु नीचे से ३९२००० कोस ऊंचा रहा । यहाँ तक ९८० भोम आयी है । अब ऊपर यहाँ एक ही चांदनी आयी है । ताल खुला है । ताल की जगह छोड़ कर एक ही चांदनी आयी है ।

पुखराजी ताल : नीचे से ऊंचाई ६८० भोम और ३६२००० कोस गृद ४ लाख, लम्बाई-चौड़ाई एक लाख कोस की है । चारों तरफ से ४०० कोस का छज्जा आया है । बाहिर तरफ कठेड़ा आया है । छज्जा से कमर भर सीढ़ी चढ़कर पाल पर जाइये । इसके आगे ४०० कोस की रौंस आयी है । रौंस के आगे ५ वृक्ष बड़ोवन के १०००० कोस में आये हैं । इसके आगे २५०० कोस की सन्ध आयी । बड़ोवन के आगे ७५०० कोस में जबेरों के मोहल आये हैं । नीचे जो फिलपाये आये हैं । उन पर जवेरों के मोहल आये हैं । दो मोहलों के बीच त्रिपोलिया आया है । हर एक हवेलि के चारों दिशा में ८ चबूतरा आये हैं भीतर थम्भों की हार, आगे कमर भर ऊँचा चबूतरा के किनारे पर थम्भ चबूतरे पर गिलम, सिंहासन, कुर्सियां आदि आये हैं । ऐसी वनक सब मोहलों की आयी है । इन जवेरों के मोहलों के आगे २५०० कोस की सन्ध आयी है । आगे १०००० कोस में बड़ोवन के वृक्ष आये हैं । इसके आगे ४०० कोस की रौंस आयी । इन सब हवेलियों की ऊंचाई २० भोम २१वीं चांदनी आयी है । यहाँ रौंस तक ३३३०० कोस होते हैं । पाल की रौंस से ताल की (कुण्ड की) तरफ कमर भर नीचे सीढ़ियां उतरी हैं । १०० कोस की रौंस ताल को घेर करके आयी है । आगे ताल ३३२०० कोस का आया है । ताल के दूसरे तरफ १०० कोस की रौंस आयी है । ताल दोनों रौसों सहित ३३४०० कोस का हुआ । दूसरी रौंस से कमर भर ऊंची पाल आयी है । इस प्रकार से एक लाख कोस का हिसाब पुरा हुआ ।

पश्चिम तरफ देहलान :- पश्चिम दिशा में एक देहलान ३२५०० कोस की लम्बी और ८७५० कोस की चौड़ी आयी है । जिसमें चौड़ाई तरफ ८ थम्भ ७ मेहरावें आयी हैं । एक मेहराव १२५० कोस की लम्बाई तरफ १४ थम्भ १३ सन्धे आयी है । एक सन्ध (मेहराव) २५०० कोस की आई है । ८ थम्भों की १४ हारें या १४ की ८ हारें पूर्व-पश्चिम आयी हैं । इस देहलान के आगे-पीछे ४०० कोस की रौंस आयी है । इस रौंस से जल तरफ कमर

भर की सीढ़ी १०० कोस की रौंस पर उतरी है। रौंस के आगे कमर भर नीचे जल का चबूतरा है जिस पर कमर भर जल आया है। इस देहलान तथा जवेरों के मोहल तथा बड़ोबन के वृक्षों की एक ही छत आयी है। २० भोम की ऊंची है। पश्चिम तरफ पुखराज के छज्जा के नीचे होकर पुखराजी ताल की छत के अन्दर होकर छज्जा पर २० भोम ऊपर से चार चादरों में होकर पानी पुखराजी ताल में पड़ता है। पुखराजी ताल की चांदनी पर नहरे बगीचे नहीं आये हैं। केवल एक नहर पश्चिम की देहलान के थम्भों से उतरी, चारों तरफ पानी पहुंचा कर हर भोम में फिर पूर्व के देहलान के थम्भों में होकर हर भोम में पानी पहुंचा कर बंगला की चांदनी पर आयी है। जहाँ से दो नहरें हुयी एक नहर तो चेहबच्चों द्वारा नीचे उतर कर फीलपायों की मुख से पानी निकलता है। जो बंगलों में आते हैं। फिर यहाँ से फिलपायों द्वारा होकर तरहटी में पानी चला जाता है। दूसरी नहर बंगलों की चांदनी से पुखराज और बंगला के बीच में जो ४०० कोस का चेहबच्चा आया है। उसमें पानी गिरता है। पुखराजी ताल की छत पर जो देहलान आयी है। इस देहलान की जगह पर वन जवेरों के मोहल नहीं आये हैं।

पूर्व की देहलान :- इस देहलान का ब्यान बंगलों के ब्यान में आ गया है क्योंकि देहलान नीचे बंगलों से आ रही है। पूर्व-पश्चिम तरफ जो ८-८ थम्भ आये हैं। जिनमें ७-७ मेहरावें, एक मेहराव १२५० कोस की आयी है। इनके दाएं-बाएं पेड़ १२५० कोस की दूरी पर आये हैं। जिससे एक-एक मेहराव थम्भों और पेड़ों में बनती है। इसी मेहराव में चौखूटे गुर्ज तथा गोल गुर्ज आये हैं। नीचे भी इसी प्रकार की वनक आयी है। पूर्व तरफ आठ थम्भ जो आये हैं। जिनमें ७ मेहरावें आयी हैं। जिसमें ४ नहरे और ३ देहलाने आयी हैं। पुखराजी ताल के पूर्व तरफ जो १०० कोस की रौंस आयी है। सो पानी चार घड़नालों द्वारा होकर रौंस के नीचे

होकर देहलानों की चार मेहरावों में होकर ४ नहरे जाती हैं। नहरों के दाएं-बाएं थम्भ आये हैं। थम्भों में कठेड़ा आया हैं। जल से कमर भर ऊंचा है। लम्बाई तरफ जो थम्भों की हार है। उन थम्भों की पूर्व तरफ १६०० कोस का छज्जा निकला। ऊपर से २० भोम, नीचे से ९८० भोम से। नीचे दूसरा छज्जा १२०० कोस का चौड़ा निकला, और नीचे से ९७९ भोम से, तीसरा छज्जा ८०० कोस का निकला। ऊपर से २२ भोम नीचे से ९७८ भोम होता है। चौथा छज्जा ४०० कोस का चौड़ा ऊपर से २३ भोम और नीचे ९७७ भोम होता है। ऊपर २० भोम तक हर भोम से १६०० कोस का छज्जा निकलता गया है। इन सब छज्जों के तीन तरफ कमर भर ऊंची दीवार उठी है। पुखराजी ताल से ४ नहरों से होकर पानी का पूर आता है। १६०० कोस का छज्जा जो है। सो ४०० कोस की हद में चार फीलपायें आये हैं। यह फीलपायें ४०० कोस के छज्जा तक आये हैं। फिर आगे ४०० कोस की हद में चार फीलपायें आये हैं। यह फीलपाये ८०० कोस के छज्जा को फोड़ कर निकले हैं। फिर आगे ४०० कोस की हद में चार फीलपायें आये हैं। यह फीलपाये १२०० कोस के छज्जा से निकले है। आगे ४०० कोस की हद में चार चादरों (धारों से) पानी गिरता है। सो पानी आकर पहले चार फीलपायों में उतरा ४०० कोस के छज्जा से फीलपायों से निकल पानी अधबीच के कुण्ड में चार चादरों से पानी गिरता है। फिर दूसरे फिलपायों से पानी उतर कर ८०० कोस के छज्जा से फीलपायों द्वारा पानी निकल के अधबीच के कुण्ड में चार चादरों से होकर पानी गिरता है। इसी प्रकार तीसरे फीलपायों द्वारा पानी उतर कर १२०० कोस के छज्जा के फीलपायों से चार चादरों से पानी गिरता है। चौथा चार फीलपायों से १६०० कोस के छज्जा से भी पानी चार चादरों में पड़ता है। इस तरह १६ चादरन द्वारा पानी २ लाख कोस ऊपर से गिरता है। सुन्दर गर्जना होती है। इन छज्जों की उल्टी सीढ़ी मालूम पड़ती है।

ऊपर चांदनी सबकी एक हो गयी है। पुखराज, बंगला के चारों तरफ महावन के वृक्ष आये हैं। १००० भोम ४००००० कोस के ऊंचाई आयी है।

चाँदनी :- जवेरों के मोहलातों की २० भोम २१वीं चाँदनी आयी है। दाएं-बाएं जो वृक्ष आये हैं। उनकी भी भोमें पड़कर इस चांदनी के बराबर मिली है। जिससे चांदनी वन सहित ३३००० कोस की आयी है। इतनी दूसरी तरफ आयी है। मध्य में तालाब आया है। पुखराज से जो छज्जा निकला सो यहाँ चांदनी से आ लगा है। महावन की छत की चांदनी से मिलान किया है। जिससे हम पुखराज के ऊपर आसानी से जा सकते हैं।

अधबीच कुण्ड की तरहटी :- बाहर कमर भर ऊंची रौंस ५०० मन्दिर की चौड़ी जिस पर दो हारें वृक्षों की आयी हैं। इस रौंस के आगे भोम भर ऊंची दीवार आयी है। ऐसी दीवार चारों तरफ घेर करके आयी है। दीवार की लम्बाई ३३३०० कोस की आयी है। जिसमें हांस-२ के अन्तर पर गोल गुर्ज आये हैं। गुर्जों से सीढ़ी चबूतरे पर जाने के वास्ते आयी है। दो गुर्जों के मध्य में दरवाजा आया है। इस दरवाजे के आगे तरहटी में जाने वास्ते सीढ़ियां भोम भर की आयी है। सो सीढ़ियां ४०० कोस की रौंस पर उतरी है। इस रौंस से कमर भर नीचे ४०० कोस की चौड़ी मोहलात की रौंस आयी है। इसके आगे ४०० कोस का एक मोहोल आया है ऐसे दस मोहल आये हैं। इसके आगे ४०० कोस की रौंस आयी है। इस रौंस के आगे कमर भर नीचे की रौंस ४०० कोस की चौड़ी आयी है। इसके ४०० कोस का लम्बा-चौड़ा बगीचा आया है। ऐसे ही कुण्ड की तरफ ११ बगीचे आये हैं। ये बगीचे तथा मोहलाते किस प्रकार आये हैं। इसका ब्यान पुखराज की तरहटी के ब्यान में पढ़ लेना। ११वें बगीचे के आगे कमर भर ऊंची ४०० कोस की चौड़ी बगीचे की रौंस आयी है। इस रौंस के आगे कमर भर ऊंची ४०० कोस की चौड़ी पाल आयी है। इस पाल से कमर भर नीचे

२५० कोस की चौड़ी ताल की रौंस आयी है। यहाँ तक किनारे से लेकर ११०५० कोस हुये। ११२०० कोस में ताल और ताल के आगे ११०५० कोस की जगह पहले की भांति आयी है। ताल के चारों तरफ ५० कोस का जल चबूतरा आया है। जिस पर कमर भर ऊंचा जल है। रौंस से चारों दिशा में सीढ़ियां जल चबूतरे पर उतरी है। जिससे लम्बाई-चौड़ाई ३३३३३ कोस की आई है एक दिशा के हांस ८३ होते हैं। चारों दिशा के ३३२ हांस हुये। एक हांस की जगह में सीढ़ियां उतरी है। बंगला और अधबीच के कुण्ड के बीच में दीवार आयी है। सो दीवार में हांस-हांस की जगह पर दरवाजे बने हैं। सीढ़ियों की रौंस से चढ़कर के दरवाजों में होकर बंगलों की तरहटी में सीढ़ियों की रौंस पर चले जाइये। इस तरहटी के मोहलों की ऊंचाई दो भोम आयी है।ऊपर छत सब एक हो गयी है। पूर्व-पश्चिम नहर होने के कारण पुखराज की तरहटी की भांति कुछ बगीचा व मोहोल कम हो गये हैं। तरहटी की छत ३३३०० कोस की लम्बी-चौड़ी आयी है।

कुण्ड का चबूतरा :- बाहिर की रौंस से भोम भर का ऊंचा ३३३०० कोस लम्बा-चौड़ा बराबर आया है। चारों तरफ कठेड़ा शोभायमान है। ११९५० कोस की पाल एक तरफ है। जिसका बयान ७५-७५ कोस की दोनों तरफ पाल की रौंस आयी है। इसके बीच में ११०००कोस के मध्य में चार फीलपाये। फीलपायों के दाएं-बाएं ५-५ वृक्ष बड़ोवन के आये हैं। इनकी ऊंचाई पांच भोम की आयी है। वृक्षों और फीलपायों की चौड़ाई में १३ सन्धे आयी है। एक सन्ध ८४६ कोस की होती है। इस प्रकार की वनक दूसरी तरफ भी आयी है। दोनों तरफ पालों के २२३०० कोस होते हैं। ११००० कोस मध्य में जगह बची। मध्य की जगह का बयान इस प्रकार है। ७५ कोस की पाल कीरौंस आयी है। इसी प्रकार दूसरी तरफ भी आयी है। पाल की रौंस से कमर भर की सीढ़ी उतरी है। बाकी जागा पर कठेड़ा है। बगीचा की १०० कोस की रौंस के आगे २८ नहरों की २८ हारें आयी

हैं । नहरों के कोना पर चेहबच्चा आये हैं । चेहबच्चा के मध्य भाग में फीलपाये आये हैं । २८ की २८ हारें आने से ७८४ थम्भ हुये । चार नहरों के बीच में एक बगीचा ४०० कोस का लम्बा-चौड़ा बराबर आया है । इसी प्रकार से २७ बगीचों की २७ हारें आयी हैं । कुल ७२९ बगीचे हुये । मध्य में तीन हांस का लम्बा-चौड़ा कमर भर ऊंचा चबूतरा आया है । चारों दिशा में चबूतरा से सीढ़ियां उतरी हैं । चबूतरा के किनार पर १२ थम्भ आये हैं और घेर करके कठेड़ा आया है । इस चबूतरा के मध्य भाग में एक हांस का लम्बा-चौड़ा स्तून आया है । स्तून के चारों तरफ ४०० कोस की परिक्रमा आयी है । चारों दिशा से चार रास्ते बगीचों से गये हैं । बगीचे कमर भर नीचे आये हैं । सब नहर कमर भर ऊंची है । चार रास्ते १०० कोस के चार रौसों के मुताबिक जो रास्ते निकले हैं सो रास्ते भी नेहरों के ऊंचाई के मुताबिक आये हैं । इन्ही रास्तों पर कमर भर की सीढ़ियां चबूतरे से उतरी है । सो इस चबूतरा की ऊंचाई के चारों तरफ पाल आयी है । इसके अनुसार ऊंची आयी है । इस चबूतरा के चारों दिशा से चार नहरें निकली हैं । जिससे सब बगीचों में पानी आता है । इसी प्रकार की ५ भोम तक उठी । हर भोम में इसी प्रकार नहरे, रौसें, चबूतरे, फुहारे, स्तंभ सब जोगवाई है । बड़ोवन के वृक्ष व फीलपाये भी घेर करके आये हैं । इन वृक्षों की पांच भोम आयी है । इसके ऊपर दूसरी बनक चली । इस अधबीच कुण्ड के पश्चिम तरफ जो देहलान आयी है । पूर्व-पश्चिम इसकी चौड़ाई में आठ थम्भ आये हैं । ७ मेहरावें आयी है । एक मेहराव १२५० कोस की होती है । इसके दाएं-बाएंएक-एकसन्धआयी है सो सन्ध भी १२५० कोस की है । इस सन्ध पर एक मेहराव आयी है । देहलान के थम्भों और बड़ोवन के वृक्षों पर इन ११२५० कोस में वन और फीलपाये नही आये है और लम्बाई तरफ तो फीलपाये वृक्षों से मिलते हुये गये है । ८४६ कोस की मेहरावें आयी है । भीतरी तरफ पाल की रौंस पर दाएं-बाएं की मेहराव में एक चौखूटा गुर्ज

और दाएं-बाएं गोल गुर्ज आया है । इनकी भोम भी मिलती जाती है ।

पांच भोम ऊपर :- मध्य भाग में तीन हांस का लम्बा-चौड़ा कमर भर ऊंचा चबूतरा आया है । चबूतरा के चारों तरफ १२ थम्भ, कठेड़ा और चारों दिशा में सीढ़ियां उतरी हैं । ४०० कोस की परिक्रमा भी आयी है । नीचे की भोम में होकर पानी का स्तून थम्भ जो आया है सो यहां चबूतरे के नीचे से फूटा है जिससे बेसुमार पानी का पूर निकला । जिस कारण से १०८०० कोस में पानी का ताल हुआ । इसकी गहराई नाभी तक आयी है । इस ताल में २८ थम्भों की २८ हारें आयी हैं । सब स्तून ७८४ हुये । सो सब थम्भ पानी में डूबे हुये हैं । मध्य के चबूतरा पर कुछ थम्भ कम होयेंगे । परन्तु उसका हिसाब नही आया है। अब इस ताल के चारों तरफ १०० कोस की रौंस आयी है । इस रौंस से हाथ लगता पानी है । जल तरफ कठेड़ा आया है । इस रौंस से ऊंची कमर भर पाल आयी है । (१११५० कोस की पाल) ब्यान जल की रौंस से कमरऊंची ७५ कोस की चौड़ी रौंस किनार पर कठेड़ा आया है । पाल पर ५ वृक्ष मधुवन के जिसमें चार सन्ध आयी है । एक सन्ध ८४६ कोस की है । सब जगह ३३८४ कोस की हुयी । आगे एक सन्ध ८४६ कोस की है । इस सन्ध ऊपर मेहराव आयी है । फीलपायों की मोहलात और बड़ोवन के वृक्षों पर यह मेहराव आयी है । २५३८ कोस की फीलपायों की मोहलात इस वास्ते कहा है । कि इसके नीचे फिलपायें आये हैं । यह मोहलात मानो चौरस हवेली के । हर एक हवेली के आगे ८४६ कोस की सन्ध आयी है । इसके आगे ५ मधुवन के वृक्ष आये है । जिसमें चार सन्धे आयी । एक सन्ध ८४६ कोस की, चारों की ३३८४ कोस की जगह हुयी । आगे ७५ कोस की पाल रौंस है । पाल रौंस की किनार पर चारों तरफ कठेड़ा शोभायमान है । यहां तक कोस १११५० हुये । इतने ही कोस दूसरी तरफ आये हैं । ये फीलपाये के मोहल या मधुवन के वृक्ष तीन तरफ की पाल पर आये हैं । दक्षिण, पूर्व, उत्तर तरफ आये हैं पश्चिम

तरफ नही आये । ताल के सामने ११२५० कोस की हद में देहलान आयी है । दाएं-बाएं मोहलात वृक्ष आये हैं । बंगलों की चांदनी से देहलान द्वारा होकर चले आइये । देहलान से निकलकर ७५ कोस की रौंस उलंघकर आगे कमर भर सीढ़ी उतर १०० कोस की रौंस पर आकर आगे तीन सीढ़ी उतर कर जल चबूतरे पर स्नान करिये । यहां से सब जोगबाई एक भोम उठकर ऊपर छत पड़ गयी । स्तून को छोड़कर इस सातवीं चांदनी पर वही नीचे वाली सब वनक आयी है । कुछ जरा भी अन्तर नही है । यह वनक जोगवाई सब उपरा-ऊपर ४९५ भोम तक गयी है । हर एक भोम के छज्जा कठेड़ा सब दिखाई देते हैं । तरहटी के चबूतरा से ५०० भोम ऊंची चांदनी आयी है ।

खास मोहोल :- ५०० भोम की चांदनी पर बाहरी तरफ कठेड़ा घेरकर आया है । आगे ७५ कोस की रौंस, आगे ५ वृक्ष बड़ोवन के सन्धे चार, एक सन्ध ८४६ कोस की है । चारों सन्ध ३३८४ कोस की आयी है । आगे ८४६ कोस की सन्ध के आगे खास मोहल (फीलपायों की मोहलात) २५३८ कोस में आयी है । एक मोहल के बाहरी किनार पर थम्भ, आगे तीन मन्दिर साथ-साथ में आये, आगे थम्भों की हार, इस प्रकार से दूसरी तरफ । चार मोहल कोना पर एक मध्य में आयेगा । एक मोहल के मन्दिर ९ आये चार दरवाजे चार दिशा में, ५ मोहल, एक मध्य में और ४ कोना पर है इसी प्रकार से पांचो मोहल आये हैं । आगे ८४६ कोस की सन्ध आगे बड़ोवन के ५ वृक्ष आये । वृक्षों के आगे ७५ कोस की रौंस आयी है । यहां तक जगह सब १११५० कोस की हुयी । इसी प्रकार से दूसरी पाल पर आयी है पाल से कमर भर नीची रौंस १०० कोस की ताल के चारों तरफ घूमी है । तीन सीढ़ी उतर तरफ जल चबूतरे पर कमर भर पानी में स्नान करिये । खास मोहल की पांचवी चांदनी आयी है । चाँदनी की चौड़ाई १११५० कोस की

आई है लम्बाई चारों तरफ घेर करके आयी है। चांदनी के बाहरी चारों तरफ छज्जे निकले है। पूर्व खास मोहल की चांदनी पर बैठिये और पश्चिम तरफ देखो तो ५०० भोम ऊपर देहलान ८७५० कोस की चौडी चली गयी है। देहलान के तीनों तरफ छज्जा निकले हैं। दाएं-बाएं छज्जा के नीचे गोल गुर्ज तथा चौरस गुर्ज लगे हुये हैं। देहलान की हर एक भोम में ऐसी ही वनक आयी है। ४८० भोम से १६ चादरों में पानी अधबीच के कुण्ड में पड़ता है। इस ताल से ७८४ स्तूनों द्वारा पानी नीचे उतरता है। सब जल अधबीच कुण्ड के चबूतरा पर आ करके नलो द्वारा पानी तरहटी में पहुंचता है। तरहटी का सब पानी नहर में जाता है। नहर पूर्व तरफ चली जाती है।

ढ़पो चबूतरा की तरहटी :- बाहर की जिमी से कमर ऊंची रौंस आयी है। जिसपर दो हारें वृक्षों की आयी हैं इस रौंस के साथ लगकर भोम भर ऊंची दीवार उठी १११०० कोस की लम्बी है। जिसमें ४०० कोस पर गोल गुर्ज आये हैं। जिन के दोनों तरफ से ऊपर जाने को सीढ़ियां आयी हैं। दोनों गुर्जों के मध्य में दरवाजा अन्दर तरहटी में जाने के वास्ते आया है। जो १११०० कोस की लम्बी दीवार चारों तरफ घूम करके आयी है। चारों तरफ इसी प्रकार की शोभा आयी है। जिससे तरहटी १११०० कोस की लम्बी-चौड़ी और दो भोम गहरी आयी है। एक भोम ऊंची दीवार एक भोम जमीन के अन्दर आयी है। जिसके एक तरफ के हांस २८ होते हैं। चारों तरफ के हांस ११२ होते हैं। सबसे पहले दीवार के आगे भोम भर नीचे ४०० कोस की रौंस सीढ़ियों वाली आयी है आगे कमर भर नीचे मोहलातों की रौंस १०० कोस की आयी हैं। आगे ४०० कोस का लम्बा-चौड़ा मोहोल आया है। ऐसे तीन मोहल आये हैं। इसके आगे कमर भर नीचे बगीचों की रौंस आयी है। आगे हांस-हांस के लम्बे-चौड़े तीन बगीचे आये हैं। बगीचों के मध्य भाग में फीलपायें आये है। आगे १०० कोस की वन की रौंस

आयी है । आगे कमर भर ऊंची ४०० कोस की पाल आयी है । पाल से कमर भर नीचे ताल की रौंस १०० कोस की घेर करके आयी है । इससे कमर भर सीढ़ि उतर कर ५० कोस के जल चबूतरे पर स्नान करिये । पूर्व-पश्चिम नहरों के आने के कारण कुछ मोहलातों व बगीचों की कमी आ गयी है । जैसे पुखराज की तरहटी में आयी है । किनार से यहां तक ३७०० कोस हुये । ३७०० कोस में ताल आया । आगे ३७०० कोस में बाग-बगीचे पहले के भांति आये हैं । इस प्रकार से १११०० कोस में तरहटी आयी है और ढ़पो चबूतरा व अधबीच कुण्ड की जो दीवार आयी है उसमें हांस-हांस में दरवाजे आये हैं । जिससे आ जा सकते हैं । इन मोहोलों की दो भोमें आयी है । मोहालों और बगीचों का ब्यान पुखराज के बगीचों, मोहोलों को देख लेना । ऊपर १११०० कोस की लम्बी-चौड़ी छत आयी है । इस छात के तीन तरफ ऊपर कठेड़ा आया है । चौथी तरफ अधबीच कुण्ड के मोहल आये हैं । ढ़पो चबूतरा एक भोम ऊंचा १११०० कोस लम्बा-चौड़ा जिसके दोनो बाजू उत्तर-दक्षिण बड़ोवन के वृक्षों ने छत्री बांधी है । चबूतरे पर सिंहासन, कुर्सियां शोभायमान है ।

मूलकुण्ड की तरहटी :- यह ढ़पो चबूतरा के तीसरे हिस्सा में ३७०० कोस में आयी है । बाहिर कमर भर ऊंची रौंस, जिस पर दो वृक्षों की हारें आयी है । रौंस के भीतरी तरफ भोम भर की ऊंची दीवार आयी है । जिसके हांस-हांस में गुर्ज तथा दो गर्जों के मध्य में दरवाजा आया है । दरवाजे के आगे भोम भर की सीढ़ियां आयी हैं । ऐसी बनक चारों तरफ आयी है । सीढ़ियों वाली ४०० कोस की रौंस के आगे कमर भर नीचे १२-१/२ कोस की मोहलातों की रौंस आयी है । इसके आगे ४०० कोस का एक मोहल आया है । इस मोहल के आगे १२-१/२ कोस की चौड़ी मोहलातों की रौंस आयी है । इसके आगे कमर भर नीचे १२-१/२ कोस की बगीचों की रौंस आयी

है । इसके ४०० कोस का लम्बा-चौड़ा बगीचा मध्य में फिलपाये आये हैं । इसके आगे १२-१/२ कोस में बगीचों की रौंस आयी है । किनार से लेकर यहां तक १२५० कोस हुये । इतनी जगह दूसरी तरफ आयी है । बीच में १२०० कोस का लम्बा-चौड़ा कुण्ड आया है । जो यहां खुला नही है । कुण्ड के चारों तरफ की कोट दीवार दो भोम तरहटी की जमीन से ऊपर जाकर चांदनी पर कुण्ड बना है । इस कुण्ड के चारों तरफ १२५० कोस की चांदनी आई है । इस कुण्ड के चारों दिशा में चार चांदे आये हैं । चांदे से सीढ़ियां जल चबूतरे पर उतरी हैं । कुण्ड के चारों तरफ कठेड़ा आया है । पश्चिम तरफ का कठेड़ा तो ढ़पो चबूतरा का है । कुण्ड की तीन भोमें आयी हैं । एक भोम तरहटी की जमीन से भोम भर नीचे की है । दूसरी तरहटी की बाहिर की जमीन के बराबर, तीसरी बाहिर जमीन से भोम भर ऊंचा जो चबूतरा आया है । क्योंकि कुण्ड चबूतरे पर खुला है । दूसरी भोम से कोट फूटा है । अर्थात् दूसरी भोम की पूर्व दीवार पर ४०० कोस की चौड़ी मेहराव आयी है । इसी मेहराव से पानी निकलता है । यही यमुना जी हैं । एक भोम ऊंची दीवार (तीसरी भोम) इसी मेहराव पर आयी है । मध्य की ४०० कोस की मेहराव से नहर जाती है । दांए-बांए ४००-४०० कोस की जगह आयी है । सो तरहटी की जमीन से दो पाले उठी । यह पाले उन तीन भोमों में से दूसरी भोम पर उठी । ४०० कोस की चौड़ी और १२०० कोस की लम्बी मध्य भाग में नहर जाती है । दाएं-बाएं जो पाल उठी है । उसके दो-दो भाग हुये । २०० कोस में रौंस और २०० कोस में पाल यही बनक दूसरी तरफ आयी है यह पाल बाहिर की जमीन से कमर भर ऊंची आयी है । मूलकुण्ड के तीनों तरफ ९-९ मेहरावें आयी हैं । पूर्व तरफ जो ९ मेहरावें आयी हैं । सो मध्य की ४०० की मेहराव से श्री यमुना जी निकल रही हैं । दाएं-बाएं की मेहराव में रौसें और पालें आयी हैं । तो तीन मेहरावों के सामने श्री यमुना जी मानी गयी है । बाहरी रौंस पर दो वृक्षों की हारें आयी हैं

जिनकी ऊंचाई दो भोम की आयी है । सब वृक्षों की डाली कुण्ड के ऊपर १०० कोस तक आयी है । इसी तरह से दूसरी तरफ भी आयी है । पुखराज के मध्य पेड़ से लेकर यहां मूल कुण्ड की पूर्व किनार तक २१५२०० कोस होते है ।

मूलकुण्ड से मरोर तक :- मूल कुण्ड के पूर्व तरफ ९ मेहरावें आयी हैं । एक मेहराव ४०० कोस ५०० मन्दिर की आयी है मध्य की मेहराव के सामने २५० मन्दिर चौड़ी रौंस आयी है । श्री यमुना जी के ऊपर इस रौंस के पूर्व तरफ जल के अन्दर ५ थम्भ आये हैं । भोम भर नीचे से, इन थम्भों पर चार मेहरावें आयी हैं । इन घड़नालों से होकर श्री यमुना जी पूर्व तरफ जाती है । दाएं-बाएं मेहरावों के सामने २५० मन्दिर की रौंस यमुना जी के ऊपर । इस रौंस से कमर भर ऊपर २५० मन्दिर की पाल आयी है । इसी प्रकार से दूसरी तरफ आयी है । मूल कुण्ड के तीन मेहरावों के सामने श्री यमुना जी आयी है । पाल के दोनों तरफ ७५० मन्दिर की वन रौंस या पुखराजी रौंस आयी है जमीन से कमर भर ऊंची पाल से कमर भर नीची आयी है । पुखराजी रौंस ५०० मन्दिर की चौड़ी जिसके दोनों किनार पर दो वृक्ष ५०० मन्दिर दूरी पर और लम्बाई में २५०-२५० मन्दिर पर होकर पुखराज से हौजकौसर तालाब को गये हैं । इन वृक्षों की ऊंचाई दो भोम की आयी है । पाल के दोनों किनारों पर थम्भों की हारें आयी हैं । लम्बाई तरफ २५० मन्दिर के फासले पर थम्भ आयें है । यह थम्भ मरोर तक गये हैं । इन्ही थम्भों पर छत आयी है । मूल कुण्ड की छत के बराबर पाल के दोनों तरफ थम्भों के बीच में कठेड़ा आया है । ५००-५०० मन्दिर के दूरी पर पाल के दोनों तरफ सीढ़ी उतरी सो सीढ़ी उतर कर २५० मंदिर की रौंस पर आइये । रौंस से कमर भर सीढ़ी उतर कर जल के चबूतरा पर जाकर स्नान करिये । यह चबूतरा १२५ मन्दिर का चौड़ा आया है । इस प्रकार की वनक रौंस के बाहिर तरफ पाल के सामने से सीढ़ियां उतरी हैं । पाल की छात के दाएं-

बाएं कठेड़ा आया है। पाल की चांदनी के तीसरा हिस्सा अर्थात ८३ मन्दिर के हद पर चार थम्भ उठे ऊपर गुम्मट, कलश, ध्वजा, पताका वेरखे फहरा रहे हैं। यह एक देहुरी हुयी। पहली देहुरी मूल कुण्ड के साथ लगकर आयी है। ऐसी दस देहुरी मरोर तक पाल पर गयी हैं। १० देहुरियों में १० सन्धे आयी हैं। मरोर पर तो मोहल आयेगा। पाल से २५० मन्दिर दूरी पर जो वृक्षों की हारें आयी है। सो इनकी डालें इन देहुरियों को उलंघकर श्री यमुना जी में गयी हैं। श्री यमुना जी के जल चबूतरे तक गयी हैं। ऐसी वनक दूसरी तरफ पाल पर आयी हैं। देहुरियों के सामने देहुरी सीढ़ियों के सामने सीढ़ियां थम्भों के सामने थम्भ आये हैं।

आधी ढ़पी :- पुखराज के पांचवे पेड़ के मध्य से लेकर मूलकुण्ड तक २१५२०० कोस होते हैं। मूल कुण्ड से मरोर तक २३४८०० होते हैं। इसका आधा ११७४०० कोस तक मूल से ढ़पी हुयी हैं। श्री यमुना जी के दाएं-बाएं पाल के थम्भों पर १००० मन्दिर की मेहराव आयी हैं। मूल कुण्ड तथा पाल और यमुना जी तक एक छत आयी है। इस यमुना जी की छात पर पांच देहुरी पाल की देहुरी से मिलती हुयी आयी है। जितनी पाल की देहुरी लम्बी-चौड़ी आयी है। इतनी ही मध्य की देहुरी आयी है ११७४०० कोस के आगे ११७४०० तक यमुना जी खुली है। यहां पर यमुना जी पर छात नही आयी है। दोनों तरफ पाल पर थम्भ व छात तथा देहुरीयां आयी हैं इस प्रकार से मरोर तक २५ देहुरी आयी हैं। यमुना जी के मरोर पर पाल पर चार मोहल आये हैं। जिनमें चार हिंड़ोले शोभायमान हैं।

मोहल और चबूतरे :- श्री रंगभवन की तरफ जो पाल आयी है। सो पाल के कोना पर एक मोहल आया है। पाल के तीसरे हिस्सा में ८३ मन्दिर का लम्बा-चौड़ा बराबर एक सीढ़ी ऊंचा चबूतरा आया है। उस चबूतरा के

मध्य भाग में एक मन्दिर का दरवाजा आया है। दरवाजे के दाएं-बाएं ४१-४१ मन्दिर आये हैं। इसी प्रकार चारों तरफ मन्दिरों के बीच में थम्भों की एक हार आयी है। इसके भीतर कमर भर का ऊंचा चबूतरा चारों दिशा में सीढ़ियां उतरी हैं। चबूतरे की किनार पर थम्भ के मध्य में गिलम सिंहासन ऊपर एक सब छात आयी है। छत के चारों तरफ कठेड़ा आया है। यह एक मोहल हुआ। केल पुल के वायब्य कोना के साथ ५ मोहल आये है

५ मोहलों के बीच में ४ सन्धे आयी हैं। सन्ध के मध्य भाग में पाल के तीसरे हिस्से में पाल से कमर भर ऊंचे ८३ मन्दिर के लम्बे-चौड़े बराबर चबूतरे आये हैं। चबूतरा के किनार पर कठेड़ा तथा कमर भर की सीढ़ियां उतरी है। चबूतरे पर गिलम, सिंहासन, कुर्सियां सब आयी है। चार सन्धो में चार चबूतरे आये। इसी प्रकार से दूसरी पाल पर भी आये हैं। दौनों तरफ के मोहलों पर मेहरावें आयी हैं। मेहरावों में हिंडोले आये हैं। दो हिंड़ोले जल पर और दो हिंडोले पाल पर आये हैं। चार हिंड़ोलों की ताली जल पर पड़ती है। मरोर से श्री यमुना जी के मध्य तक केल पुल के वायब्य कोना तक २२५० मन्दिर होते है। जिसका ब्यान २५० मन्दिर की आधी यमुना, २५० मन्दिर की रौंस, २५० मन्दिर की पाल, २५० मन्दिर वन रौंस, ५०० मन्दिर की पुखराजी रौंस, २५० मन्दिर की रेती, ५०० मन्दिर में महावन आया है। बड़ोवन के वृक्षों की ड़ालियां जल चबूतरे तक गयी हैं। जिसकी ऊंचाई दो भोम की और पुखराजी रौंस पर आये हैं। १ मन्दिर=१०० कोस, २२५० मन्दिर = २२५००० (सवा दो लाख कोस)।

केलपुल :- श्री यमुना जी की जमीन पर ११ थम्भों की ११ हारें उठी। सो भोम भर उठकर श्री यमुना जी की रौंस के बराबर छत आ गयी है। यह सब थम्भ एक भोम पानी में डूबे हैं। ११ थम्भों पर १० मेहरावें आयी हैं। एक मेहराव ५० मन्दिर की आयी है। यमुना जी चार धारा में होकर

आ रही है। अब यहाँ से १० घड़नालों द्वारा पानी दक्षिण तरफ दस धाराओं में होकर पानी गया है। अब इस पुल के ऊपर पांच भोमें आयी हैं। इस थम्भों की छत से फिर थम्भ उठे। ११ की ११हारें कुल थम्भ १२१ हुये जिसमें १०० चौक आये हैं। मेहरावें २२० आयी हैं। इन्ही मेहरावों में २२० हिंडोले आये हैं। यह पहली भोम में आये हैं। उत्तर-दक्षिण किनार पर कठेड़ा आया है। जब यह थम्भ भोम भर उठे तो छात पड़ गई। तो छत से ५० मन्दिर (अर्थात् दूसरी भोम से) का छज्जा चारों तरफ निकला जिस छज्जा की किनार पर थम्भ आये हैं और थम्भों के बीच में कठेड़ा आया है। दूसरी भोम से तो छज्जा के थम्भों सहित १३ की १३ हारें थम्भों की आयी हैं। छज्जा की मेहराव में हिंड़ोले नही आये हैं। मेहराव चौक तो आये हैं। यह मेहराव चौक छज्जा के हैं। इस वास्ते गिनती नही किया गया है। ऐसी बनक उपरा-ऊपर चार भोम तक आयी है। पुल की ऊंचाई पांच भोम छठी चांदनी आयी है। पांचो भोम के ५०० चौक ११०० मेहरावें और ११०० हिड़ोलें आये हैं। चांदनी पर चारों तरफ कठेड़ा आया है। मध्य में गिलम, सिंहासन आदि शोभायमान है। पांच भोम की ५ छाते दिखाई देती हैं। पुल के सामने पश्चिम तरफ मधुवन आया है। जिसकी ऊंचाई ५ भोम की आयी है। चौड़ाई में ५ वृक्ष आये हैं। वन की रौंस पर बड़ोवन के दो वृक्ष जो दो भोम के आये हैं। वे पुल के सामने ५ भोम के आये हैं। हर घाटों के पेड़ों से मिलते हुये चले जायेंगे। पूर्व तरफ भी इसी प्रकार मधुवन आया है। जिसकी ऊंचाई ५ भोम, चौड़ाई ५०० मन्दिर की आयी है।

बड़ोवन के वृक्ष :- केलपुल के नैरित्य कोना के सामने पाल पर बड़ोवन के ५ वृक्ष आये हैं। पाल २५० मन्दिर की चौड़ी है। जिसमें २५-२५ मन्दिर की जगह दाएं-बाएं रही। बीच में २०० मन्दिर की जगह में ५ वृक्ष आये

हैं । जिसमें चार सन्धे आयी हैं । एक सन्ध ५० मन्दिर की आयी है । एक घाट ५०० मन्दिर का चौड़ा आया है । तो घाट के सामने पाल पर ११ वृक्ष लम्बाई में और ५ वृक्ष चौड़ाई में हैं । जिसमें ४० चौक ५०-५० मन्दिर के आये हैं । दूसरे घाट के सामने ११ वृक्षों की ५ हारें आयी हैं । ११ वां वृक्ष दोनों घाटों में जवाब देता है । गिनती में १० की ५ हारें आयी हैं । चौक तो १० की चार हारे आने से ४० हुये । इस प्रकार से हर घाट में ४० चौक आये हैं । तो ६ घाटों में लम्बाई तरफ ६१ वृक्ष । ऐसी ही ५ हारें आयी हैं । तो सब वृक्ष ६ घाटों के सामने के ३०५ हुये । जिनकी ऊंचाई ५ भोम तक गयी है । हर एक वृक्ष की मेहरावों में हिड़ोले आये हैं । इसी प्रकार सब भोमों में आये हैं । सब वृक्षों की ड़ालियां आपस में मिली हुयी है । केलपुल के नैरित्य कोना के सामने ५ वृक्ष आये हैं । केल पुल के सामने जो पहला वृक्ष आया है । इनकी पूर्व तरफ की जो ड़ालियां है । सो केल पुल के छज्जा के सामने आयी है । बड़ोवन का एक चौक, पुल का ५० मन्दिर का जो छज्जा है । उस छज्जा के साथ चौक की ड़ालिया लगी है

पुल के छज्जा से होकर बड़ोवन के पहले चौक में आ जाइये और बाकी के जो वृक्ष हैं । सो उनकी डालियां श्री यमुना जी के जल के चबूतरे तक आयी हैं । जिसकी डालियां ५०० मन्दिर तक गयी हैं । वन की रौंस तरफ दो हार वृक्षों से तथा घाटों के वृक्षों से डालियां मिली हैं । इस प्रकार अपरम्पार शोभा हो रही है । हर एक घाट में बड़ोवन के ५ हारों वाले वृक्ष घाट के पेड़ों का ही रूप धारण कर लिया है ।

घाटों की देहुरियां :- जो सात घाट आये हैं । जिनमें ६ सन्धें आयी हैं । इन सन्धों की जगह पर २ मन्दिर की चौड़ी रौंस पश्चिम तरफ से आकर वन की रौंस से मिल गयी है । अर्थात ६ रास्ते वन की रौंस में आकर लगे हैं । इन्ही ६ रास्तों के सामने ६ देहुरियां आयी हैं । जो श्री यमुना जी की

जल रौंस पर बनी है ।

देहुरी का ब्यान :- श्री यमुना जी की रौंस पर जो दो मन्दिर के रास्ते आ रहे हैं उस रौंस के सामने जल रौंस पर मध्य भाग में १२५ मन्दिर दाएं तरफ से १२५ मन्दिर बाएं तरफ के लेने से २५० मन्दिर का लम्बा-चौड़ा एक चबूतरा कमर भर का ऊंचा पाल के साथ लगकर रौंस पर आया है । इस चबूतरा के तीन तरफ सीढ़ी उतरी है । दाएं-बाएं तीन-तीन सीढ़ी उतरी है । यमुना जी की तरफ ६ सीढ़ी उतरी है । इस चबूतरा के तीन तरफ कठेड़ा आया है । मध्य भाग में १०० मन्दिर का लम्बा-चौड़ा एक मोहल बना है जिसके मध्य भाग में २ मन्दिर का एक दरवाजा आया है । दाएं-बाएं ४८-४८ मन्दिर की जगह में २५-२५ मन्दिर बने है । इसी प्रकार से चारों तरफ बने हैं । मन्दिरों के भीतरी तरफ एक हार थम्भों की जिसके आगे कमर भर ऊंचा चबूतरा आया है । चबूतरें पर थम्भ, कठेडा, गिलम, सिंहासन कुर्सियां आदि जोगबाई आयी है । ऊपर चांदनी १०० मन्दिर की लम्बी-चौड़ी बराबर आयी हैं । बीच में जो कमर भर ऊंचा चबूतरा आया है । इसी के ऊपर चांदनी पर चार थम्भ उठे । ऊपर गुम्मट, कलश, ध्वजा, पताका आदि सब आये हैं । चांदनी पर चारों तरफ कठेड़ा आया है । मोहल के चारों तरफ ७५-७५ मन्दिर की परिक्रमा आयी है । ऐसी वनक ६ देहुरियों की आयी है । दो देहुरी के बीच में २५० मन्दिर का चौक रौंस पर आया है ।

पाट घाठ :- अमृत वन की मध्य भाग की रौंस के सामने श्री यमुना जी के भीतर जल में १६ थम्भ नीलवी रंग के आये हैं । सो भोम भर उठकर श्री यमुना जी की रौंस के सामने आये और इन पर छत आयी है । जिसमें ३-३ मेहरावें चारों तरफ आयी । रौंस के साथ अगली मेहराव अक्शी आयी है । हर एक मेहराव ५०-५० मन्दिर की चौड़ी आयी है । तो तीनों मेहरावों के मन्दिर १५० हुये । तब १५० मन्दिर का लम्बा-चौड़ा पाट-घाट हुआ ।

इन मेहरावों में से तीन धारे जल की चली जाती हैं । तीन धारें अक्षर के तरफ के पाट-घाट के नीचे से जाती हैं । २०० मन्दिर बीच में जगह रही । जिसमें चार धारे जा रही हैं । इन १६ थम्भों की छत पर चारों तरफ किनार पर १२ थम्भ उठे हैं । तीन तरफ थम्भों के बीच में कठेड़ा आया है । पश्चिम तरफ रौंस आयी है । चारों कोना पर चार नीलवी के थम्भ आये हैं । पूर्व तरफ दो थम्भ माणिक के, दक्षिण तरफ दो थम्भ हीरा, पश्चिम तरफ दो थम्भ पाच के, उत्तर तरफ दो थम्भ पुखराज के आये हैं । इन १२ थम्भों के ऊपर चांदनी को घेरकर कठेड़ा आया है । मध्य में गिलम, सिंहासन आया है । ऊपर को सीढ़ियां इन थम्भों से होकर गयी हैं । अमृत वन में जो चांदनी चौक आया है । उस चांदनी चौक से दो मन्दिर की रौंस चली है । दाएं-बाएं अमृत वन आया है । सो कमर भर नीचा आया है । इस रौंस के दाएं-बाएं अमृत वन २५०-२५० मन्दिर में आया है । यह रौंस वन रौंस से मिली है । ७५० मन्दिर की वन रौंस आयी है । आगे कमर भर ऊंची पाल २५० मन्दिर की । आगे कमर भर नीचे यमुना जी की रौंस २५० मन्दिर की आयी है । मध्य में एक रौंस आयी है । जो और घाटों में नही है और घाटों के दाएं-बाएं रौंस आयी है । अमृत वन के दाएं-बाएं भी रौंस आयी है । जिसके सामने भी देहुरी आयी है । मध्य रौंस के सामने पाट-घाट आया है ।

अक्षर धाम :- अक्षरब्रह्म का जो धाम है । सो भी रंगभवन के अनुसार ही सब बनक आयी है । रंगभवन के सामने एक चांदनी चौक आया है । अक्षर धाम के चारों तरफ चार चांदनी चौक आये हैं । १६६ मन्दिर का लम्बा-चौड़ा हर एक चांदनी चौक आया है । अक्षर धाम के चारों दिशा के चारों चांदनी चौक में रंगमोहल के चांदनी चौक की तरह हरा और लाल वृक्ष आया है । पश्चिम तरफ ७ बगीचे आये हैं । २००० मन्दिर के लम्बे ५०० मन्दिर के चौड़े मानिन्द रंग भवन की तरफ की भांति आये हैं । दक्षिण तरफ से

लेकर पूर्व तरफ रौंस तक कुन्ज-निकुन्ज आया है । उत्तर तरफ से लेकर पूर्व तरफ दो मन्दिर की रौंस तक बड़ोवन आया है । पूर्व के चांदनी चौक से रौंस दो मन्दिर की जवेरों के मोहलों तक गयी है । इस रौंस के दक्षिण तरफ कुन्ज-निकुन्ज और रौंस के उत्तर तरफ बड़ोवन आया है । पश्चिम तरफ ७ घाट आये हैं । अक्षरधाम के रंग परवाली मन्दिर से ४-१/२ लाख कोस पर जवेरों की नहरें आयी है और ४-१/२ लाख कोस पर श्री यमुना जी का मध्य भाग आया है ।

बन रौंस :- वन की रौंस ७५० मन्दिर की चौड़ी, लम्बी तो हौज-कौसर तालाब तक आयी है । इस रौंस पर दो हारें वृक्षों की आयी हैं । पाल से २५० मन्दिर की दूरी पर पहली हार आयी है । दूसरी हार पहली हार से ५०० मन्दिर की दूरी पर आयी है । वृक्ष से वृक्ष २५० मन्दिर दूरी पर आया है । जिनकी दो भोम की ऊंचाई आयी है । हर एक घाट के सामने दो-दो वृक्ष आये है ।

केल का वन व घाट :- ५०० मन्दिर का चौड़ा और २००० मन्दिर का लम्बा है । जिसमें ५ वृक्ष बड़ोवन के आये हैं । १२५ मन्दिर के फासले पर इनकी ऊंचाई ५ भोम की आयी है । इनके मध्य में दो-दो मन्दिर के अन्तर पर केला के सब वृक्ष आये हैं । जिनकी ऊंचाई दो भोम की आयी है । इन बड़ोवन की मेहरावों में हिंडोलें आये हैं । छोटे वृक्षों में हिंडोले तो नही हैं । एक घाट और एक रौंस लेने से एक घाट की हद ५०० मन्दिर की चौड़ी होती है । एक घाट की चौड़ाई तरफ वृक्ष २५० और लम्बाई तरफ १००० आये हैं । २५० वृक्षों की एक हजार हार आने से २५०००० वृक्ष हुये और ताड़वन के सामने उत्तर तरफ ३७५०० वृक्ष केलवन के अधिक आये हैं । अब पाल के वृक्ष एक घाट में बड़ोवन के ११×५=५५ वृक्ष आये हैं जिसमें १० चौकों की चार हार आने से ४० चौक आये हैं । एक चौक में २४ वृक्षों की २४

हारें आने से कुल ५७६ वृक्ष हुये । जिनकी ऊंचाई दो भोम की आयी हैं । सब ४० चौकों के सब वृक्ष २३०४० हुये । एक घाट में बड़ोवन के वृक्ष ५० हुये । तब सब वृक्ष केला के ३१०५९० हुये । २५० मन्दिर की पाल जिसमें दोनों तरफ २५-२५ मन्दिर खाली है । वृक्षों का विस्तार २०० मन्दिर में आया है । इसी प्रकार छःवों घाटों में वृक्ष आये हैं ।

वट का घाट :- नारंगी घाट और वटघाट के बीच में दो मन्दिर की चौड़ी रौंस जो आयी है । सो रौंस यमुना जी तक गयी है । इस रौंस के साथ दक्षिण तरफ ५०० मन्दिर की हद में वन की रौंस पर ५०० मन्दिर का लम्बा २५० मन्दिर का चौड़ा एक चबूतरा कमर भर का ऊंचा पाल के साथ लगकर आया है । इस चबूतरा से वन की रौंस पर तीन तरफ सीढ़ियां उतरी हैं और तीनों तरफ कठेड़ा आया है । पाल और चबूतरा मिलकर ५०० मन्दिर का लम्बा-चौड़ा चौक बना । इस चौक के मध्य में वड़ का एक वृक्ष आया है । जिसके चारों तरफ बड़वाइयां ८० आयी हैं और एक बड़ मध्य में कुल ८१ हुये । जिससे ९ की ९ हारें आयी हैं । एक दिशा में ८ मेहरावें आयी है । चारों तरफ की मेहरावें ३२ हुयी । एक-एक मेहराव ६२-१/२, ६२-१/२ मन्दिर की आयी है यमुना जी की रौंस तरफ कमर भर की सीढ़ी उतरी है और बाकी में कठेड़ा आया है । इसकी ऊंचाई पांच भोम छट्ठी चांदनी है । हर एक भोम में मेहरावें आयी हैं । जिनमें हिड़ोले आये हैं । एक भोम में चौक ६४ आये हैं । ८ की ८ हारें आयी हैं और मेहरावें ८ की ९ हारें और ९ की ८ हारें आने से १४४ आयी हैं । पांचो भोमों के चौक ३२० हुये । मेहरावें ७२०, हिंड़ोले भी ७२० आये हैं । चांदनी के चारों तरफ कठेड़ा आया है । ऊपर जाने के वास्ते पेड़ो में सीढ़ियां आयी हैं । इन बड़वाइयों की जो मेहरावें आयी हैं । पूर्व तरफ एक मेहराव पुल के छज्जा के सामने आया है । बाकी सब मेहराव श्री यमुना जी के जल चबूतरे पर आयी है

और पश्चिम तरफ मेहराव बड़ोवन के वृक्षों से मिली है। वन की रौंस पर जो दो हारें बड़ोवन की आयी हैं। सो वट के उत्तर तरफ और दक्षिण तरफ १२५ मन्दिर की दूरी पर आया है। बाकी जगह में २५० मन्दिर पर आये हैं। दूसरी हार के वृक्ष अपने हिसाब माफक आये हैं। इस वट घाट के सामने ५०० मन्दिर दूरी पर कुन्ज-निकुन्ज आया है। इस कुन्ज और निकुन्ज के बीच में ५ हारे बड़ोवन की १२५ मन्दिर, १२५ मन्दिर के फासले पर आयी हैं। सो यह हारें पश्चिम तरफ गयी हैं। ऊंचाई पांच भोम की है सो चौकी के साथ लगता हुआ कुन्ज-निकुन्ज वन में होकर नैरित्य कोना के चेहबच्चा के सामने होकर दक्षिण तरफ चले गये हैं। वहां जाकर हौज-कौसर की पाल को घेरा है। वट घाट के सामने यह जो पांच वृक्ष आये हैं। ५०० मन्दिर की चौड़ाई पर इसको वट घाट करके कहा है। क्योंकि ये वृक्ष वट के आये हैं। दक्षिण तरफ जब गये हैं। तो बड़ोवन का रूप धारण किया है।

वट का पुल :- जैसे केल का पुल ५०० मन्दिर का लम्बा-चौड़ा आया है। इसी प्रकार से यह वट का पुल आया है। कुछ फर्क नही है। इस पुल के सामने पश्चिम तरफ कुन्ज-निकुन्ज आया है।

पांच मोहोल चार चबूतरे :- वट पुल के नैरित्य कोना से लेकर श्री यमुना जी के अग्नि कोना तक पाल पर ५ मोहल और चार चबूतरे आये हैं। जैसे केल पुल के उत्तर तरफ आये हैं। उसी माफक हैं कोई अन्तर नही है। कोना पर चार मोहल आये हैं। एक पश्चिम की पाल पर, दूसरा पूर्व की पाल पर, दो मोहल दक्षिण के पाल पर आये हैं। इन मोहलों पर चार मेहरावें आयी हैं। जिनमें चार हिड़ोले आये हैं। दो हिंड़ोले पाल पर और दो हिंड़ोले जल पर आये हैं। चार हिंड़ोलों की ताली जल पर पड़ती है। मानिन्द श्री यमुना जी के ईशान कोना की तरह आये हैं।

९० देहुरियां :- अग्नि कोना से श्री यमुना जी मरोर खाय करके पश्चिम

हौज-कौसर तरफ जाती हैं। मरोर से दोनों पालों पर दो थम्भों की हारें आयी हैं। सो थम्भ २५०-२५० मन्दिर के फासले पर आये हैं। सो थम्भ मरोर से हौज-कौसर पाल तक आये हैं। इन थम्भों पर चांदनी है। इस चांदनी से सीधी पाल पर जाइये। कुछ रूकावट नही होगी। इस पाल की चांदनी के तीसरे हिस्से में अर्थात ८३ मन्दिर की हद में एक देहुरी आयी है। इस मन्दिर के चौक में चारों कोना से थम्भ उठे। ऊपर गुम्मट, कलश, ध्वजा, पताका सब आये हैं। एक पाल पर ९० देहुरी आयी हैं। इसी प्रकार दूसरी पाल पर भी ९० देहुरी आयी हैं। सब देहुरी १८० हुयी। ९० देहुरी के बीच में ८९ सन्धे आयी हैं। दो सन्धे दाएं-बाएं की मिलने से ९१ सन्धे होती हैं। पाल के दोनों तरफ कठेड़ा आया है। दो देहुरी के बीच में जो सन्ध आयी है। सन्ध के बीच पाल से कमर भर की सीढ़ियां रौंस पर उतरी हैं रौंस से कमर भर की सीढ़ियां जल चबूतरा पर उतरी हैं और पाल से कमर भर की सीढ़ियां वन की तरफ रौंस पर उतरी है। रौंस से कमर भर की सीढ़ियां कुन्ज-निकुन्ज में उतरी हैं। यहां पर यमुना जी का जल १० धाराओं में होकर बहता है और चार घड़नालों से पानी होकर हौज-कौसर तालाब में जाता है।

श्री यमुना जी की लम्बाई का पूर्ण हिसाब :- श्री यमुना जी की लम्बाई मध्य पुखराज से लेकर मध्य हौज-कौसर तक १८ लाख कोस की होती हैं। जिसका बेवरा इस प्रकार है। मध्य पुखराज के पेड़ से श्री यमुना जी का प्रादुर्भाव हुआ है। पुखराज से मूल कुण्ड तक २१५२०० कोस होते हैं। ११७४०० कोस तक यमुना जी ढ़पी हैं और ११७४०० कोस तक यमुना जी खुली होकर पूर्व चलती हैं। जिससे ईशान कोना तक ४-१/२ लाख कोस की होती है। ईशान कोना से लेकर केल पुल के वायब्य कोना तक २-१/४ लाख कोस होती है। वायब्य कोना से पाट घाट के मध्य तक २-१/४ लाख कोस होती है। मध्य पाट से वट के नैरित्य कोना तक २-१/४ लाख कोस होती है।

नैरित्य कोना से श्री यमुनाजी के अग्नि कोना श्री यमुनाजी के मध्य तक २-१/४ लाख कोस होते हैं । श्री यमुनाजी के अग्नि कोण से हौज-कौसर तालाब के मध्य तक ४-१/२ लाख कोस होती है । श्री यमुनाजी के अग्नि कोना तक ९००००० कोस की जगह आयी है ।

ब्यान :- ईसान कोना के मध्य श्री यमुना जी से २५० मन्दिर में जल, २५० मन्दिर की रौंस, २५० मन्दिर की पाल, २५० मन्दिर की वन रौंस, ५०० मन्दिर की पुखराजी रौंस, २५० मन्दिर में रेती, ५०० मन्दिर में महावन, ५०० में मन्दिर मधुवन, ५०० मन्दिर में केलवन, ५०० मन्दिर में लिंबोई वन, ५०० मन्दिर में अनार वन, ५०० मन्दिर में अमृत वन, ५०० मन्दिर जाम्बू, ५०० मन्दिर में नारंगी वन, ५०० मन्दिर में वट घाट, १००० मन्दिर में कुन्ज-निकुन्ज, २५० मन्दिर में रेती, ५०० मन्दिर में पुखराजी रौंस, २५० मन्दिर में वन की रौंस, २५० मन्दिर में पाल, २५० मन्दिर में यमुनाजी की रौंस, २५० मन्दिर में जल आधी यमुना तक आया है । कुल मिलाकर ९००० मन्दिर होते हैं । १ मन्दिर=१०० कोस, ९०००० मन्दिर-९००००० लाख कोस ! मध्य यमुना जी से हौज-कौसर तालाब तक ९ लाख कोस हुये । इस प्रकार से श्री यमुना जी का विस्तार १८ लाख कोस का हुआ ।

परधाम की लम्बाई-चौड़ाई की हिसाब :- मध्य रंगभवन से श्री यमुनाजी के मध्य तक ४-१/२ लाख कोस होते हैं । १००० मन्दिर में रंगभवन के मध्य से किनार तक, २००० मन्दिर में बगीचा आये हैं । बगीचे से आधी यमुना तक १५०० मन्दिर, कुल ४५०० मन्दिर=४-१/२ लाख कोस हुया । इसी प्रकार मध्य यमुना से अक्षर धाम ४-१/२ लाख कोस, अक्षर धाम से जवेरों के मोहल तक ४-१/२ लाख कोस होते हैं । श्री रंगभवन से दूब-दुलीचा ५-१/२ लाख कोस दूर है । १००० मन्दिर रंगभवन के, १५०० में नूर बाग १५०० में अन्नवन, १५०० में दूब-दुलीचा कुल मिलाकर ५-१/२ लाख कोस

होते हैं । दूब-दुलीचा की किनार से जवेरों के मोहल ४-१/४ लाख कोस पर आये हैं । मध्य रंगभवन से पुखराज तक ४-१/२ लाख कोस होते हैं । मध्य रंग भवन से हौज-कौसर तालाब तक ४-१/२ लाख कोस होते हैं । मध्य हौज-कौसर से २४ हांस का मोहल ४-१/२ लाख कोस दूर है । साथ में जवेरों के मोहाल आये हैं । पूर्व जवेरों के मोहलों से लेकर पश्चिम जवेरों के मोहलों तक २३-१/२ लाख कोस होते हैं । उत्तर के जवेरों के मोहलों से दक्षिण के जवेरों के मोहलों तक १८ लाख कोस होते हैं । ४-१/२ लाख कोस में जवेरों के मोहलों का विस्तार है । २ करोड़ ३६-१/२ लाख कोस में माणिक पहाड़ का विस्तार है । एक करोड़ में वन की नहरें, ९ करोड़ में छोटी रांग (चार हार हवेली) १२-१/२ करोड़ में बड़ी रांग का विस्तार है । जिसका ब्यान आगे बताया जायेगा । रांग की बाहरी किनार से मध्य रंग भवन तक २५ करोड़ कोस की जगह आयी है । २५ करोड़ दूसरी तरफ । दधि सागर से लेकर सर्व रस सागर तक ५० करोड़ कोस होते हैं । इसी प्रकार से ए ब्रह्मान्ड परमधाम का स्वप्नवत प्रतिबिम्ब है । यह ५० करोड़ जोजन का विस्तार वाला है । पाताल से लेकर वैकुन्ठ तक होते हैं । परमधाम सतचिदआन्नद रुपी ब्रह्मांड है । यह ब्रह्माण्ड असत जड़, दुःख का है । सत्य का असत्य, चित का जड़, आनन्द का दुःख । ये ब्रह्म श्रृष्टियों को खेल दिखाने के वास्ते उल्टा प्रतिबिम्ब डाला है । परमधाम के कोस कैसे है कि प्रकृतिमाया के करोड़ों कोस, नारायण के करोड़ों कोस, विष्णु के करोड़ों कोस, स्वर्ग के करोड़ों कोसों को मिलाकर के इकट्ठे करें तो परमधाम के एक कोस के अन्दर समा जाते हैं । जिस प्रकार से एक सूरज के सामने बेसुमार तारा उसमें समा जाते हैं । उसी प्रकार से परमधाम के कोस भी आये हैं ।

कुन्ज-निकुन्ज :- जिस पाल पर ९० देहुरी आयी हैं । जिसका ब्यान पहले किया गया है । सो पाल से कमर भर सीढ़ी नीचे उतरकर वन रौंस पर आये ।

वन रौंस से कमर भर सीढ़ी उतरकर २५० मन्दिर की रेती से कुन्ज-निकुन्ज में आये । यह कुन्ज-निकुन्ज रेती की किनार से लेकर नारंगी बाग तक आया है । यह १५०० मन्दिर की हद में होकर कुन्ज-निकुन्ज हौज-कौसर तालाब को घेरा है । यही कुन्ज-निकुन्ज दूब-दुलीचा के नैरित्य कोना तक गया है । यह कुन्ज-निकुन्ज पश्चिम की चौगान के लम्बाई के साथ होकर जवेरों के मोहलों तक गया है । कुन्ज-निकुन्ज की चौड़ाई । ७-१/२ लाख कोस की आयी है और लम्बाई में तो दूब-दुलीचा के नैरित्य कोना से लेकर अक्षर धाम से पूर्व जवेरों के मोहलों तक आया है । जिससे लम्बाई १९ करोड़ की होती है । फिर जवेरों के मोहलों के साथ होकर श्री यमुनाजी के अग्नि कोना के दक्षिण होकर हौज-कौसर के दक्षिण होकर पश्चिम-चौगान से मिलान किया है । पहले कुन्ज फिर निकुन्ज इसी प्रकार से सब मोहल आये हैं । कुन्ज चौरस निकुन्ज के गोल मोहल आये हैं ।

कुन्ज मोहोल :- एक कमर भर का ऊंचा चबूतरा चौरस उठा । चारों तरफ से सीढ़ियां उतरी हैं । किनार पर कठेड़ा आया है आगे थोड़ी सी रौंस छोड़कर मोहल आया है । मध्य में एक मन्दिर का दरवाजा । दरवाजे के दाएं-बाएं ४१-४१ मोहल आये हैं । तब चारों तरफ के दरवाजे समेत मन्दिर ३३२ आये हैं । भीतरी तरफ थम्भ आये हैं । आगे कमर भर की सीढ़ी उतर कर बगीचा में जाइये । जहां पर नहरे, चेहबच्चें, फुहारें, आये हैं । वृक्षों की मेहरावों में हिंड़ोलें आये हैं बगीचों से कमर भर की सीढ़ी चढ़कर कमर भर ऊंचे चबूतरे पर आइये । इस चबूतरे के मध्य भाग में एक पानी का भरा हुआ कुण्ड आया है । चारों तरफ रौंस आयी है । इस रौंस के जल तरफ चारों दिशा में चार चांदे आये हैं चांदो से सीढ़ियां जल चबूतरा पर उतरी हैं और रौंस पर चारों तरफ गिलम बिछी है । गिलम पर सिंहासन आया है । इस कुन्ज की जहां भोम पूरी हुयी । वहां सब छत आयी है । दूसरी भोम में

फिर वही जोगबाई उठी । जो पहली भोम में है । मन्दिर, बगीचा, चेहबच्चा, चबूतरा सब दूसरी भोम में भी आयी है । ऊपर चांदनी पर चारों तरफ घेर करके कठेड़ा आया है । चांदनी ८३ मन्दिर की लम्बी-चौड़ी आयी है । पहली भोम में मध्य में कुण्ड आया है । उस कुण्ड से आठ नहरें निकली, चारों दिशा से और चार कोना से । सो नहर मन्दिरों के नीचे से होकर आगे जाहिर होकर जाती हैं । सो नहरों के दाएं-बाएं कमर भर ऊंची पाल आयी है । ऐसे ही कुन्जवन के मोहल की शोभा आयी है ।

निकुन्ज मोहल :- कुन्ज मोहल के ८३ मन्दिर दूरी पर ये निकुन्ज मोहल आया है । सो गोल चबूतरा ८३ मन्दिर का लम्बा-चौड़ा कमर भर ऊंचा उठा । चारों तरफ रौंस की जगह छोड़कर मन्दिर आये हैं । भीतर थम्भ, बगीचा, नहरे, फुहारें, मेहरावें, हिड़ोंलें सब आये हैं । इसके भीतर कमर भर ऊंचा चबूतरा आया है । मध्य में पानी का कुन्ड, घेर कर रौसें आयी हैं । रौंस पर गिलम, सिंहासन, कुर्सियां सब जोगबाई आयी हैं । यह गोल मोहोल मन्दिर की जो हार आई है । इसकी दो भोमें आयी हैं । बीच की जगह पर भोम नही पटी है । सो सब खुली आयी है । इस मोहल से भी आठ नहरें निकली है । चार नहरें चारों दिशा, चार नहरें कोना से निकली हैं । मानिन्द चौरस हवेली की सब वनक आयी है । कुंज चौरस ढ़पा आया है । निकुन्ज गोल खुला आया है । चार मोहलों के बीच में ८३ मन्दिर का चौक आया है । जिसमें चार नहरें चारों दिशा में, चार नहरे मोहलों के कोनो से निकल कर चल रहीं हैं । चार नहरों के मध्य में चेहबच्चा, चार चौकों में वृक्ष आये है। जिनकी ऊंचाई दो भोम की आयी है और जमीन पर सुन्दर रेती रंग-बिरंग की बिछी हुई है । इसी प्रकार कुन्ज-निकुन्ज की अपार शोभा आयी है ।

हौज-कौसर तालाब :- हौज-कौसर तालाब २१३३३ मन्दिर का लम्बा-चौड़ा और ६४००० मन्दिर की गृद (१२८ हांस) का आया है । जिसका हिसाब

५०० मन्दिर में ढ़लकती पाल जिसमें से २५० में संक्रमणिक सीढ़ी आई है । चौरस पाल १००० मन्दिर, ५०० मन्दिर ताल की रौंस, ताल की रौंस के आगे ५७५० में ताल, आगे ६००० मन्दिर में टापू मोहल, आगे ५७५० में ताल, ५०० में ताल की रौंस, १०००में पाल, ५०० ढलकती पाल, सब मिलाके २१३३३ मन्दिर होते हैं । श्री यमुनाजी का जल चार घड़नालों द्वारा अन्दर प्रवेश होता है । श्री यमुनाजी के दाएं-बाएं जो रौंस आयी है । सो झरोखों के थम्भों के सामने २५० मन्दिर की चौड़ी और १००० मन्दिर की लम्बी रौंस आयी है । वह दोनों रौसें उसी रौंस में आकर मिल गयी है । एक रौंस से दूसरी रौंस पर आ जा सकते हैं । क्योंकि एक रास्ता हो गया है । श्री यमुनाजी के सामने पाल में एक अक्शी मेहराव आयी है । उस अक्शी मेहराव में दो दरवाजे आये हैं । एक दरवाजा तो १६ थम्भों को घेर करके जो १२५ मन्दिर की रौंस आयी है । उस रौंस में दरवाजा हुआ । दूसरा दरवाजा पाल की मोहलात में जाने के वास्ते आया है । इसी प्रकार दूसरी तरफ पाल के सामने दरवाजा आया है । श्री यमुनाजी के दाएं-बाएं में जो पाल आयी है । सो ढ़कलती पाल में मिल गयी है । दाएं तरफ की पाल में मिलकर पश्चिम तरफ गयी है । ५०० मन्दिर की पहले ढ़लकती पाल थी । २५० मन्दिर की पाल मिलने से ७५० मन्दिर की हो गयी । ढ़लकती पाल की सीढ़ियां पाल की रौंस तरफ की किनार तक आयी हैं । रौंस के सामने सीढ़ियां नही आयी हैं । इसी तरह दूसरी तरफ भी आयी है । श्री यमुना जी के दाएं-बाएं जो ७५० मन्दिर की वन रौंस थी । सो ढ़लकती पाल से कमर भर नीचे ७५० मन्दिर की आयी है । दाएं तरफ की रौंस दाएं तरफ घूम गयी । बाएं तरफ की वन रौंस बाएं तरफ घूम कर पश्चिम में एक में मिल गयी है ।

४४ थम्भ जल में :- पूर्व तरफ ४४ थम्भ जल में डूबे हुये हैं । ९ थम्भों की ५ हारें और ५ थम्भों की ९ हारें आने से कुल ४५ थम्भ होते हैं मध्य

में कुण्ड आने से एक थम्भ नहीं आया है। पूर्व तरफ जो २५० मन्दिर की रौंस आयी है। उसी रौंस के पूर्व तरफ जल में ५ थम्भ आये हैं। जिनमें ४ मेहरावें आयी हैं। जिन मेहरावों में चार घड़नाले आये हैं और भीतरी तरफ जो ५०० मन्दिर की रौंस आयी है। उस रौंस के ताल तरफ ५ थम्भ चार घड़नालें आये हैं उन्ही घड़नालों से पानी निकलकर ताल में पड़ता है। ४४ थम्भ जल में जो आये हैं। वे दिखाई नही देते हैं। क्योंकिऊपर छत आयी है। इन ४४ थम्भों की छात के ऊपर ३४ थम्भ उठे। पूर्व की रौंस से कमर भर ऊंचा चबूतरा उठा। ७५० मन्दिर का चौड़ा और लम्बा तो चारों तरफ चला गया है। इस चबूतरा पर ५ थम्भों की ७ हारें आयी हैं। यह सब थम्भ १२५-१२५ मन्दिर की दूरी पर आये हैं। लम्बाई व चौड़ाई की एक ही दूरी है। पूर्व तरफ चार मेहरावें आयी हैं।ऊपर एक अक्शी मेहराव आयी है। इन थम्भों को झरोखे के थम्भ करके कहा है। पूर्व के झरोखों के थम्भों के पश्चिम तरफ ५-५ थम्भों की दो हारें और आयी हैं। मध्य में जो पांचवी हार आयी है। दो थम्भ उत्तर तरफ और दो थम्भ दक्षिण तरफ आये। मध्य का थम्भ नही आया क्योंकि यहां पर २५० मन्दिर का लम्बा-चौड़ा कुण्ड आया है। इस कुण्ड के चारों तरफ ८ थम्भ आये हैं। इन थम्भों के बीच में कठेड़ा आया है। इस कुण्ड के चारों तरफ १२५ मन्दिर की चौड़ी रौंस आयी है। इस रौंस पर गिलम बिछी है। गिलम के किनार पर चारों तरफ १६ थम्भ आये हैं। इन १६ थम्भों के चारों तरफ १२५ मन्दिर की रौंस आयी है। इस रौंस के दक्षिण दो मन्दिरों की हार और बीच में दो-दो थम्भों की हार आयी है और एक गली अन्दर की तरफ आयी है। ऐसे ही उत्तर वनक आयी है। भीतरी तरफ जो पांच थम्भ झरोखे के आये हैं। इन थम्भों के दाएं-बाएं एक-एक मेहराव और आयी है। यह मेहराव १२५ मन्दिर की चौड़ी आयी है। चार मध्य की, यह सब मिला कर ६ मेहरावें घाट पर आयी है। इसी तरह ६ मेहरावें पूर्व तरफ भी आयी हैं। यहां पर

मध्य के २५० मन्दिर में एक थम्भ नहीं आया है। यहां पर कुण्ड बना है। इसको घेर करके रौंस और थम्भ आये हैं। इसको घेर करके फिर रौंस आयी है। जो ५ थम्भ भीतरी झरोखों के हैं। सो इसी के सूत में घेर करके दीवार आयी है। इस दीवार में २५० दरवाजे आये हैं। ६ दरवाजें नही आये। तीन तो पूर्व तरफ, तीन दरवाजे तीनों दिशाओं में घाटों के भीतर जाने के वास्ते। इस दीवार में तथा मन्दिर की हार इन दोनों के बीच में एक गली चारों तरफ घूम करके आयी है। उत्तर, पश्चिम, दक्षिण दिशा में ऊपर पाल से सीढ़ी उतरी है। इस कारण से नीचे छोटी गली हो गयी। नमकर जा सकते हैं। या फिर मन्दिर से निकल कर फिर रौंस में आकर परिक्रमा दे सकते हैं। भीतर तरफ जो पांच थम्भ झरोखें के आये हैं। जिनपर चार मेहरावें आयी हैं। दो मेहरावे दाएं-बाएं की इन ६ मेहरावों के पश्चिम तरफ २५० मन्दिर का चौड़ा ७५० मन्दिर का लम्बा एक चबूतरा आया है जो इन झरोखों की जमीन के बराबर आया है। पश्चिम तरफ चार थम्भ आए हैं। तीन मेहरावें आयी हैं। एक मेहराव २५० मन्दिर की आयी है। मेहराव के नीचे से रौंस पर कमर भर की सीढ़ी उतरी है। दांए-बांए दीवार में अक्स आया है।

पाल की मोहलात :- २५० मन्दिर का लम्बी १२५ मन्दिर की चौड़ी मन्दिरों की एक हार आयी है। आगे १२५-१२५ मन्दिर की दूरी पर दो थम्भों की हार आयी है। भीतर के दूसरी थम्भों की हार से भीतरी तरफ १२५ मन्दिर की दूरी पर दूसरी हार मन्दिरों की आई है। सो ये मन्दिर भी २५० मन्दिर का लम्बा १२५ मन्दिर का चौड़ा आया है। इसके आगे १२५ मन्दिर की पड़साल आयी है। एक हार में २५६ मन्दिर आये हैं। परन्तु यहां पर तीन मन्दिर पूर्व तरफ नही आयें। क्योंकि पूर्व तरफ ७५० मन्दिर का चौक आया है। इसी प्रकार दूसरी हार आयी है। दोनो हारों के मन्दिर ५०६ आये हैं।

एक हार थम्भ की जिसमें २५४ थम्भ आए हैं और दूसरी हार के भी २५४ थम्भ दोनों हारों को मिलाकर ५०८ थम्भ आए हैं बाहरी हार मन्दिरों के दरवाजें देखने के तीन हिसाब में दो हैं। बाहरी तरफ दरवाजा नही आया है। क्योंकि बाहरी तरफ ढ़लकती पाल पर सीढ़ियां उतरी हैं। दूसरी हार में दरवाजे देखने के ४-४ गिनती में ३-३ आये हैं। जिधर २५० मन्दिर की दीवार आयी है। उस दीवार में १२५ मन्दिर का दरवाजा दाएं-बाएं ६२-१/२, ६२-१/२ मन्दिर की दीवार आयी है पाखें की दीवार १२५ मन्दिर की आयी है ६२-१/२ मन्दिर में दरवाजा और दाएं-बाएं ३१-१/४, ३१-१/४ मन्दिर में दीवार आयी है। ७५० मन्दिर के चौक के दाहिने तरफ जो मन्दिर आया है। चौक से लगकर आया है। मन्दिर २५० मन्दिर का लम्बा है। जिसमें से आधा मन्दिर तो रौंस के सामने आया है और आधा ढलकती पाल की सीढ़ियों के आगे है।

भीतरी तरफ का ब्यान :- श्री यमुनाजी के २५० मंदिर के रौंस से कमर भर सीढ़ी चढ़कर मन्दिर में चले जाइए। इसके आगे दो हार थम्भों को तीन गलीयों को पार करके दूसरी हार के दाहिनी तरफ के पहले मन्दिर में जाइए। मन्दिर के सामने ताल तरफ २५० मन्दिर का चौक आया है। जिसके दाएं-बाएं सीढ़ी उतरी है। बीच में १२५ मन्दिर की देहुरी आयी है। इसके साथ वाला मन्दिर दो हांस के सन्ध वाला आया है। १२५ मन्दिर एक हांस के लिए, १२५ मन्दिर दूसरे हांस के लिए। तब २५० मन्दिर का हुआ। इस मन्दिर के सामने २५० मन्दिर का चांदा आया है। इसी प्रकार दूसरी तरफ भी आया है। ७५० मन्दिर चौड़ाई में ऊपर छत आयी है। लम्बाई में तो घेर करके आयी है।

वन रौंस :- कुन्ज-निकुन्ज की जमीन से कमर भर ऊंची सीढ़ी चढ़कर वन रौंस पर आये। यह कमर भर सीढ़ी सब हांसों में लगी है और चारों तरफ

कठेड़ा आया है। इस कठेड़ा की किनार पर एक हार वृक्षों की आयी है। २५०-२५० मन्दिर के फासले पर एक-एक हांस में दो-दो वृक्ष आये हैं। ५०० मन्दिर चलकर दूसरी हार आयी है। ये वृक्ष भी २५०-२५० मन्दिर के फासले पर आये हैं। इनकी ऊंचाई दो भोम तीसरी चांदनी आयी हैं। एक हार के वृक्ष २५६ आये हैं। परन्तु घाटों के कारण कुछ कम हो गये हैं। दूसरी हार वृक्षों के आगे २५० मन्दिर की रौंस आयी है। ढ़लकली पाल के नीचे, इस रौंस से कमर भर की सीढ़ी चढ़ी है। ढ़लकती पाल पर जाने के वास्ते हांस-हांस में सीढ़ी आयी हैं। पश्चिम तरफ इस रौंस पर २५० मन्दिर का लम्बा-चौड़ा चौक तथा दाएं-बाएं २५०-२५० मन्दिर के कमर भर ऊंचे दो चबूतरे आये हैं। जिनमें तीन तरफ तीन-तीन सीढ़ियां उतरी हैं और बाकी में कठेड़ा आया है। चौथी तरफ ढ़लकती पाल से मिले हैं।

ढ़लकती पाल :- ढलकती पाल भी ७५० मन्दिर की चौड़ी आयी है। यह वन रौंस से कमर भर ऊंची आयी है। किनार पर कठेड़ा आया है और हांस-हांस सें कमर भर की सीढ़ियां वन की रौंस पर उतरी हैं। पश्चिम तरफ के हांस के मध्य भाग में २५० मन्दिर का लम्बा-चौड़ा चौक आया है। इस चौक के दाएं-बाएं २५०-२५० मन्दिर की देहुरी आयी है। जमीन पर चार-चार थम्भ उठकर ऊपर गुम्मट, कलश, ध्वजा, पताका आदि सब जोगबाई आयी है। इसी तरह की दूसरी तरफ भी देहुरी आयी है। इन दोनों देहुरियों पर दस मेहरावें आयी हैं। चार-चार देहुरियों की और दो मेहरावें बीच के चौक पर आयी है। यह झुण्ड घाट का दरवाजा कहा जाता है। इसी देहुरी की पूर्व किनार से लगकर एक हार बड़ोवन की आयी है। दूसरी हार २५० मन्दिर आगे चलकर आयी है। आगे २५० मन्दिर में सीढ़ियां चौरस पाल पर जाने वास्ते चारों तरफ से चढ़ी है। कठेड़ा से २५० मन्दिर दूरी पर एक हार वृक्षों की आयी है। दूसरी हार पहली हार से २५० मन्दिर के दूरी पर आयी है। आगे २५० मन्दिर में सीढ़ियां आयी है। इस ढ़लकती पाल

पर दो हार वृक्षों की आयी है । यह वृक्ष हांस-हांस के मध्य भाग में आये हैं । इन वृक्षों की हार में ५०० मन्दिर की दूरी पर वृक्ष आये हैं । दोनों हारों के वृक्ष २५६ होना चाहिए । परन्तु पूर्व और पश्चिम तरफ २-२ वृक्ष नही आये हैं । इस वास्ते ये वृक्ष २५२ होते हैं । इनकी ऊंचाई ५ भोम छट्ठी चांदनी आयी है । सब भोमों में हिंड़ोला लगा है ।

१६ देहुरी का घाट :- यह १६ देहुरी का घाट पूर्व तरफ आया है । पाल की मोहलात के चबूतरा पर जो ७५० मन्दिर का चौक आया है । इस चौक के बीच में १६ थम्भ घेर करके आये हैं । जिनका ब्यान पहले हो चुका है । इस चौक की छत पर ७५० मन्दिर का लम्बा-चौड़ा चौक आया है । नीचे जो १६ थम्भ घेर करके आये थे । सो इसी पर ५०० मन्दिर का लम्बा-चौड़ा कमर भर ऊंचा चबूतरा उठा । चारों तरफ १२५-१२५ मन्दिर की रौंस आयी है । यह रौंस चबूतरा से कमर भर नीचे आयी है । चबूतरे के चारों दिशा में कमर भर की सीढ़ी नीचे रौंस पर उतरी है । चबूतरा को घेर करके कठेड़ा आया है । चबूतरा पर थम्भों की ५ की ५ हारें आयी हैं । कुल २५ थम्भ आये हैं । इन २५ थम्भों के ऊपर ४० मेहरावें आयी हैं । इन २५ थम्भों के ऊपर छात आयी है । छत पर चारों तरफ से कठेड़ा आया है । इस छात में १६ चौंक आये हैं । एक चौक के दाएं-बाएं जगह छोड़कर मध्य में चार थम्भ उठे । ऊपर गुम्मट को घेर करके छज्जा आया है गुम्मट पर कलश, ध्वजा, पताका फहरा रहे हैं । इस प्रकार से १६ चौकों में देहुरी आयी है सब १६ देहुरी आयी है । श्री यमुनाजी के पानी से यदि ऊंचाई लें तो तीन भोम चौथी चांदनी पर गुम्मट आये हैं । यदि पाल के चबूतरे से लें तो तब दो भोम तीसरी चांदनी आयी है । १६ देहुरी के चबूतरे के पश्चिम तरफ १२५-१२५ मन्दिर की रौंस आयी है । उस रौंस के किनार पर ७५० मन्दिर का लम्बा और २५० मन्दिर का चौड़ा चबूतरा आया है । जिसका ब्यान पहले हो चुका है । इस चबूतरा के पश्चिम तरफ कठेड़ा आया है । दक्षिण, उत्तर

तरफ से सीढ़ियां उतरी हैं। साढ़े ६२ मन्दिर की चौड़ाई में ताल की तरफ परकोटा आया है। ऊपर कांगरी है और चबूतरा की पूर्व किनार रौंस से मिली है। पूर्व की रौंस की किनार पर कठेड़ा आया है। सामने श्री यमुनाजी, रौंस, पाल सहित सब दिखाई देती हैं। इस रौंस के दक्षिण और पश्चिम के कोना पर १२५ मन्दिर का जो चौक आया है। उस चौक पर १२५ मन्दिर की लम्बी-चौड़ी एक देहुरी आयी है और उत्तर, पश्चिम कोना पर जो रौंस पर १२५ मन्दिर का चौड़ा चौक आया है। इस चौक पर भी १२५ मन्दिर की लम्बी-चौड़ी एक देहुरी आयी है। बाकी १२६ देहुरी २५०-२५० मन्दिर की लम्बी-चौड़ी सब बराबर आयी हैं। चबूतरा के आगे दक्षिण तरफ जो १२५ मन्दिर की रौंस आयी है। इस रौंस से १२५ मन्दिर दूरी पर तीन हारें वृक्षों की आयी है इसी प्रकार से उत्तर तरफ भी समझना जी।

सर्व हांस :- सर्व हांस १२८ आये हैं। दो घाटों के बीच में ३१ हांस आये हैं और चार घाट आये हैं। सब १२८ हांस होते हैं। १२४ हांस चारों तरफ के और चार हांस में चार घाट चारों दिशा में आये हैं। एक हार वृक्षों की ढ़लकती पाल की किनार चौरस पाल की बाहरी किनार पर आयी है। दूसरी हार वृक्षों की २५० मन्दिर की दूरी पर आयी है। तीसरी हार २५० मन्दिर दूरी पर मध्य हांस में आयी है। इस वृक्ष से दूसरे हांस के वृक्ष तक ५०० मन्दिर का अन्तर है। तीसरे वृक्ष के आगे दो देहुरी के बीच में २५० मन्दिर का चौक आया है। तीसरे वृक्ष के दाएं-बाएं सवा सौ-सवा सौ मन्दिर के दूरी पर देहुरी के थम्भ आये हैं। इस २५० मन्दिर चौक के आगे २५० मन्दिर का लम्बा-चौड़ा भोम भर नीचे रौंस से कमर भर ऊंचा चबूतरा आया है। जिसके दाएं-बाएं तरफ से ६२-१/२, ६२-१/२ मन्दिर की सीढ़ियां चांदे के ऊपर जाने के वास्ते बनी है। सीढ़ी के दाएं-बाएं तरफ जो दीवाल है। सो ताल तरफ दीवार कमर भर जितनी ऊंची आयी है। दीवार पर कांगरी ऊपर तक चली गयी है। इसी तरह से सामने की सीढ़ी में वनक

आयी है । दो सीढ़ियों के बीच में चौक आया । चौक २५० मन्दिर का लम्बा और १२५ मन्दिर का चौड़ा आया है । इस चौक के कोना पर चार थम्भ आये हैं । जिन पर ४ मेहरावें हैं । एक मेहराव १२५ मन्दिर की ताल तरफ, दूसरी तरफ एक मेहराव १२५ मन्दिर की पाल की मोहलात तरफ, दो मेहराव दाएं-बाएं की २५०-२५० मन्दिर की, ए मेहराव सीढ़ियों के ऊपर आये हैं । इन चारों मेहरावों के ऊपर छत पाल के अनुसार आयी है । यह छत १२५ मन्दिर की चौड़ी, २५० मन्दिर की लम्बी आयी है । जिसके तीन तरफ कठेड़ा आया है । दो तो सीढ़ियों तरफ, एक ताल के तरफ कठेड़ा आया है । इस चार थम्भों की छत पर मध्य भाग में १०० मन्दिर की लम्बी-चौड़ी देहुरी आयी है । छत पर चार थम्भ आये हैं । ऊपर गुम्मट, कलश, ध्वजा, पताका सब आये हैं । यह छोटी देहुरी हांस के मध्य भाग में आयी है । ऐसी देहुरी सब हांसो में आयी है यह देहुरी चारों तरफ की १२४ आयी है । चारों घाटों में चार देहुरी नहीं आयी है ।

१२८ देहुरी का ब्यान :- दो हांस के मध्य भाग में जो हांस का पहल आया है । सो चौरस पाल की दीवार से ताल तरफ ५०० मन्दिर जाकर आगे २५० मन्दिर में देहुरी आयी है । १२५ मन्दिर दाहिने हांस के लिए और १२५ मन्दिर बाएं हांस के लिए इन २५० मन्दिर की लम्बाई-चौड़ाई की हद में चार थम्भ ऊपर उठे । ऊपर चार मेहरावें, ऊपर गुम्मट, कलश, ध्वजा, पताका आदि सब आये हैं । इस देहुरी के आगे ताल तरफ २५० मन्दिर का लम्बा-चौड़ा एक चांदा आया है । सो चांदा के दाँए-बाँए तरफ से ६२-१/२,-६२-१/२ मन्दिर में दोनों तरफ से सीढ़ियां उतरी हैं । सीढ़ियों के एक तरफ दीवार, दूसरी ताल तरफ कमर भर ऊंची दीवाल पर कांगरी है । चांदा के सामने ताल तरफ कठेड़ा आया है । यह चांदा भीतर से पोला आया है । यह एक हांस की वनक है ऐसे ही एक सौ अट्ठाइस हांसो के देहुरी की वनक आयी है । यहि १२८ बड़ी देहुरी है ।

९ देहुरी का घाट :- उत्तर तरफ नव देहुरी का घाट आया है । १६ देहुरी से ३१ हांस छोड़कर ३२वें हांस में नव देहुरी का घाट उत्तर तरफ आया है । ढ़लकती सीढ़ियों के साथ चौरस पाल पर यह घाट आया है । ५०० मन्दिर का लम्बा २५० मन्दिर का चौड़ा एक कमर भर ऊचा चबूतरा उठा । चबूतरे के चारों दिशा से कमर भर की सीढ़ियां उतरी है । बाकी में कठेड़ा आया है । इस चबूतरा पर आठ थम्भ आये हैं । चार दिशा में चार कोना में इन थम्भों पर आठ मेहरावें आयी हैं । पूर्व-पश्चिम तरफ १२५-१२५ मन्दिर की, उत्तर-दक्षिण तरफ २५०-२५० मन्दिर की, दो मेहरावें आई हैं चबूतरे के मध्य से चारों दिशा में पालपर कमर भर की सीढ़ि उतरी है । ऊपर लम्बी एक ही छत आयी है । चारों तरफ घेरकर कठेड़ा आया है तीन देहुरी पूर्व कठेड़ा के साथ और तीन देहुरी पश्चिम कठेड़ा के साथ और तीन देहुरी मध्य चांदनी पर आई हैं तीन-तीन की तीन हारें आयी हैं । नीचे चार थम्भ उठे । ऊपर गुम्मट, कलश, ध्वजा, पताका सब आये हैं । इसी घाट की चौड़ाई के सामने दो हारे वृक्षों की आयी है । ऊपर चांदनी पर जाने के लिए थम्भों में सीढ़ियां आयी हैं । इस घाट के दक्षिण तरफ २५० मन्दिर की पड़साल आयी है । तीसरी हार पड़साल के सामने आयी है । इस पड़साल के रौंस के सामने २५० मन्दिर तक इन सीढ़ियों के दाएं-बाएं पाल पर दो देहुरी आयी हैं । इन दोनों देहुरियों पर १० मेहरावें आयी हैं । चार-चार मेहरावें दो देहुरी की है और दो मेहरावें दोनों देहुरीयों के मध्य में आयी हैं । अर्थात सीढ़ियों पर आयी है । इन सीढ़ी के तीन तरफ कठेड़ा आया है । दो कठेड़ा दाएं-बाएं देहुरी में और एक कठेडा ताल तरफ आया है । इन सीढ़ियों व दाएं-बाएं देहुरी के आगे २५० मन्दिर लम्बा-चौड़ा एक चांदा (चबूतरा) आया है । इस चबूतरा के दाएं-बाएं तरफ से सीढ़ी उतरी हैं । ६२-१/२,-६२-१/२ मन्दिर की जगह में, और सामने ताल तरफ कठेडा आया है । यह चबूतरा भीतर से पोला है और रौंस से कमर भर का ऊंचा है । जिसमें चार थम्भ दक्षिण तरफ

आये हैं । ऊपर तीन मेहरावें आयी हैं । सो मेहरावें खुली है । इसी के सामने दीवार में तीन मेहरावें आयी हैं । दाएं-बाएं की मेहराव अक्शी है । इस अक्शी मेहराव में १२५ मन्दिर का दरवाजा आया है । जिससे मन्दिरों में जाया जाता है । बीच की जो मेहराव है । सो खुली आयी है । ऊपर से भोम भर की सीढ़ी उतरी है । सो इसी उत्तर की मेहराव के थम्भ तक आयी है । पूर्व-पश्चिम की तरफ की दीवार के मेहराव का अक्स आया है । क्योंकि दूसरी तरफ से सीढ़ी उतरी है । दरवाजे नही आये हैं । इन तीनों चौकों की जीमि एक समान आयी है । ऊपर छत आयी है । ऊपर से जो सीढ़ियां उतरी है । सो बीच के चौक के उत्तर की मेहराव तक आयी है । २५० मन्दिर की जगह को उलंघ कर आगे कमर भर की सीढ़ी ताल की रौंस पर उतरी है । सो रौंस ५०० मन्दिर की चौड़ी है । इसी रौंस से हाथ लगता जल आया है । इस रौंस से कमर भर की सीढ़ी उतर करके जल चबूतरे पर जाइये । यह जल चबतूरा १२५ मन्दिर का चौड़ा आया है । यहां पर नाभी तक जल है । इसी जल चबूतरे से सीढ़ियां नीचे भोम तक गयी है ।

झुण्ड का घाट :- उत्तर तरफ के ९ देहुरी के घाट के पश्चिम तरफ ३१ हांस की बीच में जगह छोड़कर ३२वें हांस के मध्य भाग में पहले हिस्से में २५० मन्दिर का लम्बा-चौड़ा चौक बीच में आया है । इस चौक के दाएं बाएं २५० मन्दिर के लम्बे-चौड़े दो चौक चबूतरे कमर भर ऊंचे आये हैं । एक चबूतरा की एक दिशा में चार हिस्सा भये । १२५ मन्दिर का बीच में दरवाजा आया है । इस दरवाजा के आगे कमर भर की सीढ़ी रौंस पर उतरी है । इस दरवाजा के दाएं-बाएं दो दीवारे हैं । एक दीवार ६२-१/२ मन्दिर की दाहिनी तरफ इसी प्रकार से ६२-१/२ मन्दिर की दीवार बाएं तरफ आयी है । इसी तरह से चारों दिशा में ८ दीवारें बनी हैं चारों दरवाजे के सामने सीढ़ियां आयी हैं । इसी तरह से दूसरे चबूतरे पर वनक आयी है । दोनों चबूतरों पर १६ वन दीवारें आयी हैं और आठ मेहरावें आयी हैं और दो

मेहरावें बीच में आयी हैं । एक भोम में कुल दस मेहरावें आयी हैं । इसी प्रकार उपरा-ऊपर ५ भोम छट्ठी चांदनी आयी है । चबूतरा तथा सीढ़ियां तले की ही भोम में आयी हैं और भोम में नही आयी है । छट्ठी चांदनी पर चारों तरफ कठेड़ा शोभा ले रहा है । दो चबूतरा के बीच में जो चौक आया है । उसके पीछे तरफ भोम भर की सीढ़ियां उतरी हैं । सामने तरफ पड़साल आयी है । इसी तरह से दूसरे चबूतरे पर, दूसरे हिस्सा में पड़साल, तीसरे हिस्सा में सीढ़ियां और देहुरी और चौथे हिस्से में २५०-२५० मन्दिर लम्बे-चौड़े १२८ चादें आये हैं । एक हिस्सा २५० मन्दिर का है । पड़साल, देहुरी, चबूतरे, रौंसों का ब्यान ९ देहुरी के घाट में ब्यान किया गया है ।

१३ देहुरी का घाट :- तेरह देहुरी का घाट दक्षिण तरफ आया है । पश्चिम के झुण्ड के घाट से ३१ हांस दक्षिण तरफ छोड़कर ३२वां जो हांस है । उस हांस में १३ देहुरी का घाट आया है । ५०० मन्दिर का लम्बा २५० मन्दिर का चौड़ा एक कमर भर ऊंचा चबूतरा पहले हिस्से में आया है । उस चबूतरा पर आठ थम्भ आये हैं । चार थम्भ दिशाओं में और चार थम्भ कोना पर है । चारों दिशा से कमर भर की सीढ़ियां उतरी हैं । लम्बाई तरफ २५० मन्दिर के फासलें पर थम्भ आये हैं और चौड़ाई तरफ पूर्व-पश्चिम के थम्भ १२५ मन्दिर के अन्तर पर आये हैं । पूर्व-पश्चिम तरफ १२५ मन्दिर में कमर भर की सीढ़ी बाकी में कठेड़ा आया है । नीचे जो आठ थम्भ आये हैं । इन थम्भों की छत के ऊपर आठ देहुरी नीचे वाले थम्भों के ऊपर आयी है । आठ देहुरी के बीच में चार देहुरी आयी है । चार देहुरी के बीच में एक देहुरी आयी है । चार थम्भ ऊपर उठ कर गुम्मट, कलश ध्वाजा, पताका आदि जोगबाई आयी है । इसी प्रकार से सब देहुरियों के ऊपर आये हैं । इस घाट के आगे २५० मन्दिर की रौंस, रौंस के आगे २५० मन्दिर में सीढ़ियां तथा देहुरी आयी है । सीढ़ी के आगे ७५० मन्दिर का लम्बा २५० मन्दिर का चौड़ा चबूतरा आया है यह चार हिस्से पूरे हुए । सीढ़ियां उतर कर २५०

मन्दिर के चौक में जाइये । आगे कमर भर की सीढ़ी उतरकर ५०० मन्दिर के जल रौंस पर आइये । इस जल चबूतरे से भोम भर की सीढ़ियां नीचे को गयी है । इस जल रौंस से कमर भर की सीढ़ी उतरकर १२५ मन्दिर के चौड़े जल चबूतरा पर आइये ।

पाल पर वृक्ष :- इस चौरस पाल के ऊपर तीन हारें बृक्षों की फिरी हैं । एक हार १२८ वृक्षों की होती है । इसी तरह से तीन हारें आयी हैं । सो ये वृक्ष हांस के मध्य भाग में आये हैं । एक वृक्ष तो ढ़लकती पाल की सीढ़ियों के साथ, दो चौरस पाल पर आया है । दूसरा वृक्ष २५० मन्दिर की दूरी पर, तीसरा वृक्ष दूसरे वृक्ष से २५० मन्दिर दूर आया है । तीसरे वृक्ष के दाएं-बाएं १२५-१२५ मन्दिर के दूरी पर देहुरी के कोने है । तीनों हारों के वृक्ष ३८४ होते हैं । जिसमें १२ वृक्ष तीनों घाटों के कमती होते हैं । तब सभी वृक्ष ३७२ हुये । ढ़लकती पाल के वृक्षों का पहले हिसाब हो चुका है । इन वृक्षों की ऊंचाई पांच भोम की आयी है । सबकी मेहरावें एक दूसरे से मिली हैं । सब मेहरावों में हिंड़ोले आये हैं । जो दो देहुरी के बीच में वृक्ष आया है । इसकी डाली ने ११२५ मन्दिर जाकर जल चबूतरा तक छाया डाली है ! इन डालों को पकड़ कर जल में कूदतें हैं । बेसुमार खेल ब्रह्मगनायें करती हैं । पाल की तीन सन्धे आयी हैं । एक सन्ध घाट के नीचे एक हार मन्दिर की और गली आयी है । दूसरी सन्ध पड़साल के नीचे दो गली है । तीसरी सन्ध देहुरी नीचे मन्दिरों की एक हार और १२५ मन्दिर की एक गली आयी है । इस प्रकार चांदो को छोड़कर ७५० की पड़साल और नीचे मन्दिर थम्भ गलियां आदि जोगबाई आयी है ।

ताल की रौंस :- ताल के चारों तरफ ५०० मन्दिर की चौड़ी रौंस आयी है । इस रौंस से हाथ लगता जल आया है । इस रौंस से जल तरफ हर एक हांस के मध्य भाग से कमर भर की सीढ़ियां जल चबूतरें पर उतरी हैं ।

जल चबूतरा पर नाभी तक जल आया है। इस जल चबूतरा के आगे सीढ़ियां जमीन तक गयी हैं। रौंस के दूसरे तरफ पूर्व में कमर भर का ऊंचा चबूतरा घेर कर आया है। चौरसपाल के साथ लगकर जो १२८ चादें हैं। चांदे भीतर से पोलें आये हैं। २५० मन्दिर के लम्बे-चौड़े बराबर जिसमें चार मेहरावें आयी हैं। एक मेहराब तो रौंस पर आयी है। एक मेहराब भीतरी दीवार में अक्शी २५० मन्दिर की आयी है। जिस मेहराब में १२५ मन्दिर का दरवाजा आया है। भीतरी तरफ मन्दिर में जाने के वास्ते, दो मेहराबें दाएं-बाएं आयी है, सो अक्शी है। ऐसे १२८ चबूतरे आये हैं और १२४ चबूतरें दूसरे आये हैं। हर एक में चार मेहरावें आयी हैं। १२५-१२५ मन्दिर की मेहराव रौंस पर आयी है। १२५ मन्दिर की मेहराव भीतरी दीवार में आयी है। दाएं-बाएं की २५०-२५० मन्दिर की आयी हैं। इन मेहरावों पर सीढ़ियां आयी हैं। ताल के तरफ घेर करके परकोटा आया है। परकोटे पर कांगरी आयी है। चारों घाटों के सामने सीढ़ी उतर कर आगे २५० मन्दिर का चौक आता है। इस चौक से भी कमर भर की सीढ़ी उतरी है। ताल की रौंस पर २५६ दरवाजें चारों तरफ आये हैं और रौंस से २५६ कमर भर की सीढ़ी उतरी हैं और कठेड़ा भी चारों तरफ आया है। कठेड़ा, मेहरावों तथा सीढ़ियों की परछाई ताल में पड़ती है।

ताल :- मध्य में टापू ६००० मन्दिर का आया है इस टापू की एक दिशा में पानी की चौड़ाई ५७५० मन्दिर की आयी है। इसी प्रकार चारों तरफ आयी हैं। इस ताल में जहाज, नौका, स्टीमर चलते रहते हैं। इस ताल में हजार पांखड़ी कमल का फूल अपनी शोभा दिखा रहा है।

टापू मोहल :- ताल के मध्य भाग में ६००० मन्दिर का लम्बा-चौड़ा टापू मोहल आया है और गृद १८००० मन्दिर की आयी है। इस टापू पर मोहल आया है। चारों तरफ पानी आया है। इसलिए टापू मोहल कहा जाता है।

पहले १२५ मन्दिर की चौड़ी ताल की पाल आयी है। जिस रौंस से कमर भर की सीढ़ी जल चबूतरे पर उतरी है। इस जल चबूतरे से चारों तरफ सीढ़ियां उतर कर जमीन तक गयी हैं। इस रौंस से हर एक मन्दिर के दरवाजे के सामने ताल तरफ सीढ़ियां उतरी हैं, ६४ जगह से। बाकी में कठेड़ा आया है। इस रौंस से आगे कमर भर का ऊंचा चबूतरा आया है। इस रौंस चबूतरा से भी रौंस पर सीढ़ियां कमर भर की उतरी हैं बाकी में कठेड़ा आया है। कठेड़ा से २५० मन्दिर की दूरी पर एक हार मन्दिरों की आयी है। जिसके ६४ पहल आये हैं। चारों दिशा के जो चार पहल है। वह पहल ७५० मन्दिर का लम्बा है। इन पहलों में दरवाजें आये हैं। एक मन्दिर २५० मन्दिर का लम्बा है और १२५ मन्दिर का चौड़ा आया है। इस प्रकार से ६४ पहल में ६० मन्दिर आये हैं। दरवाजे वाला पहल ७५० मन्दिर का लम्बा और १२५ मन्दिर का चौड़ा आया है।

एक मन्दिर का ब्यान :- ६२-१/२ मन्दिर की जगह एक मन्दिर से ली और ६२-१/२ मन्दिर की जगह दूसरे मन्दिर से ली। इन १२५ मन्दिर की जगह के सामने १२५ मंदिर का लम्बा-चौड़ा एक चौरस गुर्ज आया है। इस गुर्ज में ५ दरवाजें आए हैं तीन दरवाजे तीन दिवारों में और दो दरवाजे मन्दिर में जाने के वास्ते आये हैं। सो उपरा-ऊपर तीन भोम चला गया है। इसी प्रकार से सब गुर्ज आये हैं। दो गुर्जों के बीच में १२५ मन्दिर की दीवार आयी है। जिसमें ४१ मन्दिर का बीच में दरवाजा आया है। और दाएं-बाएं ४२-४२ मन्दिर की दीवार आयी है। दरवाजे के ऊपर दीवार में एक झरोखा आया है। दो गुर्जों के बीच में जो १२५ मन्दिर का चौक आया है इस चौक में बन आया है। सो बन भी तीन भोम तक चला गया है। इन बनों के ऊपर तीन दरवाजें और तीन झरोखें, तीन छज्जे वन पर आये हैं। इन गुर्जों के तीन-तीन छज्जे और तीन-तीन दरवाजे बनों पर आये हैं और तीन-तीन छज्जे, तीन-तीन दरवाजे रौंस पर आये हैं। इन गुर्जों और

बनो के आगे १२५ मन्दिर की रौंस चारों तरफ परिक्रमा के वास्ते है। एक मन्दिर के दरवाजे देखने के ६-६ और गिनती के ५-५ आये हैं दो दरवाजे पांखे की दीवार में आयी हैं। एक बन तरफ दो गुर्जों में जाने के वास्ते एक अन्दर की तरफ। इसी प्रकार से सब छज्जे मन्दिर जानना जी।

एक दिशा का मन्दिर जो ७५० मन्दिर का लम्बा कहा है। जिसमें २५० मन्दिर का दरवाजा आया है। इस दरवाजे के दाएं-बाएं २५०-२५० मन्दिर की दीवार आयी है। इस दीवार के बाहरी तरफ २५०-२५० मन्दिर के लम्बे-चौड़े दो चबूतरें आये हैं। चबूतरा कमर भर का ऊंचा, तीन तरफ सीढ़ियां और तीन तरफ कठेड़ा आया है। चबूतरा पर चार थम्भ आये हैं। जिन पर चार मेहरावें आयी हैं। इसी प्रकार से दूसरा चबूतरा आया है बीच के चौक पर २ मेहरावें आयी हैं। सब १० मेहरावें आयी हैं। इस प्रकार ७५० मन्दिर का लम्बा दरवाजा हुआ। दरवाजा के दाएं-बाएं जो गुर्ज आये हैं। सो ६२-१/२, ६२-१/२ मन्दिर के आये हैं। क्योंकि दरवाजा के हांस से ६२-१/२ मन्दिर की जगह नही मिली है। दरवाजा के दाएं-बाएं जो गुर्ज आये हैं। सो दोनों मिलाकर एक गुर्ज होता है। क्योंकि दोनों की जगह मिलाने से ही १२५ मन्दिर होते हैं। इस वास्ते दाएं-बाएं वाले गुर्ज को मिलाकर एक गुर्ज में गिनती किया है। चौथी छत सबकी एक आयी है। परन्तु चबूतरे की छत्त गुर्ज से १२५ मन्दिर की जल तरफ अधिक रहेगी। इस वास्ते गुर्ज और चबूतरे की छत का भाग अलग-२ मालूम पड़ेगा। इसी प्रकार से चारों दरवाजे चारों दिशा में आये हैं। बाहिर हार में ६० मन्दिर और चार दरवाजें, ६० गुर्ज घेर करके आये हैं। चार दरवाजा चारों दिशा में आये हैं। चारों दरवाजा के सामने १२५ मन्दिर की रौंस नही आयी है। बाकी सब जगह घेर करके रौंस आयी है। क्योंकि यहां पर तो २५० मन्दिर के चबूतरे बन गये हैं। इस मन्दिर से १२५ मन्दिर आगे चलकर चौंसठ थम्भ की एक हार आयी है। एक थम्भ से दूसरे थम्भ तक २५० मन्दिर

की जगह है। परन्तु चारों दरवाजों के सामने एक थम्भ से दूसरे थम्भ तक ७५० मन्दिर की जगह है क्योंकि यह थम्भ पाखें की दीवार के सामने आये हैं। इन थम्भों के आगे एक हार मन्दिरों की और आयी है। यह मन्दिर भी २५० मन्दिर का लम्बा और १२५ मन्दिर का चौड़ा आया है। इसमें दरवाजे देखत के चार-चार और गिनती के तीन-तीन आये हैं। ऐसे ही सब मन्दिर आये हैं। चारों दिशा के जो दरवाजें आये हैं। वे ७५० मन्दिर के लम्बें और १२५ मन्दिर के चौड़े आये हैं। २५० मन्दिर में दरवाजा और २५० मन्दिर में दाएं-बाएं दीवार आयी है। दरवाजों के सामने दरवाजे सब आये हैं। भीतरी मन्दिरों की हार में भी ६० मन्दिर और चार दरवाजें आये हैं। इन मन्दिरों से १२५ मन्दिर आगे एक हार थम्भों की आयी है। सो भी थम्भ ६४ हैं। इसके भीतरी तरफ १२५ मन्दिर के दूरी पर एक कमर भर का ऊंचा चबूतरा है। जिस चबूतरा पर ६४ थम्भ आये हैं। थम्भों के बीच में कठेड़ा आया है। चारों दिशा में चबूतरे से कमर भर की सीढ़ियां उतरी हैं। इस चबूतरे की लम्बाई-चौड़ाई ३७५० मन्दिर की है। गृद ११२५० मन्दिर की आयी है। इस चबूतरा के तीन भाग हैं। मध्य के तृतीय हिस्से में अर्थात १२५० मन्दिर में एक पानी का कुण्ड आया है। इस कुण्ड के एक तरफ ६२५ मन्दिर का बगीचा आया है। इसी प्रकार से दूसरी तरफ भी बगीचा आया है। बाग के दाएं-बाएं जो जगह आयी है। वहां पर गिलम बिछी है। किनार पर कठेड़ा आया है। यहां पर बैठक होती है। यह कुण्ड और बगीचा इस तले की भोम में ही आया है ! ऊपर की दोनों भोमों तथा चांदनी पर गोल चबूतरा ३७५० मन्दिर का लम्बा-चौड़ा आया है। जैसा ब्यान नीचे हुआ है। ऐसी बनक तीनों भोमों तथा चांदनी पर आयी है।

टापू मोहोल की चांदनी :- टापू मोहल की ऊंचाई तीन भोम की आयी है ५२५० मन्दिर की लम्बी-चौड़ी चांदनी आयी है। इस चांदनी के मध्य भाग में एक गोल चबूतरा कमर भर का ऊंचा आया है। ३७५० मन्दिर का

लम्बा-चौड़ा बराबर आया है। गृद ११२५० मन्दिर की आयी है। इस चबूतरा के चारों दिशा में कमर भर की सीढ़ियां उतरी हैं। बाकी सब जगह पर कठेड़ा आया है। इस चबूतरा पर गिलम बिछी है। गिलम पर सिंहासन बिना छत्री का आया है श्री राजश्यामाजी तथा सखियां सुदि चौदस को यहां पधारते हैं। इस चांदनी के चबूतरे पर ६००० कुर्सियां धरी हैं। एक-एक कुर्सी पर दो-दो सखियां बैठती हैं। मुख सिंहासन के तरफ करके बैठती हैं। चादनी कें बाहिर किनार के साथ लगकर ३००० कुर्सियां रखी हैं। एक-एक कुर्सी पर चार-चार सखियां बैठती हैं। चांदनी की किनार पर कमर भर का ऊंचा चबूतरा घेर करके आया है। ६० गुर्ज चारों दिशा के दरवाजों के सामने वाले चौखूटे गुर्ज सो यहां पर आकर इस चबूतरा के मुताबिक चांदनी आयी है। इस चबूतरा के भीतरी तरफ हांस-हांस के मध्य भाग में कमर भर की सीढ़ियां चांदनी पर उतरी हैं। बाकी चारों तरफ कठेड़ा आया है। यह चबूतरा १२५ मन्दिर का लम्बा टापू मोहल के बाहरी मन्दिरों की हार पर आया है। इस चबूतरा के बाहरी किनार पर नीचे की दीवार के ऊपर लाल माणिक की कांगरी सवा हाथ की ऊंची आयी है। गुर्जों के तीनों तरफ तथा दीवार पर तथा नीचे जो बड़े चार दरवाजें के दाएं-बाएं दो-दो चबूतरे व नीचे की चौक पर जो छत आयी है। सो उपरा-ऊपर आयी है। इस ७५० मन्दिर की चांदनी के किनार पर लाल मानिक की कांगरी है। गुर्ज की चांदनी की एक दिशा १२५ मन्दिर की है तीनों तरफों की किनार लेने से ३७५ मन्दिर की जगह होती है। एक गुर्ज की चांदनी के किनार पर २०० कुर्सियां रखी हैं। पौने दो मन्दिर की जगह पर एक कुर्सी आयी है। इसी हिसाब से सब कुर्सियां आयी हैं। एक कुर्सी पर एक-एक सखी बैठती हैं। एक गुर्ज पर २०० सखीयां बैठती हैं। ६० गुर्जो पर १२००० सखीयां विराजमान हैं। ७५० मन्दिर की लम्बी २५० मन्दिर की चौड़ी चौखूटे गुर्जों की चांदनी आयी है। इस चांदनी पर बैठक नही होती है। इस चांदनी

के दाएं-बाएं जो १२५ मन्दिर की लम्बी और ६२-१/२ मन्दिर की चौड़ी गुर्ज की चांदनी जो आयी है। यह दोनों मिलाकर एक गुर्ज का हिसाब हुआ। १०० सखी एक तरफ बैठती हैं। १०० सखी दूसरी तरफ बैठती हैं। बीच की ७५० मन्दिर की चांदनी खाली है। इस प्रकार से चारों दरवाजों की वनक आयी हैं। मध्य का चबूतरा तथा किनार के चबूतरा की ऊंचाई बराबर आयी है। लाल मानिक के कांगरी से कुर्सियां ऊंची है।

रंगो का ब्यान :- इस हौज-कौसर तथा टापू मोहल की बनक का जो ब्यान किया गया है। सो सब एक हीरे में आयी है। मोहल, थम्भ, मन्दिर, पाल हिंडोले, वृक्ष, घाट, रौंसें, सीढ़ियां, देहुरी चांदे तथा ताल की जमीन तथा टापू-मोहल तथा जो भी जोगबाई आयी है। सो सब एक हीरे के अन्दर है सन्ध किसी जगह नही है। १२८ देहुरी जो है। इसमें दोनों तरफों के हांसो के रंग मिले हैं। हौज-कौसर के बाहरी बन रौंस से लेकर भीतरी जल रौंस तक ३००० मन्दिर होते हैं। जिस पर २५० मन्दिर का एक गलीचा, ऐसे १२ गलीचें आये हैं। हर एक गलीचा का रंग अलग-अलग आया है। फिर एक गलीचा में २७ रंग आये हैं। बारह गलीचा में जो एक गलीचा है सो ९ मन्दिर ३६ हाथ का होता है। इस प्रकार से हर एक गलीचा में २७-२७ गलीचा आया है। तिन २७ में जो एक गलीचा आया है वह नवरंगों का है सो नवरंग नव रस से शोभायमान है। वह ९ रस प्रेम रस में विराजमान है। सो प्रेम रस श्री राज जी महाराज जी के अन्दर विराजमान है। जिनके हिसाब का पारावार नही है। जब इन स्थानो पर पारावार नही पाया जाता है तो श्री राजजी के अन्दर जो हौज-कौसर तथा अनंत २५ पक्ष विराजमान हैं। उसका क्या ब्यान किया जाए। कुल ३२४ गलीचे हैं। एक गलीचा ९ रंग का तब सब रंग २९१६ होते हैं। टापू मोहल में भी १२८ रंग भासत हैं। यहां पर अपरम्पार शोभा हो रही है। जिसका पारावार नही है।

चौबीस हांस का मोहोल :- हौज-कौसर के दक्षिण तरफ कुन्ज वन के किनारे जबेरों के मोहलों से लगकर से चौबीस हांस का मोहल आया है। प्रथम जमीन से भोम भर का ऊंचा चबूतरा उठा है। किनारे पर कठेड़ा आया है। एक दिशा में २५० मन्दिर की चौड़ाई लेकर भोम भर नीचे सीढ़ी उतरी है। इस तरह चारों दिशा में सीढ़ी उतरी हैं। किनार से ५०० मन्दिर की रौंस की जगह छोड़ कर मन्दिरों की एक हार आयी है। २० मन्दिर और चार दरवाजें आये हैं। मन्दिर ५०० मन्दिर का लम्बा और २५० मन्दिर का चौड़ा आया है। दरवाजें का मन्दिर १००० मन्दिर का लम्बा और २५० मन्दिर का चौड़ा आया है। इस प्रकार से सब मन्दिर और दरवाजें आये हैं। प्रथम मन्दिरों की हार की गृद १४००० मन्दिर की आयी है। लम्बाई-चौड़ाई ४६६७ मन्दिर की आयी है। १२५ मन्दिर एक हांस से लिए १२५ मन्दिर दूसरे हांस से लिए तब २५० मन्दिर का लम्बा-चौड़ा गुर्ज बना। जिसमें पांच दरवाजे आये हैं। तीन दरवाजे गुर्ज की तीन दीवारों में आये हैं। और दो दरवाजे मन्दिरों में जाने के वास्ते आये हैं। इस प्रकार से चारों तरफ २४ गुर्ज आये हैं दो गुर्जों के बीच में २५० मन्दिर की जगह आयी है। जिसमें ८४ मन्दिर का दरवाजा आया है। दांएं-बाएं ८३-८३ मन्दिर की दीवार आयी है। दो दरवाजे दोनों पाखों की दीवारों में आये हैं। और एक दरवाजा भितरी तरफ आया है। दो दरवाजे दो गुर्जों में जाने के वास्ते आये हैं। इसी प्रकार से सब मन्दिर आये हैं।

बड़ा दरवाजा :- एक दिशा में १००० मन्दिर का लम्बा और २५० मन्दिर का चौड़ा जो दरवाजे का चौक आया है। उसमें २५० मन्दिर का दरवाजा आया है। और दाएं-बाएं ३७५-३७५ मन्दिर की दीवार आयी है। दरवाजों के सामने २५० मन्दिर का चौक आया है। चौक के दाएं-बाएं दो चबूतरे कमर भर ऊंचे २५० मन्दिर के लम्बे-चौड़े आये हैं। चबूतरों से तीन तरफ

सीढ़ियां उतरी हैं । बाकी में कठेड़ा आया है । चबूतरा के कोनों में चार थम्भ उठे हैं । ऊपर छत आयी है । एक चबूतरा पर चार मेहराब और चार मेहराब दूसरे चबूतरे की तथा दो मेहराब दोनों चबूतरों के मध्य की । सब १० मेहराबें आयी हैं । इसके साथ ही १२५ मन्दिर की जगह गुर्जों ने दाबी है । इसी प्रकार की बनक उपरा-ऊपर पांच भोम तक चली गयी है । इसी प्रकार से चारों दिशा में दरवाजें आये हैं । इन मन्दिरों की भीतरी तरफ २५० मन्दिर के दूरी पर एक हार थम्भों की आयी हैं । जिसमें २४ थम्भ आये हैं । इन थम्भों की हार से २५० मन्दिर आगे एक हार मन्दिरों की, जिसमें २० मन्दिर चार दरवाजें आये हैं । इन मन्दिरों में दरवाजे देखत के चार-चार गिनती में तीन-२ आये हैं । इन मन्दिरों की हार से २५० मन्दिर की दूरी पर एक हार २४ थम्भों की आयी है । इन थम्भों से २५० मन्दिर आगे कमर भर ऊंचा चबूतरा, किनार पर थम्भ, चारों दिशा में सीढ़ियां, बाकी में कठेड़ा आया है । यह चबूतरा २४ पहल का १६६७ मन्दिर का लम्बा-चौड़ा और ५००१ मन्दिर की गृद आयी है । चबूतरा के तीसरे हिस्सा में पानी का कुण्ड आया है । कुण्ड के मध्य में पानी का स्तून ऊपर चांदनी तक गया है । पानी का कुण्ड तले की ही भोम में आया है । चार भोमों में केवल चबूतरा, चांदनी पर फिर कुण्ड आया है । नीचे जितना कुण्ड था, ऊपर भी उतना ही आया है । चबूतरे के तीसरे हिस्से में कुण्ड आया है । एक हिस्सा में बगीचा चेहबच्चा आये हैं एक हिस्सा में गिलम, सिंहासन, कुर्सियां आयी हैं ।

छट्ठी चांदनी :- चांदनी पर कुण्ड में २५ फुहारे आये हैं । २४ तो गुर्जो के सामने और एक मध्य में आया है । २४ फुहारों की कमानों द्वारा पानी उछल कर गुर्जों के कुण्डों में पड़ता है । मध्य का फुहारा उछल कर उसी में पड़ता है । कुण्ड से २४ नहरें निकली है । सो नहरें बगीचों में पानी देकर

गुर्जों के कुण्डों में मिल जाती है। इन कुण्डों के चारों तरफ चांदनी आयी है। इसके भीतर पानी होने से गुर्ज का कुण्ड कहा गया है। क्यों कि नीचे गुर्ज आये हैं। कुण्डों से पानी चादरों में होकर चारों तरफ नीचे जो कुण्ड आये हैं। उनमें पानी पड़ता है। चांदनी के कुण्ड कमर भर गहरे आये हैं। चबूतरे से कमर भर की सीढ़ियां चांदनी पर आयी हैं।

तालों का बयान :- २४ हांस का भोम भर का ऊंचा जो चबूतरा है। तिस चबूतरा से लगकर कमर भर ऊंचे रौंस पर २४ कुण्ड पानी के आये हैं। इन कुण्डों में पानी चादरों द्वारा ऊपर से गिरता है। सो ये कुण्ड गुर्जो के सामने आये हैं। कुण्ड की लम्बाई-चौड़ाई ३३ कोस की और दाएं-बाएं ३३-३३ कोस की पाल आयी है। इस कुण्ड से नहर निकली है। नहर की चौड़ाई १०० कोस की, जिसका हिसाब ३३ कोस में नहर, और ३३-३३ कोस की पाल दोनों तरफ आयी है। सो कमर भर ऊंची आयी है। नहर भोम भर की गहरी आयी है। पाल के मध्य में ११ कोस में मोहलात, मोहलात के दोनों तरफ ११-११ कोस की रौंस आयी है। यहीं वनक दूसरी पाल पर आयी है। इन मोहलातों की ऊंचाई दो भोम की है मध्य में नहर खुली आयी है। सो नहर ३०० कोस आगे जाकर १०० कोस का लम्बा-चौड़ा ताल आया है। उसमें मिली है। ताल का ब्यान ३३ कोस का लम्बा-चौड़ा, ताल के चारों तरफ ३३ कोस की पाल आयी है। पाल के मध्य में ११ कोस में मोहलात, मोहलात के दोनों तरफ ११-११ कोस की रौंस आयी है। यहि बनक दूसरी पाल पर आयी है। इन मोहलातों की ऊंचाई दो भोम की मध्य में नहर खुली आयी है। मोहलात दो भोम ऊंची बीच में ताल खुला है। जल की तरफ की रौंस से कमर भर की सीढ़ियां जल चबूतरे पर उतरी हैं। ताल के चारों तरफ नहर चलती है। इस प्रकार से एक कुण्ड के सामने २४ ताल आये हैं। इसी प्रकार २४ कुण्डों के सामने २४-२४ ताल आये

हैं। सब ताल ५७६ हुये। बगीचो के वृक्षों के ऊंचाई भी दो भोम की आयी है। नहर केऊपर तथा ताल केऊपर छत नहीं आयी है। बाकी सब जगह चांदनी आयी है। २४ हांस के जो चार बड़े दरवाजे हैं उन दरवाजों के सामने बड़े बगीचे आये हैं। २५० मन्दिर में दरवाजा सामने २५० मन्दिर में सीढ़ियां उतरी हैं। २५० मन्दिर की चौड़ी कमर भर ऊंची रौंस सब तालों की घेर करके आयी है। जो नहर की रौंस है। उसमें मिली है। इस रौंस के दाएं-बाएं बगीचा की लम्बाई ३२५ मन्दिर की आयी है। चौड़ाई ३०० मन्दिर की आयी है। इसी प्रकार चारों दरवाजों के सामने बनक आयी है। १०० कोस=१२५ मन्दिर का हिसाब आया है। जब सब ताल पड़ चुके तो ईशान कोना के दो तालों से दो नहरे निकली सो ४०० कोस आगे चलकर दोनों तरफ घूमी है एक नहर तो उत्तर होकर दक्षिण तरफ आयी है। दूसरी पूर्व होकर दक्षिण में दूसरी नहर में मिलकर जवेरों की नहरों में मिल जाती है। यह जो सब तालों की घेर करके नहर आयी है। इसी नहर में सब नहरें आकर मिली हैं। तो बड़ी नहर हो गयी है। इस बड़ी ४०० कोस की नहर में १३३ कोस में पानी १३३-१३३ में दोनों पालें, पालों के मध्य भाग में मोहलात और दोनों तरफ रौसें आयी हैं। यह मोहल दो भोम के आये हैं।

जवेरों के नहरें :- चौबीस हांस के मोहल के साथ दक्षिण तरफ जवेरों की नहरें आयी हैं। इन जवेरों की नहरों की चौड़ाई ४५०००कोस की होती है। कुन्जवन के साथ एक नहर आयी है। जो ४०० कोस की चौड़ी जिसके मध्य भाग में १०० कोस में पानी और १५०-१५० कोस की जगह दोनों तरफ जो रही। उसके ५० कोस में पाल और ५०-५० कोस की दोनों तरफ रौंस आयी है। यही बनक दूसरी तरफ भी आयी है। यह नहर चारों तरफ घूम कर फिर उसी जगह मिल गयी हैं। कुन्ज-निकुन्ज के साथ, पश्चिम-चौगान के साथ, बड़ोवन के साथ, लगकर पुखराज से ४५०००

होकर तथा अक्षर धाम से ४५०००लाख कोस दूर पूर्व होकर दक्षिण में आकर मिली है । इस नहर की पाल के ऊपर जो कुन्जवन के साथ आयी है । इसकी परिक्रमा६२२५००० कोस की होती है । इस नहर के ५०००० कोस की दूरी पर दूसरी नहर आयी है । इसी प्रकार से ५०००० कोस जगह बीच-बीच में छोड़ कर दस नहरें आने से ९ चौक बने हैं । चौड़ाई तरफ भी ५०००० कोस पर नहर आयी है । तो चौड़ाई में १२५ नहरें आयी हैं । जिसमें १२४ चौक आये हैं । ये चौक नहर सहित ५०००० कोस का लम्बा-चौड़ा होता है । जहां पर चार नहरों के कोना जुड़े हैं । वहां चार चेहबच्चें आये हैं । दो चेहबच्चों के मध्य नहर में पुल आया है । इसी प्रकार से सब नहरें आयी हैं ।

एक हवेली का बयान :- एक चौक के तीसरे हिस्से में १६६६७ कोस का लम्बा-चौड़ा एक गोल चबूतरा भोम भर का ऊंचा आया है । जिसकी गृद ५०००० कोस की आयी है । चारों दिशा में भोम भर की सीढ़ियां उतरी है । सीढ़ियों की चौड़ाई १३३ कोस की आयी है । सीढ़ियों की जगह छोड़ कर बाकी में कठेड़ा आया है । ४०० कोस की रौंस की जगह छोड़ कर चार पहल की हवेली गोल घेर करके आयी है । इस हवेली के मध्य भाग में ४०० कोस का दरवाजा आया है । ऐसे चारों दिशा में आये हैं । इन दरवाजों के दाएं-बाएं आठ-आठ मोहल आये हैं । इन मोहलों के पांखे की दीवार के साथ लगकर रौंस के बाहरी तरफ २०० कोस का लम्बा-चौड़ा चौखूठा गुर्ज आया है । इसी प्रकार चारों कोना पर चार गुर्ज आये हैं । मोहल तो गोल है । गुर्ज लगने से चार पहल का मोहल कहा जाता है । एक हवेली में ६४ मोहल चार दरवाजें आये हैं ।

एक मोहोल :- एक मोहल ९०० कोस का लम्बा-चौड़ा बराबर है एक दिशा में ९ मन्दिर, एक मन्दिर १०० कोस का, बाहर की तरफ मध्य में एक मन्दिर

का दरवाजा, जिसका हिसाब ३३ कोस का दरवाजा ३३-३३ कोस में चौखूटे दो गुर्ज आये है । दाएं-बाएं चार-२ मन्दिर आये हैं । जिन मन्दिरों में ३३ कोस का दरवाजा है । देखत के दरवाजे ४-४ गिनती में ३-३ है । हर एक मन्दिर में पांखे का दरवाजा दोनों तरफ जवाब देता है । इसी प्रकार की भीतरी तरफ वनक आयी है । १०० कोस में दरवाजा जिसमें ३३ कोस का दरवाजा-३३-३३ कोस के दाएं-बाएं कमर भर ऊंचे चबूतरे आए हैं इस दरवाजे के दाएं-बाएं चार-चार मन्दिर आये हैं । पाखें में ६-६ मन्दिर आये हैं । जिसमें एक मन्दिर का दरवाजा आया है । दाएं-बाएं तीन-२ मन्दिर आये हैं । दरवाजे देखत के चार-२ गिनती के तीन-२ आये हैं । एक भीतरी तरफ, दो पांखे में, एक दरवाजा दूसरे मोहल की तरफ बाहरी दीवार में जो हैं । सो दूसरे मोहल में भी काम देता है । दो मोहोलों के बीच में जो दीवार आयी है । सो एक ही आयी है । दोनों मोहलों में काम देती है । इस वास्ते पांखे में गुर्ज आदि नही आये हैं । एक मोहोल में २८ मन्दिर और चार दरवाजें आये हैं । इसके भीतर १०० कोस की दूरी पर एक कमर भर का ऊंचा चबूतरा, किनार पर १२ थम्भ है हैं मध्य में गिलम सिंहासन आदि आये हैं । यह एक मोहल का विस्तार है । ऐसे ही ६४ मोहल आये हैं । चार दरवाजें, एक दरवाजा ४०० कोस का आया है जिसका ब्यान हो चुका है बाहरी रौंस पर जो चौरस गुर्ज आये हैं । उनमें ५-५ दरवाजे आये हैं । इन मोहलों के भीतर ९०० कोस पर ६४ थम्भों की एक हार आयी है । इन थम्भों के भीतरी तरफ ९०० कोस दूर एक और मोहल की हार आयी है । जिसमें ६४ मोहाल आये हैं । और चार दरवाजें आये हैं । एक मोहल में २८ मोहल आये हैं । इन मोहलों की वनक बाहरी मोहलों के समान आयी है । इन मोहलों की हार के आगे ९०० कोस दूरी पर ६४ थम्भों की एक हार आयी है । इन थम्भों के ९०० कोस दूर आगे कमर भर का ऊंचा चबूतरा आया है । चबूतरा के किनारे पर ६४ थम्भ

चारों दिशा में सीढ़ियां बाकी में कठेड़ा शोभा लेता है। इस चबूतरा की लम्बाई-चौड़ाई ५०६७ कोस की और गृद १५२०१ कोस की आयी है। इस चबूतरा के तीन भाग हुये। मध्य के एक भाग में १६८९ कोस का चेहबच्चा आया है। चारों दिशा में चार चांदे उतरे हैं। कमर भर की सीढ़ियां जल चबूतरा पर उतरी है। चारों तरफ कठेड़ा आया है। इस चेहबच्चा के मध्य भाग में पानी का एक स्तून आया है। सो जाकर चांदनी पर खुला है। दूसरे हिस्सा में दाएं-बाएं ८४४-१/२, ८४४-१/२ कोस में बगीचा आया है। तीसरे हिस्सा में ८४४-१/२, ८४४-१/२ कोस में सुन्दर गिलम बिछी है। जहां पर बैठक होती है। बगीचा और कुण्ड एक ही भोम में आया है। ऊपर की भोमों में चबूतरा व गिलम बिछी है। और सिंहासन आया है। चांदनी पर जाकर नीचे जितना चेहबच्चा था उतनी ही लम्बा-चौड़ा चेहबच्चा (ताल) कुण्ड चांदनी पर बना है। चारों दिशा में चार चांदे के दोनों तरफ सिढ़ियां उतरी हैं। बाकी में कठेड़ा है। चेहबच्चा के मध्य भाग में ५ फुहारे आये हैं। चार फुहारों का पानी ऊछल कर चारों दिशा के कुण्डों में कमानों द्वारा पड़ता है। पांचवा ऊछल कर उसी में पड़ता है। अब कुण्ड से गुर्जन के सामने चार नहरें निकली हैं। सो छात पर पानी देकर और छात के बीच में होकर पानी कुण्डों में आता है। इन गुर्जों के कुण्डों से पानी नीचे जो चबूतरा की दीवार से लग कर कमर भर ऊंचे जो चार कुण्ड आये हैं। उनमें चार चादरों होकर चारों दिशा में चारों कुण्डों में पड़ताहै। चांदनी पर जो कुण्ड आये हैं। उनके चारों दिशा में चांदनी आयी है। इन चार कुण्डों में से ४ नहरों में होकर पानी जाता है। ये मोहोल चार भोम के आये हैं।

बगीचे का बयान :- भोम भर ऊंचे चबूतरे से लग कर चारों तरफ १०० कोस की चौड़ी रौंस आयी है। यह रौंस बगीचों की जिमी से कमर भर ऊंची है। जो नहरों की पाल आयी है उस पाल के बराबर १०० कोस चौड़ी रौंस चारों तरफ घेर करके आयी है। जिस पर सीढ़ियां भोम भर की उतरी हैं।

हवेली के दरवाजों के सामने सीढ़ियां जो उतरी हैं। इन सीढ़ियों के सामने बगीचा की जमीन से कमर भर ऊंची रौंस चली गयी है। सोए रौंस पाल के नीचे जो रौंस आयी है। उसमें जाकर मिल गयी है। इसी तरह से चारों तरफ वनक आयी है। चबूतरा की दीवार के साथ लगकर गुर्जों के सामने जमीन से कमर भर ऊंचे चारों दिशा में चार कुण्ड आये हैं। सो ए कुण्ड २०० कोस का लम्बा-चौड़ा आया है। इस कुण्ड के तीन तरफ रौंसें आयी है। सो ए वहीं रौंस है जो चारों तरफ घूम करके आयी है। ऐसी रौंस चारों कुण्डों पर आयी है। एक कुण्ड के सामने १०० कोस का चौड़ा चबूतरा आया है। जिसमें ३३ कोस में नहर, ३३-३३ कोस में दाएं-बाएं रौसें आई है। इस रौंस से कमर भर की सीढ़ी दोनों तरफ उतरी है। इसी नहर के सामने पाल के नीचे जो वन रौंस आयी है। इस रौंस की किनार पर बगीचा की जमीन में एक चेहबच्चा बना है। सो यह नहर का पानी चेहबच्चा में समाता है। दोनों रौंस व पाल के नीचे होकर बड़ी नहर में पानी समाता है। इस प्रकार से चारों कुण्डों के सामने बनक आयी है। चार पहल की हवली के सामने चार बगीचे आये हैं। जिनमें नहरें चेहबच्चें, फुहारें उछलतें हैं। इस बगीचों के वृक्षों की ऊंचाई पांच भोम की आयी है। ये वृक्ष बड़ोवन के कहे जाते हैं। चबूतरा केऊपर जो हवेली आयी है। इस हवेली में ६४ मोहल का ब्यान हो चुका है। इन मोहलों के थम्भों में, छातों में, जमीन में तथा सिंहासन आदि जो जोगबाई है इन सब चीजों में पानी चलता दिखाई देता है। हाथ लगाइये तो हाथ को लगता ही नही है। क्योंकि यह सब जोगबाई हीरे की आयी है। हीरे के अन्दर पानी चलता दिखाई देता है। ऐसी अपरम्पार शोभा हो रही है। यह मोहल का ब्यान है। ऐसे एक हार में चार पहल के मोहल १२४ आये हैं। ऐसी वनक सबमें आयी है। भोम भर सीढ़ियां उतर कर रौंस पर होकर दाएं-बाएं वन की शोभा देखते-देखते वन रौंस पर आये। वन रौंस से कमर भर की सीढ़ी चढ़ कर पाल पर आये। आगे नहर के पुल पर होकर दूसरी तरफ रौंस पर होकर कमर

भर ऊंची पाल पर चढ़कर आगे वन रौंस पर होकर आगे चलकर भोम भर ऊंचे चबूतरे पर आये । यहां पर आठ पहल की हवेली आयी है ।

आठ पहल की हवेली :- इस हवेली में भी चार पहल की हवेली जैसी सब बनक आयी है । थोड़ा सा अन्तर है सो लिखा जाता है । इसमें आठ गुर्ज आये हैं । सो गुर्ज चौरस हैं । चारों दिशा में चार दरवाजें मध्य में आये हैं । हर दरवाजा के दाएं-बाएं चार-चार मोहल के दूरी पर गुर्ज आये हैं । इसी तरह से चारों तरफ आये हैं । दो गुर्जों के बीच में आठ मोहल आये हैं । ऊंचाई भी आठ भोम की आयी है । मध्य कुण्ड से चांदनी पर आठ कमानों द्वारा पानी गुर्जों के कुण्डों में पड़ता है और बीच का एक फुहारा का पानी उसी में पड़ता है । इसमें से आठ नहरें निकली हैं । ऊपर से आठ चादरें गिरती हैं । नीचे आठ कुण्ड आये हैं । ८ कुण्डों के सामने ८ नहरें आयी हैं । आगे रौंस के साथ आठ चेहबच्चां आये हैं । इस हवेली के चारों दिशा में आठ बगीचे आये हैं । वृक्षों की ऊंचाई नौ भोम की आयी है । बाकी वनक बराबर है ।

१६ पहल की हवेली :- इस हवेली में १६ गुर्ज, १६ भोम की ऊंचाई आयी है । दो गुर्जों के बीच में चार मोहल आये हैं । १६ चादरें गिरती हैं । नीचे १६ कुण्ड हैं । १६ ही नहरें हैं । १६ ही चेहबच्चें आये हैं । चारों दिशा में १६ बगीचें आये हैं । बगीचों की ऊंचाई १७ भोम की आई है । एक हार की सब १२४ हवेली घेर करके आयी है । बाकी वनक चार पहल हवेली जैसी आयी है ।

३२ पहल की हवेली :- ३२ पहल की हवेली में ३२ गुर्ज आये हैं । दो गुर्जों के बीच में दो मोहल आये हैं । दो मोहलों के बीच जो पांखे की दीवार आयी है । इस दीवार के सामने गुर्ज बने हैं । इस प्रकार सब दरवाजों के दाएं-बाएं आये हैं । इस हवेली कीऊंचाई ३२ भोम की आयी है । ३२ चादरें

कुण्डों में गिरती हैं। ३२ ही कुण्डों के सामने ३२ ही नहरें निकली हैं। नहरों के सामने ३२ ही चेहबच्चें आये हैं। हवेलि के चारों तरफ ३२ बगीचें आये हैं। इन वृक्षों की ऊंचाई ३३ भोम की आयी है। और सब वनक एक सी आई है।

६४ पहल की हवेली :- ६४ पहल की हवेली में ६४ गुर्ज आये हैं। एक मोहल की दीवार के सामने गुर्ज आये हैं। परन्तु एक दिशा में १६ पहल आये हैं। पाखें की दीवार १६ होती हैं। १६ हवेली के सामने १६ गुर्ज आये हैं। दरवाजे वाली दीवार में गुर्ज नहीं आया है। इस प्रकार से चारों तरफ ६४ गुर्ज आये हैं। ६४ भोम की ऊंचाई आयी हैं। ६४ चादरें गिरती हैं। नीचे ६४ कुण्ड आये हैं। ६४ नहरें निकली हैं। आगे ६४ चेहबच्चें आये हैं। हवेली के चारों तरफ ६४ बगीचे आये हैं। वृक्षों की ऊंचाई ६५ भोम की है। जिस प्रकार से ४-८-१६-३२-६४ पहल के मोहल का ब्यान हुआ है, उसी प्रकार ६४ पहल के हवेली के बाद ३२-१६-८-४ पहल के मोहल चारों तरफ घेर कर आये हैं चार, आठ पहल की हवेली में बड़ोवन आया है १६-३२ पहल की हवेली में मधुवन आया है और ६४ पहल की हवेली में महावन शोभा ले रहा है। इन दस नहरों का पानी एक हांस दक्षिण तरफ चल कर महानद में सब पानी समाता है। एक हार में १२४ हवेली है। ऐसी-ऐसी नव हारें चारों तरफ आयी है। तिन सब हवेलियों की संख्या ११९६ होती है। जवेरों की नहरों का विस्तार ४५०००० कोस का है। (साढे ४ लाख कोस चौड़ाई में आया है।)

मानिक पहाड़ :- महानद से महानद तक २ कोट ३६-१/२ लाख कोस की लम्बाई-चौड़ाई आयी है। इसके मध्य में ४८ लाख कोस की गृद का एक भोम ऊंचा चबूतरा उठा। १२००० हांस की १६ लाख कोस की लम्बाई-चौड़ाई हुयी। १०० कोस की चौड़ाई लेकर चारों दिशा में सीढ़ियां उतरी

हैं । चारों तरफ सीढ़ियों की जगह छोड़कर बाकी सब जगह कठेड़ा आया है । ४०० कोस रौंस की जगह छोड़कर १२००० हांस की लम्बी एक मन्दिर की मोटी दीवार आयी है । यह दीवार एक मन्दिर की मोटी है जिससे इसका नाम मन्दिरी दीवार रखा गया है । ४०० कोस का एक हांस आया है । ५० कोस एक हांस के लिए ५० कोस दूसरे हांस के लिए इन १०० कोस में गोल गुर्ज आया है । जिसमें ६-६ दरवाजें आये हैं । तीन दरवाजें बाहरी रौंस पर और तीन दरवाजें त्रिपोलियों में आये हैं । ऐसे घेर करके १२००० गुर्ज आये हैं । चार दरवाजें चारों दिशा में बड़े आये हैं ।

बड़े दरवाजे का ब्यान :- मध्य में १०० कोस का दरवाजा, दरवाजे के दाएं-बाएं बाहरी रौंस पर १००-१०० कोस के लम्बे-चौड़े कमर भर ऊंचे दो चौखुटे चबूतरें आये हैं चारों कोनों पर चार थम्भ आये हैं । एक चबूतरा के तीन तरफ सीढ़ियां है और तीन तरफ कठेड़ा आया है । इसी प्रकार से दूसरे चबूतरे पर वनक आयी है । दोनों चबूतरों पर १० मेहरावें आयी हैं । ऐसी वनक चांदनी तक चली गयी है । इसी प्रकार चारों दरवाजों में ऐसी ही बनक आयी है और उपरा-ऊपर चली गयी है । चौखुटे गुर्जों के साथ गोल गुर्ज आये हैं ।

इन मन्दिरी दीवार के मध्य में ३३ कोस का दरवाजा आया है । दाएं-बाएं ३३-३३ कोस के लम्बे-चौड़े दो चबूतरे आये हैं । जो कमर भर ऊंचे और चौरस आये हैं । तीन तरफ कमर भर की सीढ़ी उतरी है । बाकी में कठेड़ा आया है । चारों कोना पर चार थम्भ आये हैं । दोनों चबूतरा पर दस मेहरावें आयी है । उपरा-ऊपर १२००० भोम चलें गये हैं । इस चबूतरा के दाएं-बाएं १००-१०० कोस की दीवार आयी है । इस दीवार के दाएं-बाएं गोल गुर्ज आये हैं । यह एक हांस का ब्यान है । इसी प्रकार सब हांसों में आयी है । इस बाहरी रौंस पर १२००० गोल गुर्ज आये हैं । ३३ कोस के चौरस गुर्ज आये हैं । जो २३९९२ है और १००-१०० कोस वाले ८

चबूतरे आये हैं और १२००० दरवाजें आये हैं। इन दरवाजों के भीतर जाकर देखिए तो दो हार थम्भों की चारों तरफ आयी है। आगे १२००० हवेली घेर करके आयी हैं। फिर आगे लम्बाई तरफ दो हार थम्भों की, फिर हवेली इसी प्रकार करते १२००० हवेली चौड़ाई तरफ आयी है। लम्बाई तरफ भी १२००० आयी है। बीच-बीच में दो-दो हार थम्भों की आयी है। हवेली के आगे दो हार थम्भों की आयी है। लम्बाई तरफ भी दो हार थम्भों की हवेलियों के बीच में गयी है। इसी प्रकार चौड़ाई तरफ १२००० त्रिपोलिया आये हैं। हर एक हवेली के चारों तरफ एक हार थम्भों की आयी है। एक हवेली की लम्बाई-चौड़ाई ३०० कोस की है। सब हवेली १४ करोड़ ४० लाख हुयी। बड़े चारों दरवाजों के भीतरी तरफ पहली हवेली चौरस आयी है। फिर गोल आयी है। इसी प्रकार से आती गयी है। ६००० गोल हवेली, ६००० चौरस हवेली आयी हैं। चौरस हवेली के दाएं-बाएं गोल हवेली और गोल हवेली के दाएं-बाएं चौरस हवेली आयी है। दो हवेलीयों के बीच में जो दो हार थम्भों की आयी है। सो सीधी चली गयी है। गोल हवेलीयों की गोलाई पर नही घूमी है। सो ये थम्भ ३३ कोस के अन्तर पर आये हैं। एक थम्भ की मोटाई एक मोहल जितनी आई है। इन थम्भों के भीतर अनेक प्रकार की मोहलातें, मन्दिर, कोठरियां नहरें चेहबच्चें, बगीचे, फुहारें, अपरम्पार शोभा ले रहे हैं। ये थम्भ क्या हैं। मानो एक मोहल ही खड़ा है। हवेली की एक-एक दिशा में ऐसे-ऐसे दस थम्भ आये हैं। इस तरह से चारों तरफ आये हैं और सब हवेलियों में इसी प्रकार से आये हैं। त्रिपोलिया में थम्भों की जो दो हारें आयी हैं। जहां चार हवेली के चार कोना आये हैं वहां पर ९ चौक आये हैं। मध्य के ३३ कोस के चौक में कुण्ड आया है। चारों दिशा के चांदों से दोनों तरफ जल चबूतरे पर सीढ़ियां उतरी हैं। बाकी जगह पर कठेड़ा आया है। इनकी चार मेहरावों में चार हिंड़ोले आये हैं। एक लाइन में १२००० कुण्ड आये हैं। तब १२००० कुण्ड़ों की

१२००० हारें आयी है। सब कुण्ड १४ करोड़ ४० लाख हुये। एक कुण्ड से दूसरे कुण्ड तक गुप्ता-गुप्त नहर जाती है। इस प्रकार से सब हवेलियों को घेर करके नहरें आयी हैं। चार हवेलियों के कोनों पर २४ मेहरावें आयी हैं। इस प्रकार से सब कुण्डों पर २४-२४ मेहरावें आयी हैं। जहां दो हवेलियों के दरवाजे आमने-सामने आये हैं। वहां पर भी २४ मेहरावें आयी हैं। इसी प्रकार से सब दरवाजों पर शोभा आयी है।

एक हवेली :- एक हवेली ३०० कोस की लम्बी-चौड़ी आयी है। इस बाहिर की दीवार पर पहले एक अक्शी थम्भ बनकर ऊपर एक अक्शी मेहराव आयी है। ऊपर फूल तीन नगन के आये हैं। दाएं-बाएं दो फूल, एक मध्य में ऊपर आया है। ऊपर कांगरी, ध्वजा आदि सब आये हैं। ऊपर हवेली की प्रथम भोम आयी है। इस अक्शी मेहराव की चौड़ाई ३०० कोस की आयी है। ऊंचाई ४०० कोस की आयी है। इस अक्शी मेहराव के बीच में तीन मोहल का हवेली का दरवाजा आया है। दाएं-बाएं दो चबूतरे कमर भर ऊंचे एक-एक मोहल के लम्बे-चौड़े आये हैं। इस चबूतरा पर तीन तरफ सीढ़ी तथा कठेड़ा आया है। चारों कोना पर चार थम्भ आये हैं। जिनमें मेहरावें आयी हैं। इस प्रकार दूसरे चबूतरे पर भी आयी हैं। दोनों चबूतरों की तथा मध्य की मिलाकर दस मेहरावें हुई। यह हवेली के प्रथम भोम तक गयी है। इन दरवाजों की ऊंचाई ३०० कोस की आयी है। इसी प्रकार से चारों दिशा में हवेली के दरवाजों की बनक आयी है। यदि दरवाजे के भीतर जाइये तो १५००-१५०० मोहल एक-एक तरफ दिखाई दे रहे हैं। एक दिशा के तीन हजार, चारों दिशा के १२००० हुये। दो मोहलों के बीच में दो हार थम्भो की आयी हैं। जिसमें तीन गली होती है। इस प्रकार से सब मोहलातों के दाएं-बाएं त्रिपोलिया आये हैं। जहां पर त्रिपोलियां आये और मोहलों के आमने-सामने दरवाजे आये हैं। वहां पर २४ मेहरावें आयी हैं। एक मोहोल

के दाएं-बाएं १०-१० थम्भ आये हैं । इन मोहलों के आगे-पीछे जो हवेली की दीवार आयी है । उस दीवार में हर एक मोहल के दरवाजे सामने दरवाजे बने हुये है । हवेलीयों के भीतरी तरफ एक हार थम्भों की आयी है । यह थम्भ बाहिर के थम्भों के समान मोटाई-चौड़ाई ऊंचाई लेकर आये हैं । इन थम्भों के आगे कमर भर नीचे १२००० बगीचे आये हैं । जो चारों तरफ घेर करके आये हैं । हर एक बगीचा में नहरें, चेहबच्चें, फुहारें आदि जोगबाई आयी है । इन बगीचों के आगे कमर भर ऊंचा चबूतरा आया है । जिसके किनार पर थम्भ, थम्भो में मेहरावें हिंड़ोले आये हैं । चारों दिशा में कमर भर की सीढ़ियां हैं बाकी में कठेड़ा आया है । चबूतरे के तीसरे हिस्सा में बाग, बगीचा नहरें, फुहारे आदि हैं । एक हवेली के तीन हिस्सा हुये । एक हिस्सा में दोनों तरफ हवेली की दीवार अर्थात मोहल दूसरे हिस्सा में बाग-बगीचे, तीसरे हिस्से में कमर भर ऊंचा चबूतरा आया है । इस चबूतरा पर खड़े होकर देखिए तो हवेली की छत ४०० कोस की ऊंची दिखाई दे रही है । हवेली के अन्दर घेर करके १२००० मोहोल आये हैं । मोहोलों की ऊंचाई ३०० कोस की आयी है । अर्थात हवेली की दीवार के अक्शी थम्भों तक आयी है ।

एक मोहल का ब्यान :- हर एक मोहल को घेर करके चारों दिशा में १०-१० थम्भ आये हैं । चौड़ाई तरफ भी दीवार के किनार पर दो थम्भ अक्शी आये हैं । ऊपर अक्शी मेहराव आयी है । ऊपर तीन फूल आये हैं । ऊपर कांगरी, छज्जा व छात आयी है । जमीन से ३०० कोस की ऊंचाई पर इस अक्शी मेहराव के अन्दर मध्य भाग में मन्दिर का दरवाजा आया है । दरवाजा के दाएं-बाएं एक-एक मन्दिर के लम्बे-चौड़े दो चबूतरें आये हैं । मानिन्द हवेली के दरवाजे के समान । इसी प्रकार हवेली के चारों दिशा में दरवाजें आये हैं । दरवाजे के भीतरी तरफ जाइये तो १५००-१५०० मन्दिर दाएं-बाएं आये

है । एक-एक दिशा में ३०००-३००० मन्दिर आये हैं । तो चारों दिशा में १२००० मन्दिर आये हैं । दो मन्दिरों के बीच त्रिपोलिया आये हैं । जिसमें तीन गली हुयी । इस प्रकार से सब मन्दिरों के बीच में दो हार थम्भों की आयी हैं । इन मन्दिरों के दरवाजे के सामने मोहल की दीवार में दरवाजें आये हैं । मोहल के बाहरी तरफ एक हार थम्भों की आयी है । भीतरी तरफ भी एक हार थम्भों की आयी है । आगे कमर भर नीचे १२००० बगीचे घेर करके आये हैं । बगीचे के आगे कमर भर ऊंचा चबूतरा आया है । चारों तरफ कमर भर की सीढ़ियां उतरी हैं । चबूतरा पर थम्भ आये हैं । यह थम्भ मोहलों के थम्भों के माफक आये हैं । बीच में कठेड़ा आया है । चबूतरे के तीसरे हिस्सा में बगीचा, नहरें, फुहारे, सब आये हैं । चबूतरे पर खड़े होकर देखिए तो छत ३०० कोस की ऊंची दिखाई देती है । मोहल के अन्दर घेर के १२००० मन्दिर आये हैं । इन मन्दिरों की ऊंचाई २०० कोस की आयी है । मोहोल की दीवार-अक्शी थम्भ तक सब मन्दिर आये हैं । हवेली के ब्यानानुसार ही मन्दिर आये हैं ।

एक मन्दिर का ब्यान :- हर एक मन्दिर को घेर करके एक हार थम्भों की आयी है । इस प्रकार से चारों तरफ जानिये । चौड़ाई तरफ की दीवार के कोना पर दो अक्शी थम्भ आये हैं । ऊपर अक्शी मेहरावें आयी हैं । ऊपर तीन फूल, कांगरी, छज्जा और छत सब आये हैं । जमीन से २०० कोस की ऊंचाई पर इस दीवार के मध्य भाग में तीन कोठरियों का दरवाजा आया है । मध्य में एक कोठरी का दरवाजा आया । दाएं-बाएं एक-एक कोठरी का लम्बा-चौड़ा चबूतरा आया है । जिसपर चार थम्भ तथा मेहरावें आयी है । कमर भर ऊंचे चबूतरे से कमर भर की सीढ़ियां उतरी हैं । इसी प्रकार का दूसरा चबूतरा आया है । दोनों चबूतरों पर दस मेहरावें आयी हैं । इसी प्रकार मन्दिरों के बाहरी तरफ चारों दिशा में चार दरवाजे आये हैं । इसी

प्रकार से भीतरी तरफ भी दरवाजे आये हैं । दरवाजे के भीतर जाइये तो दाएं-बाएं १५००-१५०० कोठरियां दिखाई देती हैं । एक दिशा में ३००० कोठरियां आयी हैं । चारों दिशा की १२००० कोठरियां हुयी । दो कोठरियों के बीच में दो हार थम्भों की आयी है । जहां पर आमने-सामने दरवाजे आये हैं । वहां पर २४ मेहरावें आयी हैं । इन कोठरी के दरवाजे के आगे जो मन्दिर की दीवार आयी है । वह दरवाजे के सामने मन्दिर की दीवार में दरवाजे बने है जिस तरह मन्दिर की बाहरी तरफ थम्भ आये हैं । इसी प्रकार कोठरियों के आगे भीतरी तरफ एक हार थम्भों की चारों तरफ आयी है । आगे कमर भर नीचे बगीचे आये हैं । एक दिशा के ३००० बगीचें तो चारों तरफ के १२००० हुये । दरवाजे के सामने बगीचे नही आये हैं । बगीचों के आगे कमर भर का चबूतरा आया है । चारों तरफ सीढ़ियां उतरी हैं। चबूतरे की किनार पर थम्भ आये हैं । सीढ़ियों को छोड़कर बाकी में कठेड़ा आया है । चबूतरे पर खडे होकर देखिये, तो कोठरियों की छात १०० कोस की आयी है । मन्दिर की छात २०० कोस कीआयी है और १२००० कोठरियां घेर करके आयी है । जैसे मोहल का ब्यान वैसे ही मन्दिर का ब्यान आया है । एक मन्दिर के तीन हिस्से हुये, एक हिस्से में दाएं-बाएं कोठरियों की दीवार आयी है । दूसरे हिस्से में बगीचा तीसरे हिस्से में चबूतरा आया है ।

एक कोठरी :- एक कोठरी में जाइये तो छत १०० कोस ऊंची दिखाई देती है । कोठरियों के दरवाजे के सामने मन्दिर की दीवार में दरवाजें आये हैं । दो कोठरियों के बीच में त्रिपोलिया आया है । जहां सामने दो दरवाजें आये हैं । वहां पर २४ मेहरावें आयी हैं ।

एक हवेली के चबूतरे :- एक हवेली में तीन चबूतरें आये हैं । एक १२००० कोठरियों के बीच, दूसरा १२००० मन्दिरों के बीच, तीसरा १२००० मोहलों के बीच हवेलियों का आया है । मन्दिरों के अक्शी मेहरावों के विस्तार तक

कोठरियों का विस्तार आया है । मोहलों के अक्शी मेहरावों के विस्तार तक मन्दिरों का विस्तार आया है । हवेलियों के अक्शी मेहरावों तक मोहलों का विस्तार आया है और हवेली के छात की हद मानिक पहाड़ की प्रथम भोम तक आयी है । १०० कोस तक कोठरियों का विस्तार आया है । कोठरियों के ऊपर १०० कोस तक मन्दिरों का विस्तार आया है । मन्दिरों के ऊपर १०० कोस तक मोहलों का विस्तार आया है । मोहलों के ऊपर १०० कोस तक हवेलियों का विस्तार आया है । यह तो एक हवेली के एक भोम का ब्यान हुआ । ऐसी-ऐसी उपरा-ऊपर १२००० भोमें आयी हैं । तब एक हवेली हुयी । ऐसी हवेली १४ करोड़ ४० लाख आयी है । इन सब हवेलियों का सब भोमों का विस्तार उसी समान आया है । जैसे ऊपर की एक हवेली की एक भोम का ब्यान किया गया है । १२००० हांसो में १२००० हवेली आयी है और एक हवेली के सामने भीतरी तरफ १२००० हवेली आयी है । जिसमें ६००० गोल, ६००० चौरस है । शुरू की हवेली की चौड़ाई ३०० कोस आयी है । १०० कोस का त्रिपोलिया आया है । सो भीतरी तरफ कम होते होते आखरी हवेली १०० कोस और त्रिपोलिया ३३ कोस का आया है । अब इस हवेली के साथ लगकर आगे भीतरी तरफ १०० कोस की दूरी पर एक हार थम्भों की आयी है । फिर १०० कोस के रौंस छोड़कर आगे एक कमर भर ऊंचा चबूतरा गोल १२०० हांसो का आया है । अब यहां से माणिक मोहल की जोगवाई शुरु होगी ।

विस्तार माणिक पहाड़ की एक हवेली :- एक हवेली में १२००० मोहल आये है । एक दिशा में ३००० मोहल हुये । हर एक मोहल में १२००० मन्दिर आये हैं । परन्तु एक तरफ के ३००० मन्दिर लिए, तब तीन हजार मोहोलों के मन्दिर ९०लाख हुये और चारों तरफ के मन्दिर ३ करोड़ ६० लाख हुये । परन्तु एक तरफ जो ९० लाख मन्दिर आये है । एक मन्दिर में १२०००

कोठरियां हैं । अब ३००० कोठरियां एक तरफ की ली, तब सब कोठरियां ९० लाख मन्दिरों की २६ अरब शोभायमान है । और चारों तरफ की कोठरियां एक खरब आठ अरब कोठरियां सब हुयी । इसी प्रकार सब हवेली जानना ।

मानिक मोहल :- १२००० हवेली जहां पुरी हुई इस हवेली के साथ आगे थम्भों की हार रौंस छोड़कर कमर भर नीचे ५० कोस की चौड़ी रौंस आई है । इस रौंस से कमर भर नीचे ५० कोस की चौड़ी बगीचों की रौंस आयी है । इसके आगे कमर भर नीचे २०० कोस का चौड़ा बगीचा आया है । बगीचा के भीतरी तरफ कमर भर ऊंचे ५० कोस की चौड़ी रौंस इससे कमर भर ऊंचे ५० कोस की चौड़ी रौंस माणिक मोहल के चबूतरा से लगते चारों तरफ घेर कर आयी है । हांस-हांस से कमर भर की सीढ़ी रौंस पर उतरी है । भीतरी ५० कोस की रौंस पर ३३ कोस का चेहबच्चा है इसी रौंस से भोम भर की सीढ़ि चढ़ी है । दोनों रौसों से कमर भर नीचे १२००० बगीचें हैं । इन बगीचों में नहरें, चेहबच्चें, फुहारे, अपरम्पार आये हैं । हर एक हांस में एक बगीचा आया है । दो बगीचों की सन्ध में माणिक मोहल की तरफ की रौंस के साथ लगकर बगीचों की जमीन से कमर भर का ऊंचा ३३ कोस का लम्बा-चौड़ा एक कुण्ड आया है । कुण्ड के तीन तरफ कुण्ड के ऊंचाई के अनुसार रौंस आयी है कुण्ड के सामने नहरें जाती है । नहरों के दाएं-बाएं भी रौंस आयी है । इस प्रकार से १२००० कुण्ड और नहरें आयी हैं । बगीचों की मध्य में दोनों तरफ की रौसों से सीढ़ीयां बगीचों में उतरी हैं । माणिक मोहल तरफ जो ५० कोस की रौंस आयी है । इन रौंस से भोम भर का ऊंचा चबूतरा माणिक मोहल का १२००० हांस का आया है । माणिक मोहल के चबूतरा से हांस के मध्य भाग से भोम भर की सीढ़ी उतरी है । ५०

कोस की रौंस पर इस चबूतरे के १२००० हांस आये है । एक हांस १३३ कोस का है । गृद १६ लाख कोस की आयी है । लम्बाई-चौड़ाई ५ लाख ३३ हजार तीन सौ तैंतीस कोस की है । इस चबूतरा के तीन हिस्सा हुये । एक हांस के मध्य भाग में चबूतरा आया है । दूसरे हिस्से में फिर दाएं-बाएं भोम भर नीचे वन, तीसरे हिस्सा में माणिक मोहल आया है । चबूतरे के मध्य भाग में १०० कोस के एक मोहल के दाएं-बाएं ३३-३३ कोस के त्रिपोलिया आये हैं । १२००० हवेलियों के सामने १२००० मोहल आये हैं । और १२००० त्रिपोलियों के सामने गोल गुर्ज आये हैं । गुर्जों में ६ मेहरावें आयी हैं । तीन मेहरावें तो बाहरी रौंस पर, तीन मेहरावें दो मोहलो के बीच की जगह पर आयी है । हर एक मोहल के पांच दरवाजे और झरोखा आया है १ दरवाजा बाहरी बगीचों तरफ, दो दरवाजे पांखे की गली तरफ और दो दरवाजे मध्य में, एक झरोखा भीतरी बगीचों के तरफ आया है । इस माणिक मोहल की ऊंचाई १२००० भोम आयी है । इस मोहल के चबूतरे के चारों तरफ मध्य हांस से भोम भर की सीढ़ी उतरी है । बाकी जगह पर कठेड़ा आया है । भोम भर की सीढ़ी उतर कर भीतरी तरफ के बगीचों में जाइये । दाएं-बाएं दो रौसें घेर करके आयी हैं । मध्य भाग में १२००० बगीचे आये हैं । हांस-हांस की जगह पर नहरें आयी हैं । नहरों के दाएं-बाएं रौंस आयी हैं । बगीचों के बीच में नहरें फुहारें, चेहबच्चा अपरम्पार शोभा ले रहे हैं । इन बगीचों के मध्य भाग में हांस हांस में रौंस पर कमर भर की सीढ़ी उतरी हैं । इसी बगीचा के दाएं-बाएं रौसें आयी हैं । रौसों के दोनों तरफ भोम भर ऊंचे चबूतरे हैं । माणिक मोहल के चबूतरे से जो सीढ़ी उतरी है । इसी रौंस पर उतरी है । दूसरी रौंस से जो भोम भर ऊंचा चबूतरा है । हांस-हांस के मध्य भाग से भोम भर की सीढ़ी चढ़ी है । सो सीढ़ी चढ़कर चबूतरा पर जाइये । चबूतरा के किनार पर १२००० थम्भ आये हैं । थम्भों के बीच में कठेड़ा आया है । इस चबूतरा के तीन हिस्सा हुये । मध्य के हिस्से में

पानी का स्तून आया है । सो टापू मोहल की चांदनी तक गया है । दूसरे हिस्सा में दाएं-बाएं बगीचा कमर भर नीचे आया है । यह बगीचा १२००० आये हैं । तीसरे हिस्सा में दाएं-बाएं गिलम बिछी है । पेड़ से १२००० फुहारे छूट रहे हैं । यह जो १२००० थम्भ चबूतरा के किनार पर आये हैं । इन थम्भों की ऊंचाई ११९८० भोम तक गयी है । वहां पर मेहरावों में हिंडोले लगे हैं । इस पेड़ की जब ११९८० भोम पूरी हुयी । तब चारों तरफ छज्जा निकलाति न छज्जा ने आकर माणिक मोहल से मिलान किया । नीचे से छत ऊंची ११९८० भोम पर आयी है । यहां तक माणिक मोहल के झरोखे दरवाजे अलग-अलग रहे । आने जाने का रास्ता नही था । अब इसके ऊपर २० भोम और आयी जो मिलती हुयी है । जिससे आ-जा सकते हैं । इन २० भोमो में कमर भर ऊंचा चबूतरा तथा बगीचे नीचे आये हैं इसी तरह की बनक २० भोम तक आयी है । ऊपर एक ही चांदनी बराबर १६ लाख की लम्बी-चौड़ी आयी है ।

टापू मोहल :- माणिक पहाड़ पर भोम भर का ऊंचा चबूतरा उठा १२००० हांस का नीचे जो चबूतरा आया है । जिस पर १२००० थम्भ आये हैं । उसकी चांदनी पर यह चबूतरा आया है । चारों तरफ ४०० कोस की जगह छोड़कर १२००० मोहल १२००० हांस में आये हैं । सो यह मोहल आपस में मिले हैं । मानिन्द एक मन्दिरों की हार के । मोहल में पांच दरवाजे आये हैं । एक दरवाजा भीतरी तरफ दो दरवाजे पांखे में और एक झरोखा वाहरी तरफ आया है । देखत के पांच हिसाब के चार आये हैं । भीतरी तरफ एक हार थम्भों की आयी है । १२००० बगीचे जैसे नीचे थे वैसे ही यहां पर भी आये हैं । तीसरे हिस्से में पानी का स्तून आया है । ऐसी उपरा-ऊपर २० भोम वनक आयी है । जो नीचे स्तून चला आ रहा है । ऊपर चांदनी पर कुण्ड बना है । चारों दिशा से सीढ़ी जल चबूतरे पर उतरी हैं । बाकी

जगह पर कठेडा घेर करके आया है । इसको घेर के बगीचे आये जैसे नीचे थे । इस वन के आगे तीसरे हिस्से में गिलम बिछी है । ऊपर सिंहासन आया है । जैसे नीचे चबूतरा पर था । चारों तरफ कठेड़ा घेर करके शोभा ले रहा है । एक भोम के १२००० झरोखे अलग-अलग दिखाई दे रहे हैं । नीचे जो माणिक मोहल की जगह थी ऊपर उतनी ही चौडाई में भोम भर ऊंचा चबूतरा १२००० हांस का उठा । इस चबूतरे पर दाएं-बाएं की रौंस की जगह छोड़कर चार हार थम्भों की चारों तरफ घूमी है । जिसपर तीन मेहरावें आयी हैं । दाएं-बाएं देहलान की एक भोम आयी है और मध्य की देहलान पर दो भोमें आयी हैं । उधर टापू का चबूतरा इधर देहलान का चबूतरा इन दोनों चबूतरों के बीच में एक पानी का ताल आया है जो एक भोम का गहरा आया है । नीचे माणिक मोहल और चबूतरे के बीच में जो बगीचा आया है । उसकी चांदनी पर ताल आया है टापू के चबूतरे से १२००० हांसो में कमर भर की सीढ़ियां जल चबूतरे पर उतरी है । आगे जल चबूतरे से सीढ़ियां उतर कर जमीन तक गयी हैं । टापू के चबूतरा के पिठौर में १२०० जालीदार लगे हैं । जिन से पानी निकल कर ताल में पड़ता है । इस प्रकार से देहलान के चबूतरे से जल तरफ १२००० हांसो में कमर भर की सीढ़ी उतरी है । जल चबूतरे से सीढ़ियां ताल की जमीन पर गयी हैं । इस चबूतरा की पिठौर में १२००० जालीदार दरवाजें आये हैं । इन दरवाजों के नीचे होकर पाल के नीचे होकर बाहरी जालिदारों से होकर ५० कोस की रौंस के साथ लगकर जो १२००० कुण्ड आये हैं । उन कुण्डों में चादरन पानी पड़ता है । जो एक भोम की ऊंचाई से गिरता है । नीचे जो ४०० कोस के चबूतरे में ५० कोस की रौंस के साथ लगकर जो १२००० कुण्ड आये हैं । उसी जगह के ऊपर कुण्ड आये हैं ।

मानिक पहाड़ की चांदनी :- ताल के पाल का भोम भर का ऊंचा जो चबूतरा

आया है। इस चबूतरे के भोम भर नीचे जमीन से कमर भर ऊंची ५० कोस की चौड़ी रौंस चारों तरफ घूमी है। पाल के चबूतरा से १२००० हांसो के मध्य भाग से जो भोम भर की सीढ़ियां उतरी हैं। सो इस ५० कोस के चबूतरे पर उतरी हैं। इस रौंस की दो हांसो के सन्ध में ३३ कोस का लम्बा-चौड़ा कुण्ड आया है। बगीचों की जगहसेऊंचाकुण्ड है। बगीचों की जमीन से कमर भर ऊंची इस कुन्ड के तीन तरफ ३३ कोस की रौंस फिरी है। इस प्रकार से हांस की सन्ध में १२००० कुण्ड आये हैं। इन्ही कुण्डों में भोम भर ऊपर से चादरों द्वारा पानी पड़ता है। इस कुन्ड के आगे १०० कोस की चौड़ाई लेकर नहरें निकली हैं। जिसमें ३३ कोस की नहर दाएं-बाएं ११-११ कोस की पाल आयी है। चांदनी की जमीन से कमर भर ऊंची है। पाल पर ११ कोस में फुलवाड़ी दाएं-बाएं ११-११ कोस की पाल आयी है। सो नहर कुण्ड में आवत है। जहां १२००० हवेली खत्म हुयी। वहीं यह कुण्ड आये हैं। इसी प्रकार से सब कुण्डों से पानी निकलकर नहरों द्वारा होकर कुण्डों में पानी आता है। उस कुण्ड पर चार थम्भ आये हैं। जिसमें हिंडोले आये हैं। इन कुण्डों से नहरें सामने तरफ भी जाती हैं और दाएं-बाएं तरफ भी जाती हैं और थम्भों में से होकर इस कुण्ड से पानी भोम भर नीचे जो कुण्ड आया है। उसमें चादरन द्वारा पानी पड़ता है। चांदनी पर सामने जो नहर आयी है। सो अगले कुण्ड में पानी पड़ता है और दाएं-बाएं भी नहर हुयी सामने तरफ भी नहर चली और चारों थम्भों द्वारा पानी नीचे कुण्डों में पड़ता है। इस प्रकार चांदनी पर १४ करोड़ ४० लाख जो कुण्ड आये हैं। हर कुण्ड में चारों तरफ नहर चलती है। चांदनी पर सब नहरें २८ करोड़ ८० लाख होती हैं। इन नहरों तथा कुण्डों पर छाते आयी हैं। चार कुण्डों के बीच में एक बगीचा आया है और चार बगीचों के बीच में एक कुण्ड आया है। हर एक कुण्ड पर चार मेहरावें आयी हैं और कुण्ड के चारों तरफ नहरों पर मेहरावें आयी हैं। इस कुण्ड

के थम्भ से दूसरे कुण्ड के थम्भ पर मेहरावें आयी हैं । इसी प्रकार सब कुण्डों पर जानना जी, हर एक मेहराव में हिंड़ोले लगे हैं । हर एक कुण्ड पर चार मेहरावें आयी हैं । हर एक बगीचा पर चार-चार मेहरावें आयी हैं । नीचे १४ करोड़ ४० लाख जो हवेलीयां हैं, हर एक हवेली के चारों तरफ त्रिपोलिया थे । उन त्रिपोलियों के चांदनी पर नहरें आयी हैं । नीचे जो हर एक हवेली के कोना पर कुण्ड आये थे । उनकी चांदनी पर यहां कुण्ड आये हैं । इन सब बगीचों और नहरों पर तथा कुण्डों पर एक ही सब छत बराबर एक ही भोम की आयी है । भोम भर ऊंची पाल मुताबिक पाल से इस चांदनी से पाल पर आ जाइये । १२००० कुण्डों से जो नहरें चली हैं । सो एक लाईन से १२००० कुण्डों को उलंघ कर गुर्जन के कुण्डों में नहरे आती हैं । नीचे जो १२००० गोल गुर्ज आये हैं । उनकी चांदनी पर कुण्ड आये हैं । नहर का पानी आकर इसमें समाता है । फिर आगे चादरें गिरती हैं । इसी प्रकार १२००० लाइनों में बनक आयी है । १२००० कुण्डों से पानी नीचे उतरता है । कुण्ड से चारों तरफ नहरें चलती हैं । थम्भों से नीचे पानी उतरता है । सो पानी नीचे उतरता-उतरता नीचे की भोम में बाहरी तरफ जो गोल गुर्ज आये हैं उन गोल गुर्जो के सामने भीतरी तरफ जो कुण्ड आये हैं । उन कुण्डन में पानी आता है । उन कुण्डों से पानी नीचे होकर गुर्जों के नीचे होकर ४०० कोस की रौंस से नीचे होकर भोम भर ऊंचे चबूतरा की पिठौर में जो १२००० जालीद्वार आये हैं । उस जालीद्वारों से पानी निकल कर नीचे जो १२००० कुण्ड आये हैं । उनमें पानी चादरों द्वारा पड़ता है ।

तालाब :- महानद से महानद तक २ करोड़ ३६-१/२ लाख कोस की जगह होती है । अब इसके मध्य भाग में १६ लाख कोस का लम्बा-चौड़ा माणिक पहाड़ के ऊंचे चबूतरे से महानद तक एक करोड़ दस लाख २५ हजार कोस की जगह आयी है । इसी प्रकार से दूसरी तरफ आयी है । माणिक पहाड़

का भोम भर का ऊंचा चबूतरा आया है । इस चबूतरे के नीचे चबूतरा की दीवार के साथ लगकर दो हांस के सन्ध में कुण्ड आया है । इसी प्रकार से १२००० कुण्ड आये हैं । यह कुण्ड जमीन से कमर भर ऊंचे चबूतरे की दीवार के साथ लगकर १०० कोस के लम्बे-चौड़े आये हैं । इन कुण्डों के तीनों तरफ १०० कोस की चौड़ी रौंस घूमी है । यह रौंस सब कुण्डों को घेर करके आयी है । कुण्ड के सामने एक चबूतरा १०० कोस का चौड़ा और लम्बा १ करोड़ १० लाख २५ हजार कोस का आया है । जो महानद में जाकर मिला है । इसी प्रकार से १२००० चबूतरे उसी प्रकार की लम्बाई-चौड़ाई लेकर महानद में मिले हैं । चबूतरे के मध्य भाग में ३३ कोस में नहर ३३-३३ कोस की पाल । पाल के मध्य में ११ कोस की फुलवाड़ी दाएं-बाएं ११-११ कोस की रौंस आयी है । इसी प्रकार की बनक दूसरी पाल पर तथा १२००० नहरों की सभी पालों में आयी है । ३०० कोस के बाद १०० कोस का ताल आया है । ३३ कोस में ताल का जल ३३-३३ कोस में चारों तरफ पाल आयी है । पाल के मध्य भाग में ११ कोस की जगह में कमर भर ऊंचा चबूतरा आया है । दोनों तरफ ११-११ कोस की रौंस आयी है । ११ कोस के चबूतरे पर ९ कोस में मोहोल आया है और दाएं-बाएं १-१ कोस की जगह रौंस रूप में आयी है जो चारों तरफ घूमी है । नहर की रौंस से आकर कमर भर सीढ़ी चढ़कर एक कोस की रौंस को पार कर ९ कोस का मोहल तथा एक कोस की रौंस को पार कर और कमर भर की सीढ़ियां उतर कर तालाब की ११ कोस की रौंस पर आये । यहां से कमर भर की सीढ़ी उतर कर जल चबूतरे पर जाइये । आगे ताल की गहराई एकभोम की आयी है । इसी तरह से चारों तरफ सीढ़ियां चढ़ी उतरी हैं । इस ताल के दाएं-बाएं और सामने नहरे आयी हैं । इस ताल के चबूतरा पर जो मोहलात आयी हैं । एक दिशा में चार अक्शी थम्भ आये

हैं । चार अक्शी थम्भों पर तीन अक्शी मेहरावें आयी हैं । एक मेहराव के बीच में १००० मोहल आये हैं । एक मोहल के बीच में अनेक मंन्दिर आये हैं । ताल के एक तरफ ३००० मोहोल, चारों तरफ १२००० मोहल हुये । इसी तरह ताल तरफ भी अक्शी चार थम्भ आये हैं । ३ अक्शी मेहरावें आयी हैं । एक मेहराव में १००० मोहल, तीन मेहरावों में ३००० मोहल एक दिशा के चारों तरफ के १२००० हुये । जैसी बनक बाहिर है । वैसी ही भीतर भी आयी है । इन मोहलातों की पांच भोम छट्ठी चांदनी आयी है । हर एक भोम में ताल की जगह पर कमर भर ऊंचा चबूतरा आया है । चारों दिशा से कमर भर की सीढ़ी उतरी है । बाकी जगह पर कठेड़ा आया है । चबूतरा के मध्य में गिलम सिंहासन सब आये हैं । इसी तरह की बनक चारों भोमों में आयी है । छठी चांदनी पर चारों तरफ घेर करके कठेड़ा आया है । यह तो एक ताल का ब्यान हुआ । इसी प्रकार एक ताल की लाईन में १२००० ताल आये हैं । इसी प्रकार से १२००० की १२००० हारें आयी हैं । सब ताल १४ करोड़ ४० लाख आये हैं । हर एक ताल के चारों तरफ नहरें आयी हैं । जिसमें १४ करोड़ ४० लाख नहरें आड़ी, १४ करोड़ ४० लाख खड़ी आयी हैं । परिक्रमा के वास्ते चार नहरों के बीच में एक बगीचा २०० कोस का लम्बा-चौड़ा बराबर आया है । शुरू के बगीचा की यह लम्बाई-चौड़ाई है । आगे-आगे जैसे-जैसे हांस बढ़ते जायेंगे वैसे-वैसे बगीचा की लम्बाई-चौड़ाई बढ़ती जायेगी । एक बगीचा में ३००० वृक्षों की ३००० हारें आयी है । इन बगीचों में अनेक प्रकार की नहरें, चेहबच्चें, फुहारें आये हैं । वृक्ष भी अनेक प्रकार के आये है । इन वृक्षों की ऊंचाई ५ भोम की आयी है । एक बगीचे की डालियां दूसरे बगीचे से मिलती गयी है । नहरों के ऊपर छत आती गयी है । इन बगीचों के चारों तरफ चार नहरें आयी हैं । हर एक नहर के मध्य भाग में पुल आया है और दाएं-बाएं बगीचों में कमर भर की सीढ़ी उतरी है । ऐसे बगीचे १४ करोड़ ४० लाख आये हैं । इन सबकी ऊंचाई

५ भोम की आयी है । ऊपर सब चांदनी एक हो गयी है ।

महानद का ब्यान :- उत्तर के तरफ जो आखिर के ताल आये हैं । दोनों तालों में एक हांस उत्तर तरफ नहर चलकर दोनों नहरें दो तरफ घूमी हैं । एक तो उत्तर से पूर्व होकर दक्षिण में आयी और दूसरी नहर उत्तर-पश्चिम तरफ होकर दक्षिण में आकर दोनों नहरें मिलकर एक रूप होकर दक्षिण तरफ एक हांस चलकर वन की नहरों में समात हैं । १२०० कुण्डों से जो १२००० नहरें चली आती हैं । सो महानद की पाल की रौंस के नीचे होकर सब पानी महानद में समात है । तब मानों महानद एक समुन्द्र के समान शोभा लेत है । इस महानद के १२००० हांस हैं । एक हांस की चौड़ाई ५९१२ कोस की होती है । गृद ७ करोड़ ९ लाख ५० हजार कोस की होती है और लम्बाई-चौड़ाई २ करोड़ ३६-१/२ लाख कोस की होती है । माणिक पहाड़ के पास हांस की चौड़ाई ४०० कोस की थी । आखिर के हांस ने इतनी वृद्धि पायी है । जो ५९१२ कोस का हो गया है । इस महानद की चौड़ाई ३ हांस की आयी है । एक हांस के मध्य में महानद आया है । जिसके कोस ५९१२ होते हैं । एक हांस के दाएं-बाएं पालें आयी हैं । जिसके तीन भाग हुये, मध्य का जो भाग है सो १९७१ कोस का इस मध्य के भाग में कमर भर ऊंची पाल आयी है और दाएं-बाएं के हिस्से में कमर भर नीचे रौंस आयी है । इस पाल के हांस के मध्य भाग में कमर भर की सीढ़ी दोनों तरफ की दोनो रौंसों पर आयी है । महानद की रौंस से कमर भर की सीढ़ी जल के चबूतरे पर उतरी है । यहां कमर तक पानी है । यहां पर खड़े होकर स्नान करिए । आगे सीढ़ियां जल के जमीन तक गयी है और दूसरी रौंस से बगीचे की तरफ कमर भर की सीढ़ी उतरी है । इसी प्रकार की बनक महानद के दूसरे पाल की तरफ आयी है । महानंद के दाएं-बाएं दोनों तरफ कमर भर की ऊंची पालें, सो एक पाल के दोनों किनार पर थम्भ एक भोम के ऊंचे

उठे और लम्बाई तरफ १९७१ कोस के अन्तर पर थम्भ आते गये हैं। इसी प्रकार चारों तरफ पाल पर थम्भ आये हैं। चारों थम्भों के बीच एक चौक लम्बा-चौड़ा १९७१ कोस का बराबर आया है। इसी प्रकार से दूसरी पाल पर थम्भ आये हैं। ऊपर सब एक छत हो गयी है। इस कारण महानद पर भी छात आयी है। दोनों पालों और महानद की छात एक बराबर आई है। दोनों पालों की मेहरावों में तथा महानद की मेहरावों में हिंडोले आये हैं। चार-चार हिंडोलों की ताली पड़ती है। ऊपर चांदनी पर जाना हो तो पालों के थम्भों के बीच होकर जाइये। यही जाने का रास्ता है। इसकी ऊंचाई एक भोम की आयी है। महानद के साथ लगकर जो १२००० तालों की मोहलात आयी हैं। इनकी ऊंचाई दो भोम की आयी है। इसके साथ लगकर १२००० तालों के जो मोहल आये हैं। इनकी ऊंचाई तीन भोम की है। इसके साथ लगकर जो मोहल आये हैं। सो इनकी ऊंचाई ४ भोम की आयी है। आगे जितने तालों के मोहलात पड़े, सबकी ऊंचाई ५ भोम की पड़ी है। बगीचों की ऊंचाई भी मोहलों के समान आयी है। भीतर के तरफ ४०० कोस का हांस है ३३-३३ कोस की नहरें हैं दाएं-बाएं फुलवाड़ी रौंस आयी है आगे ताल को घेर करके जो मोहोल आया है सो आगे २ सब बढ़ते गये महानद तक तो अपरम्पार कुसादगी पाई है माणिक पहाड़ के चारों दिशा के दरवाजों के सामने चार रास्ते जो गये सो बगीचों के मध्य में १०० कोस की चौड़ाई लेकर कमर भर ऊंचे चले गये है सो महानद की रौंस में जाकर मिले है। दाएं-बाएं आधा-आधा बगीचा आया है।

ताल के ऊपर :- माणिक पहाड़ के चबूतरा से ४०० कोस दूरी पर जो ताल आया है ताल के चबूतरे पर जो १२००० मोहोल आये हैं जिनकी ऊंचाई ५ भोम तक की आयी है। परन्तु चार कोना वाले जो मोहोल आये हैं सो बढ़ते-बढ़ते बारह हजार भोम चले गये। माणिक पहाड़ की चांदनी से एक

भोम कम, क्योंकि माणिक पहाड़ का चबूतरा एक भोम ऊंचा आया है। ये चारों कोना वाले जो मोहोल है एक मोहल के भोम २ के छज्जा झरोखे सब अलग-अलग दिखाई देते हैं। यदि मोहोल के अन्दर जाइये तो कई मन्दिर बगीचे, चेहबच्चे, नहरें, फुहारों की शोभा दिखाई पड़ती है। इसी प्रकार से सब भोमें आयी हैं। इसी प्रकार से चारों कोना वाले मोहोल आये हैं। जब १२००० भोमें पूरी हुयी चार मेहरावे होकर ऊपर एक छात हो गयी है इन मेहरावों के चार महाविलन्द हिड़ोले आये हैं इनकी जंजीरे पांच भोम छठी चांदनी पर आयी है एक हिड़ोले में १२००० सखियां व युगल स्वरूप बैठ कर झूलते हैं। इसी प्रकार से सब हिंडोलों में झूलते हैं। इसी प्रकार से चारों तरफ १२००० तालों पर बनक आयी है। १२००० भोम से माणिक पहाड़ की तरफ दो मेहरावें जाकर गोल गुर्जों से लगी हैं। माणिक पहाड़ की चांदनी से एक भोम कम नीचे इन दोनों मेहरावों में दो हिंड़ोले आये हैं और दो-दो मेहरावे दाएं-बाएं जो चार-चार मोहोलों की चांदनी आयी है उन पर मेहरावें आयी हैं। इन मेहरावों में भी हिंडोले आये हैं दांए-बांए तरफ और पहाड़ तरफ इन पर नहरें आयी हैं इन तीनों नहरों में एक नहर का ब्यान। ३३ कोस की नहर २२-२२ कोस की पाल दोनों ऊंची आयी है पाल के दोनों तरफ कठेड़ा आया है। इसी प्रकार की बनक दूसरे पाल पर आयी है। चारों मोहोलों की चांदनी पर मध्य में ३३ कोस का ताल आया है ताल के चारों तरफ पाल आयी है। पाल के दोनों तरफ कठेड़ा आया है माणिक पहाड़ की गुर्जों वाले कुण्डों से जो पानी गिरता है सो नहरों में आता है ताल की तीन तरफ नहर निकलती है। दो नहरें दाएं-बाएं जाती हैं। एक नहर ताल के पाल के नीचे चादरन रूप में गिरती है। एक भोम नीचे जो नहर आयी है उस नहर में पानी जाता है चारों कोना पर जो मोहोल

आये है उनमें भी पानी नीचे उतरता है । सब भोमों में पानी देकर नीचे ताल में आता है । इस ताल के चारों कोना पर फिर एक भोम मोहोल उठे चार मेहरावें बनकर ताल के ऊपर चांदनी आयी है और दो मेहरावे माणिक पहाड़ की गोल गुर्जों से मिली हैं । दो मेहरावे दाएं-बाएं मोहोलों से मिली हैं । ये तीनो नहरों की चांदनी हुयी । एक चांदनी के दोनों तरफ कठेड़ा आया है । इसी प्रकार से तीनों चांदनी पर आया है और ताल की चांदनी पर चारों कोना पर चार गुमटियां आयी हैं । बाकी चारों तरफ कठेड़ा आया है । नीचे जो ताल है । उसकी चांदनी पर कमर भर ऊंचा चबूतरा आया है जिससे कमर भर की सीढ़ियां चारों तरफ २२ कोस की रौंस पर उतरी हैं बाकी में कठेड़ा आया है । चबूतरे पर गिलम, सिंहासन, कुर्सियां सब आयी हैं, अब नहर की चांदनी पर चले जाइये अगर परिक्रमा करनी है तो नहर की चांदनी पर होके परिक्रमा कर आइये । ऊपर चांदनी पर खड़े होकर सब जोगबाई दिखाई देती है । इसी प्रकार से चारों तरफ १२००० जो ताल आये हैं उनकी भी ऐसी बनक आयी है ।

इस ताल के साथ दूसरा ताल जो आया है ताल की पाल पर जो भोम-भर की मोहलात आयी है उनके चारों कोना वाले चारों मोहोल एक भोम कम १२००० भोम सीधे चले गये (११९९९ भोम) वहां पर चार मेहरावें आयी है जिनमें चार हिड़ोलें आये हैं । दो मेहरावें सामने स्तूनों पर आयी हैं जिनको मोहोल करके कहा गया है सो ताल से एक भोम नीचे मेहरावें आयी हैं जिसमें दो हिंडोले लगे हुये हैं । चार मोहोलों की चांदनी पर ताल आया है सामने तरफ अर्थात् पहाड़ तरफ एक नहर आयी है । जिसमें भोम भर ऊपर से पानी गिरता है और दो नहरे दाएं-बाएं तरफ आयी हैं एक नहर सामने पाल के नीचे होकर भोम भर नीचे की नहर में पानी पड़ता है ताल पर चांदनी आयी है ऊपर गुमटियां आयी है ताल के ऊपर कमर भर का

चबूतरा, सिंहासन कुर्सियां आयी हैं जो पहले ताल के ऊपर जोगबाई आयी है उसी अनुसार यहां पर भी आयी है यह ताल उस ताल से एक भोम नीचे आया है। एक भोम से पानी नीचे नहर में पड़ता है। नहर से तीसरे ताल में पड़ता है दो मेहरावों की चांदनी पर नहर और पाल बनती है पहले की ऊंचाई १२००० भोम दूसरे ताल की ऊंचाई एक भोम कम तीसरी ताल की दो भोम कम इसी क्रमानुसार प्रत्येक ताल प्रथम ताल से एक-एक भोम कम होते २ महानद के साथ वाली एक भोम मोहोलात ऊंची आयी है उसमें पानी आता है फिर आगे हांस भर चलकर महानद की रौंस पर चांदनी के साथ जो नहर आयी है उस नहर से नीचे की नहर में पानी गिरता है वह नहर रौंस और पाल के नीचे होकर महानद में समाती है इस प्रकार सभी नहरें भोम भर ऊंचे चादरों से गिरते-गिरते तले की भोम में आती हैं। पांच भोम ऊपर चांदनी ताल की आयी है उस ताल पर चार हिंड़ोलों की ताली पड़ती है एक लाइन में सब ताल १२००० ताल की १२००० हारे उतरते उतरते आयी हैं। कुल १४ करोड़ ४० लाख ताल आये हैं एक लाइन में १२००० नहरें उतरती हैं इससे नहरें भी १४ करोड़ ४० लाख आयी हैं और १४ करोड़ ४० लाख नहरें आड़ी आयी हैं सब नहरें २८ करोड़ ८० लाख हुयी।

महाविलन्द हिड़ोले :- एक-एक ताल की चांदनी पर जो चार-चार मोहल उपरा-ऊपर गये हैं। ऊपर चार मेहरावें बनी चार हिडोले चार मेहरावों में आये हैं और इन चार मोहोलों की चांदनी से चारों तरफ आठ मेहरावे गयी हैं। जिनमें आठ-आठ हिडोलें आये हैं। परन्तु ये आठ मेहरावें दो तरफ मोहलों पर आयी हैं। इसलिए चार मेहरावें ली और चार हिडोले लिए एक ताल के आठ हिड़ोले हुये। तो १२००० तालों के ९६००० हिडोले हुये। ये एक हार के हुये तो १२००० हारों के सब हिड़ोले १ अरब १५ करोड़ २० लाख होते हैं। यह हिंडोले महाविलन्द कहे गये हैं। एक हिड़ोले में सब कोई बैठत हैं।

सब हिडोले ५वीं भोम की चांदनी पर आये है ।

बड़ोवन, मधुवन, महावन :- महानद से लेकर महानद तक एक तो जवेरों की नहरों तथा दूसरी किनार पर वन मोहलात तरफ लम्बाई-चौड़ाई २ करोड़ ३६ लाख ५० हजार कोस की है । इतनी जगह जवेरों की नहरों तथा वन मोहलातों के बीच में चारों तरफ धाम-परधाम को घेर करके आयी है । इस जगह में तीन बन आये है । जवेरों की नहरों के साथ बड़ोवन आया है । ३३ लाख ७८ हजार ५५० कोस की जगह में इसकी १२००० भोम आयी हैं । इसके साथ लगकर मधुवन, बड़ोवन की दुगुनी जगह चौड़ाई में ६७ लाख ५७ हजार १०० कोस में आया है और ऊंचाई में २४००० भोम आया है । मधुवन के आगे महावन १ करोड़ ३५ लाख ३४ हजार ३०० कोस का आया है और ऊंचाई ४८००० भोम की आयी है । यह बड़ोवन की जगह से चौगुनी जगह में आया है । बड़ोवन की ऊंचाई ४८ लाख कोस मधुवन की ९६ लाख कोस और महावन की ऊंचाई १ करोड़ ९२ लाख कोस की आयी है । इन जवेरों की नहरों से १२०० कोस दूरी पर एक नहर ४०० कोस की चौड़ी लम्बाई तरफ घूमी है । जिस नहर में २०० कोस में पानी और १००-१०० कोस की पाल आयी है । पाल की मध्य में ३३ कोस के फुलवाडी दाएं-बाएं ३३-३३ कोस की रौंस आयी है । यही बनक दूसरी पाल पर आयी है । इस नहर के आगे १२०० कोस दूरी पर ४०० कोस की नहर घूमी है । २ करोड़ ३६ लाख ५० हजार कोस में सब ऐसी ही नहरें आयी हैं । चौड़ाई तरफ भी खड़ी नहरें १२००-१२०० कोस दूर पर आती गयी हैं । उन खड़ी नहरों की लम्बाई २ करोड़ ३६ लाख ५० हजार कोस की आयी है । १२०० कोस का एक लम्बा-चौड़ा चौक चार नहरों के बीच में आया है । जैसे-जैसे सब चौक आते गये हैं । एक चौक की मध्य भाग में एक पेड़ आया है पेड़ का थड़ एक भोम का ऊंचा चला गया । इस थड़

के बीच में से ऊपर को सीढ़ियां चड़ी है। एक भोम ४०० कोस की ऊंची आयी है। एक भोम में कई मोहल, मन्दिर कोठरियां, नहरें, चेहबच्चें, फुहारे आदि जोगबाई आयी हैं। मानिक पहाड़ की हवेली के समान। एक भोम में १२ हजार मोहोल, एक मोहोल में १२ हजार मन्दिर, एक मन्दिर में १२००० कोठरियां आयी है। यह तो एक भोम का ब्यान हुआ। इसी प्रकार से बड़ोवन की १२००० भोम की, मधुबन की २४००० भोम की और ४८००० भोम की महावन की यही बनक आयी है। इन वृक्षों की डालियां सब आपस में मिली हैं। बड़ोवन से मधुवन, मधुवन से महावन में आ जा सकतें हैं। नीचे एक पेड़ के चारों तरफ नहर चलती हैं और कोना पर चार चेहबच्चे आये हैं और चबूतरे के पास अपरम्पार बगीचें आये हैं जिनकी ऊंचाई केवल एक भोम की ही आयी है जिनमें नहरें, फुहारे, चेहबच्चें आदि आये हैं। बड़े एक पेड़ से दूसरे पेड़ तक १२०० कोस का अन्तर आया है। हर एक नहर के मध्य भाग में पुल आया है। बड़ोवन की एक ही भोम १२००० भोमों में आयी है और मधुवन की दो भोमे ही २४००० भोमों में आयी है और महावन की चार भोमें ४८००० भोमों में आयी है।

वन की मोहोलात :- महावन के साथ लगकर वन के मोहोल आये हैं। चौड़ाई तरफ १ करोड़ कोस की आयी है और लम्बाई तो चारों तरफ धाम-परमधाम को घेरकर आयी है। महावन से लगकर इन वन के मोहोलों के ३२ हांस आये हैं। जिसकी दो परिक्रमा आयी है। एक महावन के साथ लगकर दूसरी चारहारहवेली के साथ लगकर आयी है। चारहारहवेली तरफ परिक्रमा करें तो २१ करोड़ कोस की होती है और भीतरी तरफ महावन के साथ करें तो १५ करोड़ कोस की होती है। हांस की लम्बाई ४८००० लाख कोस की आयी है। परन्तु बारीकी हिसाब से ४६ लाख ८७ हजार ५०० कोस की है। इसकी बनक सब बड़ोवन, मधुवन, महावन की भांति

आयी है । वही १२०० कोस के अन्तर पर सब नहरें आयी हैं । एक नहर ४०० कोस की चौड़ी आयी है । नहर की बनक मधुवन, महावन की नहरों के समान आयी है । चार-चार नहरों के बीच में चौक आया है । उस चौक के मध्य भाग में ४०० कोस का लम्बा- चौड़ा कमर भर ऊंचा चबूतरा आया है । चारों तरफ सीढ़ियां उतरी हैं । बाकी में कठेड़ा आया है । चबूतरा के मध्य भाग में बड़ा भारी पेड़ आया है । जिसकी ऊंचाई पांच भोम की आयी है । परन्तु एक-एक भोम में १२००० भोमें आयी हैं । तब सब ६०००० भोमें हुयी । एक भोम तक पहले थड़ ही चला गया है । जिसमें दरवाजे लगे हैं । ऊपर जाने को सीढ़ियां आयी है । एक भोम में माणिक पहाड़ की एक हवेली का विस्तार आया है । एक भोम में हजारों लाखोंबाग-बगीचें, नहरें, चेहबच्चें, फुहारें, मोहल, मन्दिर, कोठरियां चौक चबूतरे अपरम्पार आये हैं । ऐसी-ऐसी सब भोमें आयी हैं । १२००-१२०० कोस के दूरी पर सब पेड़ आते गये हैं । सब पेड़ों की भोमें एक दूसरे पेड़ से मिली हुयी हैं । वन के मोहलों के सूत्रधार में सब बडोवन, मधुवन, महावन के सब वृक्ष आये हैं । जरा मात्र भी फरक नही आया है । पेड़ों के चबूतरा के नीचे रौंस से लगकर बेसुमार, बाग-बगीचे नहरें चेहबच्चें, फुहारें आये हैं और वृक्ष भी अरम्पार आये हैं । इन वृक्षों की ऊंचाई एक भोम की आयी है । इस प्रकार से सब चबूतरों के चारों तरफ वनक आयी है । हर एक वृक्ष के चारों तरफ चार नहरें कमर भर ऊंची आयी हैं । नहरों के मध्य भाग में पुल आया है । चारों कोना पर चार चेहबच्चा आये हैं । एक भोम की ऊंचाई ४०० कोस की आयी है । तब ६०००० भोमों की ऊंचाई २ करोड़ ४० लाख कोस की होती है । इन सब पेड़ों की डालियां निकल करके सब एक ही छात हो गयी है । हर एक पेड़ पर आ-जा सकते हैं । जिस प्रकार से महावन का ब्यान आया है । वन की मोहलातों का भी ब्यान उसी अनुसार आया है ।

छोटी रांग (चार हार हवेली) :- वन की नहरों के साथ लगकर चारहार हवेली आयी है। वन की नहरों के साथ लगकर बड़ी नहर आयी है। जो १२०० कोस की चौड़ाई में ४०० कोस में नहर ४००-४०० कोस की दोनों तरफ पाल आयी है। उन पाल के तीन हिस्सा आये हैं। पाल के मध्य भाग का जो हिस्सा है। १३३ कोस की कमर भर ऊंची पाल आयी है दोनों तरफ १३३-१३३ कोस की रौंस आयी है। जल रौंस से कमर भर सीढ़ियां जल चबूतरे पर उतरी हैं। पाल के दोनों तरफ कठेड़ा आया है। इसी प्रकार बाएं तरफ की पाल आयी हैं। १२०० कोस की चौड़ी एक नहर हुई। लम्बाई तरफ ३२ हांस आये हैं। एक हांस की लम्बाई ६५ लाख ६२ हजार ५०० कोस की होती है। तब ३२ हांसो की लम्बाई २१ करोड़ की होती है। सवा दो करोड़ कोस जगह छोड़कर फिर एक नहर १२०० कोस की चौड़ी पहले ब्यान माफक आयी हैं। लम्बाई तरफ ३२ हांस आये हैं। पहल बड़े होते जाते हैं। सवा दो करोड़ छोड़ कर तीसरी नहर १२०० कोस की आयी फिर २-१/४ करोड़ जगह छोड़ कर फिर १२०० कोस चौड़ी नहर चौथी आयी है। यह नहर लम्बाई तरफ गई है। जिसके ३२ हांस आये हैं। एक हांस की लम्बाई २ करोड़ ३३ लाख ३७ हजार ५०० कोस होते हैं। ३२ हांसो की लम्बाई ७५ करोड़ का हिसाब होता है। जैसे-२ आगे तरफ जाते हैं। हांस बदलते जाते हैं। चौड़ाई तरफ हांस-२ के मध्य में १२०० कोस की चौड़ी नहरें आयी हैं। पहले ब्यानानुसार चार नहरों के बीच एक चौक २-१/४ करोड़ का आया है। चौक के चारों तरफ एक नहर मध्य भाग में पटी हैं। अर्थात पुल आया है। चारों कोना पर चार चेहबच्चें आये हैं। चार नहरों के बीच एक चौक आया है। एक हार में ३२ चौक आये हैं। यह तो लम्बाई तरफ। और चौड़ाई तरफ पांच नहरों के बीच चार चौक आये हैं। चारों हारों के चौक १२८ हुये। इस हर एक चौक में एक-२ हवेली

आयी है । तब चारों हारों के १२८ हवेली आयी है ।

एक हवेली का बयान :- रांग का साथ वाला जो २-१/४ करोड़ का जो एक चौक आया है । उसके तीसरे हिस्से में ७५ लाख कोस का लम्बा-चौड़ा भोम भर ऊंचा एक चौक चबूतरा आया है । चबूतरा के चारों दिशा से सीढ़ियां उतरी हैं । बाकी में कठेड़ा आया है । चारों तरफ ४०० कोस की रौंस छोड़कर एक हवेली आयी हैं । जिस बड़ी हवेली में १२००० हवेली एक तरफ आयी है । इस प्रकार से १२००० हारों की १२००० हारें आयी हैं । तब सब हवेली १४ करोड़ ४० लाख होती हैं । ऊंचाई पांच भोम की आयी हैं । परन्तु एक भोमें में १२००० भोमें आयी हैं । तब पांचो भोमों की ६०००० भोमें होती हैं । एक हवेली त्रिपोलिया सहित ६२५ कोस की होती है । ३१२-१/२ कोस में हवेली, ३१२-१/२ कोस में त्रिपोंलिया आये हैं । रांग की ४००० हवेली के सामने यह सब हवेली आयी हैं । ४००० हवेली के २४००० हांस होते हैं । रांग की हवेलियों के तीन, त्रिपोलियों की तीन, हवेलियों के जिसमें दो गुर्ज और एक दरवाजा यह एक हवेली के ६ हांस हुये । यह हवेली ७५ लाख कोस की है । इसके हांस २४००० होते हैं । रांग की एक हांस के सामने एक हवेली आयी हैं । एक गली के सामने यहाँ पर तीन गली आयी हैं । वहां रांग पर ४०० कोस की एक गली आयी है । यहाँ ३१२-१/२ कोस में तीन गली आयी हैं । क्यों कि भीतरी तरफ हांस छोटा आया है । परन्तु मेल दोनों का हुआ । मध्य भाग में यहाँ पर त्रिपोलिया आया है । ७ करोड़ २० लाख दाएं तरफ और इतनी ही हवेली त्रिपोलियों के बाएं तरफ आयी हैं । हवेली के मध्य भाग में १०४ कोस का दरवाजा आया हैं । दरवाजे के दाएं-बाएं १०४-१०४ कोस के चौड़े गुर्ज आये हैं । सो भी उपरा-ऊपर ६०००० भोम तक गये हैं । एक भोम की ऊंचाई ४०० कोस होने से ६०००० भोमों की ऊंचाई २ करोड़ ४० लाख की आयी है । हर एक हवेली

के आठ चबूतरे और चार दरवाजें आये हैं। दो-दो हवेलियों के दरवाजों पर २४ मेहरावें आयी हैं। चार हवेलियों के कोना पर २४ मेहरावें आई हैं। कमर भर ऊंचे चबूतरों पर त्रिपोलिया की एक गली १०४ कोस की होती है। इसी प्रकार से सभी हवेलियों के दरवाजें आये हैं। एक हवेलि के अन्दर जाकर देखें तो एक हार मन्दिरों का आयी है। एक तरफ के मन्दिर १५०० तो चारों तरफ के ६००० होते हैं। भीतर दो हार थम्भन के आगे एक हार ६००० मन्दिरन की आयी है आगे दो हार थम्भों की आई है। इसके भीतर १२००० मोहोलों की १२००० हारें आयी हैं। दो मोहलों के बीच में त्रिपोलियां आये हैं। यह भोम कोस-२ की आयी है। इस प्रकार सब मोहलों के दाएं-बाएं सब त्रिपोलिया आये हैं। एक मोहल के अन्दर १२००० मन्दिरों की १२००० हारें आयी हैं। दो मन्दिर के बीच त्रिपोलिया आया है। इसी प्रकार सब मन्दिर आए हैं। एक मन्दिर के अन्दर १२००० कोठरियों की १२००० हारें आई हैं दो कोठरियों के बीच त्रिपोलिया आया है। इसी प्रकार सब मोहल आये हैं। यह एक हवेली की भीतरी तरफ एक भोम का ब्यान आया है। इसी प्रकार सब हवेलियों की भोमें आयी है। इन हवेलियों की ऊंचाई ६०००० भोम आयी है। एक भोम की ऊंचाई ४०० कोस तब सब ऊंचाई २ करोड़ ४० लाख होती है। ऊपर ७५ लाख कोस की लम्बी-चौड़ी चांदनी शोभा लेती है। तब चारों हारों में सब १२८ हवेली शोभा लेती है।

सब हवेलियों की गिनती :- एक हवेली में १२००० की १२००० हारें आने १४ करोड़ ४० लाख हवेली आयी है। एक लाईन में १२००० हवेली आयी है। ३२ हवेलियों की एक हार में ३ लाख ८४ हजार हुयी। एक बड़ी हवेली में १४ करोड़ ४० लाख हवेली आयी है। और ऊंचाई सब की ५ भोम की आयी है। तब सब हवेलियां ७२ करोड़ होती है। ऐसी-ऐसी चारों

हारों की १२८ हवेली है। तब सब हवेली ९२ अरब १६ करोड़ होती हैं। यह बड़ी हवेली है। इस एक हवेली में १२००० हवेली आयी हैं। तब सब छोटी हवेली १ पदम १० नील ५९ खरब २० अरब होती हैं। एक हवेली त्रिपोलियां सहित ६२५ कोस की है।

चाँदनी चौक की गिनती :- एक हवेली के चारों तरफ आठ बगीचें आये हैं। चार बगीचा चारों दिशा के और चार बगीचा चारों कोना में आये हैं। एक बगीचा की लम्बाई-चौड़ाई ७५ लाख कोस की आयी है। चारों दिशा में जो चार बगीचा आये हैं। उनमें चार चांदनी चौक आये हैं। एक दिशा में जो एक बगीचा ७५ लाख कोस का आया है। उसके तीसरे हिस्सा में २५ लाख कोस की एक चांदनी चौक आया है। इस चौक के मध्यमें दो कमर भर ऊंचे चबूतरे आये हैं। इस चबूतरा के मध्य में दो वृक्ष हरे, लाल रंग के आये हैं। हवेली के दाएं-तरफ हरे रंग का और बाएं तरफ का वृक्ष लाल रंग का आया है। रंग भवन के चबूतरे के समान लगकर कमर भर ऊंचे ४०० कोस की चौड़ी रौंस आयी है। यह चांदनी चौक के तीन तरफ घूमी है। फिर दीवार के साथ लगकर चली गयी है। हवेली के मध्य भाग में जो त्रिपोलिया आया है। उसी त्रिपोलिया के सामने भोम भर की सीढ़ी उतरी है। ४०० कोस की चौड़ाई की जगह से ८०० की लम्बाई तक सीढ़ियों के दाएं-बाएं परकोटे आये हैं। परकोटे की दीवार पर सुन्दर कांगरी आयी है। इन सीढ़ियों के सामने कमर भर ऊंची रौंस ४०० कोस की चौड़ी आयी है। दाएं-बाएं नीचे वन शोभा लेते हैं। यह रौंस जाकर पाल की नीचे जो रौंस है। उसमें मिल गयी है। और दो रौंसे बगीचे के दांए-बांए ४०० कोस की चौड़ी और कमर भर ऊंची आयी हैं। यह रौंस भी पाल के नीचे वाली रौंस में जाकर मिल गयी है। इसी प्रकार चारों तरफ चांदनी चौक आये हैं। एक हार में चांदनी चौक १२८ हुये तब सब हारों के चांदनी चौक ५१२

होते हैं । जिनकी अपरम्पार शोभा हो रही हैं ।

एक हवेली के वृक्ष :- एक हवेली के गृद ८ बगीचे आये हैं । चार दिशा में और चार कोना में, एक बगीचा में वृक्ष १२००० हारों की १२००० हारें आयी हैं । तब सब वृक्ष १४ करोड़ ४० लाख होते हैं । ये वृक्ष त्रिपोलियों के सामने आकर लगे हैं । ६२५ कोस के अन्तर पर सब आये हैं । इस प्रकार से लम्बाई-चौड़ाई तरफ चौक आये हैं । आठों बगीचों के वृक्ष एक अरब २० लाख होते हैं । एक हवेली के सामने दो बगीचे गिने तो सामने और दाएं-बाएं जो एक बगीचा आया है । उसमें से आध-२ लिया तब लम्बाई तरफ २४००० वृक्ष हुये । और चौड़ाई तरफ १२०००, इसी प्रकार से २४००० की १२००० हारें आने से एक तरफ वृक्ष २८ करोड़ ८८ लाख हुये । तब चारों तरफ के एक अरब १५ करोड़ २० लाख आये । इन वृक्षों की ऊंचाई ६०००० कोस आयी है । एक चौक ६२५ कोस का जो आया है । इस चौक में २०० वृक्षों की २०० हारें आयी हैं । तब इन छोटे चौकों में और कई वृक्ष भी आये हैं । इसका हिसाब नहीं है । इन चांदनी चौक के जगह में वृक्ष नही आये है । कमती वृक्षों का हिसाब नहीं आया है । एक हार हवेली के ३६ अरब ८६ करोड़ ४० लाख वृक्ष आये हैं । तब चार हार हवेली के (१२८ हवेलियों) १ खरब ४७ अरब ४५ करोड़ ६० लाख आये हैं । यह सब वृक्ष बड़े आये हैं । जिनकी ऊंचाई ६०००० भोम की आयी है । ऊपर चांदनी सब एक हो गयी है । वन की भोम से हवेली के भोम में जा सकते है । हवेली की भोमें और वन की भोमें एक साथ आयी है । कोई अन्तर नहीं आया है । चांदनी ९ करोड़ चौड़ाई की आयी है । हर एक बगीचे में नहरे, चेहबच्चे, फुहारे आदि जोगबाई की शोभा आयी हैं । रांग के सामने इन हवेलियों की हांस आयी है । रांग के गोल गुर्जो के सामने नहरों के बड़े चेहबच्चे आये हैं ।

बड़ी रांग :- छोटी रांग की जो चौथी हवेली बड़ी रांग के साथ लगकर जो आयी है । ७ करोड़ २० लाख हवेली दाएं और ७ करोड़ २० लाख हवेली बाएं तरफ छोड़कर मध्य के त्रिपोलियों से निकल कर ४०० कोस की रौंस छोड़ कर आगे भोम भर सीढ़ियां ऊतर कर चांदनी चौक में आकर चांदनी चौक के सामने जो रौंस आयी है । उस रौंस पर पहुंचे दाएं-बाएं कमर भर नीचे वन आया है । इसकी शोभा देखते हुये नहर की रौंस पर पहुंचे । रौंस से कमर भर सीढ़ी चढ़कर पाल पर होकर कमर भर सीढ़ी उतर कर रौंस पर आये । रौंस के आगे नहर के पुल पर होकर दूसरी तरफ रौंस पर पहुंचे

रौंस से कमर भर सीढ़ी चढ़ कर पाल पर होकर पाल से कमर भर की सीढ़ी उतर कर १२०० कोस की चौड़ी और ४ लाख कोस की लम्बी रौंस पर आये । दाएं-बाएं बन आया है । यह रौंस त्रिपोलिया के सामने आयी है । ४ लाख कोस चलकर आगे कमर भर सीढ़ी चढ़कर दो मन्दिर चौड़ी रौंस पर आये ४०० की चौड़ी सीढ़ियां चढ़ कर भोम भर ऊंचे चबूतरे पर पहुंचे । चार हवेलियों का चबूतरा तथा रांग का चबूतरा एक बराबर आया है । इस चबूतरा के किनार पर कठेड़ा आया है । सीढ़ियों के दरवाजे के जगह छोड़ कर इस कठेड़ा के आगे १२०० कोस की चौड़ी रौंस लम्बी तो चारों तरफ घूम करके आयी है । इस रौंस के आगे एक हवेली २ करोड़ ८८ लाख कोस की चौड़ी आयी है । और एक हांस २ करोड़ ९२ लाख कोस का होता है । जिस हवेली में १२००० हवेलियों की १२००० हारें आयी हैं । सब हवेली १४ करोड़ ४० लाख तले की भोम की हुयी । ऐसी-२ ऊपरा-ऊपर १२००० भोमें आयी हैं । एक भोम की ऊंचाई १२००० कोस, एक भोम में छोटी-२, १२००० भोमें आयी है । यह भोम एक-२ कोस की है

तब इस हवेली की ऊंचाई नीचे से ऊपर तक १४ करोड़ ४० लाख कोस की आयी है । जिस हवेलियों में १२००० की १२००० हारें आयी हैं । वह

हवेली २४००० कोस की एक आयी है । जिसमें १२०० कोस की एक हवेली आयी है । और १२०० कोस में त्रिपोलियां आया है । उस १२०० कोस के तीन भाग हुये । एक भाग ४०० कोस का आया है । मध्य भाग में ४०० कोस का बड़ा दरवाजा आया है । दाएं-बाएं ४००-४००कोस के चबूतरे आये हैं । सो चबूतरे कमर भर ऊंचे आये हैं । तीन तरफ कठेड़ा आया है । तीन तरफ कमर भर की सीढ़ी उतरी है । एक चबूतरे पर चार थम्भ ऊपर चार मेहरावें आयी हैं । इसी प्रकार दूसरे चबूतरे पर वनक आयी है । दो मेहरावें बीच के चौक पर आयी है । १२०० क्रोस की त्रिपोलियां में तीन गली आयी है । चार हवेली के कोना पर २४ मेहरावें आयी हैं । और दो हवेलियों के दरवाजे पर २४ मेहरावें आयी हैं । हवेली के सामने एक गली ४०० कोस की आयी है । हर एक हवेली के चारों तरफ ८-८ चबूतरें आये हैं । सो भी उपरा-ऊपर चले गये हैं । इसी प्रकार की वनक सभी हवेलियों में आयी है । १२०० कोस की एक जो हवेली आयी है । उसके सामने भोम भर ऊंचा चबूतरा के नीचे १२०० कोस का चौड़ा चार लाख कोस का लम्बा एक बगीचा आया है । और त्रिपोलियों के सामने १२०० कोस का चौड़ा और ४ लाख कोस का लम्बा बगीचा की जमीन के समान एक रास्ता नहर तक चला गया है । इसी प्रकार सब १२०००हवेलियों के सामने १२००० बगीचे आये हैं । और १२००० त्रिपोलियों के सामने १२००० रास्ते आये हैं । इसी प्रकार की वनक समुद्र की तरफ भी आयी है । १२००० हवेलियों की जो रौंस आयी है । इस रौंस पर २४००० गुर्ज और १२००० दरवाजों की मेहरावें उपरा-ऊपर चली गयी हैं । ऊपर जाकर २४००० गुर्जों पर गुम्मट आये हैं । और १२००० दरवाजों पर सुन्दर कमाने शोभा लेती हैं । इसी प्रकार से भीतरी रौंस पर समुद्र तरफ जोगबाई आयी है ।

एक हवेली :- एक हवेली के भीतर जाइये । तो एक तरफ मन्दिर १५००

आये हैं । चारों तरफ मन्दिर ६००० आये हैं । भीतर एक हार थम्भों की ६००० की आयी है । इसके भीतर ६००० थम्भों दूसरी हार आई है । इसके आगे एक हार मन्दिरों की आयी है । मन्दिर थम्भों की उनकी ऊंचाई भी वैसे ही आयी हे ! इनकी भोमें उपरा-ऊपर १२००० गयी हैं । इसके भीतर १२००० मोहलों की १२००० हारें आयी है । दो मोहलों की बीच त्रिपोलियां आया हैं । इन मोहलों के ऊंचाई भी १२००० भोम की आयी हैं । इन मोहलों के भीतर जाइये तो १२००० मन्दिरों की १२००० हारें आई हैं । दो मन्दिरों के बीच में त्रिपोलिया आया है एक मन्दिर के अन्दर जाईए तो १२००० कोठरियों की १२००० हारें आयी हैं । दो कोठरियों के बीच में त्रिपोलियां आये हैं । अपरम्पार शोभा दिखाई देती हैं । बाग, बगीचे, नहरें, चेहबच्चें, फुहारे, थम्भ, मेहरावें, चबूतरे, हिड़ोले बेसुमाार अपरम्पार आये हैं । मानिक पहाड़ की हवेलियों के समान विस्तार वाली हवेली आयी हैं । ए हवेली १५०० मन्दिर (१२०० कोस) की लम्बी-चौड़ी बराबर आयी है । जैसी एक हवेली वैसी ही १४ करोड़ ४० लाख हवेली को जानना । जैसी एक भोम वैसे ही १२००० भोमें आयी हैं । ६०००-६००० हवेली दाएं-बाएं तरफ रही मध्य भाग में त्रिपोलिया आया है । इसी त्रिपोलियां से चले । मध्य में जहाँ चार त्रिपोलियों की चौकड़ी मिली है । वहाँ पर ४०० कोस का चौड़ा चौक आया है । उस चौक में हवेली आयी है । उस हवेली में चारों तरफ मोहल आये हैं । मोहल के आगे बगीचा आगे कमर भर ऊंचा चबूतरा चारों तरफ थम्भ कठेड़ा तथा सिढ़ियां आयी हैं । चबूतरा के मध्य भाग में जल का एक स्तून आया है । वह स्तून आकाशी तक चला गया है । इस हवेली की वनक पुखराज की आकाशी की मध्य वाली हवेली के समान आयी है । इस हवेली के चारों तरफ ४०० कोस की रौंस आयी है । ये शोभा खूबी देखते हुये हवेली के वाहर निकले समुद्र तरफ इस हवेली के आगे १४०० कोस की

रौंस चौड़ी और लम्बाई चारों तरफ घूमी है। इस रौंस पर १२००० हवेलियों के दरवाजे तथा २४००० गुर्ज चौखुटे चबूतरे और १२०००त्रिपोलिया आये है। इस रौंस पर आगे कठेड़ा चारों तरफ आया है। जहाँ सिढ़ियों के दरवाजे आये हैं। वहां पर कठेड़ा नही आया है । हर एक हवेली के सामने भोम भर नीचे १४०० कोस का चौड़ा और चार लाख कोस का लम्बा एक बगीचा आया है। इस बगीचा में एक चांदनी चौक आया है। और त्रिपोलियों के सामने रौंस १४०० कोस की चौड़ी और चार लाख कोस की लम्बी आयी है। इसी प्रकार सभी हवेलियों के सामने वनक आयी है। इन बगीचा की जिमी से कमर भर ऊंची ४०० कोस की चौड़ी समुद्र की रौंस आयी है। इसी रौंस की जिमी माफक १२०००रौसें मध्य चांदनी चौक से आकर इस रौंस में मिल गयी हैं। और १२०००रौसें त्रिपोलियों के सामने आयी हैं। जो बगीचों की जमीन माफक आयी हैं। अगर उन रौसों से आइये तो कमर भर सीढ़ी चढ़ कर समुद्र रौंस पर जाइये। इस रौंस से हाथ लगता जल है। समुद्र के एक तरफ से २४००० रास्तों के सामने समुद्र की रौंससेकमर भर की सीढ़ी २४००० जगह से चबूतरा पर उतरी हैं। इस जल चबूतरा पर कमर भर जल भरा है। यहाँ पर खड़े होकर स्नान करीए। समुद्र के एक तरफ २४००० घाट आये है बाकी में कठेड़ा लगा है। इस तरह से रौंस बन तरफ वनक आयी है। चारहार हवेली की तरफ जो दीवार आयी है। २ करोड़ ८८ लाख की, भीतरी तरफ जो दीवार आयी है। इस हवेली की भोम से २४०० की रौंस तक छज्जा गये हैं। छज्जों की कीनार पर कठेड़ा आया है। हवेली की बाहरी तरफ तथा भीतरी तरफ इस रांग में ३२ हांस आये हैं। बाहरी चार हार हवेली तरफ ३२ हवेली आयी है। और ३२ गोल गुर्ज आये हैं। गुर्जों की लम्बाई चार लाख कोस की आयी है। २ लाख कोस इस हांस के लिए २ लाख कोस उस हांस के लिए, इन ४

लाख कोस में गोल गुर्ज आया है। जिसमें ६ दरवाजें आये हैं। तीन दरवाजे तो बाहरी रौंस पर आये हैं। और तीन दरवाजे भीतरी तरफ । इन गुर्जो के सामने त्रिपोलिया आये हैं। एक हांस की चौड़ाई २ करोड़ ९२ लाख कोस की हुयी। ऐसे ही ३२ हांस आये हैं।

समुद्र के चारों तरफ :- मध्य में समुद्र आया है। इस समुद्र के चारों तरफ ४०० कोस की रौंस आयी है। इस रौंस के एक तरफ चार लाख कोस के लम्बे १२००० बगीचे आये हैं। ऐसे-ऐसे बारह हजार बगीचे चारों तरफ आये हैं। इन बगीचों से भोम भर का ऊंचा चबूतरा यानी पाल चारों तरफ आया है। उन पाल की चारों दिशा में चार हवेली बड़ी भारी आयी है। एक-एक हवेली में १२००० हवेली आयी हैं। पहले ब्यानानुसार सब जोगबाई आयी है। एक समुद्र के चारों तरफ ९६००० घाट आये हैं और ४८००० बगीचे आये हैं और ४८०००ही चांदनी चौक आये हैं और ४८००० हवेलियों के दरवाजें आये हैं। ९६००० चौरस गुर्ज आये हैं। गुर्जो पर ध्वजा, पताका शोभा ले रहे हैं। समुद्र के चारों कोना पर ४-४ लाख कोस के लम्बे-चौड़े चौक आये हैं। यह चौक गोल गुर्जो और त्रिपोलियों के सामने आये हैं जो भोम भर नीचे बगीचों के साथ लगकर आये हैं। इन चौको में दौड़ना, खेलना होता है। समुद्र के चारों तरफ चार महाहवेली आयी है। दो हवेली दो पांखे की जमीन तरफ भी जवाब देती है। हर एक समुद्र के चार हार हवेली के हांस की तरफ दो घड़नाले आये हैं। एक घड़नाले से पानी निकलता है। रौंस के तले होकर चार लाख बगीचा की लम्बाई के तले होकर गोल गुर्ज की पाल के नीचे होकर आगे ४ लाख कोस की लम्बाई तरफ जा कर चार हार हवेली के दाएं-बाएं जो चेहबच्चे हैं। उन चेहबच्चों में जाकर नहर मिलती है। सो यह पानी सब जगह पहुंचता है। सब जगह पानी पहुंचा कर वापिस लौटकर दूसरी तरफ के घड़नाले में होकर समुद्र में समाता है। वाहिर की

हवेली तरफ पीठ करके खड़े होइये जो ३६०० कोस की कही है। मुख अपना समुद्र तरफ करिये तो बाएं तरफ के घड़नाले से जल निकलता है। एक समुद्र के बाहरी तरफ भी चार लाख कोस का लम्बा और १८०० कोस का चौड़ा एक बगीचा ऐसे बगीचे १२००० आये हैं। भोम भर ऊंची पाल आयी है। पाल पर १८०० कोस की रौंस और महाहवेली आयी है। इस एक हवेली में १२००० हवेली आयी हैं। आगे २००० कोस की रौंस आयी है। इस रौंस पर हवेली के दाएं-बाएं गोल गुर्ज आये हैं। एक गुर्ज की लम्बाई ६ लाख कोस की आयी है। भीतरी वनक के समान हवेली के आगे भोम भर नीचे बगीचा आया है। चार लाख कोस का लम्बा और २००० कोस का चौड़ा आया है। ऐसे १२००० बगीचे आये हैं। हर एक बगीचा में चांदनी चौक आया है। चांदनी चौक के मध्य से एक रौंस चली गयी है। आगे कमर भर सीढ़ी उतर कर बेहद भूमिका में जाइये। इस भूमिका का कोई पारावार नही है। बाग, बगीचे, चेहबच्चे, नहरें, फुहारें, मोहल, मन्दिर पहाड़ अपरम्पार हैं। हिसाब से बाहर हैं। यहां पर आनन्द चमत्कार हर हमेशा हुआ करते हैं। इसी बड़ी रांग में ८० महाहवेली आयी हैं। ३२ हवेली तो चार हार हवेली की तरफ ३२ हांसो में आयी हैं और ३२ गोल गुर्ज आये हैं और ३२ हवेली बाहर बेहद भूमिका की तरफ आयी हैं। ३२ हांसो में और ३२ गोल गुर्ज हांस-हांस पर आये हैं और १६ हवेली पाखें में आयी हैं। ८ समुद्र के ८ जमीन के पांखो में आयी हैं। इस प्रकार सब हवेली ८० आयी हैं। एक हवेली का ब्यान किया गया है। इसी प्रकार सभी समझना जी। एक हवेली के सामने समुद्र का विस्तार है। दाएं-बाएं जो दो गोल गुर्ज आये हैं। इन गुर्जो के सामने त्रिपोलिया और भोम भर नीचे १२००० बगीचे आये हैं। इसी प्रकार ८ समुद्र के सामने और ८ जमीन के सामने १६ हवेली और ३२ गुर्ज आये हैं। १६ हवेली और आयी हैं। यह हवेली

पांखें की हवेलियों के सामने आयी है । जिस प्रकार की बनक भीतरी तरफ आयी है । इसी प्रकार बनक वाहिर तरफ हवेली की आयी है । इन सब हवेली की ऊंचाई १२००० भोम तक गयी है । जिस प्रकार एक समुद्र का ब्यान किया है । इसी प्रकार ८ समुद्र का ब्यान जानना जी ।

एक समूद्र के टापू :- एक समुद्र की गृद १६ करोड़ कोस की आयी है और लम्बाई-चौडाई ४ करोड़ कोस की आयी है । यह मोटे हिसाब से लिखा है। इस समुद्र के तीसरे हिस्सा में अर्थात १-१/४ करोड़ की जगह में १२००० टापुओं की १२००० हारें आयी हैं । १४ करोड़ ४० लाख सब टापू हुये। ४०० कोस में एक टापू और ४०० कोस में जल, फिर ४०० कोस में टापू फिर ४०० कोस में जल आया है । इस प्रकार सब १२००० टापू हुये और बीच में १२००० जल की सन्धे आयी हैं । चार हार हवेली की तरफ जो १२००० हवेली आयी है । इस हवेली के बीच में जो ४००० हवेली आयी है । जिसकी २४००० मेहरावें हुयी । हर एक हवेली के ६-६ मेहरावें आयी है । ३-३ त्रिपालियों के और २-२ गुर्जों के और १-१ मेहरावें दरवाजे की आयी है । इस प्रकार से १ हवेली की ६ मेहरावें हुयी । ४००० हवेलीयों के २४००० मेहरावें आयी हैं । इन्ही मेहरावों के सामने १२००० टापू आये और १२००० बीच में जल की सन्धे आयी है । दो टापू के बीच में एक जल की सन्धि और दो जल की सन्धि में एक टापू आया है । कोई टापू तो ४७५ कोस का आया है, कोई ५०० कोस, कोई ५५० कोस और कोई ६०० की आयी है । क्योंकि जैसे-जैसे हांस बढ़ता जाता है । उसी प्रकार से हवेली बढ़ती जाती है । इसी प्रकार से टापूओं की चौड़ाई भी बढ़ती जाती है । जैसे एक टापू की लम्बाई-चौड़ाई ६०० कोस की आयी है । जिसके मध्य भाग में एक भोम भर ऊंचा चबूतरा-तीसरे हिस्सा में आया । बाकी एक हिस्सा में दाएं-बाएं वन समझना । जो ७५-७५ कोस का वन आया है ।

एक हिस्सा के १५० कोस हुंये । तीन हिस्सा के ४५० कोस का लम्बा-चौड़ा एक चबूतरा हुआ । उस चबूतरा के चारों तरफ सीढ़ियां उतरी । बाकी सब जगह घेर करके कठेड़ा आया है । आगे १०० कोस की रौंस चारों तरफ घूमी है । दोनों तरफ के २०० कोस के रौंस हुये । आगे २५० कोस की एक हवेली आयी है । जिसमें ८४ कोस का दरवाजा आया है । बाकी ८३-८३ कोस के दाएं-बाएं चौक चबूतरे कमर भर ऊंचे आये है । मनिन्द रांग की हवेली के जोगबाई सब आयी है । चबूतरा पर ८ थम्भ ऊपर १० मेहरावें आयी है । उपरा-ऊपर १२००० भोमें गयी हैं । एक भोम १२००० कोस की होती है और एक-एक भोम में १२००० भोमें उपरा-ऊपर आयी हैं । सो यह भोमें छोटी आयी हैं । एक-एक टापू की ऊंचाई १४ करोड़ ४० लाख की होती है । एक हवेली के भीतर जाइये । दो हार मन्दिरों के बीच में दो हार थम्भों की आयी है । एक हार मन्दिरों की ६००० की आयी है और थम्भ की हार भी ६००० की आयी है । मानिन्द रांग हवेली के सब जोगबाई के समान । इन थम्भों की हार के भीतर १२००० मोहलों की १२००० हारें आयी हैं । त्रिपोलिया सहित उपरा-ऊपर भोमे हवेली की एक भोम में आयी है । एक मोहल के अन्दर १२००० कोठरियों की १२००० हारें आयी हैं । दो कोठरियों के बीच त्रिपालियां आयी है । बाग, बगीचें चेहबच्चें, नहरें, हिडोंलें, सब प्रकार की जोगबाई रांग की हवेली की भांति आयी है । रांग की हवेली के जोगबाई बड़ी है । इस टापू की जोगबाई छोटी आयी है । परन्तु है सब जोगबाई बराबर । इस भोम पर चबूतरे से चारों तरफ भोम भर की सीढ़ियां उतरी हैं । सीढ़ियों के दाएं-बाएं पर कोटा, पर कोटे पर कांगरी आयी है । चारों तरफ आठ बगीचे आये हैं ! चार बगीचें चारों दिशा में चार बगीचा चारों कोना पर आये हैं । दिशा की एक बगीचा में १६६ मन्दिर के लम्बे-चौड़े चांदनी चौक आये हैं । इस चांदनी चौक में दो चबूतरे

हरा-लाल वृक्ष सब जोगबाई रंग भवन जैसी आयी है । वहां पर जोगबाई छोटी यहां पर बड़ी आयी है । इसी प्रकार से चारों तरफ आयी है । इस बगीचा की जमीन से कमर ऊंची जल रौंस आयी है । चांदनी चौक में जो रौंस आ रही है । सो इसी रौंस में आकर मिल गयी है । दाएं-बाएं दो रौंस बगीचा की सन्धि की आयी है । सो रौंस कमर भर नीचे आयी है । जल रौंस के आगे कमर भर सीढ़ी जल के चबूतरे पर उतरी है । जहां पर खड़े होकर स्नान करिये । इसी प्रकार की जोगबाई चारों तरफ आयी है ।

टापू की चांदनी :- मध्य तीसरे हिस्से में कमर भर ऊंचा चबूतरा आया है । चारों तरफ चबूतरे से सीढ़ी उतरी है । बाकी चारों तरफ कठेड़ा आया है । चबूतरा के मध्य में गिलम ऊपर सिंहांसन, कुर्सीयां रखी हैं । चबूतरे के चारों तरफ बन-बगीचे, नहरें, फुहारें अपरम्पार बेसुमार आये हैं और चारों तरफ किनार पर ऊंची भोम भर दीवार आयी है । दीवार चौड़ी परिक्रमा वास्ते । चारों दिशा में भोम भर की सीढ़ी उतरी है । उस दीवार में भीतरी तरफ कठेड़ा चारों तरफ आया है । बाहरी तरफ दरवाजों की कमाने आयी हैं । उस कमान पर कंगूरे बीच-बीच में कांगरी आयी है । कगूंरो पर कलश, ध्वजा, पताका, वेरखे सब आये हैं और कांगरी पर भी ध्वजा पताका सब आये हैं । इस कमान के दाएं-बाएं चौरस गुर्ज भी यहां तक आये हैं । इस दीवार से मिले हैं । यहां से चार थम्भ उठकर ऊंपर गुम्मट, कलश, ध्वाजा, पताका सब आये हैं । बाकी सब जगह पर कांगरी आयी है इस प्रकार की वनक चारों तरफ शोभा देती है । इन टापूओं के छज्जे भोम-भोम से सब रांग से मिले हैं । दरवाजों के सामने दरवाजें आये हैं । चबूतरा के सामने चबूतरा आये हैं । सब जोगवाई मिलती है । यह एक टापू का ब्यान हुआ । इसी प्रकार से १४ करोड़ ४० लाख सब टापू आये हैं । चारों तरफ किनार पर ४८००० दरवाजें और ९६००० चौरस चबूतरे आये हैं । यह एक सागर

के टापू का ब्यान है । इसी प्रकार से आठों समुद्रों के टापू का ब्यान आया है ।

एक जमीन का ब्यान :- दो सागरों के बीच एक जमीन और दो जमीन के बीच एक सागर आया है । आठ समुद्रों के बीच आठ जमीन आयी है । आठों जमीन में एक जमीन का ब्यान किया है । इसी प्रकार सबका जानना जी । एक समुद्र की जितनी लम्बाई-चौड़ाई की जगह है । इतनी ही जगह एक जमीन की आयी है । १६ करोड़ की गृद और ४ करोड़ की लम्बाई-चौड़ाई सब आयी है एक जमीन के चारों तरफ १६०० कोस की चौड़ी रौंस आयी है । इस रौंस के चारों तरफ ४८००० बगीचें हैं । चार लाख कोस का लम्बा १२०० कोस का चौड़ा एक बगीचा आया है । जितनी बड़ी हवेली है उतनी बगीचा की चौड़ाई आयी है । ऐसे सब बगीचें आये हैं । बगीचा से भोम भरऊंची पाल आयी है । उस पर एक महाहवेली आयी है । एक हवेली में १२००० हवेली आयी है । इसी प्रकार से चारों तरफ वनक आयी है । जिस प्रकार की जोगबाई सागर के चारों तरफ आयी है । उसी प्रकार सब जोगबाई जमीन के चारों तरफ आयी है । कुछ अन्तर नही है । जैसे सागरों के चारों कोना पर चार चौक खाली आये हैं । इसी प्रकार से जमीन के चारों कोना पर ४००००० कोस का लम्बा-चौड़ा गोल गुर्ज के सामने चौक आया है । इस १६०० कोस की रौंस के आगे एक हवेली आयी है । मानिन्द रांग की हवेली के समान, कुछ अन्तर नही है । इस हवेली की जोगबाई सब वन की आयी है । एक हवेली के अन्दर १२००० की १२००० हारें आने से १४ करोड़ ४० लाख हवेली आयी है । एक-एक भोम में १२०००-१२००० भोम उपरा-ऊपरआयी है । इनकी ऊंचाई एक-एक कोस की आयी है । एक हवेली २८०० कोस की भीतरी तरफ की आयी है । बाहरी तरफ की हवेलि

३६०० कोस की आयी है। जैसे-जैसे हांस बढ़ता जाता है। हवेली भी बढ़ती जाती है। २८०० कोस की हवेली में १४०० कोस में हवेली और १४०० कोस में त्रिपोलिया आये हैं। त्रिपोलिया में भी तीन गली आयी है। इस प्रकार १२००० हवेलियों में १२००० त्रिपोलिया आये हैं। इसके मध्य की गली में होकर प्रवेश किया। ६००० हवेली चल कर चारों तरफ त्रिपोलियां की चौकड़ी पड़ी। मध्य की गली में एक हवेली आयी है। चारों तरफ मोहल भीतर तरफ बाग-बगीचें आये हैं। मध्य भाग में कमर भर ऊंचा चबूतरा। चबूतरे पर थम्भ कठेड़ा आया है। इस चबूतरा के तीसरे हिस्से में एक जल का स्तून आया है। मानिन्द आकाशी मोहल की २५वीं हवेली जो मध्य भाग में आयी है। उसी प्रकार इसकी बनक आयी है। एक हवेली के एक तरफ एक हिस्सा में दरवाजा दो हिस्से में दाएं-बाएं गुर्ज आये हैं और भीतर तो गली में चबूतरे आये हैं। यदि एक हवेली के भीतर जाइये तो दो हारें मन्दिरों की, मन्दिरों के बीच दो हारे थम्भों की आयी है। भीतर तरफ दो हार थम्भों की आयी है। मन्दिरों की एक हार में ६००० मन्दिर आये हैं। थम्भों की एक हार में ६००० थम्भ आये हैं। इसके आगे १२००० मोहलों की १२००० हारें आयी हैं। दो मोहलों के बीच त्रिपोलिया आया है। एक मोहल के अन्दर जाइये तो १२००० मन्दिरों की १२००० हारें आयी है। यदि एक मन्दिर के अन्दर जाइए। १२००० कोठरियों की १२००० हारें आयी है हर मोहलों मन्दिर, कोठरियों के बीच में त्रिपोलिया आया है। बाग-बगीचें, नहरें, चेहबच्चें सब जोगबाई मोहलों मन्दिरों, कोठरियों में आयी हैं। इस वन की महाहवेली के बाहर एक तरफ १२००० दरवाजे २४००० चौरस गुर्ज आये है। चारों तरफ ४८००० दरवाजों की कमाने और ९६००० चौरस गुर्ज उपरा-ऊपर १२००० भोम तक चले गये हैं। ऊपर सब एक चांदनी आयी है।

जिमी वन मोहल की चांदनी :- इस वन की चांदनी पर मानिक पहाड़ की

चांदनी तथा आकाशी मोहल की चांदनी की बनक आयी है । चांदनी के तीसरे हिस्सा में एक भोम भर ऊंचा चौरस चबूतरा आया है । इस चबूतरा के तीन भाग हुये । पहले हिस्सा में देहलान, दूसरे हिस्सा में ताल, तीसरे हिस्सा में मोहल आये हैं । पहले हिस्सा में देहलान आयी है जिसमें चार थम्भों की हारें आयी हैं । उसके बीच में दो भोम की ऊंचाई आगे-पीछे एक भोम की ऊंचाई आयी है । इस देहलान के पीछे ४००-४०० कोस की रौंस आयी है । रौंस को कठेड़ा लगा है । बाहर वन की तरफ भोम भर की सीढ़ी उतरी है । कई जगह से भीतर ताल तरफ कमर भर की सीढ़ी जल चबूतरा पर उतरी है । दूसरे हिस्से में ताल भोम भर का गहरा आया है । तीसरे हिस्से में टापू मोहोल आया है । मोहलात के दोनों तरफ ४००-४०० कोस की रौंस आयी है । रौंस से सीढ़ी वन चबूतरे पर उतरी है । एक तरफ १२००० हवेली आयी है । चारों तरफ की ४८००० हवेली आयी है । ऊंचाई २० भोम तक गयी है । हवेलियों के भीतरी तरफ बाग-बगीचे नहरें, चेहबच्चे सब आये हैं । मध्य तीसरे हिस्से में चौरस चबूतरा कमर भर का ऊंचा आया है । किनार पर थम्भ आये हैं । चबूतरे पर गिलम बिछी है । चबूतरे के मध्य कुण्ड भाग में जल का स्तून आया है । ऐसी वनक उपरा-ऊपर २० भोम तक गयी हैं । ऊपर सब एक चांदनी हो गयी है । चांदनी के तीसरे हिस्से में एक चौरस चबूतरा कमर भर का ऊंचा आया है । जो नीचे के चबूतरे की चांदनी पर आया है । इस चबूतरा के मध्य भाग में ऊपर आकर स्तून कुण्ड बना । चारों तरफ कठेड़ा चारों दिशा में सीढ़ियां जल चबूतरे पर उतरी हैं । घेर करके चबूतरा आया है । चबूतरा पर गिलम, सिंहासन, कुर्सियां हैं । चारों तरफ कठेड़ा आया है । चबूतरे के नीचे चारों तरफ वन-बगीचें, नहरें, चेहबच्चें चारों तरफ आये हैं । भोम भर ऊंचे देहलान के चारों तरफ चबूतरें, बाग-बगीचें, चेहबच्चें, नहरें, फुहारें सब आये हैं । कै जगह पर बैठने के सुन्दर स्थान आये हैं और चारों तरफ भोम भर की दीवार ऊपर उठी है दीवार चौड़ी परिक्र

मा के वास्ते आयी है । दीवार के चारों तरफ भोम भर की सीढ़ियां उतरी हैं । दीवार की किनार पर भीतरी तरफ कठेड़ा आया है । चौरस चबूतरे तथा दरवाजों की मेहरावें भी यहां तक आयी हैं । दरवाजों पर कमाने आयी हैं । कमानों पर कंगूरे, कलश, ध्वजा, पताका सब आये हैं । दो कंगूरो के बीच कांगरी आयी है । कांगरी पर ध्वजा-पताका सब आये हैं । चौरस चबूतरों की छत भी इसी दीवार तक आयी है । चार थम्भ उठ कर ऊपर गुम्मट, कलश, ध्वजा, पताका सब आये हैं । दो गुमटों के बीच में त्रिपोलिया की जगह कांगरी आयी हैं । इसी प्रकार से चारों तरफ बनक आयी है । चारों तरफ ४८००० दरवाजों की कमानें और ९६००० चौखूटे गुम्मट, कांगरी, चारों तरफ आयी है । यह तो एक जमीन का ब्यान हुआ । यह सब बेवरा वन, वृक्षों, पत्तों, फूलों ड़ालियों का आया है । अपरम्पार शोभा है ।

एक जमीन के चारों तरफ चार हवेली आयी है । सो उपरा-ऊपर१२००० भोम गयी है । इस जमीन के चारों तरफ ४८००० दरवाजों की कमाने आयी हैं । दरवाजों के कमानों पर कलश, ध्वजा पताका सब आये हैं । चारों तरफ ९६००० गुर्ज आये हैं । जिन पर ध्वजा-पताका फहराते हैं और चारों तरफ जो कांगरी त्रिपोलिया पर आयी है । उस पर भी ध्वजा-पताका फहरात है । इस प्रकार अपरम्पार शोभा आयी है । इसी प्रकार आठों जमीन का ब्यान जानना जी ।

सागर के चारों तरफ :- एक सागर के चारों तरफ चार हवेली आयी है । एक-एक हवेली में १२००० की १२००० हारें आयी हैं । एक समुद्र के चारों तरफ ४८००० दरवाजों की कमानों पर कंगूरे, कांगरी, ध्वजा-पताका सब आये हैं और चारों तरफों ९६००० गुर्जो पर गुम्मट, कलश, कंगूरे, कागरी, ध्वजा, पताका सब आये हैं । सब त्रिपोलियों पर कांगरी ऊपर ध्वजा, पताका सब आये हैं । ऐसे ही आठों समुद्रो का ब्यान आया है ।

चौपाई

आठों सागरों की परिक्रमा :- आठ सागर इस प्रकार हैं

नूर नीर क्षीर दधि सागर, धृत मधु इक ठौर ।
रस सर्वरस सागर, बिन मोमिन न पावे ठौर ॥

नूर सागर :- यह अग्नि कोना में स्थित है यहां सब योगवाई सफेद रंग की शोभायमान है मोहल, मन्दिर, बाग-बगीचे, वनस्पति, पशु-पक्षी इत्यादि । नूर सागर व नीर सागर के मध्य जो जमीन आयी है वह दो रंग की शोभायमान है नूरसागर व नीरसागर की परछाईं पड़ने से सफेद व लाल रंग शोभायमान है । वनस्पति, पशु पक्षी व मोहल आदि भी दो रंग के आये हैं ।

नीर सागर :- नूर सागर की सर्व शोभा देख करके आगे दो रंग की जमीन पार करके नीर सागर को चले तो नूर सागर के पश्चिम दिशा की जो दिवाल है । उस दिवाल में ६०००-६००० दरवाजे और चांदनी चौक दाएं-बाएं रहे । मध्य दरवाजे से हो करके १२००० हवेलियों को पार करके जिमी दिस दरवाजे से हो करके भोम भर की सिढ़ियां उतर कर चांदनी चौक में से होकर दोनों तरफ वन तथा मोहोल को पार कर अगली दिवाल में भोम भर की सिढ़ियां चढ़कर दरवाजे से होकर १२००० हवेलियों को पार कर नीर सागर के पूर्व तरफ दरवाजे से होकर सीढ़ी उतर कर चांदनी चौक में आकर समुद्र की तरफ की रौंस पर होकर वन पार कर समुद्र की उत्तर जल रौंस पर आये फिर पश्चिम की रौंस पर जाकर सर्व वन पारकर चांदनी चौक में हो के पश्चिम की दिवाल की भोम भर सीढ़ी चढ़कर दरवाजे में आये दरवाजे में खड़े होकर नीर सागर की शोभा देखने लगे । यह नीरसागर परमधाम के दक्षिण में विद्यमान है । यहां की सर्व जोगबाई लाल रंग की है नीर सागर और क्षीर सागर के मध्य जो जमीन भी आयी है वहां की सर्व जोगवाई दो रंग (लाल व पीले) की आयी है आनन्दमयी लीला प्रकाशमान है ।

क्षीर सागर :- अब नीर सागर से सर्वशोभा देख करके बड़े दरवाजे से होकर १२००० हवेलियों को पार करके दूसरे दरवाजे से हो कर भोम भर सीढ़ी उतर कर चांदनी चौक में हो के दोनों तरफ वन मध्य की हवेली पार कर चांदनी चौक में हो कर भोम भर की सीढ़ी चढ़ करके बड़े दरवाजे से हो करके १२००० हवेली पार कर भोम भर की सीढ़ी उतर कर क्षीर सागर की पिछली दिवाल के आगे चांदनी चौक में आये । चांदनी चौक से चल कर सर्व वन की शोभा देखते हुए क्षीर सागर के किनारे पहुंचकर दाहिनी दिशा की रौंस पर हो करके सागर के दूसरे किनारे पर आए वहां से चल कर सर्व वन पार कर चांदनी चौक में हो करके भोम भर सीढ़ी चढ़कर क्षीरसागर की पश्चिम दिवाल का जो बड़ा दरवाजा है उसमें खड़े होकर के क्षीर सागर की शोभा देखने लगे यह परमधाम के दक्षिण-पश्चिम के मध्य (नैरित्य कोना) में शोभायमान है यहां की सर्वजोगवाई पीले रंग की आयी है क्षीर सागर और दधि सागर के मध्य जो जमीन आयी है वह दो रंग (पीला, हरा) की है वहां की सर्व वनस्पति, पशु-पक्षी मोहल आदि दो रंग के विद्यमान है शब्दातीत शोभा हो रही है ।

दधि सागर :- क्षीर सागर की सर्व शोभा देखकर क्षीरसागर और दधिसागर के बीच की जिमी की तीन दिवाले १२०००-१२००० हवेलीयों को पार कर गृदवाय जो वन आये हैं उन्हे पार कर दधि सागर के दक्षिण की दिवाल के आगे चांदनी चौक में हो कर दधि सागर की पूर्व दिशा की दाहिनी किनार की रौंस ही रौंस हो के उत्तर के किनार पर पहुंचकर वहां से वन पार कर दधिसागर की उत्तर की दिवाल की समुद्र दिस जो बड़ा दरवाजा आया है । उस दरवाजे में खड़े हो के दधि सागर की शोभा देखने लगे । यह दधि सागर परमधाम के पश्चिम दिशा में आया है यहां की सर्व शोभा अगले सागरों की जैसी शोभा आयी है उसी समान ही यहां की वनस्पति, पशु-पक्षी, मोहल,

मन्दिर सब हरे रंग के आये हैं दधि सागर और घृत सागर के मध्य जो जमीन आयी है वह दो रंग (हरा व आसमानी रंग) की आयी है यहां की समस्त जोगवाई मोहल मन्दिर पशु-पक्षी भी दो-दो रंग के आये हैं। अपरम्पार शोभा हो रही है।

घृतसागर :- दधिसागर की सब शोभा देखकर घृतसागर तथा दधि सागर के मध्य जो जमीन है उस जमीन की १२०००-१२००० हवेलियों की तीन दिवालेउ लंघ कर किनार गृदवाय के वन पार कर वायब्य कोना के घृत सागर में पहुंच कर घृत सागर के दक्षिण के दरवाजे से रौंस ही रौंस चल के उत्तर दिशा के वन मझियाय के चांदनी चौक में होके भोम भर की सीढ़ियां चढ़ के दरवाजे के आगे खढ़े हो के तो घृत सागर की शोभा देखने लगे यहां की सर्व जोगवाईआसमानी रंग की आयी है घृत सागर और मधु सागर के मध्य जो जिमी है वह दो रंग आसमानी रंग और श्याम रंग की आयी है यहां की सभी जोगबाई भी दो रंग की आयी है।

मधुसागर :- घृत सागर की सर्व शोभा देखकर घृतसागर तथा मधुसागर के मध्य जो जिमी है उस जिमी की तीन दिवालें वन आदि पार करके मधु सागर पहुंचे, मधु सागर की पश्चिम दिवाल के दरवाजे से चल के सर्व समुद्र की जोगबाई को पार कर पूर्व की दीवाल के बड़े दरवाजे के आगे आये और यहां खड़े होकर मधु सागर की शोभा देखी तो यहां की सर्व योगबाई श्याम रंग की आई है। मधु सागर और रस सागर के मध्य जो जिमी है वह श्याम रंग और दस रंग की आई है यहां की सर्व योगबाई इसी भांति आयी है। मधुसागर उतर दिशा में शोभा ले रहा है। मधुसागर की सर्व शोभा देखकर मधुसागर व रस सागर के मध्य की जो जिमी है उसकी मोहलातें बन आदि पार करके रस सागर की पश्चिम दीवार कोउ लंघ कर समुद्र के दाहिने दिशा रौंस पर हो के दक्षिण की दिवाल में जो बड़ा दरवाजा है वहां खड़े होकर

रस सागर की शोभा देखी तो यह सागर परमधाम के ईशान कोना में स्थित है । यहां की सर्व योगबाई दस रंग की आई है । रस सागर और सर्वरस सागर के मध्य जो जिमी है वह सर्वरंग की शोभायमान है यहां की समस्त सामग्री भी सर्व रंग की आई है ।

सर्वरस सागर :- रससागर की सर्व शोभा देख कर रससागर व सर्वरससागर के मध्य की जिमी की मोहलातें वन आदि पार करके उत्तर की दिवाल के दरवाजे से होकर समुद्र के किनार आये । फिर जहाज में बैठकर टापू के वन आदि पार कर टापू के चांदनी-चौक तथा सिढ़ियां चढ़कर चबूतरे पर आये । हवेली के अन्दर सिढ़ियों से होकर टापू की चांदनी पर आये चांदनी पर खड़े होकर चारों दिशा की शोभा दखने लगे तो यह समुद्र परमधाम के पूर्व दिशा में शोभायमान है । यह सागर सर्वरंग का आया है । यहां की समस्त योगबाई सर्वरंग की आई है । समुद्र के चारों तरफ पाल आई है । पाल पर १२००० हवेलीयों की १२००० कतारें शोभायमान हैं १२०००-हवेलीयों में १२००० त्रिपोलीया शोभायमान हैं । ४८००० त्रिपोलिया दिखाई दे रहे है । चारों तरफ ९६०००० गुर्ज ४८००० चांदनी चौक त्रिपोलियों के आगे चबूतरे पर चार थम्भ आठ मेहरावेंउपरा-ऊपर आसमान लों चली गयी हैं । समुद्र के चारों तरफ चांदनी चौक के ९६००० चबूतरे तथा वृक्ष शोभायमान हैं । पालों की चांदनी की जो शोभा आई है वह जरा-जरा दिखाई देती है । विस्तार से देखना हो तो पीछे वर्णन में देखीये । सर्व रस सागर तथा नूरसागर के मध्य जो जिमी है । वह सर्वरंग तथा सफेद रंग की शोभायमान है । समस्त सामग्री इसी भांति आयी है । नूरसागर में समस्त खुशबोय का इतर, नीर सागर मिश्री से मीठा दूध से उजला जल, खीर सागर में दूध, दधि सागर में दही, घृत सागर में घी, तथा मधुसागर में शहद, रस सागर में दस स्वाद का रस, सर्वरस सागर में परमधाम में जितने रस हैं सो सब यहां सर्वरस सागर में विराजमान है ।

रंगो का बदलना :- अग्नि ईशान लाल नूर : अग्नि कोण में नूर सागर आया है । ईशान कोण में रस सागर आया है दक्षिण दिशा में नूरमयी लाल रंग का नीर सागर आया है । नीर सागर का रंग नूर सागर तथा रस सागर में आया है इस वास्ते नूर सागर तथा रस सागर में लाल रंग है ।

इसका बातूनी भेद यह है कि रस सागर रूहों का परआत्म है और नीर सागर मोह रुपी संसार है । रूहों को मोह रूपी संसार में आने का विचार हुआ कारण (नीर सागर) शरीर रूपी रस सागर में पहले आ जाता है शरीर पीछे जाता है जैसे : श्री पद्मावती पुरी जाना हो तब पन्ना का अक्श पहले ही हृदय में आ जाता है तब पीछे शरीर जाता है । इसी प्रकार से नीर सागर का रंग रूहों के परआत्म शरीर में आया है । इसी वास्ते नीर सागर का लाल रंग रस सागर में आया है । रूहें खेल में आकर श्री परमधाम की सारी बातें भूल गयी श्री राज जी अपना जोश स्वरूप जो नूर सागर है उस नूर स्वरूप ने विचार किया कि सखियों को जगाने के वास्ते मोहरूपी संसार में जाऊं तब मोहसागर (नीरसागर) का रंग पहले से ही नूर सागर में आ गया । इस कारण से नीर सागर का रंग नूर सागर में हुआ है ।

जो रूहों का परआत्म रूपी (रस सागर) तन है वह रूहें नीर सागर को देखने के वास्ते चाहना की इस कारण से नीर सागर का रंग ईशान कोना के रस सागर में हुआ है क्योंकि कारण शरीर में पहले आ जाता है । तब पीछे शरीर वहां पर पहुंचता है । रूहे नीर सागर को देखने वास्ते आयी श्री राज जी रूहों को हर तरह से सुख देने के वास्ते अपना सत अंग जो जोश स्वरूप नूर सागर है उसके तांई सुपुर्द किया है इस लिए नूर सागर रूहों को सुख देने वास्ते कई प्रकार के उपाय करता है । जो रूह ने चाहा सो नूर सागर ने कई कोट गुना अखण्ड सुख दिया, जब रूहें नीर सागर देखने वास्ते आयी तब नूर सागर ने विचार किया कि मुझे भी नीर सागर पर जाना चाहिए

तब नीर सागर का रंग नूर सागर में आया है क्योंकि कारण पहले पहुंच जाता है ।

चौपाई : पीत नीर रंग दक्षिणः- दक्षिण दिशा में जो नीर सागर लाल रंग का है सो लाल रंग तो पहले जा चुका है । इस नीर सागर को रूहों की शोभा का सागर अर्थात एक तनी का सागर कहा जाता है सो रूहें यहां पर खड़ी हैं सभी सागरों को उलंघ कर सर्वरस सागर जो श्री राज जी का स्वरूप है उसको मिलना चाहती हैं । यह जो नीर सागर शोभा का सागर है सो शोभा कब मालुम पड़ती है जब एक दिली हो । बिना एक दिली हुए शोभा कभी नही हो सकती । तब रूहों ने विचार किया कि क्षीर सागर में जाकर एक दिली लेनी चाहिए जब रूहों ने जाने का विचार किया तब क्षीर सागर का पीला रंग दक्षिण में जो नीर सागर है उसमें फरमाया है क्योंकि कारण पहले आ जाता है तब रूहें नैरित्य कोना के क्षीर सागर पर पहुंच कर एक देली लिया ।

नैरित खीर नीला रंग :- पश्चिम दिशा में जो दधि का सागर नीले रंग का आया है सो इस सागर का रंग नैरित्य कोना में जो खीर सागर पीले रंग का है पीला रंग तो पहले ही से नीर सागर में जा चुका है तब दधि सागर का रंग इस खीर सागर में फरमाया है । बातूनी क्षीर सागर एक दिली का सागर है और दधि सागर सिनगार का सागर है एक दिली कब मालूम पड़ती है । सिनगारों से तथा खाने-पीने से और सुख-आनन्द से । तब रूहें सिनगार सजने के वास्ते दधि सागर में आई परन्तु दधि सागर का रंग क्षीर सागर में चला गया क्योंकि कारण पहले पहुंच जाता है । जब रूहें दधि सागर पर आई तब अपने माशूक से मिलने के वास्ते तरह-तरह के सिनगार सजी । क्योंकि सिनगार सजकर ही आसिक माशुक के पास आता है । यहां पर रूहों ने एक दूसरे को बड़े प्रेम से सिनगार सजाया एक रूह चाहती है कि

मैं इस सखी का ऐसा सिनगार साजूं कि श्री राज जी महाराज देखते ही इस सखी को सबसे अधिक चाहें । ऐसा सब सखीयों के हृदय में विचार होता है । इस वास्ते एक दूसरे को अधिक प्रेम से सिनगार सजाती हैं । जब सिनगार सज चुकी तब आपस में विचार करने लगी कि धनी से मिलना तो जरूर है परन्तु किसी का आसरा लिए विना धनी से मिल नही सकते । इस वास्ते नूर सागर से मिलने का विचार किया ।

दधि स्वेत पश्चिम रोशन :- पश्चिम दिशा में दधि सागर आया है और अग्नि कोण में नूर सागर सफेद रंग का आया है । सो नूर सागर का रंग दधि सागर में कहा है । उस का कारण यह है कि जब सखियों ने नूर सागर से मिलने के वास्ते विचार किया तब नूर सागर का रंग दधि सागर में आ गया क्योंकि कारण पहले ही पहुंच जाता है सब सखियां आकर नूर सागर से मिली हैं और कहा कि हमको श्री राज जी महाराज से मिलना है तो कृपा करके मिला दीजिए । तब नूर सागर ने कहा कि हे सखियों जब तक इश्क तुम्हारे अन्दर नहीं आयेगा तब तक धनी नही मिल सकते हैं । इस वास्ते इश्क लेना चाहिए । तब सखियों ने कहा कि कृपा करके हमको इश्क दीजिए । तब नूर सागर ने सखियों को वायव्य कोण घृत (इश्क) के सागर पर पहुंचाया ।

घृत वायव वल स्याम रंग :- वायब्य कोण में जो घृत का सागर है और उत्तर दिशा में जो मधु का सागर स्याम रंग का है उस मधु सागर का स्याम रंग वायब्य कोण के घृत सागर में कहा है । कारण घृत का सागर तो इश्क का सागर है और मधु का सागर इलम का सागर है जब रूहें इश्क के सागर में आई तब इश्क सागर से इश्क मांगा कि हमको इश्क दो । तब इश्क सागर ने कहा कि तुम इलम के सागर पर जाओ वहां पर जाकर इलम लो क्योंकि जब तक इलम नही आयेगा तब तक इश्क अधूरा माना जाता है । इलम ही सब बातों की पहचान कराता है । इलम पाकर, पूर्ण इश्क लेकर धनी

को मिल सकोगे तब रूहों ने मधुसागर के पास जाने का विचार किया तब मधुसागर का स्याम रंग वायव्य कोण के धृत सागर में पहले से ही आया, रुह मधु सागर पर पहुंची ।

रंग आसमानी मधु उत्तर :- उत्तर दिशा में जो मधु सागर श्याम रंग का है और वायब्य कोण में जो घृत का सागर आसमानी रंग का है सो घृत सागर का रंग उत्तर दिशा के मधु सागर में कहा है इस वास्ते मधुसागर का रंग आसमानी कहा है उसका कारण यह है कि इश्क सागर ने सखियों को इलम के सागर पर पहुंचाया तब सखियों ने ईलम सागर से कहा कि हे इलम के सागर हम सखियों को श्री राज जी महाराज से मिलना है इस वास्ते इलम द्वारा हमको पहचान कराओ तंब ईलम सागर ने ईलम दे कर सब बातों की पहचान करायी । चोली, चरनियां, साड़ी तथा परआत्म तन की श्री राज जी महाराज के स्वरूप की पहचान कराकर यह भी कहा कि तुम इश्क सागर के पास जाकर धनी का पूर्ण इश्क प्राप्त करो । जब पूर्ण इश्क आयेगा तभी तुम परआत्म में पहुंचकर श्री राज जी से मिल सकते हो तब सखियों ने वायब्य कोण में घृत सागर के पास जाने का विचार किया तो घृत सागर का रंग पहले ही से मधु सागर में आ गया क्योंकि कारण पहले आ जाता है तब शरीर पीछे जाता है इस कारण से मधुसागर का रंग आसमानी करके कहा है तब सखियां इश्क के सागर में पहुंचकर पूर्ण रूप से इश्क लिया । जब पूर्ण इश्क आया तब रुहें अपने पर आत्म में पहुंची । यह इलम का सागर तथा इश्क का सागर यह दोनो अरस-परस एक ही है कारण बिना इश्क के इलम नही आता और बिना इलम के इश्क नही आता है इस वास्ते इन दोनों सागरों का रंग एक दूसरे में ओत-प्रोत करके फुरमाया है ।

दश रंग अमृत ईशान :- ईशान कोण में रस सागर दस रंग का आया है अमृत रस अर्थात दस प्रकार के रस का सागर है इश्क सागर ने जब रूहों

को इश्क दिया इश्क आते ही रूहें रस सागर पहुंची अर्थात परआतम तन में पहुंची क्योकि रस सागर रूहों का परआत्म तन है ।

रस पूर्व रंग सर भर :- पूर्व दिशा में जो सर्वरस सागर है वह पूर्ण तरह से सभी रंगो से युक्त शोभा ले रहा है कोई भी रंग की कमी नही है सब रंग है और सर्वरस भरे हुए है ऐसा यह सर्वरस सागर है यह सर्व रस सागर श्री राज जी महाराज का स्वरूप है जब रूहें सर्व रस सागर पर पहुंची अर्थात पर आत्म तन में पहुंची तब रूहें पर आत्म तन को ले कर सर्वरससागर जो श्री राज जी महाराज का स्वरूप है तिस श्री राज जी महाराज के अंगो-अंग से मिली अर्थात भेटी ! इस तरह से रूहों ने नीर सागर से चलकर सब सागरों पर होकर श्री राज जी महाराज को मिली ।

आठों सागरों की उत्पत्ति :- श्री राज जी महाराज के शरीर के अन्दर जो सुगंधी के गंजान गंज समुद्र भरे हुए हैं उन समुद्रो में से एक फुई उड़कर अग्नि कोन में नूर का सागर हो गया है । श्री राज जी महाराज के अंगो में जो (हीरा, मोती नंगो के पानी के सदृश्य) गंजान-गंज जो पानी के समुद्र भरे हुए है उनमें से एक फुई मात्र उड़कर दक्षिण दिशा में लाल रंग का नीर सागर हुआ है । श्री राज जी के सभी अंगो में उज्जलताई के गंजान-गंज अपरम्पार समुद्र भरे हुए है उन समुद्रों में से एक फुई उड़कर नैरित्य कोण में पीले रंग का क्षीर सागर हुआ है । श्री राज जी के सभी अंगो में जो शीतलता के गंजान-गंज बेसुमार समुद्र भरे हुए हैं उन समुद्रों में से एक फुई उड़कर पश्चिम दिशा में दधि सागर हुआ है । श्री राज जी के अंगो में जो चिकनाई के गंजान-गंज अन्नतानंत समुद्र भरे हुए हैं उन समुद्रों में से एक फुईमात्र उड़कर बायब्य कोण में आसमानी रंग का घृत सागर हुआ है । श्री राज जी महाराज के अंगो में जो गंजान-गंज अरम्पार मिठास के समुद्र भरे हुये हैं उन समुद्रो में से एक फुई उड़कर उत्तर दिशा में श्यामरंग का मधुसागर

हुआ है । श्री राज जी के हृदय कमल में अपने रूहों के प्रति सुख देने के लिए गंजान गंज, अपरम्पार बेसुमार लाड़-प्यार, ईश्क के समुद्र भरे हुए है उस समुद्र में से एक फुई मात्र उड़ ईशान कोण में दस रंग का रस सागर हुआ है । श्री राज जी महाराज के पाँव तली से लेकर चोटी तक गंजान-गंज अपरम्पार अनंत रस के समुद्र भरे हुए हैं । इस समुद्र के फुई-फुई में एक ही कारण है कि अपने प्राणप्रिय सखियों को नये-नये प्रकार से हर पल लाड़-प्यार सुख देऊं । इन समुद्रों में से एक फुई उड़कर पूर्व दिशा में सर्व रंग का सर्व रस सागर हुआ है यह आठों सागर श्री राज जी के शोभा, गौरव-गरिमा के प्रतीक हैं ।

दूसरी विधी :- १-नूर सागर श्री राज जी के शोभा का सागर है । २-सखियों के एक तनी की शोभा का नीर सागर है । ३-एक दिली का खीर सागर है । ४-सिनगार का दधि सागर है । ५-ईश्क का घृत सागर है । ६-इलम का मधुसागर है । ७-निसवत का रस सागर है । ८-मेहर का स्वरूप सर्व रस सागर है । चार सागर श्री राज जी महाराज के तरफ माने जाते हैं और चार सागर श्री श्यामा जी महारानी के तरफ माने जाते हैं । (१) नूर सागर (२) सिनगार का सागर (३) इलम का सागर (४) मेहर का सागर ऐ श्री राज जी महाराज के सागर हैं । (१) शोभा का सागर । (२) एक दिली को सागर । (३) इश्क को सागर । (४) निसवत का सागर ए चार सागर श्री श्यामा जी के तरफ लिखे जाते हैं ।

अष्ट सागर अर्स दिल भीतर :- ऐ सागर का ब्यान क्या है कि खाली इसारत है आत्मा को श्री परमधाम के मार्ग पर चढ़ने को ए आठों सागर वातुन अर्स दिल भीतर ब्यान किया जाता है । रूह मोमनो की जो पर आत्म तन में जो जाग्रत अवस्था है वह रस सागर है । परआत्म तन में जो श्री राज जी महाराज का इस्क रोम-रोम में भरा है वह सर्व रस सागर है रूह मोमनो को

खेल देखने की चाहना हुई तब श्री राज जी महाराज ने फरामोसी रूपी आवरण ड़ाल कर सुपने का तन बनाकर दुःख रूपी माया का खेल अर्स दिल भीतर ही दिखाने लगे **चौपाई** सुपन होत दिल भीतर, रूह कहुं नही निकसत ।। यह तो नीर सागर हुआ । रूह इस नीर सागर पर खड़ी है सम्पूर्ण सागरों को उलंघ कर सर्वरस सागर जो श्री राज जी महाराज का स्वरूप है तिन श्री राज जी से मिलने के वास्ते अर्ज-विनती करती है । तब श्री राज जी महाराज जो दुलहिन पर मेहर करके कौल रूपी बेसुमार जो शोभा है तिसको दिया अर्थात इलम दिया । तिस इलम के मगज भेदों को रूह ने समझा तब जानो कि रूह शोभा के सागर पर पहुंची । तब रूह ने सब तरह से जानकर अपने गुण, अंग, प्रकृति जो अलग-अलग थे उसको तरह-तरह से समझा कर अनेक दुःख सहन करके सबको एक करके एक श्री राज जी में लगाया । तब मानो रूह क्षीर सागर जो एक दिली का सागर है उस एक दिली के सागर पर पहुंची । जब रूह ने एक दिली करी तब बाद में रूह ने बृहरूपी श्रृंगार किए । अर्थात सब गुन, अंग, इंद्री के सहित श्री राज जी का वृह करने लगी । तब जानो कि रूह दधि सागर जो श्रृंगार का सागर है उस श्रृंगार के सागर पर पहुंची । दुःख उठा कर तो एक दिली किया एक दिली होने से रूह वृह रस को प्राप्त भई "दुःख से विरहा आवही" जब रूह ने वृहा के बस्तर भूषण धारण किए । स्वास-स्वास में श्री राज जी को पुकारने लगी । तब श्री राज जी महाराज ने कृपा करके अपने जोस का जो नूरमई स्वरूप है उसको अर्स दिल में दिखाया । तब मानो रूह दधिसागर से नूर सागर पर पहुंची । तब नूर के स्वरूप ने रूह के प्रति कृपा करके इश्क दिया तब मानो रूह घृत को सागर जो इश्क का सागर है वहां पर पहुंची । इश्क के सागर ने रूह के प्रति पूर्ण तरह का इश्क देकर उत्तर दिशा में जो मधु सागर इलम का सागर है वहां इलम के सागर पर पहुंचाया । तब इलम के सागर ने सब बातों की पहचान कराई जब अपने पर आतम तन की पूर्ण पहचान हुई और

धनी के अंगना की पूर्ण हुज्जत भर आयी तब रूह रस सागर जो निसवत का सागर है वहां पर पहुंची नूर ने इश्क दिया, इश्क ने बेसकी इलम दिया, बेसकी इलम ने परआतम तन में पहुंचाया जब रूह परआतम तन को पहुंची तब रूह परआतम तन को लेकर जो श्री राज जी महाराज सिंहासन पर विराजमान है उनके अंगो-अंग लिपटी अर्थात भेटने लगी । इस तरह से रूह नूर सागर से होकर सर्वरस सागर पर प्राप्त हुई । यह विधि हर एक रूह पर गुजरती है मानिंद सीढ़ी के अर्थात सात भूमिका के जैसे : प्रथम भूमिका शुभ इच्छा है, दूजी उपासना जान । तीजी दृढ़ वैराग्य है चौथी है ज्ञान, पांचवी जीवन मुक्ति है, छट्ठी है विज्ञान, सातवीं तुरी अवस्था ए भोमका सात प्रमान । तुरी अवस्था पर आतम तन को कहा जाता है । तुरियातीत श्री राज जी महाराज कहे जाते हैं इन विधि से अष्ट सागरों का भेद अपनी छुद्र बुद्धि से कहा है इनमें तो कई गंजान-गंज भेद अपरम्पार भरे हुये है जिसको श्री राज जी महाराज अपने मेहर दृष्टि में लेते हैं उसी रुह आत्मा को यह अमूल्य निधि वकशिस करते हैं ।

लिखा मु. शेरपुर, पो. जड़ोदा पांडा

निजानंद आश्रम में बैठकर लिखा है । जवाहिरदास चिलाना वल्द मोतीराम रेहेवासी पंजाब बहावल नगर वाला गुरू श्री १०८ परम हंस गोविंद दास जी मलका हांस वाले तथा गुरू श्री १०८ परमहंस श्री मेहर दास जी की दया से आतम द्वारा होकर लिखा है । विनती जवाहिर बाई की ता. ६-१०-५० भादोवादी नवमी संवत् २००७ ।

◆◆◆